In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्तराखंड वनौषधि-दर्शिका

वैद्य मायाराम उनियाल

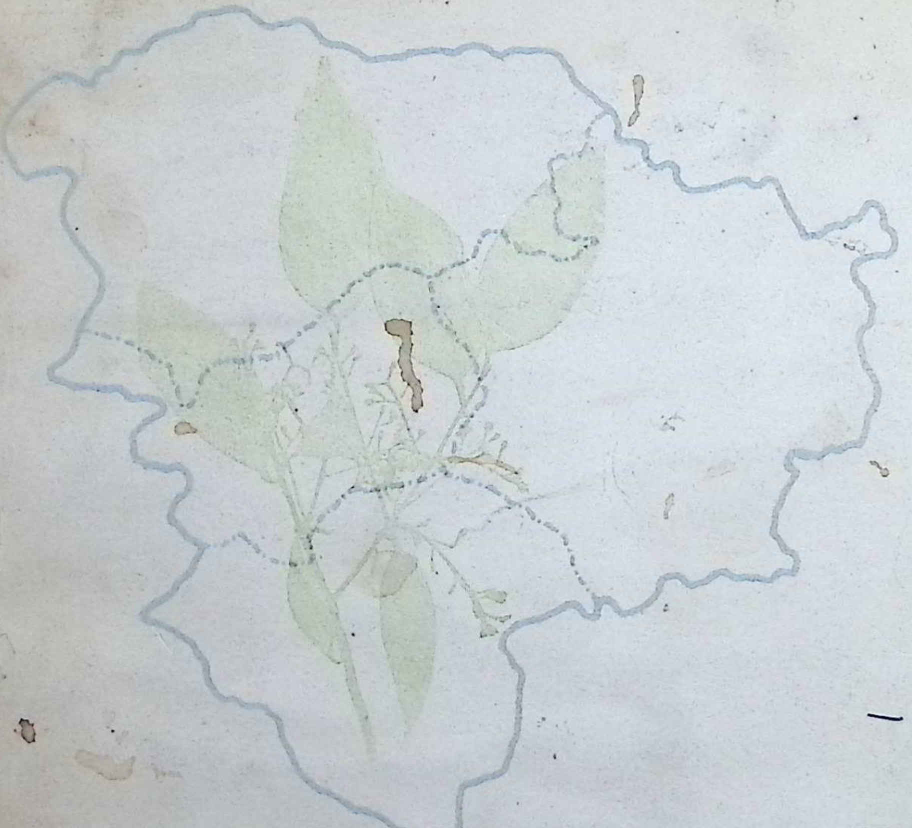

भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी
की केन्द्रीय अनुसन्धान परिषद्
नई दिल्ली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

1682

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन

श्रीं शंकर दाजी शास्त्री पदे स्मारक पुस्तकालय

धन्वन्तरि-भवन, नई दिल्ली-२६

१. क्रमांक 1682

२. ग्रन्थनाम उत्तराखंड वनौषधि - दीपिका

३. लेखक/सम्पादक वैद्य मायाराम उनियाल

४. प्रकाशक भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी की केन्द्रीय अनुसन्धान परिषद्

५. क्रय तिथि

६. मूल्य

...जित: ...उपहार 24.2.81

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्तराखंड
वनौषधि
दर्शिका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्तराखंड वनौषधि-दर्शिका

(सचित्र)

वैद्य मायाराम उनियाल
अनुसन्धान अधिकारी (आयुर्वेद)
क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान केन्द्र, झाँसी

मूल्य- 23/=

भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी की
केन्द्रीय अनुसन्धान परिषद
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
(भारत सरकार)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी की केन्द्रीय अनुसन्धान परिषद्
ई-२५, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-११००२४.
द्वारा प्रकाशित

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Acc. No. ....
Call No. ....
9C0000....

LX (I.251)
152N77

लेखक, इस पुस्तक में दर्शित सामग्री संकलन के सहयोग हेतू
गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय, हरिद्वार में
पूर्वस्थित, वनौषधि सर्वेक्षण एकक
के सभी कर्मचारियों का
आभारी है।

000026

मुद्रक : प्रभात आफसेट प्रेस
२८४१, कूचा चेलान,
दरियागंज, नई दिल्ली-२
दूरभाष-२७४५००

सी०सी०आर०आई०एम०एच०
सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम प्रकाशन-१९७७
प्रतियां - १०००

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय-सूची
(CONTENTS)

१. प्राक्कथन। ... i

२. सम्पादकीय वक्तव्य ... iii

३. लेखक का निवेदन। ... १
(प्राक्कथन)
उत्तराखण्ड का भौगोलिक परिचय।
उत्तराखण्ड हिमालय का प्राकृतिक सौन्दर्य एवं जलवायु।
उत्तराखण्ड गढ़वाल के मुख्य स्थान एवं नदियाँ।

४. उपलब्ध द्रव्यों का परिचय। ... १५
(खण्ड-स्पर्माफाइटा)

५. पारिभाषिक शब्दों की सामान्य तालिका। ... २३५

६. लैटिन नामों की तालिका। ... २३९

७. संस्कृत एवं स्थानिक नामों की तालिका। ... २४९

८. आधारभूत ग्रन्थ एवं पत्रिकायें ... २५५

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राक्कथन

आदिकाल से ही आयुर्वेद के मर्मज्ञों में जड़ी-बूटियों का परिचय पाने के लिए अपनी प्रयोगशालाओं में अपने ढंग से अनेक वैज्ञानिक प्रयोग किये हैं। साथ ही वनचरों एवं पशु-पालकों का भी उपयोग किया, जिनका नित्य-प्रतिदिन जड़ी बूटियों के संकलन एवं प्रयोग से सम्बन्ध रहता है। आजकल कुछ लोगों को यह भ्रम है कि आयुर्वेद शास्त्रों में वनस्पति विज्ञान केवल अनुमानिक है, लेकिन वस्तुतः यह वर्णन निश्चित रूप से प्रत्यक्ष परीक्षणों पर आधारित है। औषधि के रस, गुण, वीर्य, विपाक, कर्म और प्रभाव आदि शक्तियों का विस्तृत वर्णन किया गया है। एक ही रस वाली दो औषधियां, विपाक, वीर्य एवं प्रभाव के भेद से भिन्न होती है, इसलिये औषधियों को 'प्रतिनियत शक्ति वाली' कहा गया है।

चिकित्सा पाद चतुष्टय में औषध को भी चिकित्सा का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। परन्तु आज की स्थिति में चिकित्सा को उपयुक्त एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए औषधियो का संकलन, पहचान तथा प्रयोग विधि से सम्बन्धित अनेक प्रश्न एक कठिन समस्या के रूप में आयुर्वेदिक चिकित्सकों के सामने खड़े हैं। वर्तमान युग में मुख्यतः औषधियों की प्राप्ति का आधार व्यापारियों पर निर्भर होता जा रहा है, जिससे इनके गुण, कर्म एवं उपयोगिता का क्रमशः ह्रास होता जा रहा है।

अतः औषधियों पर विभिन्न दृष्टिकोण से अनुसन्धान कर उनके गुण-कर्म में वृद्धि एवं पर्याप्त मात्रा में भी उपलब्धि का कार्य अत्यधिक महत्व का है। इनमें भी सर्वेक्षण द्वारा औषधियों की प्रचुर मात्रा में प्राप्ति के स्थानों का निर्धारण करना सर्वोपरि है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने औषधियों के ख्यातिलब्ध भंडार हिमालय का सर्वेक्षण करने के लिए सर्वप्रथम १९६२ में एक 'वनौषधि अनुसन्धान एकक" की गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार में स्थापना की। इस एकक ने हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र में औषध द्रव्यों के सर्वेक्षण में अर्वाचीन एवं प्राचीन दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण कार्य किया है क्योंकि आयुर्वेद, हिमालय की गोद में पला है, इसलिए हिमालय पर्वत पर उत्पन्न होने वाली औषधि द्रव्यों पर गहन और विस्तृत वर्णन आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थों में प्रचुरता से मिलता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधियों की उपलब्धि कई प्रदेशों में वन्यरूप से तथा कृषि द्वारा भी होती है। तथापि "हिमवानौषधिभूमीनाम्" (चरक सूत्र-२५) इस चरक वाक्य के अनुसार हिमालय औषधिभूमि में श्रेष्ठ है, इतना ही नहीं लेकिन रसायन विधी के लिए हिमालय में उत्पन्न औषधियों का ही प्रयोग करना चाहिए यह भी स्पष्ट बताया गया है। जैसे—"औषधीनां परा भूमिर्हिमवान् शैलसत्तमः तस्मात्फलानि तज्जानि ग्राहयेत्..." (च० चि० ।।) हिमालयीन औषधियों की खोज का यह महत्व ध्यान में रखकर इस एकक ने हिमालय के अनेक भागों, विशेषकर उत्तराखण्ड (गढ़वाल हिमालय) का विस्तृत सर्वेक्षण किया है। यद्यपि इस क्षेत्र का वानस्पतिक सर्वेक्षण पहले भी कई विद्वानों ने किया था, परन्तु वनौषधियों के महत्व को दृष्टि में रखकर यह प्रयास प्रथम ही माना जा सकता है। वैद्य मायाराम उनियाल एवं एकक् के अन्य कार्यकर्त्ताओं ने परिश्रम करके उस क्षेत्र में प्राप्त वनस्पतियों का संकलन व इनके स्थानिक गुण कर्मों को भी एकत्र किया है। यह कार्य सराहनीय है। इससे हिमालय में ही उत्पन्न होने वाली कुछ औषधियों की कमी भी पूर्ण हो सकेगी। हमें आशा है कि यह पुस्तक औषधियों के स्थानीय, संस्कृत एवं वानस्पतिक (बोटेनिकल) नाम, उनके परिचयात्मक विवरण, प्राप्तिस्थान, स्थानिक प्रयोग इत्यादि से अनुसंधानकर्त्ताओं, विद्यार्थियों एवं सामान्य चिकित्सकों को अवगत कराने में उपयोगी सिद्ध होगी।

भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी
की केन्द्रीय अनुसंधान परिषद।
नई दिल्ली।
दिनांक—फरवरी, १९७७

पी० एन० वी० कुरुप
निदेशक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सम्पादकीय वक्तव्य

वनौषधियां आयुर्वेद शास्त्र की आधारशिलायें हैं। इस शास्त्र के अन्तर्गत द्रव्यगुण सम्बन्धी 'रस-गुण-वीर्य-विपाक-प्रभाव' नामक व्यापक सिद्धांत की स्थापना का इन्हीं के गुण धर्मों पर आधारित होना निश्चित सा प्रतीत होता है। साथ ही यह भी मानना पड़ता है कि इस शास्त्र के प्रणेता मनिषियों ने अपने पूर्वजों के एतद्‌विषयक, परम्परागत नाम, रूपात्मक एवं प्रयोग सिद्ध ज्ञान का संग्रह, निरीक्षण एवं परीक्षण, उनका वर्गीकरण एवं तत्सम्बन्धी व्यापक नियमों का निर्माण विभिन्न प्रदेशों में जाकर जंगल के आदिवासियों एवं प्रवासियों से निकट सम्पर्क स्थापित करने पर ही किया होगा। सम्भवतः यही कारण होगा कि वे भविष्य के लिए उपयोगी साहित्य तैंयार करने के बदले ज्ञात वनौषधियों के सम्यक् स्वरूप ज्ञान के लिये अपनी इसी सर्वेक्षण की प्रणाली को अपनाने का निर्देश कर गये हैं। उपर्युक्त सैद्धांतिक भूमिका में भावी जिज्ञासुओं के लिये विश्वविस्त्रित वनस्पति-साम्राज्य को कार्यक्षेत्र बनाने का आमन्त्रण तथा धारण का बीजारोपण निहित है कि कोई भी वनस्पति अनौषध नहीं मानी जा सकती।

परन्तु इस अभागे देश को अनेक शताब्दियों तक राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदि उथल-पुथल का सामना करना पड़ा और ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी अथवा यों कहिये कि विनाशकारी परिवर्तन होते गये। इस दुर्दान्त घटनाचक्र में आयुर्वेद राजाश्रय विहीन होकर भी अपनी शक्ति से जीता रहा परन्तु अपने प्रधान साधक अंग वनौषधियों के क्षेत्र में सबसे अधिक पिसता गया और अंग-भंग से पीड़ित होकर पहले विवश हुआ और अन्त में सर्वथा निष्क्रिय हो गया। सुदुर एवं दुर्गम पर्वतों और जंगलों में चिकित्सापयोगी वनस्पतियों को खोजना तथा उनका प्रत्यक्ष एवं निर्णयकारी स्वरूप ज्ञान प्राप्त करना तो दूर रहा अपने आस-पास सुलभ जड़ी बूटियों को जानने समझने की जिज्ञासा भी क्रमशः लुप्त हो गई। उपयोग के लिए उनका संग्रह और वितरण अशिक्षित तथा अर्थ लोलुप व्यवसाइयों के हाथों में देकर वैद्यों ने सड़ी-गली तथा असली-नकली का विवेक भी अब खो दिया है। एक बार श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के शोध प्रतिष्ठान की एक योजना के सिलसिले में मुझे बिहार प्रान्त के कुछ जंगलों का सर्वेक्षण करना था। सर्वप्रथम मुंगेर जिले के जमुई वन खण्ड का कुछ स्थानीय वैद्यों के साथ कार्य प्रारम्भ किया गया। वहां हमें दशमूल गण की सभी वनस्पतियाँ मिली। सहयोगी वैंद्यों से जिज्ञासा करने पर यह मालूम हुआ कि अपने निजी उपयोग के लिए वे इन द्रव्यों को भी पंसारियों से ही प्राप्त करते हैं और यह नहीं कह सकते कि वे द्रव्य इन्हीं के अंग प्रत्यंग हैं या भिन्न।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस शोचनीय स्थिति का प्रारम्भ हजारों वर्ष पूर्व हुआ जब शिक्षा-ऋषि आश्रमों से उठकर नगरों में चली आई और तीर्थ-यात्राओं आदि के माध्यम से वनभ्रमण और प्रत्यक्ष ज्ञानार्जन की प्रणाली समाप्त हो गयी। चमत्कारी दुर्लभ द्रव्यों का ज्ञान होने पर भी व्यक्तिगत सम्पत्ति की तरह उसे रहस्यमय बना दिया। इस प्रकार जो दयनीय स्थिति अब उत्पन्न हो गयी है उसका दिग्दर्शन मात्र यहां सम्भव है। संहिताओं में जिन आहार एवं औषध द्रव्यों का नामोलेख मिलता है उन की संख्या लगभग सात,सौ की होगी। इनमें भी अधिक उपयोग में आने वाले द्रव्यों की संख्या इसकी आधी ही होगी। परन्तु इनमें भी कितनों की ठीक-२ जानकारी हमें रह गई है। दिव्यौषध नाम से विख्यात कितने तो पहले ही मानो किसी देव लोक को प्रस्थान कर गये थे। अष्टवर्गीय द्रव्यों की तरह कुछ को राजा-महाराजाओं के लिये भी दुर्लभ कहकर छोड़ दिया गया है और कितनों के विषय में साधार सम्यक् स्वरूप-ज्ञान न होने के कारण उनका श्रोत ही विवादग्रस्त हो गया है। इन सबको एक ओर रख दें और केवल उन्हीं द्रव्यों को लें जो लोक में सामान्य गृह कार्यों के लिये अब भी उपयोगी बने हुये हैं और लोक में प्रायः शास्त्रीय नामों से सर्वत्र प्रसिद्ध हैं वे भी वैद्यों को क्या मिल पाते हैं? दशमूलीय द्रव्यों का उपर्युक्त उदाहरण इसका उत्तर है।

सन् १९२७ अगस्त में जब मेरा सम्बन्ध काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उसी वर्ष स्थापित आयुर्वेद कालेज में आधुनिक वनस्पति शास्त्र के अध्यापक के रूप में हुआ और कालेज के प्रथम अध्यक्ष स्व. आचार्य यादव जी से प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला तो चिकित्सोपयोगी वनस्पतियों को जानने समझने की अभिलाषा हुई। एक विद्यार्थी की तरह इस कार्य में जुट गया और कुछ ही दिनों में भारतीय वनौषध शास्त्र की उपर्युक्त दयनीय दशा का आभास मिला। हजारों वर्ष पूर्व अपने पूर्वजों द्वारा खोजी हुई और परीक्षित विशाल वनौषध सम्पदा का क्षीण और नष्ट प्रायः होना बहुत ही क्षोभकारक लगा परन्तु अधिक दुख तो यह जानकर हुआ कि शताब्दियों से उत्पन्न और निरन्तर ह्रासोन्मुख इस स्थिति को रोकने का प्रयत्न कहीं से भी नहीं हो रहा था। इस विषय की चर्चा छेड़ने पर बड़े-२ वैद्यों को कहते हुये सुना गया कि यह विषय तो पंसारियों का है। फिर तो, आधुनिक वनस्पति शास्त्रियों तथा एलोपैथी के डाक्टरों को क्या पड़ी थी जो इस पचड़े में पड़ते। यदि किसी ने दुस्साहस किया तो उपहास तथा उपेक्षा का पात्र बना। आयुर्वेद के लिये यह पुनरुत्थान का युग चल रहा था और कुछ इने गिने वैद्य अपनी त्याग-तपस्या से इस क्षेत्र में कुछ कार्य कर रहे थे। इन्होंने भी इस कार्य को थैंक्लेस(Thankless) और उपेक्षा का कारण कहकर मुझे सावधान किया था परन्तु मेरा संकल्प तो भावना प्रेरित था और दीक्षा मिली थी ऋषि तुल्य शास्त्र-शोधक स्व० आचार्य यादव जी से। यद्यपि आचार्य जी थोड़े समय में काशी छोड़कर बम्बई चले गये परन्तु मेरे ऊपर उनका स्नेह और मेरे कार्य के प्रति उनकी आशायें बराबर बनी रहीं। मेरे कार्य के प्रति सम्मान दिलाने और एतदर्थ मुझे साधन सम्पन्न बनाने के

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लिये बराबर प्रयत्नशील रहते थे। ऐसे ही कारणों से हमारे लिये अपने संकल्प से हटने का प्रश्न नहीं था। प्रश्न केवल एक निश्चित कार्यशैली अपनाने का था। शास्त्र प्रणेताओं द्वारा निर्दिष्ट सर्वेक्षण की प्रणाली के अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग हमें भी उपयुक्त नहीं जान पड़ा। इस प्रणाली में कार्य कठिन, श्रम-साध्य, कष्ट-साध्य और व्यय-साध्य था तथा उपयुक्त साधनों के बिना जीवन और स्वास्थ्य के लिये खतरों से भरा था, फिर भी साल में एक दो बार उत्तर भारत के जंगलों में अवकाश के दिनों में उत्साही और अर्थतः समर्थ विद्यार्थियों की टोली बनाकर चलने ही लगा। इस तरह शीलांग, गौहाटी, दार्जिलिंग, मिर्जापुर, चित्रकूट, गोरखपुर, सहारनपुर देहरादून, नैनीताल, अल्मोड़ा के पहाड़ी और मैदानी वनों तथा कांगड़ा एवं काश्मीर के औषधियों के लिये कुछ प्रसिद्ध स्थानों में जाकर वन भ्रमण और द्रव्य परिचय का कार्य लगभग १५ वर्षों तक चलाता रहा। प्रतिवर्ष हमारे इस कार्यक्रम को देखकर राजस्थान तथा बिहार से भी विद्यार्थिओं की टोलियां प्रायः हरिद्वार और देहरादून आने लग गई थी। इस तरह एक प्राचीन परन्तु छूटी हुई परम्परा का सूत्रपात्र तो हो ही गया। अनेक द्रव्यों के सम्बन्ध में फैले हुये केवल निष्क्रियताजन्य अंधकार एवं विवाद को दूर करने में सफलता भी मिलती गई और इस क्रम को चलाते रहने का साहस भी बढ़ता गया। प्रतिवर्ष ऐसी यात्राओं पर निकलने वालों और सामान्य द्रव्यगुण के परीक्षार्थियों के लिये उपयोगी एक वनौषधि दर्शिका की आवश्यकता प्रतीत हुई जो सन् १९४८ में कालेज के छात्र यूनियन के सहयोग से प्रकाशित कर दी गई। इस पुस्तिका की भूमिका में वर्तमान परिस्थिति का दिग्दर्शन और उसमें व्यापक सुधार लाने के लिये एक योजना चालू करने का सुझाव भी दिया गया था। उत्तर प्रदेश की सरकार द्वारा 'आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सा पद्धतिओं के पुनः संगठन, के लिये नियुक्त समिति को समर्पित एक स्मृतिपत्र में (सन १९४८), 'बिहार की वनौषिधियां नामक पुस्तक के परिशिष्ट में प्रकाशित मेरे लेख में (सन् १९५५) तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा आयोजित सेमिनार में (सन् १९६२) मेरे भाषण में इस योजना के विभिन्न कार्यक्रमों और उनको उपादेयता पर प्रकाश डाला गया था।

हर्ष की बात है कि केन्द्रीय सरकार ने देशी चिकित्सा पद्धतियों के लिये नियुक्त भूतपूर्व एडवाइजर श्री डा० द्वारकानाथ के कार्यकाल में इस योजना के प्रथम अंश को कार्यान्वित करने का निश्चय किया और हरिद्वार तथा रानीखेत में साधन सम्पन्न दो सर्वेक्षण यूनिटों द्वारा कार्य प्रारम्भ हो गया। इन्हीं में से हरिद्वार यूनिट के एक निष्ठावान कर्मठ वैद्य कार्यकर्ता के परिश्रम का फल है, जिसका विवरण प्रस्तुत पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। अपने प्राचीन आयुर्विज्ञान को पूर्णतः विशुद्ध रूप में पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये जिन महार्थियों के प्रयत्नों से केन्द्रीय सरकार ने देशी चिकित्सा पद्धतिओं में अपेक्षित शोध और विकास के लिये अब एक स्वतन्त्र कौंसिल की स्थापना कर दी है उनके समक्ष अपनी योजना की ओर एक बार ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ क्योंकि इसको पूर्ण रूप में कार्यान्वित करने का काम अभी बाकी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

योजना के प्रथम अंश 'सर्वेक्षण कार्यक्रम' के व्यापक अखिल भारतीय विस्तार के बिना लक्ष्य प्राप्ति संभव नहीं थी अतः प्रायः सभी प्रांतों में सर्वे यूनिटों की स्थापना करके कौंसिल ने प्रसंशनीय कार्य किया है। इस कार्यक्रम के लक्ष्य पूर्ति के निमित्त वैद्यों के साथ कार्य करने के लिये वनस्पति शास्त्रीओं(Botanist) तथा द्रव्य परिचय वैज्ञानिकों (Pharmacognoist) का उपयोग भी किया जा रहा है जिसकी योजना में अनिवार्य सिफारिशे की गई हैं। सर्वेक्षण कार्यक्रम के दौरान समस्त चिकित्सापयोगी वनस्पतिओं का सम्यक् स्वरूप ज्ञान के लिये सूक्ष्म निरीक्षण और उसी के आधार पर स्वयं या संग्रहालयों में जाकर उनका द्विनाम पद्धति द्वारा स्वीकृत लैटिन नामों का निर्णय, स्थानीय नामों का संग्रह, स्थानींय चिकित्सकीय उपयोग तथा आयुर्वेदीय साहित्य में उपलब्ध नाम-रूप सम्बन्धी अथवा गुण-धर्म सम्बन्धी उल्लेखों से समन्वय का प्रयत्न, लैटिन नामों की सहायता से विश्व साहित्य में उनकी चिकित्सकीय मान्यताओं का अध्ययन, जड़ी बूटियों के देशी और अन्तर्देशीय व्यापार में उनकी स्थिति, उपयोग तथा व्यापार के लिये उनके संग्रह अंगों का द्रव्य परिचय शास्त्रिओं द्वारा शुद्धाशुद्ध निर्णायक अध्ययन मुख्य कार्य हैं। स्थानीय लोक प्रचलित एवं परम्परागत नामों को यथासंभव अर्थ के साथ जो प्रायः रूप तथा गुणों आदि के द्योतक होते है और जो नाम प्रायः प्राचीन शास्त्रोक्त नामों के समानार्थक अथवा अपनी (अपभ्रंश रूप) होते हैं, जानने का भी प्रयत्न होना चाहिये।

इन कार्यों के लिये वोटेनिकल सर्वे आफ इण्डिया के स्तर पर प्रशिक्षित और कर्माभ्यस्त वनस्पति शास्त्रियों और विश्वविद्यालस्य स्तर पर तैयार किये हुये द्रव्य, परिचय वैज्ञानिकों की आवश्यकता और बाद में कृत्रिम उपज तथा कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए कृषि वैज्ञानिकों की आवश्यकता पड़ेगी। इन वैद्योत्तर योग्य कार्यकर्ताओं का चुनाव आज भी सम्भव है परन्तु उनको अपने कार्य और लक्ष्य के प्रति निष्ठावान बनाने के लिए उनके विकास और उन्नति की व्यवस्था करके उन्हें अपना अंग बनाकर रखना होगा। प्रश्न केवल वैद्य कार्यकर्ताओं और अधिकारियों का है जिनमें शोधापेक्षी समस्याओं का निर्धारण, लक्ष्य का निर्देशन और वैद्योतर कार्यकर्ताओं के साथ-साथ कार्य करने की क्षमता होनी चाहिये। इसके लिए शास्त्रोक्त वनौषधियों के उपलब्ध साहित्य का प्रौढ़ ज्ञान तो होना ही चाहिये, आधुनिक शोध विधियों का यथासम्भव ज्ञान और पूर्वाभ्यास भी होना चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि इसके लिये उपयुक्त वैद्यवर्ग में कार्य करने और कराने दोनों प्रकार की क्षमता होनी चाहिये। अभी तक मान्य शिक्षा-संस्थाओं में भी इस विषयक के अध्ययन-अध्यापन में ऐसी अक्षभ्य उदासीनता और उपेक्षा बरती;जा रहीं थी कि उनसे निकले हुये स्नातकों के लिए वह त्याग-तपस्या का खतरा भरा कार्य कहां तक साध्य होगा, यह एक स्वाभाविक प्रश्न है। इस तरह के कार्यकर्ताओं और विशेषकर उनसे जो येनकेन प्रकारेण डिग्रीधारी बन गये है वास्तविक कार्य करने कराने की यत्किंचित क्षमता हो या न हो उपलब्ध अधिकारों को अपने पोषण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोषण के लिये दुरुपयोग करने में वे अधिक कुशल निकल सकते हैं। अतः यह आवश्यक है कि इन कार्यक्रमों को सफलता के साथ स्थायी रूप में चलाने के लिये विशेष प्रकार से प्रशिक्षित और पूर्वाभ्यासी वैद्यों का एक पृथक वर्ग ही तैयार करना होगा। मेरी योजना के द्वितीय अंश में इसी जटिल प्रश्न के हल का सुझाव दिया गया है। इसका साराँश यह है कि सामान्य शिक्षण संस्थाओं से पृथक स्वतंत्र संस्थाओं की स्थापना करके ही उपर्युक्त बहुमुखी उत्तरदायित्व के अनुरूप विशेष रूप से प्रशिक्षित वैद्य कार्यकर्ताओं का वर्ग तैयार किया जाना चाहिये। वर्तमान काल की विकसित और विस्तृत परिस्थिति में इस अंश का कार्यान्वय भी सरल और सुसाध्य बन गया है। इन संस्थाओं के लिये योग्य शिक्षक सर्वेक्षण-यूनिटों में कार्यरत निष्ठावान योग्य व्यक्तियों में से चुने जा सकते हैं और कर्माभ्यास के लिये यूनिटों के साधनों और उनके कार्यक्षेत्रों का उपयोग किया जा सकता है। इस तरह से प्रशिक्षित वर्ग का उपयोग सरकार द्वारा अनेक तरह से किया जा सकता है। सर्वेक्षण, शिक्षण, व्यापारकीय संग्रह तथा भण्डारों का निरीक्षण आदि सभी प्रकार के कार्य के लिए योग्य कार्यकर्ताओं का स्रोत इस तरह तैयार होगा जिनकी आवश्यकता आज नहीं तो कल अवश्य पड़ेगी।

बहुत दिन हुए जब आचार्य यादव जी ने कौंसिल के वर्तमान अध्यक्ष पं० शिवशर्मा जी से मेरा साक्षात् कराया था। उस समय पंडित जी ने कहा था कि आयुर्वेदिक कालेजों में बाटनी पढ़ाने की क्या आवश्यकता है? कुछ दिनों के अनुभव के बाद इतना तो मैं समझ ही सका हूँ कि एक साल के अन्दर थोड़ी बहुत बाटनी की शिक्षा सामान्य ज्ञान के लिए आवश्यक हो सकती है और है परन्तु वनौषधियों के क्षेत्र में जिस बहुमुखी शोध की आवश्यकता है उसके लिए विशेष प्रकार की संस्थाओं द्वारा विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता है। आज के समुन्नत वैज्ञानिक साधनों एवं प्रणालियों को अपना कर ही इस आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है। संसार के भिन्न-२ देशों में आयुर्वेद के प्रचार प्रसार की कल्पना हम करते हैं और भारतीय वनौषधियों की ओर सारे संसार की उत्सुक आंखें भी लगी हुई हैं अतः उसके सामने जिस असंदिग्ध और विशुद्ध रूप में हमें इन्हें रखना है उसके लिये योजना के दोनों अंशो का कार्यान्वय अनिवार्य है।

अन्त में प्रस्तुत पुस्तक और उसके यशस्वी कर्मठ लेखक के विषय में कुछ कहना आवश्यक है क्योंकि मेरी दृष्टि में लेखक तथा उनकी यह कृति इस क्षेत्र में कार्य करने वालों के लिए उदाहरण भी है और चुनौती भी। सन् १९६३ में अवकाश ग्रहण करने के बाद श्री डा० द्वारकानाथ जी की सिफारिश पर केन्द्रीय मन्त्रालय से हरिद्वार यूनिट के एक सर्वेक्षण कार्यक्रम में स्वेच्छया सम्मिलित होने के लिए मुझे आमंत्रण मिला था जिसे स्वीकार करके पवालीकांटा तक इस यूनिट के कार्यकर्ताओं के साथ में गया था। उसी समय मायाराम जी से मेरा पहली बार परिचय हुआ। एक वैद्य की वनौषधियों के प्रति अद्भुत निष्ठा और कार्यक्षमता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को देखकर मुझे इनके प्रति अजीब आकर्षण हुआ। मैं अपनी योजना के सर्वेक्षण कार्यक्रम के लिये इनके ही जैसे कार्यकर्ताओं की कल्पना किये बैठा था। संयोग की बात थी कि कुछ ही दिनों बाद इसी यूनिट के साथ आई० सी० एम० आर० (I.C.M.R.) के सर्वे एण्ड सप्लाई (Survey and Supply) का जो कार्यक्रम चल रहा था मैं उसी में एक्सपर्ट आयुर्वेदिक वोटनिस्ट की हैसियत से नियुक्त हो गया। अतः पर्वतीय क्षेत्रों में कई बार साथ२ कार्य करने का अवसर मिला और एक साथ ही रहने के कारण शोध विषयक चर्चा चलती ही रहती थी। श्री उनियाल जी अन्य सहयोगी वोटनिस्ट कार्यकर्ताओं के साथ काम कर चुके थे, अतः क्षेत्र में जाने पर वनस्पतिओं के कुल एवं जाति तक का निर्णय कर लेने की ऐसी योग्यता उन्होंने प्राप्त कर ली थी जो एक वैद्य के लिये साधारणतः सम्भव नहीं मानी जा सकती। मुझे आशा है कि भविष्य में पर्वतीय वन्य प्रदेशों में कहीं भी और किन्हीं भी दुर्गम स्थानों में जाकर कार्य करने के लिए उपयुक्त साधनों और सुविधाओं की व्यवस्था होती रहेगी और उनके उपयोग की निर्वाध स्वतंत्रता इन्हे मिलती रहेगी तो इनका कार्य और कृतियां और भी उत्कृष्ट रूप में सामने आती ही रहेंगी।

प्रस्तुत पुस्तक में उत्तराखण्ड गढ़वाल की वनौषधियों का भौगोलिक वितरण, स्थानीय नाम और ग्रामीण चिकित्सकीय प्रयोग, हिन्दी विज्ञान शब्दावली के द्वारा उनका आकृतिक वर्णन, अंतर्राष्ट्रीय लैटिन नामों का निर्धारण उपलब्ध क्षेत्रीय सूचनाओं के आधार पर यथासम्भव शास्त्रीय नामों के निर्णय का प्रयास किया गया है। अब तक के अनिर्णित और अज्ञात द्रव्यों के विषय में जो सुझाव दिये गये हैं वे विद्वानों द्वारा विचारणीय हैं। वनौषधि के आकृतिक वर्णन में कुछ सुधार अपेक्षित हैं जिनके बिना यह अंश कहीं अनावश्यक और कहीं भ्रमोत्पादक भी हो सकता है, अतः भविष्य में निम्नलिखित सुधार किये जाने चाहिए :—

१. सर्व सामान्य के लिये परिचित एवं उपयोगी पेड़ पौधों के विस्तृत वर्णन के स्थान में सांकेतिक वर्णन ही पर्याप्त हैं।

२. वर्णनों में स्पष्ट और दृष्टि पड़ते ही पकड़ में आ जाने वाले लक्षणों का सकेत अवश्य होना चाहिए जो सामान्यतः बिना लेन्स के ही क्षेत्र कार्यकर्त्ता (Field workers) के पकड़ में आ सकें।

३. किसी कुल या वंश की एक से अधिक जातिओं का वर्णन करने के पूर्व उनके सामान्य लक्षणों का पहले ही उल्लेख कर देना चाहिए और उनकी जातियों में केवल विभेदक लक्षणों को प्रकाश में लाना पर्याप्त होगा।

४. वर्णनों में प्रयुक्त वैज्ञानिक शब्दावली की हिन्दी एवं अंग्रेजी की सूचियों का और शब्दों की पूर्ण परिभाषा का परिशिष्टांग में समावेश आवश्यक है। उनके सार्थक के प्रयोग का पूर्ण अभ्यास लेखक को अवश्य होना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

५. रसादि भौतिक गुणों का समावेश विवादग्रस्त शास्त्रोक्त द्रव्यों के निर्णयात्मक विवेचन और समन्वय के लिए उपयोगी हो सकता हैं और गुण धर्म सम्बन्धी शास्त्रीय उद्धरणों का समावेश भी वहीं आवश्यक हो सकता है अन्यथा वह व्यर्थ विस्तार समझा जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक में बड़े पैमाने पर हिन्दी वैज्ञानिक शब्दावली के प्रयोग का सर्वप्रथम प्रयास है अतः उपयुक्त दिशाओं में त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं परन्तु भविष्य में सुधार भी आवश्यक हैं। अन्त में कौंसिल के अधिकारियों को जिन्होने इस पुस्तक को प्रकाशित करके लेखक का उत्साह बढ़ाया है और अन्य कार्यकर्ताओं के लिए इस पुस्तक द्वारा मार्गदर्शन का कार्य किया है उसके लिए हमारा उनको हार्दिक धन्यवाद है।

दिनांक ३१ मई, १९७३

बलवन्त सिंह
वाराणसी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लेखक का निवेदन (प्राक्कथनः)

मनुष्य शरीर के प्रादुर्भाव के साथ ही रोगों की उत्पत्ति हुई, इसलिये यह कह सकते हैं कि रोग उतने ही पुराने हैं—जितनी कि मनुष्य देह। विभिन्न कालों और सामाजिक परिस्थितियों में युद्ध और शान्ति की दशा में मनुष्य ने अनेक प्रकार के रोगों का सामना किया। इन रोगों की उत्पत्ति के साथ ही एवं कुछ समय पश्चात् अन्वेषकों ने इनके उपचारों की खोज प्रारम्भ की। अतः यह कहना असंगत नहीं होगा कि चिकित्सा शास्त्र उतना हीं पुराना है जितना कि मानव जाति का इतिहास।

यह सर्वविदित है कि आयुर्वेद अथर्ववेद का उपांग है जिसमें कि वनौषधियों का वर्णन मिलता है। ज्यों-ज्यों विज्ञान की जानकारी बढ़ने लगी, त्यों-त्यों इस विषय की आवश्यकतायें बढ़ती गईं और धीरे-२ उपरोक्त विज्ञान से एक स्वतन्त्र आयुर्वेद शास्त्र का विकास होता गया। प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार आयुर्वेद शास्त्र के पिता स्वयं ब्रह्मदेव हैं, तथा मनुष्य जाति में इस विज्ञान का प्रसार दक्षप्रजापति के द्वारा हुआ। दक्षप्रजापति के बाद अश्विनीकुमार आयुर्वेद चिकित्सा में पारंगत हुये। उस चिकित्सा काल की कार्यकुशलता इस प्रकार की रही। यथा च्यवन ऋषि को पुनः नवयौवन की प्राप्ति, कटे हुये शिर को पुनः जोड़ देना, एवं कटी हुई टांग के अभाव में लोहे की टांग लगाना, आदि कतिपय विशेषतायें संहिता काल में देखी जाती हैं। उस काल की चिकित्सा विशेष रूप से वनौषधियों के द्वारा ही बाह्य एवं आभ्यन्तर उपचार के रूप में की जाती थी। जिसका ह्रास काल के कुप्रभाव से धीरे-२ होता गया।

जहाँ तक द्रव्यगुण विज्ञान का विषय है वह वैदिककाल से आरम्भ होकर संहिताकाल, यथा चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्ठाङ्ग संग्रह, अष्ठाङ्गहृदय, काश्यपसंहिता, हारीतसंहिता, भेलसंहिता, शारङ्गधरसंहिता, एवं इन संहिताओं के टीकाकारों जैसे डल्हण, चक्रपाणि, गंगाधर, अरुणदत्त, आठय, जेज्जट, इन्दु, भट्टार-हरिशचन्द्र, शिवदास सैन आदि के टीकाओं में विकीर्ण रूप से रहा। इसी प्रकार निघण्टुग्रन्थों में कैय्यदेव निघण्टु, धन्वन्तरि निघण्टु, राज निघण्टु, मदनपाल निघण्टु, शालिग्राम निघण्टु, भावप्रकाश निघण्टु आदि निघण्टुओं में द्रव्यों का संग्रह मिलता है। विगत चार सौ वर्षों के बाद द्रव्यगुण विज्ञान में आधुनिक समन्वयात्मक दृष्टि से भी श्री भगीरथ स्वामी, आचार्य यादव जी, श्री वैद्य बापालाल, श्री ठा० बलवन्त सिंह, एवं आचार्य प्रियव्रत शर्मा आदि विद्वानों ने कतिपय द्रव्यगुण विज्ञान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सम्बन्धी ग्रन्थ प्रकाशित किये। इस प्रकार उक्त इतिहास के अध्ययन से विदित होता है कि संहिताकाल के बाद निर्मित निघण्टुओं तथा संहिताग्रन्थों में उपलब्ध द्रव्यों की टीकाओं के कई स्थलों पर परस्पर समन्वय न होने से, वनस्पतियों के नाम रूप तथा ज्ञान एवं पहिचान में संदिग्धता का सूत्रपात होता गया और अनेक द्रव्य कालान्तर में संदिग्ध बन गये।

अनेकार्थ पर्याय एवं टीकाओं में मतभेद होने के कारण भी इन द्रव्यों के निर्णय करने में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती गई, जिसके फलस्वरूप आज भी इन द्रव्यों का निर्णय करना कठिन हो गया है।

वेद तथा संहिताग्रन्थोंमें वर्णित अनेकों दिव्यौषधियाँ, सोम, लक्ष्मणा, संजीवनी विशल्यकर्णी आदि अपरिचित एवं दुष्प्राप्य होने से अज्ञात सी हैं। इसके अतिरिक्त कतिपय वनस्पतियों के सहज प्राप्त न होने से, वास्तविक द्रव्यों के अभाव में प्रतिनिधि द्रव्यों का प्रचलन आरम्भ हो गया तथा वास्तविक द्रव्यों की खोज से लोगों का ध्यान धीरे-२ हटता गया। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक कुलों की वनौषधि जातियों में द्रव्यों के रूप एवं गुणों में न्यूनाधिक समानता होने के कारण धीरे-२ वैद्यवर्ग अभाव एवं प्रतिनिधि द्रव्यों को वास्तविक द्रव्य मानने लग गये। यथा—वत्सनाभ-शृङ्गिक, सोमराजी-वाकुची, लोध्र एवं तिल्वक, अरलू एवं श्योनाक, कार्णिकार-आरग्वध आदि द्रव्य इनके उदाहरण हैं, इसके अतिरिक्त अनेकार्थ पर्याय भी द्रव्यों के निर्णय करने में बाधक हैं जैसे अमृता, पयस्या, श्यामा आदि द्रव्य अनेकार्थ सूचक हैं।

इन द्रव्यों के प्रत्यक्ष ज्ञान के अभाव से वनौषधि सम्बन्धी ज्ञान का क्रमिक विकास नहीं हो सका, जिसके फलस्वरूप वैद्यवर्ग को पंसारियों पर ही आधारित होना पड़ा। इसके साथ ही वनौषधि संग्रहकर्ता एवं विक्रेताओं ने भी शास्त्रीय ज्ञान के अभाव में एवं धनलोलुपता के कारण वास्तविक वनस्पति के स्थान पर अन्य सुलभ द्रव्य एवं उस द्रव्य से मिलते-जुलते द्रव्यों का विक्रय प्रारम्भ कर दिया। इन सभी उपर्युक्त कारणों से शास्त्रीय द्रव्यों की सही पहिचान एवं निर्णय करना कठिन हो गया। अतः इन सभी कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए हमें महर्षि चरक के बताये हुये सिद्धान्तों का अनुकरण करना होगा। जंगली-जातियों, भेड़ बकरी पालने वाले एवं आदिवासियों को अपना गुरु मानना होगा। उन लोगों के माध्यम से लोक में प्रचालित योग, स्थानिक द्रव्यों के नाम एवं किम्वदन्तियों का संग्रह करना होगा, इसी माध्यम से अज्ञात एवं कतिपय विवादास्पद द्रव्यों के संदिग्धता का निर्णय हो सकेगा। क्योंकि इस भूमण्डल में जो भी द्रव्य है वह औषधमय है, उस द्रव्य का उपयोग कब और कैसे करना है यह सूझ चिकित्सक की बुद्धि-कौशल पर निर्भर करता है। यथा "नानौषधिभूतं जगति किञ्चिद् द्रव्यमुपलभ्यते तां तां युक्तिमर्थं च तं तमभिप्रेत्य" (च० सू० अ० २६") क्योंकि सैकड़ों ऐसी चमत्कारिक वनस्पतियाँ लोक में, साधुओं एवं आदिवासियों

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

के पास हैं, जिनकी सही पहिचान एवं निर्णय करना शोधकर्तााओं का परमकर्तव्य है।

इन सभी कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए, लेखक ने उत्तराखण्ड गढ़वाल के पार्वत्य प्रदेशों एवं वनों का सर्वेक्षण कार्य लगभग ८ वर्ष तक किया, जिसका विवरण "उत्तराखण्ड वनौषधि दर्शिका" (सचित्र), नामक इस पुस्तक में प्रकाशित किया है। इस सर्वेक्षण कार्यकाल में कुछ नवीन द्रव्यों की खोज एवं प्रचलित अष्ट वर्ग का नाम, रूप, परिचय एव संदिग्व द्रव्यों का निराकरण श्री ठा० बलवन्तसिह वनस्पति विशेषज्ञ के सहयोग से दूर करने का प्रयास किया गया है जिन पर कि विद्वानों एवं शोधकर्ताओं को विचार करना है। शीर्षक पुस्तक में जिन नवीन द्रव्यों की ज़ानकारी मिली, उसकी सूची इस प्रकार से है।

(प्रचलित अष्ट वर्ग)

१.	जीवक	*Microstylis muscifera* Ridley
२.	ऋषभक	*Microstylis wallichii* Lindl.
३.	काकोली	*Roscoea procera* Wall
		Roscoea alpina Royle
४.	क्षीरकाकोली	*Lilium polyphyllum* Don
५.	मेदा	*Polygonatum verticillatum* Allioni.
६.	महामेदा	*Polygonatum cirricifolium* Royle.
७.	ऋद्धि	*Habenaria intermedia* Don.
८.	वृद्धि	*Habenaria* Sp.
९.	काकादनी	*Cardiospermum halicacabum* L.
१०.	कुरवक	*Rhododendron arboreum* Sm.
११.	तिलक	*Wendlandia exerta* Dc.
१२.	तिल्वक	*Viburnum nervosum* Don.
१३.	भिल्लोटक	*Euonymus tinges* Wall.
१४.	मुरामांसी	*Selinum tenuifolium* Wall.
१५.	भूतकेशी	*Selinum vaginatum* Clarke
१६.	शिवमल्ली	*Osmanthus fragrans* Lour.
१७.	सप्तला	*Euphorbia pilosa* Linn.
१८.	अधोगुडा-या कञ्चुकी	*Euphorbia acaulis* Roxb.
१९.	सम्माव्य निर्बिषी	*Polygonum rumicifolium* Royle.
२०.	सैरेयक	*Rhododendron anthopogon.* D. Don.
२१.		*Rhododendron campanulatum* D. Don
२२.	स्थौणेयक	*Taxus baccata* Linn.
२३.	हपुषा	*Casearia tomentosa* Roxb.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२४. भेड़गन्धा *Saussurea gossypiphora* Don.
२५. गिल्योडय *Ceropegia bulbosa* Roxb.
२६. रुद्रवन्ती *Astragalus candolleanus* Royle.
२७. चण्डा *Angelica archangelica* Linn.

इसके अतिरिक्त उन द्रव्यों की भी जानकारी इस पुस्तक में दी गई है, जिनका प्रयोग स्थानिक ग्रामीण लोग करते हैं। लोक में प्रचलित द्रव्यों की जानकारी भी विशेष महत्व की है जिनका विवरण संहिता एवं निघण्टु ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं है जो कि रासायनिक परीक्षणों की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में लगभग पांच सौ द्रव्यों की जानकारी दी गई है, जिनका कि संक्षिप्त आकृतिक वर्णन, आदि परिचय आधुनिक वैज्ञानिक क्रम से दिया गया है। इस क्रम में, द्रव्यों के संस्कृत एवं स्थानिकनाम, लैंटिननाम, आकृतिक वर्णन, पुष्पकाल, प्राप्तिस्थान एवं स्थानिक प्रयोग दिये गये हैं। सभी संग्रहीत द्रव्यों के नमूने वनौषधि सर्वेक्षण एक्क, केन्द्रीय अनुसंधान परिषद् भारत सरकार (सी. सी. आर. आई. एम. एच.) के वनौषधि संग्रहालय रीजनल रिसर्च सेन्टर, आयुर्वेद झांसी उत्तरप्रदेश में सुरक्षित हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्तराखण्ड गढ़वाल का भौगोलिक परिचय

उत्तराखण्ड डिविजन का निर्माण भारत पर चीन के आक्रमण के कारण से एवं पार्वत्य प्रदेशों के विकास हेतु २४ फरवरी १९६० को हुआ और उत्तरकाशी, चमोली, पिथौरागढ़, इन तीन सीमान्त जिलों का निर्माण हुआ। यह उत्तर प्रदेश राज्य का पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। अतः यहाँ की भौगोलिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये राज्य सरकार को विशेष कार्यक्रम अपनाने पड़े। इस पर्वतीय डिविजन का क्षेत्रफल लगभग ९,३३३ वर्गमील है और आबादी ६५० लाख के लगभग है।

इस बड़े क्षेत्र में से "उत्तराखण्डवनौषधि दर्शिका" नामक पुस्तक में वनौषधि सर्वेक्षण हेतु उत्तरकाशी, टिहरी गढ़वाल, चमोली, पौड़ी गढ़वाल, आदि जिला एवं देहरादून के पहाड़ीवन, चकराता और शिवालिक वनखण्ड का कुछ भाग लिया गया है। इस क्षेत्र के वनौषधि सर्वेक्षण की योजना केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्रालय भारत सरकार के स्वदेशी चिकित्सा-पद्धति विभाग द्वारा की गई, जिसके फलस्वरूप नवम्बर १९६२ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में सर्वेक्षण एकक् की स्थापना हुई तथा उपर्युक्त जिलों के वनों का सर्वेक्षण कार्य प्रारम्भ किया गया जो लगभग आठ वर्ष तक चला।

उत्तराखण्ड हिमालय की सीमायें एवं उपादेयता

यह उत्तराखण्ड हिमालय उत्तर में स्थित हैं जिसे किकवियों ने देवताओं की आत्मा का प्रतीक माना है। इसी हिमालय को कवि कालिदास ने नगाधिराज कहकर व्यक्त किया है।

यथा—अस्त्युत्तरस्यां दिशिदेवतात्मा, हिमालयोनामनगाधि राजः

"कुमारसम्भव सर्ग १"

यह नगाधिराज हिमालय जितना सुन्दर है उतना ही विस्तृत एवं वनौषधियों के लिए अथाह भण्डार से पूर्ण भी है। इन वनौषधियों के साथ ही इन घाटियों में अनेक प्रकार के खनिज, एवं जान्तव मृग कस्तूरी, मनाल, आदि विभिन्न जान्तव द्रव्य पाये जाते है।

नगाधिराज हिमालय को प्राचीनों ने पांच खण्डों में विभक्त किया है। यथाः—

खण्डा पञ्च हिमालयस्य कथिता, नैपालकूर्माञ्चलौ
केदारोऽथ जलन्धरोऽथ रुचिर, कश्मीर संज्ञोत्तिमः ॥

(केदारखण्ड)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१. नैपाल,
२. कुर्माचल
३. केदारखण्ड,
४. जालन्धर (पंजाब हिमाचल)
५. काश्मीर।

(१) केदारखण्ड को उत्तराखण्ड भी कहते हैं। इस खण्ड की सीमायें हिमाचल प्रदेश, नैपाल, कुर्माचल, तिब्बत आदि की पर्वतमालाये बनाती हैं, जिसमें यमुना, गंगा, आदि नदियाँ बहती हैं। यही केदारखण्ड गढ़वाल के नाम से भी जाना जाता है। जो कि शैव प्रधान देश है। यही प्रदेश ऋषि-महर्षियों की तपोभूमि रही है। यही प्राचीनों का आदि देश है। इसी केदारखण्ड में अलकापुरी, ब्रह्मपुरी, नन्दनवन मानसरोवर आदि स्थान है और यही से ब्रह्मा के मुख से वेदों का आविर्भाव हुआ था। इस प्रदेश का गढ़वाल नामकरण महाराजा अजय पाल के द्वारा चौदहवीं शताब्दी में हुआ। प्राचीन काल में यहाँ पर अनेक शिक्षण केन्द्र थे जिनमें निम्नलिखित मुख्य हैं। यथा—बद्रीनाथ के पास सरस्वती के तट पर व्यास एवं जैमनी ऋषि का आश्रम है। यहाँ पर महर्षि व्यास ने बैठकर महाभारत एवं अठारह पुराणों की रचना की। कश्यप एवं चरक का बद्रीनाथ एवं गन्धमादन पर्वत पर, वशिष्ठ एवं अरुन्धती का हिमदाश्रम में, जमदग्नी का उत्तरकाशी के पास, गर्ग का द्रोणागिरी में, मनु का माना में, अगस्त्य एवं गौतम का मन्दाकिनी के तट पर, पराशर का यमुनोत्री के पास, भरत एवं परशुराम का उत्तरकाशी में, भृगु का केदार कांटा में, अत्री एवं अनुसुया का गोपेश्वर आदि स्थानों पर अनेकों विद्यापीठ विद्यमान थे, जो कि भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्तराखण्ड हिमालय का प्राकृतिक सौन्दर्य

प्राकृतिक सौन्दर्य एवं धार्मिक दृष्टि से भी यह खण्ड वैदिककाल से लेकर आज भी सभी तीर्थों से आगे है। इस उत्तराखण्ड में बद्रीनाथ, केदारनाथ, तुंगनाथ, त्रिजुगीनारायण, रुद्रनाथ, मदमहेश्वर, गंगोत्री, गोमुख, जमनोत्री, हेमकुण्ड, सह—स्त्रताल, वासुकीताल, वसुधारा, विरहीताल, डोडीताल, मानसरोवर, श्रीकंठ, भृगुशैल, तपोवन, नन्दनवन, पंवालीकांटा, खतलिङ्ग, फूलों की घाटी, धौली घाटी, मलारी, नीतीपास, हरकीदून, आदि कतिपय रम्य स्थान हैं।

यह हिमालय भारतवर्ष के मस्तक का चमकता हुआ मुकुट हिन्दू जाति का उत्तुगं अभिमान, पूर्वजों का अमिट स्मारक स्तूप, देवताओं की लीलापूर्ण भूमि एवं तीर्थों का भण्डार है। इस हिमालय के प्राकृतिक सौन्दर्य का यशोगान करते हुये व्यास एवं कालिदास ने भी अपनी लेखनी को कृतार्थ किया। हिमालय की चोटियों की गगनचुम्बी उच्चता उसकी सनातन हिमरेखाओं की निर्मल पवित्रता, उसकी गहरी घाटियों की स्वर्गीय सुषमा, उन घाटियों में प्रवाहित होने वाली कल-कल नादिनी स्वच्छ धाराओं की उत्ताल तरगें और झरने, प्रपातों की शोभा भारतवासियों के हृदय में आदर्श जमाने की अमोघ शक्ति रखती है।

जिन पूर्वजो आचार्यों, महर्षियों तथा राजाओं ने भारतवर्ष में अनेक प्रकार के धार्मिक, राजनीतिक, संग्रामों में समय समय पर अनेक प्रकार के उलटफेर करके, अपनी जाति, धर्म एवं देश की केवल रक्षा ही नहीं की अपितु भारत का आदर्श जीवन बनाया था, उन्होंने आरम्भ से ही इसी हिमालय के शिखरों की छाया में एवं कलकल नादिनी निर्मल सरिताओं एवं नदियों के सङ्गमों में, देवदारु के सघन वनों, एवं गुफ़ाओं में, हिमनदियों के समीप, बादलों से कल्लोल करने वाले कठिन चट्टानों में बैठकर लोकहित्त तपश्चर्या करके अध्यात्मबल का संचय किया था।

युरोपियन विद्वानों एवं शास्त्रवेत्ताओं का कहना है कि हिमालय की जलवायु में कोई विषाक्त कीटाणु पैदा नहीं हो सकता।

उत्तरी हिमालय की जलवायु एवं वनसम्पदा

इस देश की सैकड़ों वर्ष पहले की भौगोलिक परिस्थिति के विषय में केवल हमारा अनुमान ही नहीं, बल्कि पुराणों में भी इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि सैंकड़ों वर्ष पहले यह सारा ही देश सघनवनाच्छादित था। वनों का सघन होना इसका मुख्य कारण यह भी हो सकता है कि प्राचीनकाल से ही भारत में वृक्षा-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोपण की परम्परा चली आई है जिसका सीधा सम्बन्ध धर्म अर्थ, काम और मोक्ष से है। शारङ्गर्धर संहिता में स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि अपुत्रवान् व्यक्ति परलोक ऐषणा के हेतु मार्ग में वृक्षों का रोपण करे तो बहुत बड़ा पुण्य होता है, इस तरह के कतिपय प्रमाण मिलते हैं। इसी काल में यहाँ पर किरात्त, पुलिन्द, तगण आदि जाति और ऋषि-मुनिगणों के अतिरिक्त सर्वसाधारण के लिये यह स्थान अगम्य था। सम्भवतः यही कारण था कि हिमालय प्रदेश के घने वन, औषधियों के लिए अब भी प्रसिद्ध हैं। यथा—

हिमवान् औषधिभूमिनां श्रेष्ठम् "चरक"

इस प्रदेश के पहाड़ी वनों को ऊँचाई की दृष्टि से निम्न भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(१) ट्रोपिकल एवं सबट्रोपिकल ज़ोन (उष्णकटिबंधी प्रदेश) १,५०० मीटर की ऊँचाई तक

(२) टेम्प्रेट ज़ोन (शीतोष्ण कटिबन्ध प्रदेश)—३,००० मीटर की ऊँचाई तक

(३) एलपाईन ज़ोन, एवं सबएलपाईन ज़ोन (अल्पीय प्रदेश), ३,३००मीटर से ४,२०० मीटर की ऊँचाई तक

(१) **ट्रोपिकलज़ोन**—यह भाग देहरादून एवं शिवालिक वनखण्ड से प्रारम्भ होता है, जिसमें मैदानी एवं पहाड़ी वनस्पतियां एवं जन्तु पाये जाते हैं। इन जीव जन्तु एवं वनों की सुन्दरता में भारतवर्ष का कोई भाग शायद ऐसा होगा जो शिवालिक के समतुल्य हो।

इन वनों में प्रायः काञ्चनार, मालझन, धन्व, धामिन, शिरीष, विल्व, कम्पिल्लक् हरीतकी, विभीतक, आंवला, वासा, हारसिंगार, आवर्तकी, असन, धव, अखोड़िया धातकी जंगलीवेर, शाल आदि वृक्ष पाये जाते हैं।

९०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः तेजवल, हिंसालू किनगोड़, थंथार, चीड़, करौन्दा, ज्योतिष्मती, मालझन, धातकी, कमीला, मञ्जीठ, ममीरी, वांझ, अखोड़िया, पद्राख, कटः फल आदि वृक्ष पाये जाते हैं।

(२) **टेम्प्रेटज़ोन**—यह स्थान १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक माना जाता है। इसमें चीड़ के भी घने वन पाये जाते हैं जोकि २,९०० मीटर की ऊँचाई तक चले गये हैं। यहाँ पर कुछ वृक्ष सदा हरे भरे रहते हैं जोकि सर्वदा शीतल पवन प्रदान करते हैं यही कारण है कि यह स्थान राजयक्ष्मा (T. B.) के लिये उपयुक्त माना जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन ऊँचाई के वनों में प्रायः वांझ (*ock*) खरसू, मोरु, कट:फल, अनियार, वुरांस, पांगर, कैल, राई, देवदार, तेजपत्र, पद्राख, दारुहरिद्रा की कई जातियाँ, हिंसालू की अनेक जातियाँ एवं तालीसपत्र थुनेर आदि वृक्षों की जातियाँ पाई जाती हैं।

वन्य जन्तुओं में इन वनों में भालू, बाघ, बारहसींगा, घोल्ड, कारवड़ एवं मनाल आदि जन्तु पाये जाते हैं।

२,१०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,३०० मीटर की ऊँचाई तक देवदारु के विशाल प्रसिद्ध वृक्ष पाये जाते हैं।

देवदारु के पुष्पों से पीले रंग का पराग निकलता है, जिसे ग्रामीण लोग पिढांई (रोली) कहते हैं और मस्तक पर लगाते हैं।

(३) **एलपाईन एवं सबएलपाईन ज़ोन**—यह भाग एलपाईन का ३,३०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ४,५०० मीटर की ऊँचाई तक चला गया है, एवं सबएलपाईन वाले वन ३,३०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः माने जाते हैं। इन वनों में कस्तूरी मृग पाये जाते हैं। नर जाति के कस्तूरी मृग की नाभी से सुगन्धित (मृगमद) कस्तूरी निकाली जाती हैं। इन ढ़लानों एवं मैदानों में अनेक प्रकार के रंगीन सुगन्धित पुष्प पाये जाते हैं।

ये पुष्प खिलने पर बहुत सुन्दर लगते हैं, जो ऐसे मालुम पड़ते हैं कि मानो प्रकृति स्वयं इन उद्यानों एवं वनों की प्रहरी है। पहाड़ी एवं बर्फीले ढलानों पर भूर्ज, (वेटुला युटिलिस) ढेलू (जूनिपरसकम्यूनिस) गोगल (जूरिनामैक्रो सिफैला) कोठ्या (रोडोडेन्ड्रोन ऐन्थोपोगेन) सिमरु (रोडोडेन्ड्रोन लेपिडोटम) जटामांसी (नाइडोसटेकीस जटामांसी) पोटेन्टिला, जिरेनियम, प्रिमुला, कैल्था, रैननकुलस, सेक्सीप्रिरिगा, पोलेगोनम आदि कतिपय विभिन्न कुलों के द्रव्य पाये जाते हैं।

३,६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ४,२०० मीटर की ऊँचाई पर विशेष प्रकार के कमल पाये जाते हैं। जिनको ग्रामीण लोग ब्रह्मकमल (ससूरिया ग्रावोलाटा, फैनकमल (ससूरिया गोसोपिफोरा) जोगीपादशाह (ससूरिया सैक्रा) कहते हैं। ५,२०० मीटर की ऊँचाई तक मनुष्य की यात्रा अत्यन्त परिश्रम के बाद ही सम्भव है। इस से आगे सनातन हिमरेखाओं के अगम्य बर्फीले चट्टानों के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। ३,००० मीटर से ४,५०० मीटर के ऊँचाई तक की पर्वत शृंखलायें सितम्बर से जून तक सदा बर्फ से ढ़की रहती हैं, किन्तु जून के बाद सितम्बर तक इन स्थानों की बर्फ पिघल जाती है।

इन घाटियों में टकनौर, भिलंग, पंवालीकांटा, हर्षिल, हरकीदून आदि स्थानों में भेड़ बकरियों के चरागाह हैं, इन चरागाहों में प्रतिवर्ष सैकड़ों बकरियाँ चरती हैं। यहाँ की घांस एवं जलवायु बकरियों के लिये उत्तम एवं स्वास्थ्यकर मानी जाती है। जुलाई से सितम्बर तक यह भाग नाना प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्पों से

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ढका रहता है। ज्यादा ऊँचाई वाले स्थानों पर शीतल बर्फीली हवा लगने से शिरः शूल एवं चक्कर आने लगते हैं। जिस का कि उपचार सत्तू एवं खटाई आदि का सेवन करने से करते हैं।

जलवायु

जलवायु के आधार पर इस प्रदेश को तीन भागों में बांटा जा सकता हैं

१. गर्मी का मौसम,
२. चौमासा (वर्षाऋतु)
३. शीतकाल।

सितम्बर से मार्च तक बर्फ़ पड़ने के कारण इन स्थानों पर अधिक शीत रहती हैं। इस पर्वतीय प्रदेश में प्रतिवर्ष अधिक वर्षा होती है। इस प्रदेश की वर्षा का औसत २५" से ४५" तक है, किन्तु कभी-२ अधिक वर्षा होने के कारण रेनगेज भी इससे ऊपर तक बढ़ जाता है। बर्फ गिरने का कोई खास पैमाना नहीं है। इन घाटियों की भूमि प्रायः पठारी, ढलवां व पहाड़ी है। जिसमें विशेषकर झंगोरा (सांवां) क्रोद्रव (कोदो) मंडवा, आलू, सोयाबीन, चौलाई, कोट्टू, धान, गेंहूँ की खेती की जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गढ़वाल की घाटियाँ एवं नदियाँ

(१) **उत्तरकाशी**—इस जिले में दो प्रमुख नदियाँ हैं भागीरथी एवं जमुना। भागीरथी गोमुख से प्रारम्भ होकर टिहरी में भिलंगना से मिलकर देवप्रयाग में अलकनन्दा से सङ्गम करती है और यहां से भागीरथी का नाम गङ्गानदी हो जाता है। भागीरथी के उद्गम स्थान से लेकर देवप्रयाग के बीच वाला स्थान भागीरथी घाटी कहलाती है। जिसमें देवप्रयाग, टिहरी. धरासू, उत्तरकाशी, भटवारी, रैंथल, डोडीताल, दयारा, गंगनानी, अमरधार, सुक्की, हर्षिल, मुखवा, भैरोंघाटी, नीलंग, गंगोत्री, रुद्रगङ्गा, भूजवन, गोमुख तपोवन एवं नन्दनवन आदि स्थान हैं।

जमुना नदी—यह नदी जमुनोत्री से प्रारम्भ होकर बड़ा कोट, त्यूणी एवं टौन्स नदी से सङ्गम करती हुई चौड़पुर एवं हिमाचल प्रदेश की सीमा बनाती है, तथा अन्त में इलाहाबाद में गङ्गा नदी से मिल जाती है। चौहड़पुर से लेकर जमनोत्री तक वाला भाग जमुनाघाटी कहलाता है। इसमें कालसी चकराता, टौन्स, देववन, बड़ाकोट, हरकीदून, जमनोत्री जौनसार एवं हनुमानचट्ठी आदि स्थान हैं।

नदियाँ—भागीरथी, जमुना, टौन्स, जाड़गङ्गा, वरुणा, असी, जालन्धरी, ज़लकूर, सियागाठ, भिलंगणा, एवं तमसा आदि नदियाँ हैं।

हिमश्रृङ्ग—चौखम्बा, सतापंथ, कुनाली वन्दरपुच्छ एवं हनुमानकांटा आदि शैल हैं।

(२) **टिहरीगढ़वाल**—इस जिले की भिलंगना प्रसिद्ध नदी है यह नदी खतलिङ्ग से निकलती है एवं पिलखी में बालगङ्गा से सङ्गम करती हुई टिहरी में भागारथी से मिल जाती है। इस नदी के उद्गम स्थान से लेकर टिहरी के बीच वाला भाग भिलंगनाघाटी कहलाती है। इसमें टिहरी, गडोलिया घोन्टी, घनशाली पिलखी, इन्द्रोला, वणचूरी, माणीकनाथ, घुत्तू, पौवागी, दुफन्द, पंवालीकांटा, ताली, किनकोलीयाखाल, सहस्रताल, महस्रताल, खतलिङ्ग कल्याणी, गङ्गी, पिनस्वाड़, आदि स्थान हैं।

इस जिले में जिन अन्य स्थानों का सर्वेक्षण किया गया उसमें प्रतापनगर, मुखेम, टिहरीवनखण्ड, सकलानारेन्ज चम्बा, कांणाताल, गजा, धनौल्टी, मसूरी आदि हैं।

नदियाँ—भिलंगना तथा बालगङ्गा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३) **चमोलीगढ़वाल**—इस ज़िले में दो प्रमुख नदियाँ बहती हैं, जो अलकनन्दा एवं मन्दाकिनी है। मन्दाकनी चोरावाड़ीताल (केदारनाथ) से प्रारम्भ होकर रुद्रप्रयाग में अलकनन्दा से मिल जाती है। रुद्रप्रयाग से लेकर केदारनाथ के बीच का भाग मन्दादिनी घाटी कहलाती है। इसके बीच में रुद्रप्रयाग, अगस्त्यमुनी, कुण्ड, गुप्तकाशी, उखीमठ, तुंगनाथ, रुद्रनाथ, कालीमठ· मदमहेश्वर, रामवाड़ा, फाटा, त्रिजुगीनारायण, गौरीकुण्ड, केदारनाथ वासुकीताल, हथनी आदि मुख्य स्थान आते हैं।

अलकनन्दा—वसुधारा के समीप से प्रारम्भ होकर एवं माना में सरस्वती से सङ्गम करती हुई तथा सोनप्रयाग में धौली नदी को मिलाती हुई, कर्णप्रयाग में पिंडार एवं विरही को मिलाती हुई एवं रुद्रप्रयाग में मन्दाकिनी को मिलातीं हुई, फ़िर देवप्रयाग में अलकनन्दा भागीरथी से मिलकर यह गङ्गानदी हो जाती है।

इस नदी के बीच का भाग अलकनन्दा घाटी कहलाता है जिसमें श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, पीपलकोठी, जोशीमठ, सोनप्रयाग, धौलीघाटी, मलारी, नीनीपास, पाण्डुकेशर, फूलों की घाटी, हेंमकुण्ड, बद्रीनाथ, वसुधारा आदि स्थान हैं।

नदियाँ—अलकनन्दा, मन्दाकिनी, धौली, अर्वानदी, सरस्वती, पिंडार, विरही काली एवं क्षिप्रा आदि प्रमुख नदियाँ हैं।

हिमश्रृङ्ग—नन्दादेवी, मानसरोवर, कामेट, त्रिशूल, नीलकंठ, द्रोणागिरी, नन्दाघुण्टी एवं कल्लाग्रेसियर है।

कृतज्ञताऽभिव्यक्ति—लेखक वनौषधि सर्वेक्षण कार्य के अनुदान एवं निर्देशन हेतु श्री डा० पी. एन. वी. कुरुप सलाहकार स्वदेसी चिकित्सा-पद्धति भारत सरकार एवं निर्देशक केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान परिषद् (सी· सी. आर· आई. एम· एच.) भारत सरकार का हृदय से आभारी है।

वनौषधि सर्वेक्षण व्यवस्था हेतु मैं, श्री ए. सी. डे· सर्वेआफिसर, वनौषधि सर्वेक्षण एकक् गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालय का आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर सर्वेक्षण कार्य की उचित व्यवस्था की।

आयुर्वेदीय एवं अज्ञात वनौषधियों के निर्णय हेतु मैं, विशेष रूप से श्री ठा० वलवन्तसिह जी का कृतज्ञ हूँ तथा समय-समय पर आपने अपने सुझाओं द्वारा एवं मेरे साथ इन स्थानों की यात्रा करके मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

वनौषधियों के निर्णय करने में जो सुझाव मुझे आचार्य प्रियव्रत शर्मा, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय वाराणसी, एवं श्रीयुत वैद्य वापालाल जी शाह के भी जो सुझाव प्राप्त होते रहे जिनके लिए मैं उनका भी आभारी हूँ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीयुत वैद्य पं० रामनारायण जी शर्मा संचालक श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद-भवन का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर भवन की ओर से वनौषधि यात्राओं की सुविधा प्रदान कर मुझे प्रोत्साहित किया।

वनौषधि नाम रूप परिचय सुविधाओं हेतु श्रीयुत आफिसर इन्चार्ज, वोटेनीब्राञ्च फोरेस्टरिसर्च इन्स्टिट्यूट, देहरादून एवं रीजनल बोटिनिस्ट, बोटेनिकल सर्वे आफ इन्डिया देहरादून का मैं आभारी हूँ, जिनके संग्रहालय में द्रव्यों के निर्णय करने में पूर्ण सहायता मिली है।

अन्त में लेखक निर्देशक सी. सी. आर. आई. एम. एच. का कृतज्ञ है, जिन्होंने इस प्रयास को प्रकाशन हेतु स्वीकार कर मेरा उत्साह बढ़ाया है।

……इति शम्……

विनीत:
वैद्य मायाराम उनियाल

दि०—१.१२.७२.
रीजनल रिसर्च सेन्टर
जोगिन्दर नगर (हि० प्र०)
वर्तमानः—
प्रभारी अधिकारी
क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र
ग्वालियर रोड झाँसी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—१

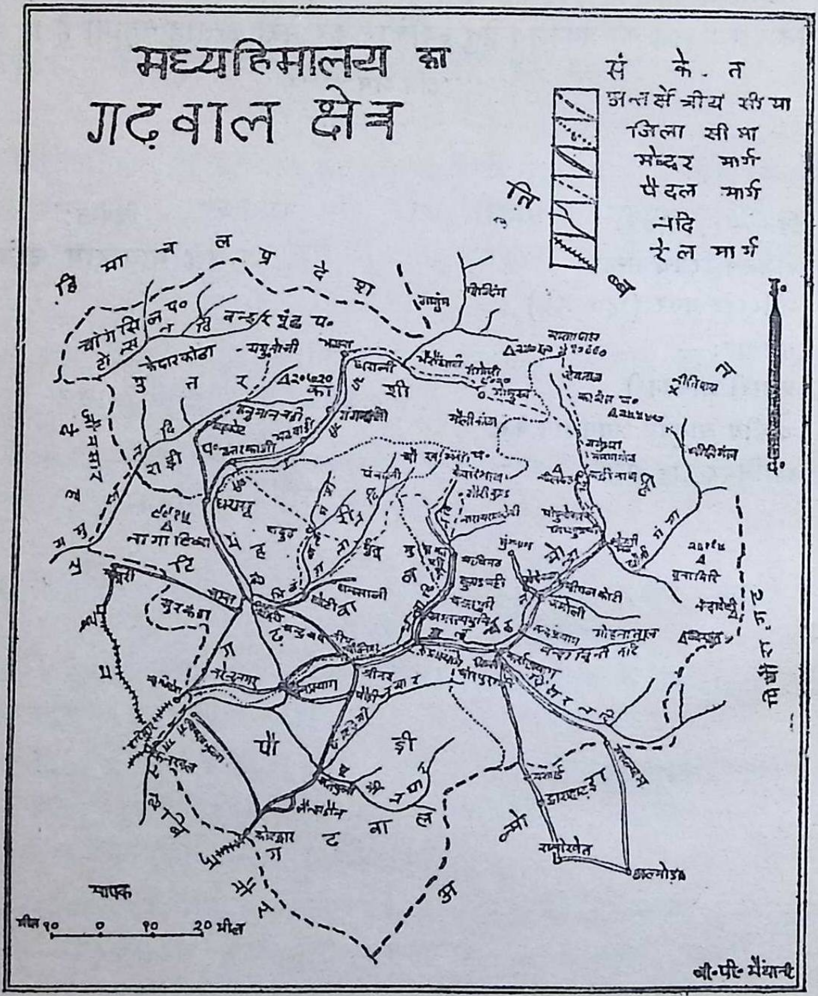

हिमालय का मानचित्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खण्ड-स्पर्मफाइटा

विभाग— आबृतवीजी (*Angiosperms*)
उपविभाग—द्विबीजपत्री (*Dicotyledons*)

कुल—*RANUNCULACEAE*

(१)—द्रव्यनाम……संस्कृत………अतिविषा
हिन्दी………अतीस
स्थानिक……अतीस, पतीस
लैटिन………*Aconitum heterophyllum* Wall.

आकृतिक वर्णन—द्विवर्षी शाक; मूल दो कन्दवाला, स्वाद में कड़वा तथा तोड़ने पर श्वेत वर्ण का; काण्ड १-३ फुट लम्बा, उर्ध्वसंस्थित; पत्र सरल, एकान्तर, कभी-कभी खण्डित; पुष्प—एक व्यास, सममित, हलका पीला बैंगनी तथा एक दल सबसे बड़ा और फणाकार; फल पञ्चकोष्ठीय, बीज पकने पर काले, चपटे एवं संख्या में १५-२० तक मूल द्वियर्षायु, श्वेत, चखने पर तिक्त।

पुष्पकाल —जुलाई, अगस्त
प्रयोज्यअंग —मूलकन्द,
संग्रहकाल —सितम्बर, अक्टूबर

प्राप्तिस्थान—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,७०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: निम्न घाटियों के घास वाले ढलानों पर पाया जाता है। यथा—भिलंगनाघाटी—पंवाली, दुफन्द, गङ्गी. खतलिङ्ग, सहस्त्रताल, ताली, किनकोलियाखाल, पिन्स्वाड़, तथा बालगङ्गा; मन्दाकिनीघाटी केदारनाथ, वासुकीताल, हथनी, मदमहेश्वर त्रिजुगीनारायण, तुंगानाथ एवं रुद्रनाथ अलकनन्दाघाटी—देववन, बद्रीनाथ, मानापास, फूलों की घाटी, धौलीघाटी—एवं नीतीपास; भागीरथीघाटी—टकनौररेञ्ज, डोडीताल, दयारा, सुक्की, रैंथल, एवं रुद्रगङ्गाघाटी; जमुनाघाटी—हरकीदून, चकराता, देववन आदि स्थानों पर।

इन घाटियों से इसका संग्रह किया जाता है जिसका व्यापार देहली, अमृतसर, देहरादून से होता है। ग्रामीण लोगों द्वारा मूल चूर्ण का उपयोग उदर शूल में किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—२

अतिविषा—*Aconitum heterophyllum* Wall

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३

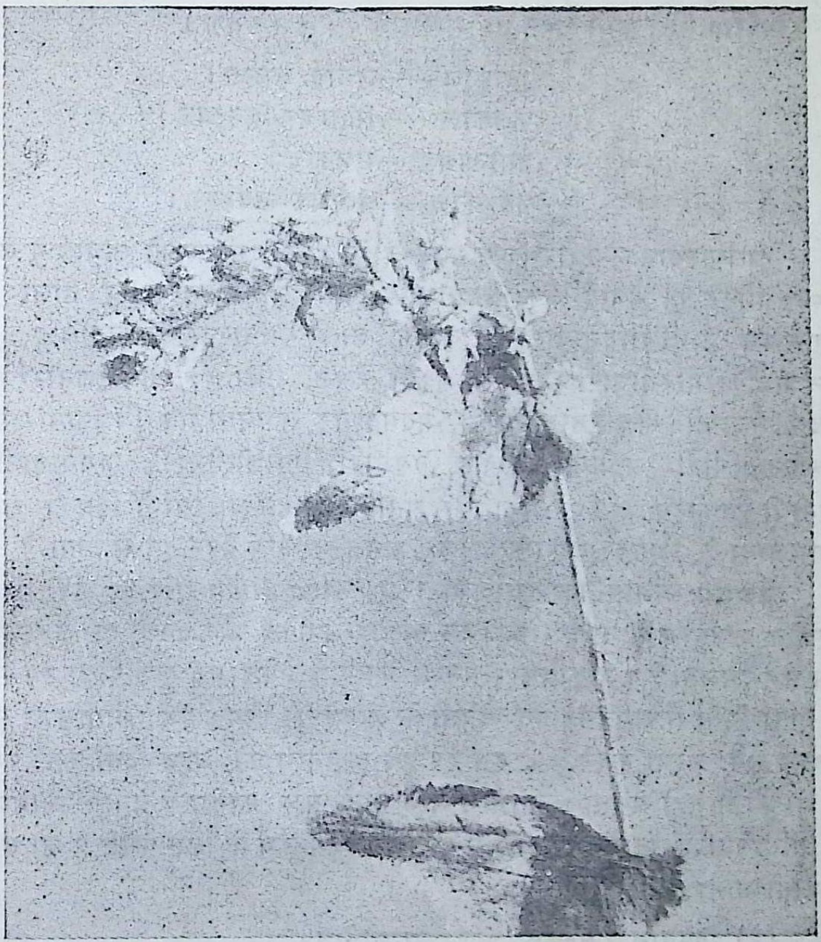

अतिविषा—*Aconitum heterophyllum* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) द्रव्यनाम……संस्कृत……वत्सनाम (प्रचलित)।
स्थानिक……मीठाविष, मोहरू।
लैटिन ……*Aconitum falconeri* Stapf.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षीय, शाक, काण्ड २" से ३½" तक लम्बा तथा उर्ध्व-संस्थित; मूल द्वि-संयुक्त, कान्दिल तथा बादामी रंग का, स्वाद में मधुर एवं जिह्वा में झनझनाहट पैदा करने वाला तथा तीव्र विषैला; पर्ण वृक्काकार, खण्डित, आधार पर हृदयाकार; पुष्प में परिदल ६ से ८ तक तथा नीले वर्ण के फल पञ्चकोष्ठीय बीज काले चपटे एवं संख्या में १५ से २० तक।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
फलकाल——सितम्बर, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग —मूलकन्द।
संग्रहकाल——अक्टूबर नवम्बर।

प्राप्तिस्थानः—उत्तराखण्ड गढ़वाल में ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः मौरु के वृक्षों की छायादार ढालों पर यह सुलभ है; भिलंगनाघाटी—राज़खर्क, ताली, पंवालीकांटा खतलिङ्ग, एव पिन्स्वाड़; भागीरथीघाटी—दयारा, सुक्की, रैथल, अमरधार, एवं टकनौररैन्ज; मन्दाकिनीघाटी—केदारनाथ, हथनी, मदमहेश्वर, तुंगनाथ एवं त्रिजुगीनारायण; अलकनन्दाघाटी—बद्रीनाथ, हेमकुण्ड वसुधारा, एवं धौलीघाटी; जमुनाघाटी—जमनोत्री हरकीदून आदि स्थानों पर सुलभ है। इन घाटियों से इसका संग्रह किया जाता है, जिसका व्यापार देहली, अमृतसर, एवं देहरादून से होता है।

वक्तव्यः—आधुनिक शास्त्रकारों ने *Aconitum ferox* Wall को शास्त्रीय वत्सनाभ माना है। आजकल बाजार में सफेद और काला दो प्रकार का वत्सनाभ मिलता है। प्राकृतिक वत्सनाभ अन्दर से सफेद एवं कुछ पीला रंग किये हुये होता है, तथा अमृतसर एवं देहली के व्यापारी गोमूत्र एवं कासीस के साथ डालकर इसे काला करते हैं। इस रंगे हुये वत्सनाभ को बहुत दिनों तक रखने पर भी कीड़ा नहीं लगता। ग्रामीण लोग इसके मूल का बाह्य प्रयोग आमवात एवं सन्धिवात में उबलते हुये घृत में डालकर दहन कर्म के लिए करते हैं जो बहुत उपयोगी माना जाता है।

(३) द्रव्यनाम…संस्कृत ……शृङ्गीविष।
स्थानिक……मोहरी।
लैटिन ……*Aconitum chasmanthum* Stapf.

आकृतिक वर्णनः— बहुवर्षी शाक, मूलकन्दिल, द्वि-संयुक्त एवं ऊपर से गोलाई लिये हुये लम्बा, काण्ड २ से ४ फीट लम्बा, उर्ध्वसंस्थित, पर्ण वृक्काकार-वर्तुल, सवृन्त, गहन में झिल्ली सदृश, पुष्प में परिदल ६-८ तक नीलेवर्ण के, फल-पञ्च-कोष्ठीय, बीज पकने पर काले रंग के एवं चपटे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४

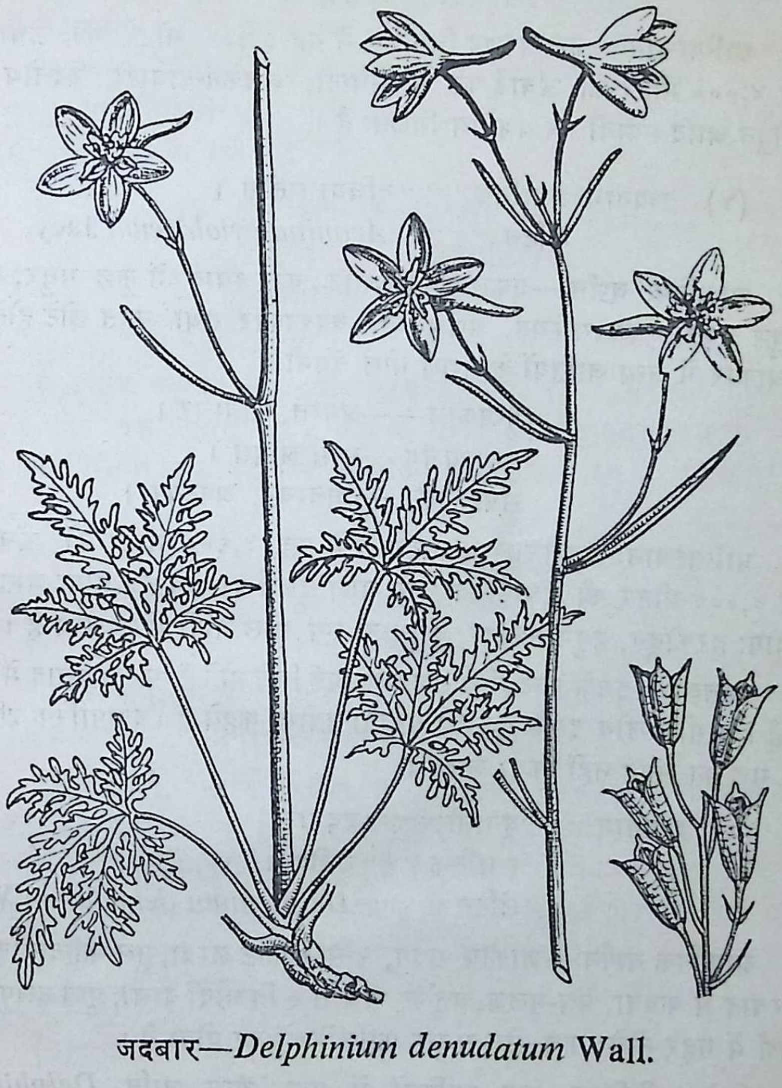

जदबार—*Delphinium denudatum* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके अतिरिक्त निम्न विषैली जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं। यथा—*Aconitum deinorrhium* Stapf. और *Aconitum balfourii* Stapf. । ये दोनों जातियाँ इन घाटियों में यत्र-तत्र होती हैं.

पुष्पकाल——अगस्त ।
फलकाल——सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग—मूलकन्द ।
संग्रहकाल —अक्टूबर ।

प्राप्तिस्थानः—उत्तराखण्ड हिमालय में यह ३,३०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ४,००० मीटर की ऊँचाई पर धौलीघाटी, अलकनन्दाघाटी, रुद्रनाथ एवं हरकीदून आदि स्थानों पर यत्र-यत्र मिलता है ।

(४) द्रव्यनाम···स्थानिक·········दुधिया अतीस ।
लैटिन ···········*Aconitum violaceum* Jacy.

आकृतिक वर्णन:—एकल-कन्दिल शाक; कन्द स्वाद में कुछ मधुर; काण्ड एक फुट लम्बा, उर्ध्वसस्थित, पर्णसवृन्त, वृक्काकार तथा बहुत छोटे होते हैं। पुष्प आकार में अन्य जातियों के सद्यश नीले बैंगनी ।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग—-मूल; औषध ।
संग्रहकाल —सितम्बर, अक्टूबर ।

प्राप्तिस्थानः—उत्तराखण्ड गढ़वाल में यह ३,६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ४,००० मीटर की ऊँचाई तक घास वाले ढालों पर यत्र-तत्र पाया जाता है। यह प्रायः हरकीदून, हनुमानकांटा, वसुधारा एवं धौलीघाटी में उपलब्ध है ।

वक्तव्यः—इसके कन्द तीस सद्यश गोलाई लिये होते हैं, परन्तु स्वाद में मधुर होते हैं। ग्रामीण लोग इसके मूल को दुधिया पतीस कहते हैं। व्यापारिक दृष्टि से इसके मूल का संग्रह नहीं किया जाता ।

(५) द्रव्यनाम········यूनानी·········जदवार ।
स्थानिक········बुंडींण ।
लैटिन··········*Delphinium denudatum* Wall.

आकृतिक वर्णनः— शाकीय पादप, २ से ३ फीट लम्बा, मूल कन्दिल, कृष्णभ और स्वाद में कड़वा, पत्र-मूलज, वर्तुल, पांच से ९ विच्छेदों वाला; पुष्प-दलपुटयुक्त एवं वर्ण में गहरे-नीले; फल-तीन संयुक्त फालिकिलों का होता है ।

इसके अतिरिक्त इन घाटियों में एक अन्य जाति *Delphinium vestitum* Wall पाई जाती हैं, जिसका तिब्बती लोग औषधीय उपयोग करते हैं ।

पष्पकाल——मई, जुलाई ।
फलकाल——अगस्त ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्यअंग—मूल, औषध।
संग्रहकाल—-जुलाई, अगस्त।

प्राप्तिस्थान:—यह वनौषधि उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक निम्न स्थानो पर उपलब्ध हैं:—भिलंगना-घाटी—वणचुरी, दोणी, घुत्तु, दुफन्द, गङ्गी, प्रतापनगर, एवं मुखेम, मन्दाकिनीघाटी गुप्तकाशी, गौरीकुण्ड, फाटा एवं उखीमढ़, भागीरथीघाटी भटवारी, रैथल, सुक्की, हर्षिल एवं डोडीताल, जमुनाघाटी, बड़ाकोट, चकराता, एवं देववन आदि स्थानों के छायादार ढालों पर सुलभ है।

वक्तव्य:—हरिद्वार एवं देहरादून की स्थानिक फार्मेसियों में इस के मूल का प्रयोग निर्विषी के नाम से किया जाता है, किन्तु आयुर्वेद की शास्त्रीय निर्विषी अभी तक निर्दिष्ठ नहीं हैं।

(६) द्रव्यनाम……संस्कृत………काण्डीर।
हिन्दी …जलधनियाँ।
स्थानिक …अगलैंण।
लैटिन ……*Ranunculus sceleratus* Linn.

आकृतिक वर्णन:—एकवर्षीय शाकीय पादप, काण्ड मृदु एवं नलिकाकार, प्राय: २ फीट तक ऊँचा, पत्र धनियाँ के पत्तों के समान कटा हुआ एवं नीचे से ऊपर तक विभिन्न आकार प्रकार के, पुष्प-सममित्त, पीले रंग का एवं फल पिप्पली के समान।

पुष्पकाल—दिसम्बर, जनवरी।
फलकाल—मार्च, अप्रैल।
ग्राह्यअंग—पंचाङ्ग।

प्राप्तिस्थान:—यह प्राय: गढ़वाल की निचली घाटियों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक जलासन्न स्थानों पर सुलभ हैं।

वक्तव्य:—धन्वन्तरि निघण्टु में यह द्रव्य सम्भवत: काण्डीर के नाम से वर्णित है तथा कहीं-२ उत्तर प्रदेश में देवकांडर या जलधनियाँ के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसका स्वरस स्फोटजनक होता है। स्थानिक प्रयोग के आधार पर इसका उपयोग प्लेग में करते हैं। यही कारण है कि कई स्थानों पर इसे प्लेग बूटी भी कहते हैं। कुछ चिकित्सक इस द्रव्य के स्वरस में पारद को घोट कर अत्यन्त दीपक भस्म तैयार करते हैं।

(७) द्रव्यनाम··स्थानिक……अगेली।
लैटिन ………*Anemone obtusiloba* D. Don.

आकृतिक वर्णन:—बहुवर्षी शाक, काण्ड ६-१२″ लम्बा रोमिल, मूलज पत्र वर्तुल, २″ चौड़े, तीन विच्छेदों से युक्त एवं दोनों पृष्ठों पर मृदुरोमिल, कुण्ठ-दन्तुर, पुष्प-नीलाभ श्वेत।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्य अंग—मूल।

प्राप्तिस्थानः—उत्ताराखण्ड गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों के छायादार स्थानों पर सुलभ है। विशेषतः देववन, चकराता, घुत्तू, कालीमठ आदि स्थानों पर यह मिलता है।

ग्रामीण लोगों का कहना है कि इसके मूलस्वरस के बदन पर लग जाने पर छाले पड़ जाते हैं।

(८) द्रव्यनाम····लैटिन······*Aquilegia vulgaris* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी मृदुरोमिल शाक, काण्ड १″-२″ लम्बा, पत्र पिच्छाकार, त्रिपत्रक एव पत्रक विच्छिन्न, पुष्प नीचे की ओर झुके हुये, बड़े, नीले बैंगनी होते हैं।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फल ——पुष्पकाल के बाद।
प्रयोज्यअंग—मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्ताराखण्ड गढ़वाल में २,१०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक पंवाली, दुफन्द, गंङ्गी आदि स्थानों पर सुलभ हैं। इसके पञ्चाङ्ग को ग्रामीण लोग विषैला मानते हैं।

(९) द्रव्यनाम···स्थानिक ·········मनीरू
लैटिन·····*Caltha palustris* Linn.

आकृतिक वर्णनः—जलीय, बहुवर्षी, बहुशाखीय शाक, काण्ड १-२ फीट ऊँचा, मूल तन्तुसम एवं पीले रंग का, पत्र मूलज, अरोमिल, वर्तुल एवं स्तम्भिक-पर्ण मूलज पर्ण की अपेक्षा छोटे और अवृन्त, पुष्प शीर्षस्थ पीत वर्ण के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल-पत्र।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्ताराखण्ड गढ़वाल में २,७०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ४,००० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः बर्फीले ढलानों पर खतलिङ्ग, सहस्त्रताल, पंवालीकांटा, केदारनाथ, बद्रीनाथ, हेमकुण्ड, हरकीदून आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोगों का कहना है कि लोग पत्र एवं मूल को भेड़-बकरियों के लिये विषैला मानते हैं।

(१०) द्रव्यनाम···यूनानी ·····उदसलीव।
स्थानिक·····चन्द्रया, ममेक।
लैटिन ·······*Paeonia emodi* Wall.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, अरोमिल शाक, काण्ड १-३ फुट लम्बा, मूल-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५

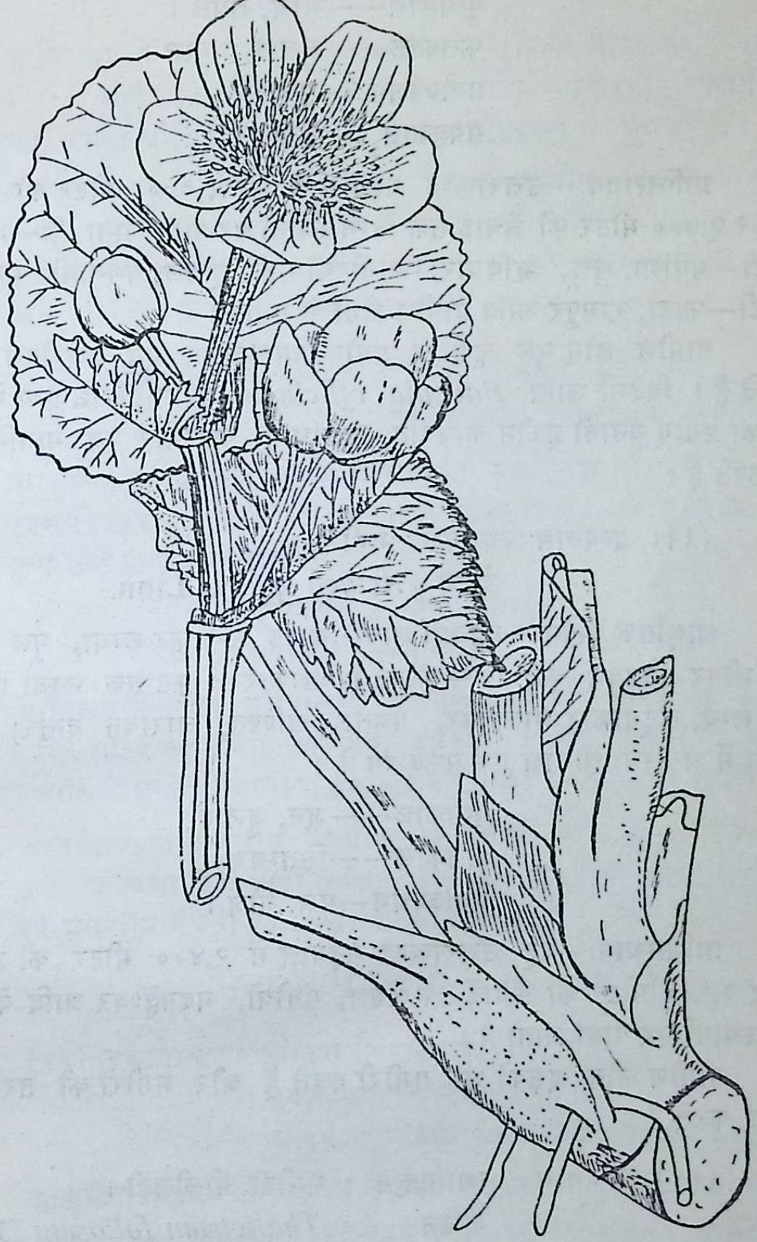

ममीरी भेद—*Caltha palustris* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कन्दिल, मांसल, १-३" लम्बा एवं गोपुच्छाकार, पत्र-भालाकार दीर्घायत, खण्डित, पुष्प व्यास में ३"-४" श्वेतवर्ण के, फल रोमिल, वृक्काकार, एवं बीज काले रंग के तथा संख्या में १५ से २० तक।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
फलकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।
संग्रहकाल —अगस्त।

प्राप्तिस्थान:—उत्तराखण्ड गढ़वाल में यह १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक निम्न स्थानों पर पाया जाता है:—भिलंगना-घाटी—गंवांणा, घुत्तू, ऋषिधार; भागीरथीघाटी, हर्षिल, गंगनानी; मन्दाकिनी-घाटी—फाटा, रामपुर आदि ग्रामीण क्षेत्रों के समीप।

ग्रामीण लोग मूल चूर्ण का प्रयोग रक्तविकार एवं व्रणरोपण के लिये करते हैं। विदेशी जाति *Paeonia officinalis* के प्रतिनिधि द्रव्य के रूप में इसका प्रयोग यूनानी हकीम कम्पवात, पक्षाघात, अपस्मार एवं मानसिक रोगों में करते हैं।

(११) द्रव्यनाम···स्थानिक ···ममीरी।
लैटिन .. *Actaea spicata* Linn.

आकृतिक वर्णन:—बहुवर्षी शाक, काण्ड २-३ फुट लम्बा, मूल ग्रन्थिल, एवं भीतर पीतवर्ण का; पर्ण—संयुक्त पिच्छाकार १ फुट तक लम्बा एवं पत्रक १½" लम्बे, लट्वाकार भालाकार, पत्रतट, खण्डित, आरावत दन्तुर; पुष्प ¼" व्यास में अन्तस्थ, सीमाक्ष एवं सफेद रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फलकाल——सितम्बर।
प्रयोज्यअंग—मूल, बीज।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,४०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक रैंथल, गंगोत्री, मदमहेश्वर आदि के छाया दार स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग इसको भी ममीरी कहते हैं और ममीरी की तरह इसका प्रयोग करते हैं।

(१२) द्रव्यनाम.. .. स्थानिक ·· ममीरी, पीलीजड़ी।
लैटिन ···*Thalictrum foliosum* Dc.

आकृतिक वर्णन:—बहुवर्षी, अरोमिल, शाक; काण्ड उर्ध्वसंस्थित, एवं २-३ फुट तक लम्बा; भौमिककाण्ड—प्रकन्दी, ग्रन्थिल, एवं भीतर से पीले रंग का; पत्र एकान्तर, पत्रक पिच्छाकार क्रम में, वृताकार—लट्वाकार, तट

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गण्डित; पुष्प छोटे एवं श्वेताभ रंग के। इसकी कई अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं।

पुष्पकाल —जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग—मूल।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगनाघाटी, भागीरथी, मन्दाकिनी, अलकनन्दा, जमुना आदि घाटियों के नम छायादार ढलानों पर सुलभ है।

वक्तव्य:—पहिले भ्रम से वैद्य इसके मूल का उपयोग त्रायमाण के स्थान पर करते थे। केदारनाथ एवं बद्रीनाथ में इसके मूलस्वरस से साधित सुरमा तैयार करते हैं। वास्तविक ममीरा *Coptis teeta* को स्वीकार किया गया है परन्तु इसके प्रतिनिधि के रूप में इसका उपयोग किया जाता है।

(१३) द्रव्यनाम······स्थानिक······संटाई (वेलकुम)।
लैटिन ······*Clematis gouriana* Roxb.

आकृतिक वर्णन:—अरोमिल, आरोहीलता मूल कठोर रेशेदार; पर्ण—विपरीत, संयुक्तपिच्छकार, पत्रक लट्वाकार—आयाताकार, एवं हृदयाकार, तट सरल; पुष्प छोटे पीताभ श्वेतवर्ण के।

पुष्पकाल —जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग—मूलपत्र।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: जमनोत्री, देववन, चकराता, भिलंगना घाटी, मन्दाकिनी घाटी कांणाताल, धनौल्टी मसूरी आदि स्थानों पर सुलभ है।

वक्तव्य:—ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग को विषैला मानते हैं। पत्र का बाह्य प्रयोग कुष्ठ एवं त्वचा के विकारों में किया जाता है। कुछ लोग इसको मूर्वा मानते थे जो अब असंदिग्ध रूप से *Marsdenia* माना जाता है!

कुल—*MAGNOLIACEAE* (मैगनोलियेसी)

(१४) द्रव्यनाम······संस्कृत······चम्पक।
स्थानिक······चम्पा।
लैटिन ······*Michelia champaca* Linn.

आकृतिक वर्णन:—सदाहरित, मध्यम आकार का वृक्ष; पत्र अरोमिल, सवृन्त, भालाकार—लट्वाकार, गह-रेहरे रंग के; पुष्प—कक्षीय, हल्के-पीले रंग के एवं सुगन्धित।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
प्रयोज्यअंग —पुष्प त्वचा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—ये वृक्ष उत्तराखण्ड गढ़वाल में देवस्थानों एवं सड़क के किनारे १,५०० मीटर की ऊँचाई तक कुठार (भिलंगनाघाटी) गुप्तकाशी आदि स्थानों पर पाये जाते हैं।

कुल—*MENISPERMACEAE* (मेनीस्पर्मेसी)

(१५) द्रव्यनाम···स्थानिक··· ···तिलफारो।

लैटिन ······*Cocculus laurifolius* Dc.

आकृतिकवर्णनः—सदाहरित, मध्यम आकार का क्षुप, काण्ड १० से १५ फीट तक लम्बा, छाल हरितवर्ण; पर्ण भालाकार, तट अछिन्न, सवृन्त, अरोमिल; पुष्प छोटे-छोटे कक्षीय, पीले रंग के; फल पकने पर काले रंग के गोल।

पुष्पकाल —अप्रैल, जून।

प्रयोज्यअंग—पत्र, छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सड़कों के किनारे इन्द्रोला, घनशाली, घुत्तू, प्रतापनगर, उत्तरकाशी आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग पत्र एवं छाल को विषैला मानते हैं।

(१६) द्रव्यनाम···संस्कृत ······छिलहिंट।

स्थानिक ···जलजमनी।

लैटिन ······*Cocculus hirsutus* Diels.

आकृतिक वर्णनः—क्षुपक, आरोहीलता; पत्र—श्वेताभ रोमिल, नीचे की तरफ पत्र लट्वाकार दीर्घायत, ३"– × " तक बड़े और ऊपर की ओर क्रमशः छोटे दीर्घायत; पुष्प एकलिङ्गा कक्षीय, पीताभ रंग के, फल काले बैंगनी रंग के।

पुष्पकाल——फरवरी, मार्च।

प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग, मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में शिवालिक वनखण्ड एवं हिमालय की निचली घाटियों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक कहीं-कहीं पाया जाता है।

इसकी पत्तियों को पानी के साथ मसलने पर पानी जम जाता है, अतः इसको जलजमनी कहते हैं। ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग सर्प विष में करते हैं। पञ्चाङ्ग का प्रयोग वात-पित्तशामक माना जाता है।

(१७) द्रव्यनाम···संस्कृत ······गुडूची।

स्थानिक······गिलोय।

लैटिन········*Tinospora cordifolia* (Willd) Miers.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, आरोहीलता; काण्ड हरित, मांसल, कार्कयुक्त, अरोमिल; पत्र वर्तुल, हृदयाकार, अरोमिल; पुष्प—कक्षीय, छोटे-छोटे तथा नारंगी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीले रंग के, फल गोल लाल रंग के; इसकी दूसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Tinospora malabarica* Miers कहते हैं। इसका पत्र रोमिल, गहरा हृदयाकार, सवृन्त होता है।

पुष्पकाल ——मार्च, जून।
प्रयोगज्यअंग —काण्ड।
फल —शीतकाल।
संग्रहकाल —दिसम्बर, जनवरी।

प्राप्तिस्थानः—ये दोनों जातियाँ हिमालय की निचली घाटियों में शिवालिक वनखण्ड से लेकर १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी, घोन्टी, पिलखी, घनशाली, कीर्तिनगर. उत्तरकाशी, फाटा आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग पशुओं के उदर-विकार में इसके काण्ड का प्रयोग करते हैं। काण्ड से गिलोयसत्व तैयार किया जाता है।

(१८) द्रव्यनाम···संस्कृत ······पाठा।
स्थानिक······पाड़ी।
लैटिन ·········*Cissampelos pareira* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, आरोहीलता; पत्र-लट्वाकर कभी-कभी वर्तुल-वृक्काकार १.७५"-३-५" तक बड़े, सवृन्त, अरोमिल; पुष्प छोटे एकलिङ्गी, पीताभ सफेद रंग के नर एवं मादा भेद से पुष्प अलग-अलग मूल ग्रन्थिल, स्वाद में कटु।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल, पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह खुले पथरीली जगहों पर प्रायः छोटे-छोटे वृक्षों एवं क्षुपों पर लिपटी हुई पाई जाती है। उत्तराखण्ड गढ़वाल के निचले भागों से लेकर १,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी स्थानों पर यह सुलभ है।

ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग तीव्र उदरशूल में क्वाथ वनाकर करते हैं।

(१९) द्रव्यनाम···संस्कृत······(पाठाभेद)।
स्थानिक······गिन्दाङू।
लैटिन·········*Stephania glabra* Miers.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, कन्दिल, आरोहीलता; मूल कन्दिल अन्दर से पीताभ, चिपचिपा; पत्र-पाठापत्र सदृश, अरोमिल, लट्वाकार, उपवर्तुल, सवृन्त; पुष्प—कक्षीय, हरिताभ-पीले रंग के; फल झुके हुये लाल वर्ण के। इसकी दूसरी औषधोपयोगी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है, जैसे *Stephania herna-ndi folia* (Willd.) Walp कहते हैं।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूलकन्द।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—६

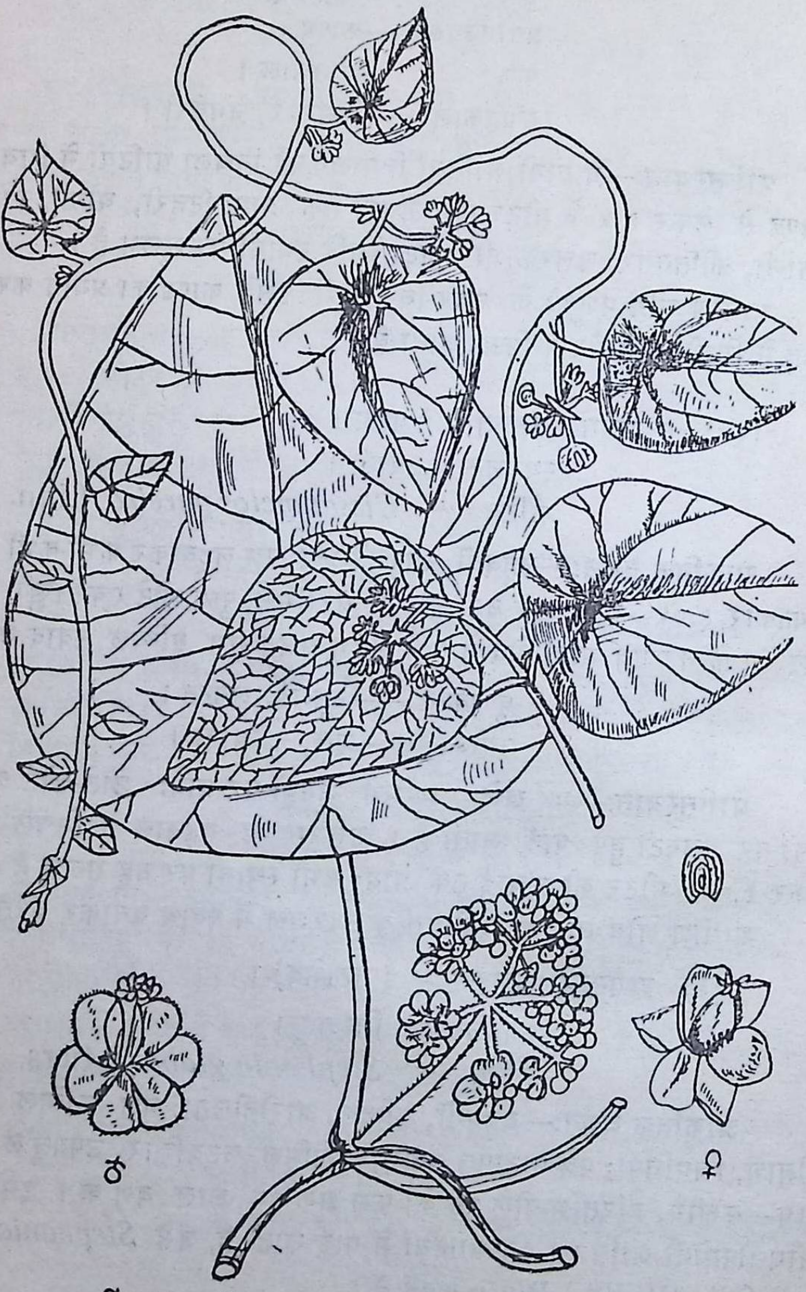

गिदाड़—*Stephania hernandi folia* Walp.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७

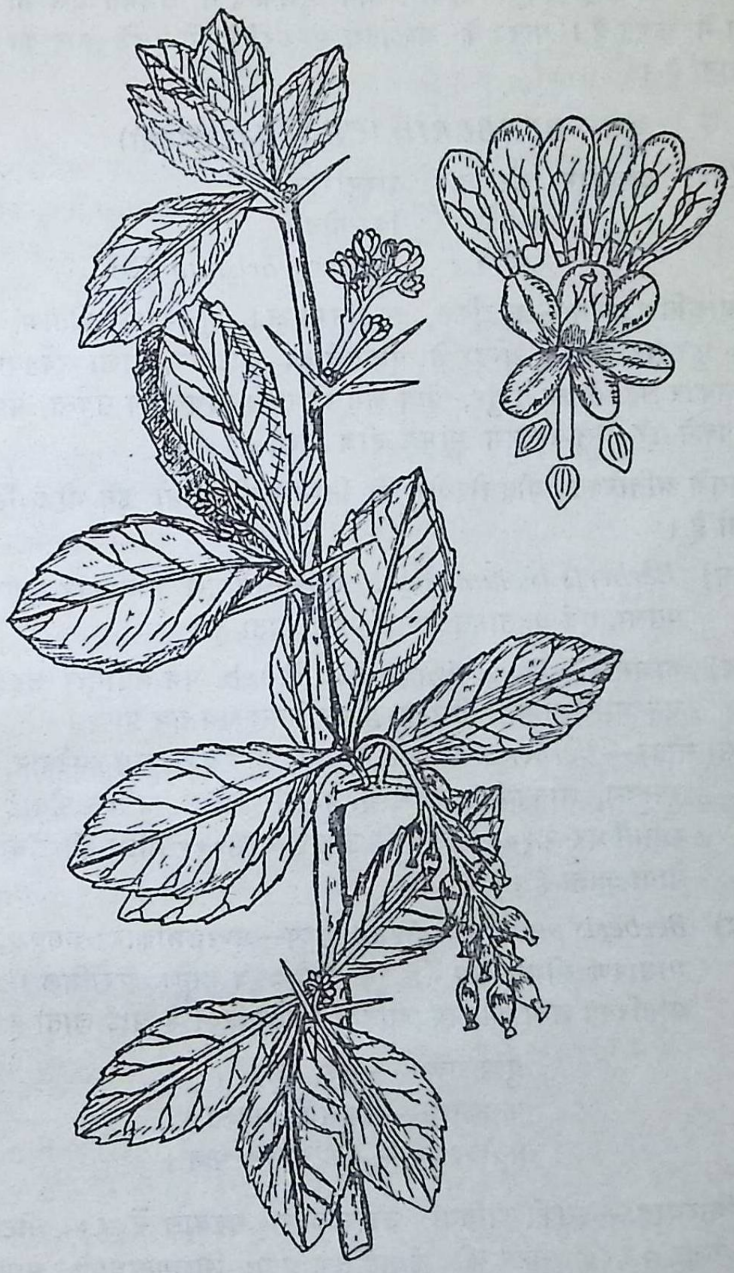

दारुहरिद्रा—*Berberis aristata* Dc.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में प्रायः १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक झाड़ीदार स्थानों के समीप रुद्रप्रयाग, पीपलकोठी, जोशीमठ, फाटा, रामबाड़ा आदि स्थानों पर सुलभ है।

कन्द विषैला होता है। ग्रामीण लोग मूलकन्द से साधित तैल का प्रयोग आमवात में करते हैं। पारद के अष्ठादश संस्करों में भी इसके कन्द का प्रयोग किया जाता है।

कुल—*BERBERIDACEAE* (बरबेरिडेसी)

(२०) द्रव्यनाम...संस्कृत······दारुहरिद्रा।
स्थानिक ···किंन्गोड़।
लैटिन ······*Berberis aristata* Dc.

आकृतिक वर्णनः—कण्टकित, झाड़ीनुमा क्षुप, मूलकाष्ठ पीताभ, काण्ड ८ से १० फुट तक लम्बा, अन्दर से पीतवर्ण का कांटेदार; शाखा रक्तवर्ण की, पत्र लट्वाकार तट तीक्ष्ण दन्तुर, पुष्प क्रम सीमाक्षी तथा पुष्प सवृन्त, पीत वर्ण के; फल पकने पर नील-रक्ताभ मांसल बीज वाला।

इसके अतिरिक्त औषधोपयोग की निम्न जातियाँ भो इन भी घाटियों में पाई जाती है।

(अ) *Berberis lycium* Ryle पत्र—अधोमुख भालाकार, पुष्प-वृन्त पतला, एवं बहुतायत रूप में पाया जाता है।

(ब) **काशमोई**—*Berberis asiatica* Roxb. पत्र-अधोमुख लट्वाकार घन जालिकारूपी, नीलाभ, हरित केवल यत्र तत्र प्राप्य।

(स) **तोतर**—*Berberis chitria* Lindl. क्षुप बड़ा, कम कांटेदार, काण्ड रक्ताभ, शाखायें झुकी हुई अ. ब. की अपेक्षा अधिक ऊँचाई वाले स्थानों पर २,१०० मीटर की ऊँचाई से ३,००० मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है।

(द) *Berberis petiolaris* Wall. **पुष्प**—पुष्पछत्राकार क्रमवद्ध, पुष्प साधारण सीमाक्षक्रम में; क्षुप बड़ा, पत्र मसृण अरोमिल। इसके अतिरिक्त अन्य कतिपय जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती हैं।

पुष्पकाल——मई, जुलाई।
फलकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल, काण्ड, फल।

प्राप्तिस्थानः—इसकी जातियाँ उत्तराखण्ड गढ़वाल में ९०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगनाघाटी, भागीरथी घाटी, मन्दाकिनीघाटी, अलकनन्दाघाटी, जमुनाघाटी, कांणाताल, मसूरी, चकराता आदि स्थानों पर यत्र तत्र सुलभ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्रामीण लोग पके हुए फलों को खाते हैं। यूनानी हकीम इन फलों का जिरीश्क के नाम से प्रयोग करते हैं। मूल काष्ठ से तैयार किया घनसत्व पानी में घोलकर अभिस्यन्द में प्रयोग करते हैं। ग्रामीण वैद्य रसौत (घनसत्व) का उपयोग अर्श में करते हैं।

(२१) द्रव्यनाम···स्थानिक······हलदिया।

लैटिन ···*Mahonia nepaulensis* Dc.

Sy—Berberis nepaulensis Spring.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित, उर्ध्वसंस्थित क्षुप, काण्ड ५-१० फीट लम्बा, छाल कार्कयुक्त, काष्ठ पीले रंग का; मूल पीले रंग का; पत्र विषम पिच्छाकार, अनुपर्ण कण्ट सदृश, पत्रक—लट्वाकार भालाकार, अवृन्त, दन्तुर; पुष्प सवृन्त, पीले रंग के एवं फल मांसल रक्ताभ रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।

फलकाल——मई, जून।

योज्यअंग——मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक मसूरी, काणाताल, चकराता, देववन, आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग मूलकाष्ठ का प्रयोग चन्दन के रूप में लेप के लिए करते हैं।

(२२) द्रव्यनाम···संस्कृत······वन्यकर्कटी।

स्थानिक ···काकड़्या, वनककड़ी।

लैटिन ·····*Podophyllum hexandrum* Royle.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; काण्ड २ से ३ फुट तक लम्बा, मूल प्रकन्दी, ग्रन्थिल, विशेष गन्धवाला, अन्दर से पीताभ रंग का; पत्र-एकान्तर, सवृन्त, वर्तुल, ६"-१०" व्यास में, तट-तीन भागों में खण्डित, दन्तुरधार वाले; पुष्प प्याले के आकार का सफेद रंग का, फल मांसल, अण्डाकार एवं रक्त वर्ण के बीज मटरसदृश गोल संख्या में १५ से २० तक। फलों एवं पत्तों को मसलने पर ककड़ी सदृश गन्ध होती है इसी लिये इसे वनककड़ी कहते हैं।

पुष्पकाल——मई, जून।

फल—अगस्त, सितम्बर।

प्रयोज्यअंग—मूल एवं प्रकन्द।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,७०० मीटर की ऊँचाई से ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः खरसू (ओक) के वृक्षों के नीचे पाया जाता है। भिलंगनाघाटी—पंवाली, दुफन्द, ताली, गङ्गी, मन्दाकिनीघाटी—मदमहेश्वर, केदारनाथ, हथनी, तुंगनाथ, भागीरथीघाटी—रैथल, अमरधार, दयारा, डोडीताल अलकनन्दा घाटी; जमुनाघाटी—जमनोत्री, जमुनाचट्टी, बड़ाकोट, आदि स्थानों पर यह सुलभ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—८

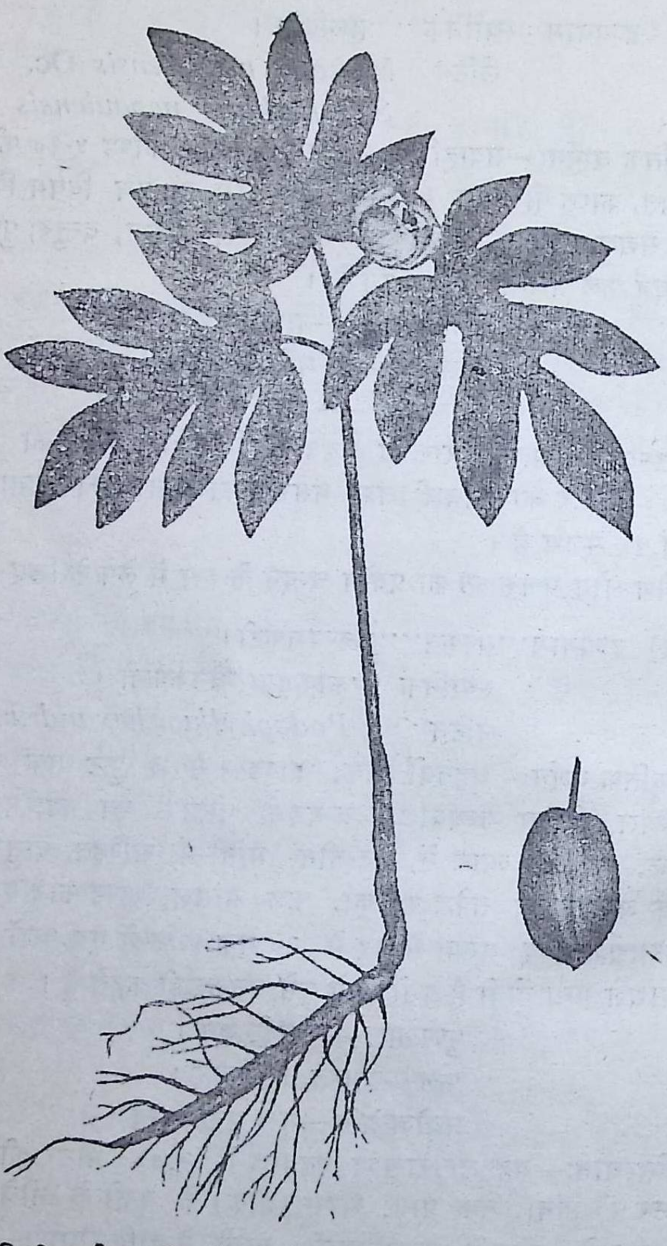

गिरी पर्पट—*Podophylum hexandrum* Royle.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—९

वन्यकर्कटी—*Podophyllum hexandrum* Royle.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—१०

अहिफेन—*Papaver somniferum* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—११

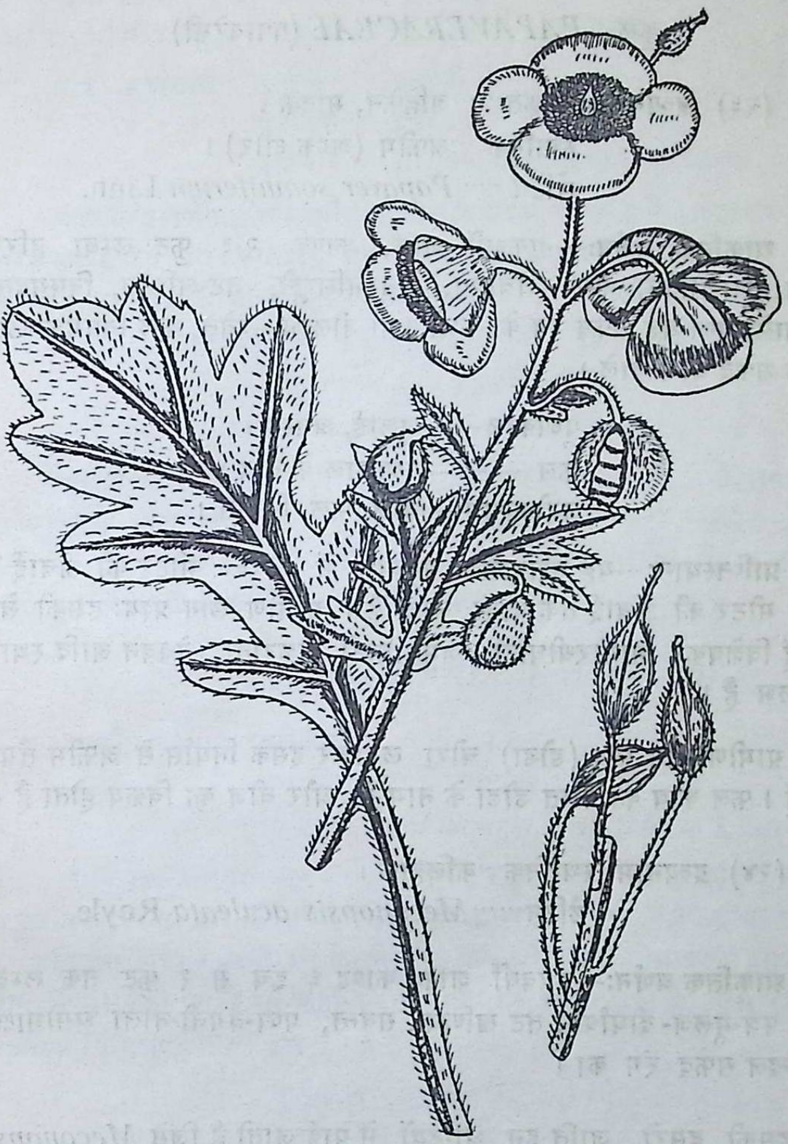

कलिहारू—*Meconopsis aculeata* Royle..

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्रामीण लोग इसके फलों का ही सेवन करते हैं एवं पके हुए फलों से सुरा तैयार करते हैं। मूल चूर्ण का प्रयोग पशुओं के खुरपका में करते हैं। आज कल कैन्सर के लिये इसके मूल की उपयोगिता पर परीक्षण हो रहा है।

कुल—*PAPAVERACEAE* (पपावरेसी)

(२३) द्रव्यनाम···संस्कृत······अहिफेन, मादक।
स्थानिक ···अफीम (शुष्क क्षीर)।
लेटिन ······*Papaver somniferum* Linn.

आकृतिक वर्णनः— एकवर्षी शाक, काण्ड २-३ फुट लम्बा हरित्त, रोमिल, शाखाहीन, पत्र—दीर्घायत, स्तम्भलिङ्गी, तट-खण्डित, विषमदन्तुर धार वाले, पुष्प बड़े सफेद रंग के; कभी-कभी नीलाभ—श्वेत, फल विषमकोष्ठीय, बारीक सफेद बीज वाले।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
फल ————पुष्पकाल के बाद।
प्रयोज्यअंग —बीज, फल, निर्यास।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से २,४०० मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। ग्रामीण लोग प्रायः इसकी खेती करते हैं विशेषकर भागीरथीघाटी, जमुनाघाटी, चकराता, देववन आदि स्थानों पर सुलभ हैं।

ग्रामीण लोग फल (डोडा) चीरा लगाकर इसके निर्यास से अफीम तैयार करते हैं। फल कोष का पोस्त डोडा के नाम से और बीज का विक्रय होता है।

(२४) द्रव्यनाम···स्थानिक···कलिहारू।
लैटिन······*Meconopsis aculeata* Royle.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक, काण्ड ६ इंच से १ फुट तक लम्बा, रोमिल, पत्र-मूलज-दीर्घायत, तट खण्डित, सवृन्त, पुष्प-बैंगनी-नीला असोमाक्षी, मूल-कन्दिल सफेद रंग का।

इसकी दूसरी जाति इन घाटियों में पाई जाती हैं जिसे *Meconopsis napaulensis* Dc. कहते हैं। जिसका मूल कन्दिल काण्ड १ से २ फीट लम्बा, पुष्प पीले रंग का होता है।

पुष्पकाल —जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग—मूल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: पंवालीकांटा, ताली, किनकोलिया-खाल (भिलंगनाघाटी), केदारनाथ, हथनी, मदमहेश्वर (मन्दाकिनीघाटी), हेमकुण्ड, हरकीदून आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग मूलकन्द का प्रयोग गर्भस्राव एवं मारकविषों में करते हैं। सम्भवत: शास्त्रीय लाङ्गली यह हो सकता है जो कि विचारणीय है।

(२५) द्रव्यनाम···संस्कृत······स्वर्णक्षीरी।
स्थानिक···· कंटेला।
लैटिन······ *Argemone mexicana* Linn.

आकृतिक वर्णन:—एकवर्षी, बहुशाखीय शाक, काण्ड १ से ३ फुट तक लम्बा, समस्त काण्ड एवं पत्र कांटेदार एवं काण्ड पीले दूधवाला, पत्र-दीर्घायत, ३"-७" तक लम्बे, अवृन्त, स्तंभलिंगी, पिच्छाकार, खण्डित तट, खण्डित कांटेदार, पुष्प प्याले के आकार के पीले रंग के, फल स्फुटनशील बीज काले सरसों के समान।

पुष्पकाल——जनवरी, मार्च।
प्रयोज्यअंग— मूल, क्षीर, बीजतैल।

प्राप्तिस्थान:—यह पादप फिरंगियों के साथ भारत में आया है, तथापि अब यह भारत के उष्ण भागों में सर्वत्र पाया जाता है। उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: सभी घाटियों में यत्र-तत्र पाया जाता है। त्वचा के विकारो में रक्तशोधक के रूप मूल का उपयोग है।

कुल—*FUMARIACEAE* (फुमेरेसी)

(२६) द्रव्यनाम···संस्कृत·········पर्पट।
स्थानिक······पित्तपापड़ा।
लैटिन.........*Fumaria parviflora* Lam.

आकृतिक वर्णन:—एकवर्षी, परिसृत, बहुशाखीय शाक, काण्ड मृदु, १ से २ फुट तक लम्बा, पत्र हरिताभ, छोटे, पिच्छाकार, विभक्त, पत्रक गहरे खण्डित तट अच्छिन्न, पुष्प गुलाबी रंग के श्वेताभ, फल छोटे एक बीज वाले इसकी दूसरी औषध्योपयोग की जाति भी कहीं-२ इन घाटियों में पाई जाती है, जिसे *Fumaria indica* Pugsley कहते हैं।

पुष्पकाल — जनवरी, मार्च।
प्रयोज्यअंग—पंचाङ्ग।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में गेहूँ की फसल के साथ प्राय: सभी घाटियों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक सुलभ है।

ग्रामीण लोग पंचाङ्ग क्वाथ का प्रयोग ज्वर एवं रक्त विकार में करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२७) द्रव्यनाम···स्थानिक·········इन्द्रजटा।
प्रचलित·········भूतकेश ।
लैटिन···········*Corydalis govaniana* Wall.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक, काण्ड १-१½ फुट तक लम्बा, उर्ध्वसंस्थित, मूल मोटा ग्रन्थिल एवं पत्र वृन्तों से आवृत्त, पत्र-मूलज, काण्ड की अपेक्षा लम्बे, द्वि-पिच्छाकार, पत्रक गहरे खण्डित, दीर्घ सवृन्त, पुष्प पीले रग के, फल कोषयुक्त बारीक काले रंग के। इसकी औषधोपयोगी दो अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं। (अ) *Corydalis ramosa* Wall काण्ड परिस्त, पर्ण-पिच्छाकार, विभक्त, पत्रक गहरे खण्डित, दीर्घायत लट्वाकार, (ब) *Corydalis cornuta* Royle काण्ड शयान, १ से २ फुट लम्बा, बहुशाखीय, पत्र पिच्छाकार-विभक्त, पत्रक गहरे खण्डित, प्रायः अच्छिन्न तट, पुष्प पीले रंग के।

पुष्पकाल —जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,४०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः पंवालीकांटा, सहस्त्रताल, किनकोलियाखाल, केदारनाथ, बद्रीनाथ, रुद्रनाथ, बिरहीताल, तुंगनाथ, गंगोत्री, गोमुख, जमुना, देववन एवं चकरांता आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग काण्ड स्वरस का प्रयोग नेत्र विकार में नेत्रबिन्दु के रूप में करते हैं। तिब्बती चिकित्सक पञ्चाङ्ग का प्रयोग चिकित्सा में करते हैं।

कुल—*CAPPARIDACEAE* (केपरिडेसी)

(२८) द्रव्यनाम···संस्कृत·········सूर्यभक्ता (अजगन्धा)।
स्थानिक······ जख्या, हुरहुर।
लैटिन.........*Cleome viscosa* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी रोमिल शाक, काण्ड १ से ३ फुट तक लम्बा, पत्र-सवृन्त, संयुक्त, पत्रक ३-५ अवृन्त, अधोमुख अण्डाकार, पुष्प सवृन्त एवं पीले रंग के बीज राई के सदृश कृष्णवर्ण के। इसका औषधोपयोगी दूसरा जींनस (वंश) का पादप भी पाया जाता है जिसे *Gynandropsis pentaphylla* Dc. कहते हैं।

यह उर्ध्वसंस्थित शाखीय शाक है जिसमें पुष्प सफेद रंग के होते हैं।

पुष्पकाल —जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग— बीज, पत्र।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—१२

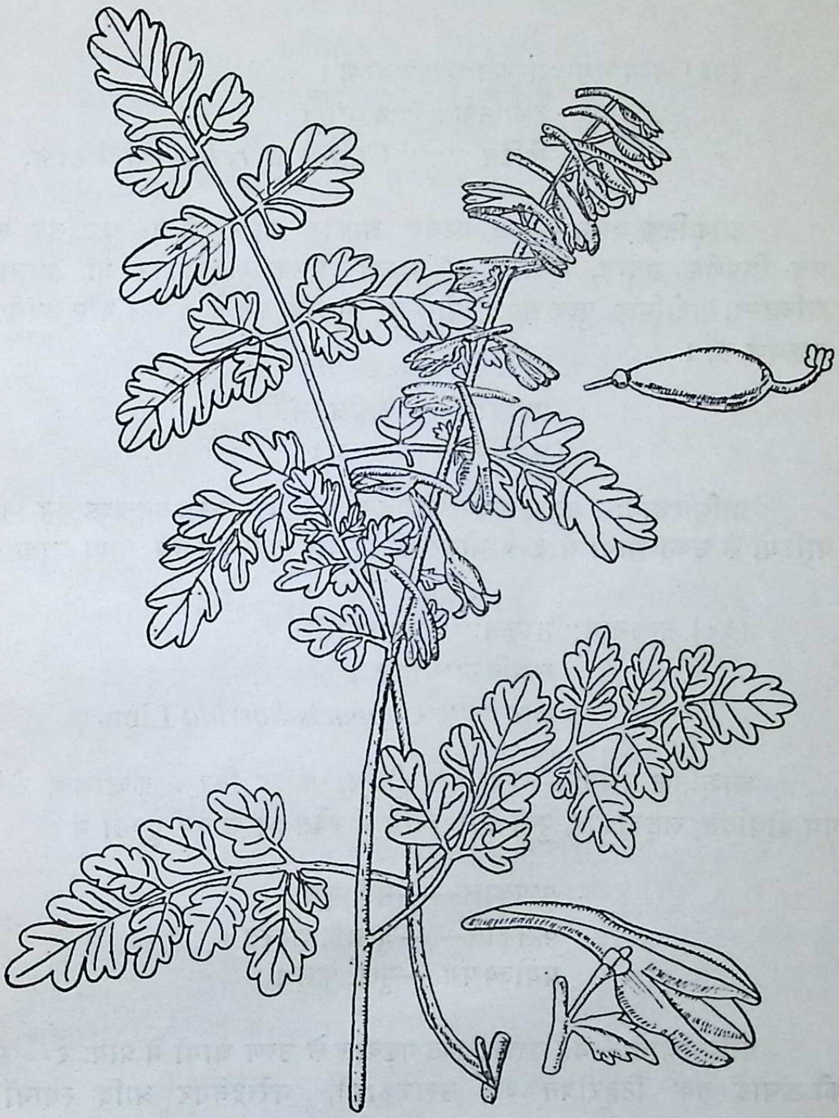

इन्द्रजटा—*Corydalis cornuta* Royle.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में खेतों के समीप १,५०० मीटर की ऊँचाई तक सभी घाटियों में सुलभ है ।

ग्रामीण लोग बीजों का प्रयोग दाल, सब्जी में छौंक देने के लिये (दीपन-पाचनार्थ) के लिये करते हैं ।

(२६) द्रव्यनाम···संस्कृत·········वरुण ।
स्थानिक ······वरना ।
लैटिन ·········*Crataeva religiosa* Forst.

आकृतिक वर्णनः—वृक्ष, मध्यम आकार का २० से ३० फुट तक लम्बा, पत्र- त्रिपर्णक, सवृन्त, वृन्त ४"-६" लम्बा, पत्रक लट्वाकार या भालाकार, अच्छिन्न, अरोमिल, पुष्प सफेद, पीले या गुलाबी रंग के। फल गोल मांसल एवं रक्तवर्ण का ।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई ।
प्रयोज्यअंग —छाल ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के शिवालिक वनखण्ड एवं निचली घाटियों के उष्ण भागों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र पाया जाता है ।

(३०) द्रव्यनाम···संस्कृत······व्याघ्रनखी ।
स्थानिक··· हिंस ।
लैटिन······*Capparis horrida* Linn.

आकृतिक वर्णनः—लम्बा आरोहीक्षुप, काण्ड विरल कण्टकित, रोमिल, पत्र-दीर्घायत, लट्वाकार, पुष्प 1/3"-1/2 व्यास में श्वेतवर्ण के एवं गुच्छों में ।

पुष्पकाल——मई, जून ।
फलकाल——जुलाई, अगस्त ।
प्रयोज्यअंग —मूल, फल ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में,प्रायः ६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, उत्तरकाशी, नरेन्द्रनगर आदि स्थानों पर सुलभ है ।

ग्रामीण लोग फल का प्रयोग मवेशियों की पेट की सजन में करते हैं।

कुल—*CRUCIFERAE* (क्रूसोफेरी)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३१) द्रव्यनाम···लैटिन·····*Capsella bursa—Fastoris* Medic.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, रोमिल शाक, काण्ड ६″ से १८″ तक लम्बा उर्ध्वसंस्थित, पत्र—मूलज, भालाकार, खण्डित, मूल के पास बड़े एवं काण्डज छोटे, पुष्प छोटे एवं अग्रस्थित।

पुष्पकाल —जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग—पंचाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगनाघाटी, भागीरथीघाटी, चकराता, मन्सूरी आदि स्थानों पर सुलभ है।

(३२) द्रव्यनाम······लैटिन····*Cardamine impatiens* Linn.

आकृतिक वर्णनः—शाकीय पादप, काण्ड उर्ध्वसंस्थित, ६″-१८″ तक लम्बा; पत्र ३″-४″ व्यास में, मूलज तथा एकान्तर, मूलजपत्र लट्वाकार, खण्डित एवं काण्डपत्र भालाकार, अच्छिन्न, पुष्प-सफेद रंग के अग्रस्थित।

पुष्पकाल —मई, जुलाई।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में सुलभ है।

ग्रामीण लोग पञ्चांङ्ग का प्रयोग मूत्रल एवं ज्वरघ्न के रूप में करते हैं।

(३३) द्रव्यनाम ···हिन्दी······खूबकलां।
लैटिन······*Sisymbrium irio* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी शाकीय पादप काण्ड ६″-१२″ तक लम्बा मृदुल, पत्र मलज एवं एकान्तर तथा निशिताग्र, पुष्प गुलाबी, पीले रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पंञ्चाङ्ग, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक घास वाले ढालों पर प्रायः भिलंगनाघाटी, भागीरथीघाटी एवं अलकनन्दा आदि घाटियों में कहीं-कहीं मिलता है।

(३४) द्रव्यनाम······लैटिन······*Descurainia sophia* (Linn) Webb.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, शाकीय पादप, काण्ड उर्ध्वसंस्थित, १ से २ फुट तक लम्बा, पत्र अवृन्त छोटे सूत्रसदृश, पुष्प—गुलाबी पीले रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—१३

बरमूला—*Megacarpea polyandra* Benth.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

चित्र—१४

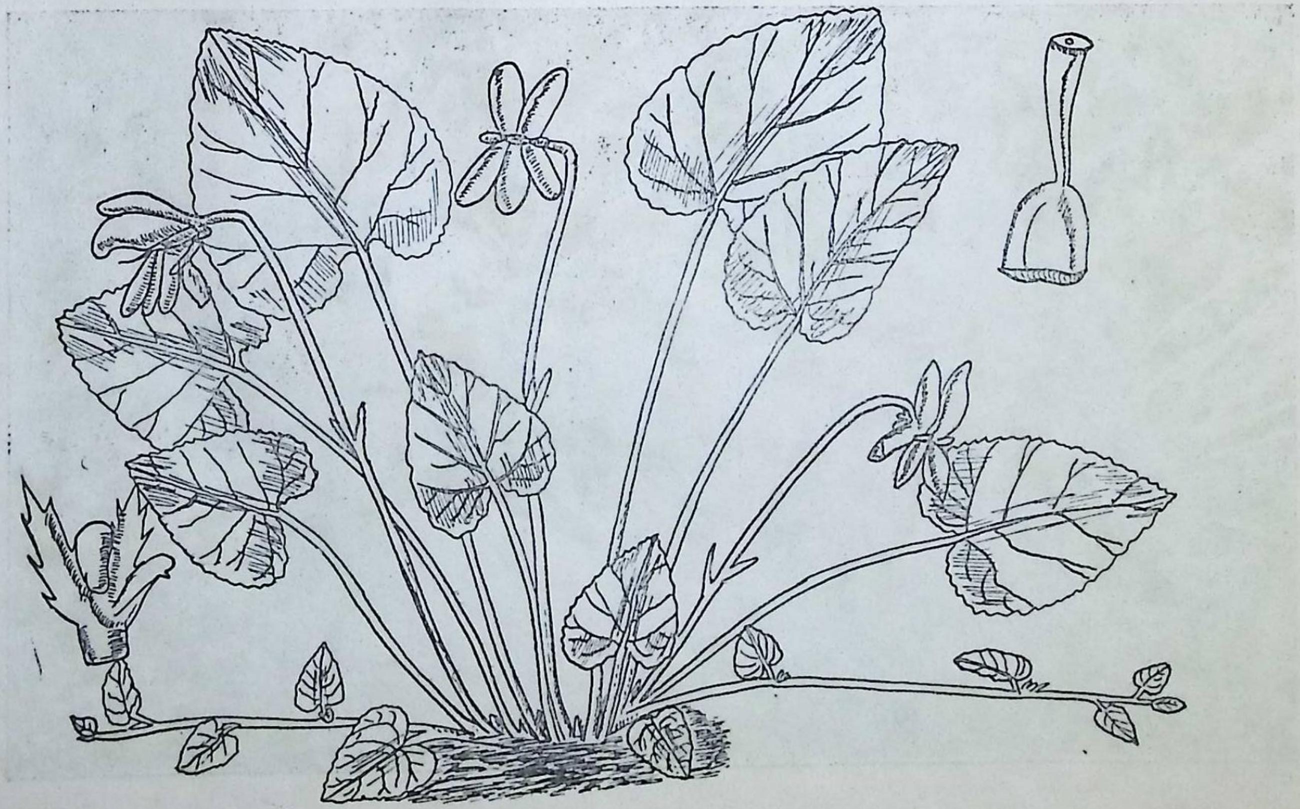

बनफ़शा—*Viola serpens* Wall.

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—१५

बनफ्शा—*Viola serpens* Wall.
(प्राकृतिक अवस्था में लिया गया चित्र)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—१६

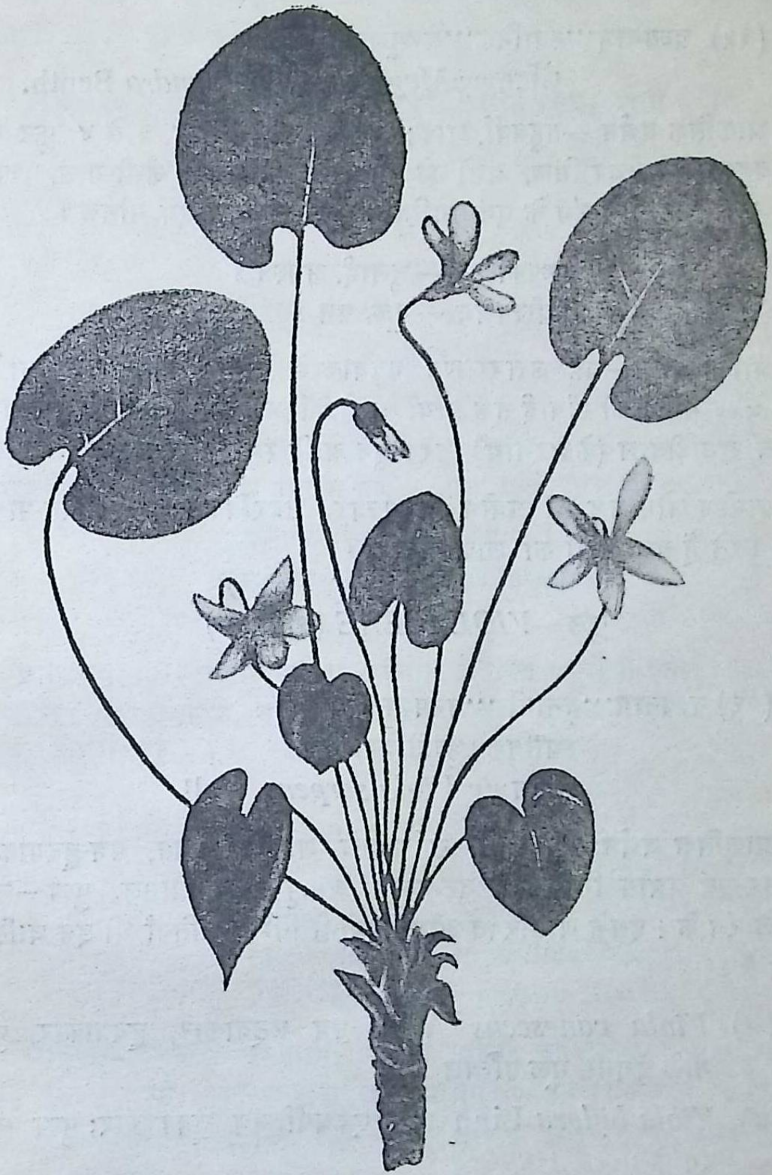

बनफशा—*Viola odorata* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—उत्तराखण्ड गढ़वाल में यह १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगनाघाटी, भागीरथीघाटी, जमुनाघाटी एवं चकराता आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग का प्रयोग कृमिघ्न एवं वृक्कशूल में करते हैं।

(३५) द्रव्यनाम···स्थानिक···बरमूला।
लैटिन······*Megacarpea polyandra* Benth.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, शाक; काण्ड उर्ध्वसंस्थित, ३ से ४ फुट तक लम्बा, बहुशाखीय, अरोमिल, पत्रों को मसलने पर सरसों जैसी गन्ध, पुष्प—स्थापक वद्ध, छोटे पीले रंग के एवं सुगन्धित, मूल—कन्दिल एवं मांसल।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग—मूल, पत्र।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ३,३०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः ताली, किनकोलियाखाल, सहस्त्रताल, हथनी, चोरावाड़ीताल (केदारनाथ), हरकीदून आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग विषमज्वर, उदरविकार एवं दीपन-पावन के लिए करते हैं तथा पत्तों का शाक खाते हैं।

कुल—*VIOLACEAE* (वायलेसी)

(३६) द्रव्यनाम···यूनानी···वनफशा।
स्थानिक···डुण्डीविराली।
लैटिन······*Viola serpens* Wall.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, सर्पणशील शाकीय पादप, पत्र-हृदयाकार, लट्वाकार एवं पत्राग्र निशिताग्र, तट-दन्तुर, अधःपृष्ट मृदुरोमिल, पुष्प—हल्के श्वेत-नीले रंग के। इसके अतिरिक्त औषधोपयोगी निम्न जातियाँ भी इन घाटियों में सुलभ हैं।

(अ) *Viola canescens* Wall पत्र लट्वाकार, हृदयाकार, पुष्प नीले बैंगनी, मूल ग्रन्थिल।

(ब) *Viola biflora* Linn शाक एकवर्षी, पत्र वृक्काकार; पुष्प पीले रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग तथा पुष्प।
संग्रहकाल—मई, जून।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भागीरथीघाटी, भिलंगनाघाटी, जमुनाघाटी, मसूरी, चकराता आदि स्थानों में सुलभ है।

ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग क्वाथ का प्रयोग प्रतिश्याय एवं कास में करते हैं। यूनानी हकीम पुष्पों का प्रयोग गुलबनफशा के रूप में करते हैं।

व्यापारिक दृष्टि से इसका संग्रह इन घाटियों से किया जाता है।

कुल—*FLACOURTIACEAE* (फ्लैकोरशियेसी)

(३७) द्रव्यनाम···संस्कृत······प्राचीनामलक।
हिन्दी·······पचनाला।
लैटिन······*Flacourtia jangomas* (Lour) Raeusch.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित, मध्यम आकार का क्षुपिल वृक्ष; काण्ड एवं शाखायें कांटेदार; पत्र लट्वाकार, भालाकार, मसृण, सवृन्त एवं लम्बाग्र; पुष्प छोटे पुष्पक्रम असीमाक्षी; कुछ पीताभ वर्ण के; फल गहरे गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
फलकाल——नवम्बर, दिसम्बर।
प्रयोज्यअंग— पत्र, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, जौनसार, चकराता आदि स्थानों में १,००० मीटर की ऊँचाई तक कहीं-कहीं मिलते हैं।

(३८) द्रव्यनाम··संस्कृत·····विकंकत।
हिन्दी ·····कंडाई।
स्थानिक···कांगू।
लैटिन·····*Flacourtia indica* Merr.
Sy. F. ramontchi Roxb.

आकृतिक वर्णन :—पत्रपाती, मध्यम आकार का क्षुपिल वृक्ष, काण्ड एवं शाखायें कांटेदार; पत्र—२″-४″ तक लम्बे अधोमुख, अण्डाकार एवं उपवर्तुल, अरोमिल, तट—ककची, सवृन्त; पुष्प—छोटे, हरित पीले रंग के; फल-मांसल, लालरंग के एवं स्वाद में मधुर।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
फलकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —फल, छाल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर, देहरादून, घोन्टी, इन्द्रोला आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग पके हुए फलों को खाते हैं।

कुल—*POLYGALACEAE* (पालीगैलेसी)

(३९) द्रव्यनाम……हिन्दी……मराड़।
लैटिन……*Polygala chinensis* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, मृदुरोमिल शाकीय पादप; काण्ड उर्ध्वसंस्थित, ३"-६" तक लम्बा; पर्ण अवृन्त, दीर्घायत; पुष्प—पीले रंग के। इसकी औषधोपयोगी एक अन्य जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Polygala crotalarioides* Ham कहते हैं मूल सुगन्धित तथा पुष्प गुलाबी रंग के एवं कक्षीय होते हैं।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग, मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,८०० मीटर की ऊँचाई के घास वाले ढलानों पर घूतू, घनशाली, उत्तरकाशी आदि स्थानों पर सुलभ है। ग्रामीण लोग इसके क्वाथ का प्रयोग कम्पवात एवं पक्षाघात में करते हैं।

कुल—*DIPTEROCARPACEAE* (डिप्टेरोकार्पेसी)

(४०) द्रव्यनाम…… संस्कृत……शाल।
स्थानिक …साखू।
लैटिन……*Shorea robusta* Gaertn.

आकृतिक वर्णनः—प्रसिद्ध वृक्ष, काण्ड ३० से ४० फुट तक लम्बा; पर्ण—४"-१२" तक लम्बे एवं २"-७" तक चौड़े, अरोमिल, लट्वाकार एवं दीर्घायत, पुष्प कक्षीय, सफेद रंग के एवं सुगन्धित; फल-शुष्क, पंख युक्त।

पुष्पकाल —मार्च, अप्रैल।
फलकाल —मई से जुलाई।
प्रयोज्यअंग—छाल, निर्यास (राल)।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के तराई वाले वनों में अधिकतर पाया जाता है। इसके अतिरिक्त टिहरी वन खण्ड, कालसी, नरेन्द्रनगर, राजपुर आदि स्थानों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक सुलभ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देहरादून के स्थानिक व्यापारी शाल छाल को कभी-कभी अशोक छाल के नाम से विक्रय करते हैं।

कुल—*CARYOPHYLLACEAE* (कैरिओफाइलेसी)

(४१) द्रव्यनाम···लैटिन······*Stellaria aquatica* Scop.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, मृदुरोमिल, शाकीय पादप, काण्ड १ से ३ फुट तक लम्बा, पर्ण-अवृन्त, लट्वाकार, हृदयाकार; पुष्प कक्षीय एवं पुष्पक्रम असीमाक्ष, हरिताभ, रंग के।

इसकी दूसरी औषधोपयोग की जाति इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Stellaria media* Linn. कहते हैं।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड हिमालय में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सर्वत्र सुलभ है।

ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग का लेप अस्थिभग्न एवं शोथ में करते हैं।

(४२) द्रव्यनाम···लैटिन······*Polycarpea corymbosa* Lam.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, मृदुरोमिल, शाकीय पादप, काण्ड उर्ध्वसंस्थित १ से २ फुट लम्बा, पत्र अवृन्त, लट्वाकार; पुष्प छोटे, हरिताभ रंग के एवं कक्षीय।

पुष्पकाल —मई से जुलाई तक।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड हिमालय में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में सुलभ है।

ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग का प्रयोग शोथ एवं सन्धिवात में पोटलिस के रूप में करते हैं।

कुल—*HYPERICACEAE* (हाइपरकेसी)

(४३) द्रव्यनाम···लैटिन······*Hypericum patulum* Thunb.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, बहुशाखीय क्षुपक; काण्ड १ से ३ फुट तक लम्बा पर्ण, लट्वाकार, दीर्घायत एवं प्रासवत्, पुष्प—शाखाग्र पर पुष्प पीले रंग के।

इसकी औषधोपयोगी दूसरी जाति इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Hypericum perforatum* Linn. कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——अप्रैल, मई ।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग, बीज ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में सुलभ है ।

कुल—*MALVACEAE* (मालवेसी)

(४४) द्रव्यनाम··· संस्कृत·····बला ।
हिन्दी ······खरैंटी ।
लैटिन ······*Sida cordifolia* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, उर्ध्वसंस्थित क्षुप, काण्ड २ से ३ फुट तक लम्बा, शाखीय, रोमिल, पर्ण-१"-१½" तक लम्बे, हृदयाकार, दीर्घायत, सवृन्त, लटकते हुये, पुष्प श्वेताभ पीले, रंग के, फल रोमिल, कठोर एवं बारीक बीज वाले ।

इसके अतिरिक्त अन्य औषधोपयोगी जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं जो निम्न हैं ।

(अ) नागवला—*Sida veronicaefolia* Lam. प्रसरणशील, स्वावलम्बी पुष्प पीले रंग के ।

(ब) खरैन्टी—*Sida spinosa* Linn. क्षुपक, उर्ध्वसंस्थित, काण्ड-रोमिल पुष्प सफेद रंग के ।

(स) *Sida acuta* Burm. बहुशाखीय क्षुपक, पत्र-भालाकार, दीर्घायत, सवृन्त, तट-दन्तुर ।

(द) *Sida rhombifolia* Linn. उर्ध्वसंस्थित, शाखीय क्षुप, पत्र अधोमुख अण्डाकार; अरोमिल, पुष्प- पीताभ श्वेत रंग के ।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त ।
फल —शीतकाल ।
प्रयोज्यअंग —बीज, पच्चाङ्ग ।

प्राप्तिस्थानः—इस की सभी जातियाँ उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र होती हैं ।

(४५) द्रव्यनाम····संस्कृत ······अतिवला ।
स्थानिक······कंघी ।
लैटिन ······*Abutilon indicum* Sweet.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, अरोमिल क्षुप, काण्ड ३ से ५ फुट तक लम्बा, शाखीय, पत्र-मृदुरोमिल, हृदयाकार एवं तट-दन्तुर, पुष्प पीले रंग के फल-गोल कंघी सदृश, बीज काले एवं चपटे ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसकी एक अन्य जाति भी इन घाटियों में पाई जाती हैं जिसे *Abutilon graveolens* W. & A. कहते हैं।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
फल ———शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर आदि स्थानों पर सुलभ है।

(४६) द्रव्यनाम…स्थानिक…कामल्या।
लैटिन……*Hibiscus cancellatus* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, तीक्ष्णरोमिल शाक, मूल कन्दिल, काण्ड २ से ३ फुट तक लम्बा, पर्ण ४″-६″ व्यास में वर्तुल, तट-दन्तुर एवं तीन खण्डों में विभक्त, पुष्प पीले रंग के ४″-५″ तक व्यास में, फल-दीर्घायत एवं रोमिल।

पुष्पकाल —जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग—मूल, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में प्रायः घास वाले ढालों पर घुत्तू, धनशाली, टिहरीवनखण्ड आदि स्थानों पर १,५०० मीटर की ऊँचाई तक सुलभ है।

ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग बल्य द्रव्यों के रूप में करते हैं।

(४७) द्रव्यनाम…यूनानी……खुबा।
लैटिन……*Malva rotundifolia* Linn.

आकृतिक वर्णनः—परिविसर्पी, मृदुरोमिल, शाकीय पादप, पत्र १″-३″ व्यास में, वर्तुल, तट-दन्तुर-पुष्प छोटे-२ गुच्छों में गुलाबी रंग के। इसके अतिरिक्त दूसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Malva verticillata* Linn. कहते हैं।

पुष्पकाल——मई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —बीज, पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—उत्तराखण्ड गढ़वाल में ये जातियाँ १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भागीरथीघाटी, भिलंगनाघाटी, जमुनाघाटी, चम्बा, काणाताल, चमोली आदि स्थानों पर सुलभ है।

कुल—*BOMBACACEAE* (बाम्बेकेसी)

(४८) द्रव्यनाम…संस्कृत………शाल्मली।
स्थानिक ……सेमल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लैटिन……*Salmalia malabarica* Schott.
Sy—Bombax malabaricum Dc.

आकृतिक वर्णनः—वृक्ष प्रायः बड़े, काण्ड गोल, मसृण, पत्र-गुच्छेदार, हस्ताकार, संयुक्त, अरोमिल, पत्रक ५″-७″, व्यास में भालाकार, पुष्प बड़े एवं लाल रंग के, फल गोल एवं रुईदार।

पुष्पकाल——जनवरी, मार्च।
फल ———अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —मूल, छाल, निर्यास, पुष्प, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः सड़कों के किनारे टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर, देवप्रयाग, कुण्ड आदि स्थानों पर सुलभ है।

नवीन छोटे पादपों के मूल को सेमलमूशली कहते हैं जिसका उपयोग वल्य एवं वाजीकरण गुणों के लिए होता है।

कुल—*STERCULIACEAE* (स्टरकुलियेसी)

(४९) द्रव्यनाम…संस्कृत……आवर्तकी।
हिन्दी ……मरोड़फली।
स्थानिक …भिमल्या।
लैटिन ……*Helicteres isora* Linn.

आकृतिक वर्णनः—क्षुप अथवा छोटा वृक्ष, काण्ड बहुशाखीय, हरिताभ, रोमिल, पत्र-संवृन्त, लट्वाकार-उपवर्तुलाकर, तीन खण्डों वाला रुक्ष, तट-क्रकची, पुष्प असममित नारंगी-रंग के, फलखण्ड-कुन्तल क्रम से परस्पर लिपटे हुये।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फल ————शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —फल, मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरीवनखण्ड, मुनिकीरेती, नरेन्द्रनगर, घनशाली आदि सभी स्थानों पर १,२०० मीटर की ऊँचाई तक सुलभ है।

(५०) द्रव्यनाम…संस्कृत …मुचुकुन्द।
स्थानिक…मैंगू।
लैटिन……*Pterospermum acerifolium* Willd.

आकृतिक वर्णनः—वृक्ष मध्यम आकार का, काण्ड मसृण, शाखीय, पत्र ६″-१२″ व्यास में दीर्घायित, हृदयाकार; अग्रगुक्रखण्डित एवं दन्तुर, पुष्प-बड़े, श्वेताभ-पीत वर्ण के, फल गोल, लम्बे, धूसरवर्ण के।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—१७

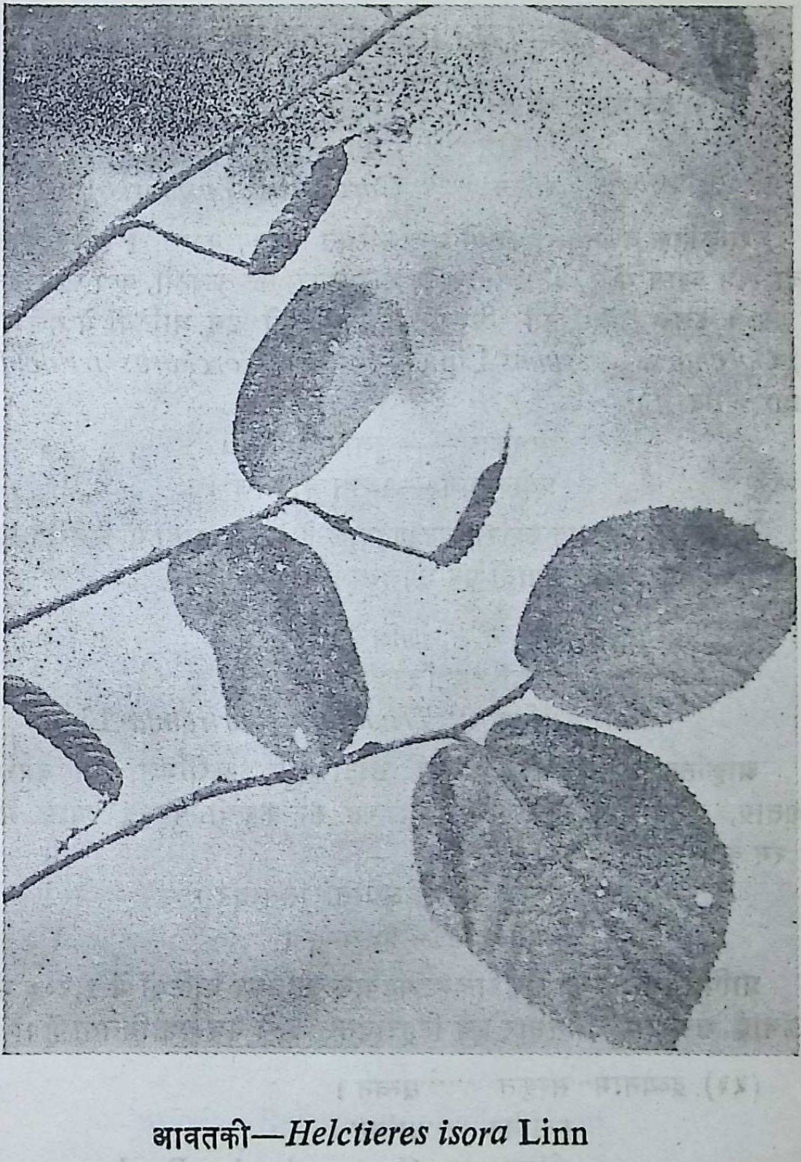

आवतकी—*Helctieres isora* Linn

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —पुष्प।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के तराई वाले भागों एवं टिहरी-वनखण्ड, कालसी, मसूरी आदि स्थानों पर उपलब्ध हैं।

कुल—*TILIACEAE* (टिलियेसी)

(५१) द्रव्यनाम···संस्कृत·········चञ्चु।
हिन्दी········ चेंच।
लैटिन········ *Corchorus capsularis* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी उर्ध्वसंस्थित शाक, काण्ड १ से २ फुट तक लम्बा, पत्र व्यास में २″-४″ लट्वाकार, भालाकार, तट क्रकची, पुष्प छोटे गुलाबी रंग के। इसके अतिरिक्त निम्न जातियाँ भी इन घाटियों में सुलभ हैं। (अ) *Corchorus aestuans* Linn. तथा (ब) *Corchorus trilocularis* Linn. आदि हैं।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में टिहरीवनखण्ड, घोन्टी, नरेन्द्रनगर आदि स्थानों पर उपलब्ध हैं।

(५२) द्रव्यनाम··· संस्कृत······झिंझिरीटा।
हिन्दी ······चिकती।
लैटिन ···*Triumfetta bartramia* Linn.

आकृतिक वर्णनः—शाक अथवा छोटा क्षुप, अरोमिल, पत्र बहुरुपीय, निशिताग्र, लट्वाकार, ३ खण्डों में विभक्त तट क्रकची, पुष्प ¼″ व्यास में एवं पीले रंग के।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल की उष्ण घाटियों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः जौनसार एवं टिहरीवनखण्ड में यत्र-तत्र मिलता है।

(५३) द्रव्यनाम···संस्कृत ······धन्वन।
स्थानिक······धामिन।
लैटिन ······*Grewia elastica* Royle.

आकृतिक वर्णनः—शाखीय क्षुप, काण्ड १५ से २० फुट तक लम्बा, पत्र-२″-५″ व्यास में लट्वाकार एवं कभी-२ आधार, हृदयाकार, तट-क्रकची, पुष्प कक्षीय, पुष्पक्रम असीमाक्ष, फल-मांसल, कृष्णवर्ण के। इसके अतिरिक्त अन्य कई

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—१८

वासन्ती—*Reinwardtia indica* Dum.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती हैं जिनमें (अ) भीमल—*Grewia oppositifolia* Roxb एवं (ब) *Grewia disperma* Rottl आदि मुख्य हैं।

पुष्पकाल ——अप्रैल, जून।
फल ———शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —फल, छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरीवन-खण्ड, उत्तरकाशी वन खण्ड, श्रीनगर आदि स्थानों पर सुलभ है।

कुल—*LINACEAE* (लाइनेसी)

(५४) द्रव्यनाम··· संस्कृत ······वासन्ती।
स्थानिक······फ्यूंली।
लैटिन ······ *Reinwardtia indica* Dum.
Syn. R. trigyna Planch.

आकृतिक वर्णनः—अरोमिल क्षुपक, काण्ड २ से ३ फुट लम्बा, शाखीय, मृदु, पत्र-दीर्घायत एवं अधोमुख भालाकार, सवृन्त झिल्ली, सदृश पुष्प कक्षीय एवं चमकीले पीले रंग के।

पुष्पकाल —जनवरी, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल की उष्ण घाटियों के छायादार स्थानों पर प्रायः १,५०० मीटर की ऊँचाई तक सभी स्थानों में सुलभ है।

कुल—*MALPIGHIACEAE* (मलपीजियेसी)

(५५) द्रव्यनाम···संस्कृत ·········माधवी।
स्थानिक·····अनेता।
लैटिन········*Hiptage benghalensis* Kurz.
Sy-H. madablota Gaertn.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित, आरोही गुल्म, पत्र ४″-६″ लम्बे, अरोमिल, दीर्घायित एवं लट्वाकार-भालाकार, अच्छिन्न, तट सवृन्त एवं अनुपर्ण युक्त, पुष्प सुगन्धित, कक्षीय, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग— पत्र, छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में नालों के समीप १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरीवनखण्ड, जौनसार, चकराता आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्थानों पर सुलभ है।

कुल—*GERANIACEAE* (जिरेनियेसी)

(५६) द्रव्यनाम···स्थानिक·····लालजड़ी।
लैटिन·······*Geranium wallichianum* D. Don.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, रोमिल शाक; मूल ग्रन्थिल; काण्ड उर्ध्व-संस्थित १ से ४ फुट तक लम्बा; पर्ण—वर्तुल, हस्ताकार, ३ से ५ खण्डों में, दन्तुर, अनुपर्ण—दीर्घायत—लट्वाकार; पुष्प—नीले—गुलाबी रंग के। इसकी अन्य कई जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती हैं जिसमें *Geranium nepalense* Sweet. आदि मुख्य हैं।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,३०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगनाघाटी, जमुनाघाटी, भागीरथीघाटी, अलकनन्दाघाटी, चकराता एवं मसरी आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग कटे हुए स्थानों पर रक्त को रोकने के लिए करते हैं।

(५७) द्रव्यनाम···संस्कृत·····चाङ्गेरी।
स्थानिक···खट्टीवूटी।
लैटिन······*Oxalis acetosella* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, परिविसर्पी शाक प्रकन्द, शल्की; पत्र—मूलज १"-२" व्यास में त्रिकोणक पत्रक—अधोमुख, अण्डाकार, पुष्प-लम्बे सवृन्त, मूलज, गुलाबी रंग के।

इसकी औषधोपयोग की अन्य जाति भी इन घाटियों में सुलभ है जिसे *Oxalis corniculata* Linn. कहते हैं।

पुष्पकाल —अप्रैल, नवम्बर।
प्रयोज्यअंग—मूल, पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्राय १,८०० मीटर की ऊँचाई तक नमी वाले स्थानों पर यत्र-तत्र उपलब्ध है।

(५८) द्रव्यनाम···स्थानिक···गुलमेंहदी।
लैटिन ····*Impatiens balsamina* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मृदुरोमिल, शाकीय पादप, काण्ड उर्ध्वसंस्थित

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६"-८" तक लम्बा; पत्र—भालाकार, अवृन्त एवं तीक्ष्णदन्तुर; पुष्प—गुलाबी, श्वेत रंग के; फल—स्फुटनशील। इसकी अन्य कई जातियाँ इन घाटियो में पाई जाती है।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थान:—उत्तराखण्ड गढ़वाल में ये जातियाँ १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक सभी घाटियों में सुलभ है।

ग्रामीण स्त्रियाँ पत्र का लेप हाथों को लाल रंगने के लिए करती हैं।

कुल—*RUTACEAE* (रुटेसी)

(५९) द्रव्यनाम···हिन्दी ·····कढ़ीनीम।
स्थानिक···गन्धेलो।
लैटिन ···*Murraya koenigli* Spreng.

आकृतिक वर्णन:—शाखीय गुल्म; काण्ड ५ से १० फुट तक लम्बा, मसृण; पत्र—६"-१२" लम्बे, अरोमिल; पत्रक लट्वाकार, भालाकार, लम्बाग्र; पुष्प अन्तस्थ, सीमाक्षी गुच्छों में एवं सफेद रंग के; फल—मांसल, पकने पर काले रंग के, एवं स्वाद में मधुर। इसकी एक दूसरी जाति *Murraya exotica* Linn. भी इन घाटियों में पाई जाती है।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फल ———शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —मूल, पत्र।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड, गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर, धरासू, उत्तरकाशी आदि स्थानों पर १,२०० मीट की ऊँचाई तक सुलभ है।

ग्रामीण लोग पके हुये फलों को खाते हैं।

(६०) द्रव्यनाम···संस्कृत ···तुम्बुरु।
हिन्दी ·····तेजबल।
स्थानिक···टेमरू।
लैटिन ···*Zanthoxylum alatum* Roxb.

आकृतिक वर्णन:—क्षुप या छोटा वृक्ष, काण्ड कार्कयुक्त, तीक्ष्ण शल्यमय, १० से १५ फुट तक लम्बा, शाखीय; पत्र—एकान्तर, सवृन्त; विषमपक्षाकार एवं सुगन्धित; पत्रक २ से ६ तक विपरीत एवं भालाकार; पुष्प छोटे, पीले रंग के; फल गोल, सुगन्धित, पकने पर रक्ताभ। इसकी दूसरी जाति भी धनशाली आदि स्थानों पर पाई जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—१६

तजबल—*Zanthoxylum alatum* Roxb.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल —-अप्रैल, जून ।
फल ———जुलाई, अगस्त ।
प्रयोज्यअंग—फल, छाल ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरीवनखण्ड, घोन्टी, घनशाली, घूत्त, भागीरथीघाटी, उत्तरकाशी, भटवारी, मन्दाकिनीघाटी—गौरीकुण्ड, गुप्तकाशी एवं चम्बा, चकराता, जौनसार आदि स्थानों पर सुलभ हैं ।

इसकी टहनियों का दातौन के रूप में प्रचुर उपयोग होता है ।

(६१) द्रव्यनाम···संस्कृत ······बिल्व ।
स्थानिक ······बेल ।
लैटिन ········ *Aegle marmelos* Corr.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का प्रसिद्ध फल वृक्ष, काण्ड-कार्कयुक्त, भंगुर, तीक्ष्णशल्यमय, पत्र-एकान्तर, अरोमिल, त्रिपत्रक-संयुक्त सवृन्त, पत्रक-लट्वाकार, भालाकार, विषमपक्षाकार, तट कुण्ठदन्तुर, सुगन्धित पुष्प सफेद रंग के, फल गोल कठोर, चिकने एवं पकने पर मांसल मधुर ।

पुष्पकाल —मार्च, मई ।
फलकाल —जून, जुलाई ।
प्रयोज्यअंग —पत्र, छाल, फलमज्जा ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड के उष्ण भागों पर साधारणतः १,२०० मीटर की ऊँचाई तक सभी स्थानों पर सुलभ है ।

(६२) द्रव्यनाम····हिन्दी······कांचन ।
स्थानिक···कंज ।
लैटिन······ *Toddalia asiatica* Lam.

आकृतिक वर्णनः—आरोही कण्टकित क्षुप, काण्ड एवं पर्ण कांटेदार, पत्र एकान्तर, अरोमिल, त्रिपत्रक, पत्रक-लट्वाकार एवं दीर्घायत, पुष्प-कक्षीय पीले रंग के, फल गोल, कठोर एवं सुगन्धित ।

मूल काष्ठ हल्दी के समान पीले रंग का एवं सुगन्धित होता है । पीतचन्दन की तरह इसका उपयोग हो सकता है ।

(६३) द्रव्यनाम···हिन्दी ····नैर ।
स्थानिक···केदारपाती ।
लैटिन ··· *Skimmia laureola Seib. & Zucc.* ex Walp.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित सुगन्धित क्षुप, काण्ड शाखीय, अरोमिल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—२०

केदारपाती—*Skimmia laureola* Sieb.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३ से ४ फुट तक लम्बा, पत्र एकान्तर, सरल तट ४"-६" लम्बा, दीर्घायत, अधोमुख, भालाकर एवं सुगन्धित पुष्प अन्तस्थ पुष्पक्रम में एवं पीले रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, जुलाई।
फल ——शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —पत्र।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,१०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,३०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः नम एवं छायादार स्थानों पर दुफन्द, पंवांली, सुक्की, हर्षिल, रामबाड़ा, कांणाताल, मन्सूरी, चकराता, देववन आदि स्थानों पर सुलभ है।

कुल—*SIMARUBACEAE* (सिमारुबेसी)

(६४) द्रव्यनाम···स्थानिक·········करुई, तिथाई।
लैटिन ·········*Picrasma quassioides* Benn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का क्षुप, काण्ड शाखीय, अरोमिल, पर्ण-विषम, पिच्छाकार, ६"-१५" तक लम्बे, पत्रक लट्वाकार एवं दीर्घायत-भालाकार, सवृन्त एवं तटदन्तुर, पुष्प-पीले रंग के।

पुष्पकाल —अप्रैल, जून।
फलकाल —जुलाई, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ६०० मीटर की ऊँचाई तक जौनसार, देववन, टिहरी गढ़वाल वन क्षेत्र में यत्र-तत्र उपलब्ध है। कुछ ग्रन्थकारों ने इसकी छाल को भारंगी लिखा है।

कुल—*MELIACEAE* (मीलियेसी)

(६५) द्रव्यनाम···संस्कृत ······तूणी।
स्थानिक······तुन।
लैटिन ······*Cedrela toona* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष काण्ड मसृण, पर्ण युग्म-पिच्छाकार, १-२ फुट लम्बे, पत्रक-सम्मुख, भालाकार या लट्वाकार-भालाकार एवं लम्बाग्र, सवृन्त, पुष्प-समूह में एवं सफेद रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग— छाल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—२१

भिल्लोटक—*Euonymus tingens* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरीवन-खण्ड, नरेन्द्रनगर, घोंटी, घनशाली एवं जमुनाघाटी में सुलभ है।

(६६) द्रव्यनाम···संस्कृत ·········महानिम्ब ।
हिन्दी ······वकायन ।
स्थानिक······डैंकण ।
लैटिन·········*Melia azedarach* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष, पत्र द्वि-पिच्छाकार कभी-२ त्रि-पिच्छाकार, ६"-१८" तक लम्बे, सम्मुख, भालाकार, क्रकची एवं लम्बाग्र, पुष्प-कक्षीय, हल्के नीले रंग के, फल पीले रंग के।

पुष्पकाल —मार्च, मई ।
फल ————शीतकाल ।
प्रयोज्यअंग —त्वक्, फल, पत्र ।

प्राप्तिस्थानः—ये वृक्ष उत्तराखण्ड गढ़वाल के ग्रामीण भागों में प्रायः लगे हुए पाये जाते हैं।

कुल—*CELASTRACEAE* (सिलेस्ट्रसी)

(६७) द्रव्यनाम ···संस्कृत·········भिल्लोटक ।
स्थानिक ······भमेली, कुंकुम ।
लैटिन·········*Euonymus tingens* Wall.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित क्षुप या छोटा वृक्ष, काण्ड की भीतर की छाल चमकीले पीले रंग की, पत्र-दीर्घायत, लट्वाकार-भालाकार, लम्बाग्र, क्रकची एवं अरोमिल, पुष्प छोटे, हरित-पीताभ सुगन्धित, फल-अर्जुनफल सदृश किंचित धारीदार। इसके अतिरिक्त अन्य जातियां भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसमें *Euonymus hamiltonianus* Wall. आदि हैं।

पुष्पकाल——मई, जून ।
फलकाल ——अगस्त, सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग —छाल ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगनाघाटी, दुफन्द, पौवागी, रामबाड़ा, चकराता, देववन आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग छाल का लेप नेत्र विकारों में करते हैं।

(६८) द्रव्यनाम···संस्कृत······ज्योतिष्मती ।
हिन्दी ······मालकंगणी ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्थानिक···मालकौंणी।
लैटिन ·····*Celastrus paniculatus* Willd.

आकृतिक वर्णन:—काष्ठमय आरोही क्षुप, काण्ड की नवीन शाखाओं पर श्वेत बिन्दु, पर्ण १"-५" तक चौड़े लट्वाकार, भालाकार, अरोमिल एवं वर्तुल, सवृन्त, पुष्प छोटे हरित-पीताभ रंग के, फल गोल पकने पर पीले रंग के एवं बीज रक्तवर्ण।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
फल ——शीतकाल।
प्रयोज्यअंग—बीज, पत्र।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक घोन्टी, इन्द्रोला, टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर आदि स्थानों पर सुलभ है।

(६९) द्रव्यनाम···संस्कृत ······मोक्षक (कृष्ण)।
स्थानिक······जमरासी, पतियाल।
लैटिन·········*Elaeodendron glaucum* Pers.

आकृतिक वर्णन:—मध्यम आकार वृक्ष, काण्ड-शाखीय, रक्ताभ पर्ण-सम्मुख, विभिन्न क्रमानुसार, २"-६" लम्बे, लट्वाकार, दीर्घायत एवं अरोमिल, पुष्प सवृन्त, कक्षीय, पीले रंग के, फल-अठिल।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
प्रयोज्यअंग —छाल, पत्र।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के तराई वाले भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक कालसी, टिहरीवनखण्ड, कोटद्वार आदि स्थानों पर कहीं-२ मिलता है।

कुल—*RHAMNACEAE* (रेमनेसी)

(७०) द्रव्यनाम···हिन्दी······थथार।
स्थानिक ···चठोला।
लैटिन ···*Rhamnus virgata* Roxb.

आकृतिक वर्णन:—क्षुप या छोटा वृक्ष, पर्णपाती, काण्ड-शाखीय, अरोमिल, कांटेदार, पर्ण-सम्मुख, विषम पक्षाकार, पत्रक-भालाकार, अरोमिल, भिल्लीमय एवं सवृन्त, पुष्प-हरित-पीले रंग के, फल-गोल, मांसल एवं कृष्णवर्ण के। इसके अतिरिक्त निम्न जातियां भी इन घाटियों में पाई जाती हैं।

(१) लुहींस—*Rhamnus purpurea* Edgew.
पर्णपाती-क्षुप, काण्ड-शल्यविहीन, पुष्प-कक्षीय।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) गौंता—*Rhamnus triquetra* Wall.
पर्ण-संयुक्त एवं पर्णक लट्वाकार, दीर्घायत ।

पुष्पकाल —अप्रैल, मई ।
फल ——अगस्त, सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग—छाल, पत्र ।

प्राप्तिस्थानः—यह ६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक, घुत्तू, घनशाली, मांणीकनाथ, वणचुरी, उत्तरकाशी, जमुनाघाटी, कांणाताल, चम्बा, चकराता आदि स्थानों पर।

(७१) द्रव्यनाम··· संस्कृत······बदर ।
स्थानिक ···बेर ।
लैटिन·······*Zizyphus jujuba* Lam.

आकृतिक वर्णनः—प्रायः सदाहरित छोटा वृक्ष, काण्डत्वक् कृष्णाभ, धूसर तथा खड़ा-खाँचेदार, पत्र उपवर्तुलाकार अथवा कुछ भिन्न आकार के, आधार पर स्पष्ट शिराओं वाला, अनुपर्णी कण्टक एक या दो, फल द्विकोष्ठी एवं द्विबीजी गुठलीदार, आकार तथा परिणाम में परिवर्तनशील एवं पकने पर लाल या नारंगी वर्ण के ।

प्राप्तिस्थानः—यह उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक सभी घाटियों में होता है।

पुष्पकाल—सितम्बर, नवम्बर ।
फल ——दिसम्बर, जनवरी ।

बदरवंश की अन्य जातियों में निम्नलिखित मुख्य है—

Zizyphus xylopyus Willd.–इसे कठबेर या घुण्ट कहते हैं जो शास्त्रीय घोण्टाफल या गोपघोण्टा हैं। इसका फल गोलाकार कठोरत्वक्, त्री-कोष्ठीय तथा अखाद्यय होता है। दूसरी जाति *Zizyphus nummularia* W.&A. जिसे सामान्यः झड़बेर या कर्कन्धु कहते हैं, इसका गुल्म होता है जिसके फल १/२ गोल और पकने पर लाल या काले होते हैं।

कुल—*VITACEAE* (वाइटेसी)

(७२) द्रव्यनाम···संस्कृत·········अमृतस्रवा ।
स्थानिक······छिवाड़ी।
लैटिन········*Vitis latifolia* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी आरोही क्षुप, काण्डत्वक्, मृदु, छिद्रित एवं

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खड़े खाँचों से युक्त, पत्र सरल, व्यास में ३"-६" उपवर्तुलाकार, हृदयाकार एवं ५ खण्डित, पुष्पक्रम—छत्राकार पुष्प हरित गुलाबी।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
फलकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में सुलभ है। इसकी कई अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं।

ग्रामीण लोग पके हुये फलों को खाते हैं। देहरादून के कुछ व्यापारी इसकी ज़ातियों के मूल को सेमलमूशली के नाम से वेचते हैं।

(७३) द्रव्यनाम···स्थानिक·····कांवों।
लैटिन ········*Leea aspera* Edgew.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षीशाक, काण्ड ३-४ फुट लम्बा, धारीदार, कोणिक एवं रक्ताभ, पत्र ३"-६" लम्बे २"-३" तक चौड़े, विषम-पिच्छाकार, पत्रक २ से ३ जोड़े में लट्वाकार एवं लट्वाकार-दीर्घायत, तट-दन्तुर, पुष्प छोटे हरितरंग के, फल गुच्छों में, पकने पर काले रंग के।

पुष्पकाल —जून, जुलाई।
फलकाल —अक्टूबर, नवम्बर।
प्रयोज्यअंग—मूल, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,८०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, घोन्टी, घनशाली, घुत्तू, चम्बा, जौनसार आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग पके हुये फलों को खाते है। मूल का वात विकारों में प्रयोग।

कुल—*SAPINDACEAE* (सेपिन्डेसी)

(७४) द्रव्यनाम···संस्कृत ········अरिष्ठक।
स्थानिक··· ·····रीठा।
लैटिन ········*Sapindus mukorossi* Gaertn.

आकृतिक वर्णनः—वृक्ष मध्यम आकार का, पत्र-एकान्तर, संयुक्त पिच्छाकार, १२"-२०" तक लम्बे, पत्रक ५"-१०" जोड़ों में विपरीत, कभी-२ एकान्तर, भालाकार, लम्बाग्र, अच्छिन्न, अरोमिल, सवृन्त, पुष्प-छोटे सफेद गुलाबी रंग के, फल-चिकना, मांसल, एक बीज वाला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——मई, जून।
फलकाल——अक्टूबर, जनवरी।
प्रयोज्यअंग —फल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में कहीं-२ सड़कों के आसपास लगे हुये १,५०० मीटर की ऊँचाई पर पिपोला, जौनसार, कालसी आदि स्थानों पर सुलभ हैं।

(७५) द्रव्यनाम···संस्कृत ······काकादनी, (कर्णस्फोटा)।
स्थानिक ······कनफुटी।
लैटिन········*Cardiospermum halicacabum* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी लताजातीय-शाक, पर्ण-एकान्तर, पिच्छाकार-संयुक्त, २½″-३″ तक लम्बे, त्रिपत्रक, पत्रक लम्बाग्र एवं दन्तुर पुष्प, छोटे अनियमित, कक्षीय एवं सफेद रंग के, फल त्रिकोष्ठी, थैले के आकार का, बीज काले रंग के एवं बीजों के ऊपर सफेद निशान।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फलकाल——सितम्बर, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग— पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक घोन्टी, इन्द्रोला, घनशाली एवं टिहरीवनखण्ड आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग का प्रयोग सन्धिवात एवं अनार्तव में करते हैं।

(७६) द्रव्यनाम···संस्कृत······कोशाम्र।
स्थानिक ···कुसुम।
लैटिन ······*Schleichera trijuga* Willd.

आकृतिक वर्णनः—छायादार वृक्ष, पर्ण-विषम पिच्छाकार, पत्रक २ से ४ जोड़े, सम्मुख, वर्तुलाकार, अरोमिल, वृन्त छोटा (अवृन्त), पुष्प-छोटे हरिताभ-पीले रंग के, फल १½″व्यास में एवं तीक्ष्णाग्र।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
फलकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरी-वनखण्ड, नरेन्द्रनगर, जौनसार आदि स्थानों पर सुलभ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(७७) द्रव्यनाम···हिन्दी ··········पाँगर।
स्थानिक ······पांगर, वखौंर।
लैटिन ·········*Aesculus indica* Colebr.

आकृतिक वर्णनः—वृक्ष बड़ा, पत्र-सम्मुख, सवृन्त, बड़, पत्रक-बड़े, अधोमुख भालाकार, दीर्घायत, लम्बाग्र एवं तीक्ष्ण क्रकची, अरोमिल, पुष्प-सफेद-गुलाबी रंग के, फल गोल, मांसल एवं गुच्छों में।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
फल———-जुलाई, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग —बीज, छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगनाघाटी, भागीरथीघाटी, जमुनाघाटी, मन्सूरी, चकराता आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग सूखे फलों का चूर्ण रोटी बनाकर खाते हैं एवं बीज तैल का प्रयोग आमवात में मालिश के रूप में किया जाता है।

(७८) द्रव्यनाम···हिन्दी········नागदौन।
स्थानिक·····मरछोव।
लैटिन·········*Staphylea emodi* Wall.

आकृतिक वर्णनः—क्षुप अथवा छोटा वृक्ष, काण्ड एवं शाखाओं पर सफेद एवं धूसर वर्ण की रेखायें, पत्र-त्रिपत्रक, पत्रक-३″-६″ लम्बे, लट्वाकार, क्रकची एवं लम्बाग्र, पुष्प-हरित वर्ण के गुच्छों में, फल पंखदार ऊपर, तीन खण्डों में विभक्त।

पुष्पकाल —अप्रैल, मई।
फल———जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग—काण्ठसार।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः गंङ्गी, दुफन्द, रामबाड़ा, गौरीकुण्ड (केदारनाथ), मदमहेश्वर, जमुनाघाटी आदि स्थानों पर सुलभ है। ग्रामीण लोग काष्ठ को सर्प विष में प्रयोग के लिये अपने घरों में रखते हैं।

कुल—*ANACARDIACEAE* (एनाकार्डियेसी)

(७९) द्रव्यनाम···संस्कृत·····आम्रातक।
स्थानिक···अम्बाड़ा।
लैटिन·····*Spondias mangifera* Willd.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष, काण्ड अरोमिल, छाल सुगन्धित; पत्र एकान्तर, विषमपिच्छाकार; १०″-१२″ तक लम्बे, पत्रक ९ से ११ तक सम्मुख, दीर्घायत, अरोमिल एवं लम्वाग्र, पुष्प २½″ व्यास में, अन्तस्थ, फल-अण्डाकार, मांसल, पकने पर पीला, गुठलीदार।

पुष्पकाल——मार्च, मई।
फल ———सितम्बर, अक्टूबर।
प्रोज्यअंग——फल, छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर, टौन्सघाटी, जमुनाघाटी, उत्तरकाशी, कुण्ड, गुप्तकाशी आदि स्थानों पर सुलभ है।

(८०) द्रव्यनाम···संस्कृत···कर्कटश्रृङ्गी।
स्थानिक···काकड़ा।
लैटिन ····*Pistacia integerrima* Stew.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष; पर्ण-एकान्तर और संयुक्त विषम पिच्छाकार, ६″-९″ तक लम्बे, पत्रक-संख्या में ४-६, छोटे अवृन्त प्रायः भालाकार, अच्छिन्न, लम्वाग्र, अरोमिल; पुष्प-छोटे गुच्छों में गुलाबी रंग के, फल रक्ताभ वर्ण के।

इस की शाखाओं पर श्रृङ्ग सदृश कृमिगृह (*Galls*) लगते हैं, जो ३″—६″ तक लम्बे पकने पर कुछ लालिमा लिये, अन्दर से बारीक सजीव कृमि वाले। इन कृमिगृहों का उपयोग चिकित्सा में किया जाता है।

पुष्पकाल —अप्रैल—मई।
फलकाल —जून, अगस्त।
प्रयोज्यअंग—कृमिगृह (*Galls*)

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में कहीं-२ टिहरीवन खण्ड, घोन्टी, घनशाली, घुत्तू, कुण्ड, उत्तरकाशी, जौनसार आदि स्थानों पर सुलभ है।

इस द्रव्य का बहुत कम मात्रा में इन घाटियों से संग्रह किया जाता है।

(८१) द्रव्यनाम···संस्कृत····जिङ्गिणी।
स्थानिक···झींगन।
लैटिन··· *Lannea grandis* Engl.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष; पत्र-एकान्तर, संयुक्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषमपिच्छाकार, पत्र के संख्या में १२-१८, ३″-६″ तक लम्बे, अरोमिल, झिल्ली सदृश, पुष्प-पीताभ-श्वेत गुच्छों में, फल-गोलाकार मांसल गुठलीदार।

पुष्पकाल —मार्च, अप्रैल।
फल ———जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग—छाल, पत्र, गोंद (निर्यास)।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर को ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर, रुद्रप्रयाग, कुण्ड, घोन्टी, घनशाली, जौनसार आदि स्थानों पर सुलभ है।

(८२) द्रव्यनाम…संस्कृत……तिन्तिडीक।
हिन्दी …समाकदाना।
स्थानिक…तुगंला।
लैटिन … *Rhus parviflora* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—क्षुप अथवा छोटा वृक्ष, पर्ण-त्रिपत्रक, सवृन्त, पत्रक, रोमिल, रुक्ष, अधोमुख अण्डाकार, क्रकची एवं अवृन्तसदृश, पुष्प-हरित-पीतवर्ण के, फल-मांसल, गुच्छों में तथा गुलावी रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फलकाल——अगस्त, सितम्वर।
प्रयोज्यअंग —फल, निर्यास।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरीवनखण्ड, घोन्टी, पिपोला, घनशाली, उत्तरकाशी, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग आदि स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग पुराने पत्तों का उपयोग तम्बाकू के ज़ायके को सुन्दर बनाने के लिये करते हैं।

(८३) द्रव्यनाम… स्थानिक…अखोड़िया।
लैटिन … *Rhus wallichii* Hook. f.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष, पत्र-विषमपिच्छाकार, ८″-१२″ तक लम्बे, पत्रक-सम्मुख, अवृन्तसदृश, दीर्घायत-दीर्घवृत्तीय, रोमिल, अच्छिन्न एवं लम्वाग्र, पुष्प गुच्छों में एवं गुलाबी सफेद रंग के। इसकी अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं जिसमें *Rhus punjabensis* Stew. मुख्य है।

पुष्पकाल——मई, जून।
फलकाल——जुलाई, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पत्र, स्वरस।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, घोन्टी, घनशाली, घुत्तू, नरेन्द्रनगर, भागीरथी-घाटी, जमुना, टौन्स, काणाताल, मसूरी, चकराता आदि स्थानों पर सुलभ है।

(८४) द्रव्यनाम···संस्कृत··· ···प्रियाल ।
स्थानिक ···प्याल ।
लैटिन ······*Buchanania lanzan* Spreng.
Sy. B. latifolia Roxb.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का सदाहरित वृक्ष, काण्ड झुकी हुई शाखाओं वाला, पत्र-एकान्तर, साधारण, ६″-१२″ तक लम्बे, दीर्घवृतीय-दीर्घायत, कुष्ठाग्र एवं रोमिल, पुष्प-अन्तस्थ क्रम में, सफेद रंग के, फल मांसल, गुठलीदार, अण्डाकार, कृष्णवर्ण के।

पुष्पकाल --मार्च, अप्रैल ।
फल ---जून, जुलाई ।
प्रयोज्यअंग—फल, बीज, छाल ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में टिहरीवनखण्ड, शिवालिक वनखण्ड, नरेन्द्रनगर आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है। इसकी गिरी (*Kernel*) को चिरौंजी कहते हैं

कुल—*MORINGACEAE* (मोरिङ्गेसी)

(८५) द्रव्यनाम···संस्कृत······शोभाञ्जन ।
स्थानिक···सैंजन ।
लैटिन···*Moringa oliefera* Lam.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; काण्ड-त्वक् कार्कसदृश; पत्र १ से २ फुट लम्बे त्रि-पिच्छाकार, सवृन्त, सम्मुख, अरोमिल; पत्रक-सम्मुख अद्योमुख अण्डाकार; दीर्घवृतीय, अच्छिन्न, झिल्लीमय, पुष्प-श्वेत वर्ण के; फली लम्बी, अरोमिल एवं धारीधार, बीज श्वेताभ ।

पुष्पकाल —फरवरी, अप्रैल ।
फलकाल —मई, जून ।
प्रयोज्यअंग—फल, पुष्प, मूल छाल ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर, नागनी, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कुण्ड, जमुनाघाटी, टौन्स आदि स्थानों पर सुलभ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल—*CORIARIACEAE* (कोरेरियेसी)

(८६) द्रव्यनाम······स्थानिक···मसूरी, वरुल ।
लैटिन······*Coriaria nepalensis* Wall.

आकृतिक वर्णनः—बड़े आकार का क्षुप, काण्ड शाखीय, रक्ताभ, पत्र-२"-४" लम्बे लट्वाकार, दीर्घायत, लम्बाग्र, अच्छिन्न, सवृन्त, कभी २ मृदुरोमिल, पुष्पहरित—पीत वर्ण के; फल—गोल, मांसल एवं पकने पर गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल —अप्रैल, मई ।
फल — —जून, जुलाई ।
प्रयोज्यअंग—पत्र, फल ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊंचाई पर टिहरीवनखण्ड, घनशाली, काणांताल, मन्सूरी, चकराता आदि स्थानों में सुलभ है।

कुल—*CAESALPINACEAE* (सीजलपीनेसी)

(८७) द्रव्यनाम······संस्कृत·····आरग्वध ।
हिन्दी·····अमलतास ।
स्थानिक···किरमाल।
लैटिन·····*Cassia fistula* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; काण्ड-मसृण, शाखा झुकी हुई, पतली; पत्र-विषम-पक्षाकार, १-२ फुट तक लम्बे, पत्रक-संख्या में ४ से ८ तक, लट्वाकार अथवा अधोमुख अण्डाकार, दीर्घायत, लम्बाग्र एवं अच्छिन्न; पुष्प-पीले रंग के, फल वेलनाकार, मांसल, अनेक बीज वाले।

पुष्पकाल —अप्रैल, मई ।
फल ———शीतकाल में ।
प्रयोज्यअंग—छाल, पत्र, फल, मज्जा ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, नागनीं, नरेन्द्रनगर, देवप्रयाग आदि स्थानों पर सुलभ है।

(८८) द्रव्यनाम·····संस्कृत ······कासमर्द।
स्थानिक·····कसौन्दी।
लैटिन·······*Cassia occidentalis* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, शाक, काण्ड-उध्र्वसंस्थित, ३ से ४ फुट तक लम्बा; पत्र-संयुक्त, पत्रक २" से ४" लम्बे, दीर्घवृत्तीय, अरोमिल, भालाकार एवं लम्बाग्र, पुष्प-पीले रंग के फली ३" से ५" तक लम्बी।

पुष्पकाल —जुलाई, अगस्त।
फल ———शीतकाल।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में खेतों के समीप ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, इन्द्रोला, घनशाली, उत्तरकाशी, श्रीनगर आदि सभी स्थानों पर सुलभ है।

(८९) द्रव्यनाम···संस्कृत ······चक्रमर्द।
स्थानिक ···पनवाड़।
लैटिन ···*Cassia tora* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, कभी २ बहुवर्षी, दुर्गन्धित शाक; काण्ड २ से ३ फुट तक लम्बा; पत्र-संयुक्त, पिच्छाकार, पत्रक-अधोमुख अण्डाकार, मक्रोनेट पुष्प नारंगी पीले रंग के, फली ४" से ६" तक लम्बी मुड़ी हुई।

इसकी अन्य जातियां भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे-श्यामसुन्दरी *Cassia laevigata* Willd. कहते हैं।

पुष्पकाल —जुलाई, अगस्त।
फलकाल —अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग—पञ्चांग, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर, नागनी, देवप्रयाग, श्रीनगर, उत्तरकाशी आदि स्थानों पर सुलभ है।

(९०) द्रव्यनाम···संस्कृत ···काञ्चनार।
हिन्दी ···कचनार।
स्थानिक···गुरियाल।
लैटिन ···*Bauhinia variegata* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष, पत्र-४" से ६" तक लम्बे, प्रायः लम्बाई-चौड़ाई में बराबर तथा अग्र द्वि-खंड तथा गहरा हृदयाकार, पुष्प-सफेद गुलाबी रंग के, सुगन्धित एक दल चित्तीदार, फली-चपटी रक्ताभ वर्ण की।

बाहीनिया की निम्न औषधोपयोगी जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती हैं। यथा—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(अ) कोबिदार—*Bauhinia purpurea* Linn.
इसके पुष्प गहरे गुलाबी रंग के।

(ब) कंणदी—*Bauhinia retusa* Roxb.
पुष्प-लम्बे, कक्षीय: एवं पीले-लाल रंग के, इस वृक्ष से गोंद (रेजिन) निकाला जाता है।

(स) मालझन—*Bauhinia vahlii* W. & A.

बड़ी आरोही लता, पुष्प सफेद रंग के, फलियाँ कठोर ५ से ८ बीजों वाली। ग्रामीण लोग बीजों को भूनकर खाते हैं तथा शाखाओं के तन्तुओं से रस्सी बनाते हैं।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फल ———शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —छाल, पुष्प, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरीवनखण्ड, घनशाली, घत्तू, देवप्रयाग, उत्तरकाशी, जमुनाघाटी, कोटद्वार आदि स्थानों पर सुलभ है।

(९१) द्रव्यनाम···संस्कृत ···लताकरञ्ज।
स्थानिक ···कठकरंज।
लैटिन ···*Caesalpinia crista* Linn.

आकृतिक वर्णनः—आरोही शल्यमय क्षुप; पत्र-पिच्छाकार, ६ से ८ जोड़ों में; अनुपर्ण-लम्बे मुड़े हुये कांटेदार, पत्रक ६ से १० संख्या में, विपरीत, दीर्घायत, दीर्घवृत्तीय, झिल्लीसमृश, अरोमिल, पुष्प-मञ्जरी में पीले रंग के, फल-२″-३″ व्यास में एवं कण्टकावृत।

इसकी दूसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे किंगरी—*Caesalpinia sepiaria* Roxb कहते हैं।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
फल ———शीतकाल में।
प्रयोज्यअंग—पत्र, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में टिहरीवनखण्ड नरेन्द्रनगर, नागनी, उत्तरकाशी, देवप्रयाग, जौनसार आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

कुल—*LEGUMINOSAE.* (लेग्युमिनासी)

(९२) द्रव्यनाम···संस्कृत ···गुञ्जा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्थानिक ···रत्ती।
लेटिन ···*Abrus precatorius* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, शाखीय; आरोही लता, पत्र-बहुपिच्छाकार, २″-३″ लम्बे, पत्रक- २०-३५ की संख्या में सम्मुख, पाती, दीर्घायत, झिल्लीसदृश, अरोमिल, पुष्प-गुलाबी-सफेद रंग के, पत्रकों की अपेक्षा बड़े गुच्छों में, शिम्बी गुच्छों में एवं कोष्ठ के अन्दर बीज लाल रंग के और कुछ भाग काले रंग का इसकी श्वेत बीज वाली जाति भी कहीं २ पाई जाती है।

पुष्पाकल——अगस्त, सितम्बर।
फल ———शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —मूल, पत्र, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर, नागनी, देवप्रयाग, उत्तरकाशी, धरासू, बड़ाकोट, जमुनाघाटी आदि स्थानों में यत्र-तत्र मिलता है।

(९३) द्रव्यनाम··· संस्कृत ···शालपर्णी।
हिन्दी ···सटिवन।
लैटिन ···*Desmodium gangeticum* Dc.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, क्षुपक, काण्ड २ से ४ फुट तक लम्बा, शाखीय, रोमिल; पत्र एक-पत्रक, पत्रक-अनियमित आकृति के, लट्वाकार, दीर्घायत, तीक्ष्णाग्र, झिल्लीमय, सवृन्त, अनुपर्ण लम्बा एवं मृदु; पुष्प गलाबी रंग के।

इसकी कई अन्य जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती हैं जिनमें निम्नलिखित जर्णिों का शालर्पी के नाम से संग्रह किया जाता है। यथा—

(अ) *Desmodium latifolium* Dc.
(ब) *Desmodium laxiflorum* Dc.
(स) *Desmodium pulchellum* Benth.

पुष्पकाल ——जून, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, घनशाली, धुत्तू, उत्तरकाशी, मसूरी, चकराता, जौनसार आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलता है।

(९४) द्रव्यनाम···संस्कृत ···पृश्निपर्णी।
हिन्दी ···पिठवन।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लैटिन ···*Uraria picta* Desv.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, शाक, काण्ड-उर्ध्वंस स्थित, २ से ३ फुट तक लम्बा; पत्र-१०" से १२" तक लम्बे, त्रिपर्णक, दीर्घायत, सवृन्त; पत्रक ४"-८" लम्बाई में, भालाकार एवं लम्बाग्र; पुष्प-छोटे, गुलाबी रंग के मञ्जरी में।

इसकी दूसरी औषधोपयोगी जाति भी पाई जाती है जिसे *Uraria lagopoides* Dc. कहते हैं।

इसका उपयोग पृश्निपर्णी के प्रतिनिधि द्रव्य के रूप में भी किया जा सकता है।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, घोन्टी, इन्द्रोला, धुत्तू, उत्तरकाशी, कुण्ड आदि स्थानों पर उपलब्ध है।

(६५) द्रव्यनाम···संस्कृत ···रुद्रवन्ती।
स्थानिक ···रुद्रवन्ती।
लैटिन ·····*Astragalus condolleanus* Royle.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, प्रायः विसर्पी शाक; काण्ड-१ फुट तक लम्बा; पत्र-चणकपत्र सदृश, मृदुरोमिल; पुष्प पीत वर्ण के; मूल-कठोर एवं तन्तुसदृश। इसके अतिरिक्त अन्य कई जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं, जिनमें औषधोपयोगी निम्न जातियां मुख्य हैं।

(अ) रुदन्ती—*Astragalus leucocephalus* Grah.
(ब) रुदन्ती—*Astragalus chlorostachys* Lindl.

पुष्पकाल —जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग --मूल, पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,४०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भागीरथीघाटी-गंगोत्री, गोमुख, देववन, अलकनन्दाघाटी-वसुधरा, हेमकुण्ड, मन्सूरी आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

मूल स्वाद में कषैला होता है। ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग चूर्ण का प्रयोग उरःक्षत, क्षय एवं श्वास-कास में करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(९६) द्रव्यनाम···स्थानिक·····वीरव्रट।
लैटिन ·····*Flemingia bracteata* Wight.

आकृतिक वर्णनः—क्षुपक पत्र, सामान्य, ३''-६'' तक लम्बे, दीर्घायत भालाकार, रोमिल, सवृन्त; पुष्प गुलाबी रंग का एवं फल दो बीज वाला।

पुष्पकाल ——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक कहीं २ टिहरीवनखण्ड, घोन्टी, घनशाली, घुत्तू, नरेन्द्रनगर, श्रीनगर आदि स्थानों पर पाया जाता है।

हरिद्वार-देहरादून के वनौषधि संग्रहकर्त्ता शालपर्णी के नाम से भी इसका संग्रह करते हैं।

(९७) द्रव्यनाम···संस्कृत ·····कुलत्थ।
हिन्दी ·····कुलथी।
स्थानिक ···गथ।
लैटिन ·····*Dolichos biflorus* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, विसर्पी शाक; पत्र-१"-२" तक लम्बे त्रिपत्रक मृदुरोमिल, पुष्प पीले रंग के एवं शिम्बी ५ से ६ बीज वाली।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
फल ———शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह प्रायः उत्तरगढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक पैदा की जाती है। इन स्थानों पर ग्रामीण लोग इसकी खेती करते हैं।

(९८) द्रव्यनाम···संस्कृत ·····शणपुष्पी।
स्थानिक ···शण।
लैटिन ·····*Crotalaria albida* Heyne.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, क्षुप; काण्ड २ से ३ फुट लम्बा मृदुरोमिल पत्र-२"-३½" तक लम्बे, सूच्याकार, अधोमुख, भालाकार एवं कुण्ठाग्र, पुष्प-पीत वर्ण के। इसके अतिरिक्त निम्न जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती है।

(अ) *Crotalaria sericea* Retz. पत्र तीक्ष्णाग्र, सहपत्र-सामान्य पत्र सदृश शिम्बी-रोमिल, बाहर को निकली हुई।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(ब) *Crotalaria calycina* Schr. बाह्यदल पुञ्ज $\frac{3}{4}$ से १″ लम्बा, अनुपर्णी-बारीक, दलपत्र नीला।

पुष्पकाल ——अप्रैल, जुलाई।
फल ———शीतकाल में।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरीवनखण्ड, नागनी, घोन्टी, घनशाली, उत्तरकाशी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(९९) द्रव्यनाम···संस्कृत ···स्यंन्दन, तिनिश।
स्थानिक ···सांदन।
लैटिन ·····*Ougeinia dalbergioides* Benth.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; काण्ड की भीतरी छाल, लाल रंग की; पत्र पिच्छाकार, त्रिपर्णक, अनुपपर्णी; पत्रक-सम्मुख, दीर्घवृत्तीय, क्रकची, अरोमिल; पुष्प-गुलाबी-सफेद रंग के।

पुष्पकाल ——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —छाल, काष्ठसार।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड—घनशाली, घुत्तू, नागनी, जौनसार, टौन्सघाटी में यत्र-तत्र मिलता है।

(१००) द्रव्यनाम···संस्कृत ···विदारीकन्द।
स्थानिक···सराल।
लैटिन ·····*Pueraria tuberosa* Dc.

आकृतिक वर्णनः—आरोही पर्णपाती क्षुप; काण्ड-बहुशाखीय, हरित, मृदु-रोमिल; पत्र-त्रिपर्णक, पिच्छाकार-संयुक्त अनुपपर्णी, पत्रक४″-६″ लम्बे, पार्श्वपत्रक लट्वाकार एवं लम्बाग्र, रोमिल; पुष्प मञ्जरी में नीले सफेद रंग के। मूल-कन्दिल २०-२५ किलोग्राम तक।

पुष्पकाल———मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —मूलकन्द।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, नरेन्द्रनगर, नागनी, रुद्रप्रयाग, कुण्ड, गुप्तकाशी, धरासू, उत्तरकाशी आदि स्थानों पर सर्वत्र पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१०१) द्रव्यनाम···संस्कृत ······कपिकच्छु ।
स्थानिक ···कौंच ।
लैटिन······ *Mucuna prurita* Hook.

आकृतिक वर्णनः—आरोही एकवर्षी शाक; पत्र-त्रिपर्णक, पत्रक ३" से ८" तक लम्बे, लट्वाकार, सुक्ष्मरोमिल मूक्रोन्येट; पुष्प-रक्ताभ-नील वर्ण के; फलियाँ-रोमश धूसर वर्ण की एवं रोम शरीर पर लग जाने से कच्छुकारक बीज-काले चिकने ।

इसकी दूसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Mucuna imbricata* Dc. (भेंसलगलो) कहते हैं ।

पुष्पकाल ——जून, जुलाई ।
फलकाल ——अक्टूबर ।
प्रयोज्यअंग —बीज, मूल ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरीवनखण्ड, घोन्टी, घनशाली, उत्तरकाशी, धरासू, जौनसार, टौन्स घाटी आदि में पाया जाता है ।

(१०२) द्रव्यनाम···संस्कृत ···माषपर्णी ।
स्थानिक···जंगली दाल ।
लैटिन ···*Teramnus labialis* Spreng.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी परिसृत चक्ररोही शाक; पत्र २½" से ४½" लम्बे, त्रिपर्णक, अनुपर्णी, पत्रक-झिल्लीमय, लट्वाकार-दीर्घायत एवं अधःपृष्ठ पर रोमिल, सवृन्त; पुष्प-नीलाभ-श्वेतवर्ण के; फलियाँ-पतली, लम्बी, रोमिल एवं कुछ टेढ़ी ।

पुष्पकाल —जुलाई, अगस्त ।
फलकाल —सितम्बर, अक्टूबर ।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः घास वाले ढालों पर टिहरीवनखण्ड, घोन्टी, घनशाली, चम्बा, उत्तरकाशी आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलता है ।

वक्तव्यः—आजकल देहरादून एवं हरिद्वार की फार्मेसियों में कई अन्य जातियों का माषपर्णी के नाम से प्रयोग किया जाता है ।

(१०३) द्रव्यनाम···संस्कृत ···मुद्गपर्णी ।
स्थानिक ···मुंगी ।
लैटिन ···*Phaseolus trilobus* Ait.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, विसर्पी अथवा आरोही शाक; काण्ड १-२ फुट लम्बा, रोमिल; पत्र-त्रिपर्णक, अनुपपर्णी; पत्रक-प्रायः आकृति में परिवर्तनशील, १″-२″ लम्बे, तीन विच्छेदों में विभक्त रोमिल; अनुयपत्र-बड़े एवं पीठ से जुड़े हुये, पुष्प-गुच्छों में एवं पीले रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई ।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, चम्बा, घोन्टी, घनशाली, उत्तरकाशी एवं श्रीनगर आदि स्थानों पर कहीं-२ पाया जाता हैं।

इसकी अन्य जातियां भी इन घाटियों में मिलती हैं जिनमें *Phaseolus calcaratus* Roxb. मुख्य हैं। इसमें शयान शाकीय पादप पत्र-त्रिपत्रक; पत्रक-लम्बे वृत्त वाले, लट्वाकार, दो खण्डों में विभक्त एवं रोमिल तथा पुष्प-पीले होते हैं।

(१०४) द्रव्यनाम···स्थानिक···जंगलीदाल।
लैटिन······*Atylosia scarabaeoides* Benth.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, विसर्पी शाक, शाखा-मृदुरोमिल, श्वेताभ हरित; पत्र-१½″-२″ लम्बे, त्रिपत्रक, अनुपपर्णी; पत्रक-छोटे, स्पष्ट-सिराओं वाले, अधोमुख, अण्डाकार, दीर्घायत; पुष्प-छोटे पीले रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः १,६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, चम्बा, नागनी, मन्सूरी, चकराता आदि स्थानों पर मिलता है।

हरिद्वार एवं देहरादून की फार्मेसियाँ इसके पञ्चाङ्ग का उपयोग मुद्गपर्णी के स्थान पर करती हैं।

(१०५) द्रव्यनाम···संस्कृत······शरपुंखा।
लैटिन······*Tephrosia purpurea* (Linn.) Pers.

आकृतिक वर्णनः—शाक एवं कभी-२ क्षुपक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, अरोमिल; पत्र-३″-६″ लम्बे, अल्पवृत्त वाले; पत्रक-संख्या में १३-२१ तक, १″-२″ लम्बे, दीर्घायत, नताग्र एवं पत्रक को दो भागों में तोड़ने पर एक भाग शरपुंखजैसा पुष्पक्रम-अग्रस्थित, पुष्प-कक्षीय, श्वेत, रक्तवर्ण के; फली-रोमिल एवं मखमली।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, धरासू, उत्तरकाशी में उपलब्ध है ।

(१०६) द्रव्यनाम···संस्कृत·····पलाश ।
स्थानिक······ढाक ।
लैटिन ······*Butea monosperma* (Lam.) Kuntze.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; पत्र-त्रिपत्रक; पत्रक-असमान, ४"-६" लम्बे, रुक्ष, लट्वाकार; पुष्प-कक्षीय, गुलाबी, रक्त वर्ण के; फलियाँ-चपटी एवं मृदुरोमिल तथा बीज चपटे तथा लाल ।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल ।
फलकाल——जुलाई, अगस्त ।
प्रयोज्यअंग —निर्यास, छाल, पुष्प, बीज ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, देवप्रयाग आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है ।

(१०७) द्रव्यनाम···संस्कृत ····पारिभद्र ।
स्थानिक ····मन्दारो ।
लैटिन·······*Erythrina suberosa* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का कांटेदार वृक्ष; काण्डत्वक्, कार्की तथा खांचेदार; पत्र-त्रिपत्रक; पत्रक ३"-८" लम्बे और चौड़े तथा डेल्टाकार (Doltoid) एवं अरोमिल; पुष्प-शाखाग्र, स्थित गुच्छों में एवं लाल रंग के ।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई ।
प्रयोज्यअंग —छाल ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, नागनी, घोन्टी, देवप्रयाग, श्रीनगर, धरासू आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है ।

(१०८) द्रव्यनाम···संस्कृत·······चक्षुष्या ।
स्थानिक···चाकसू ।
लैटिन·······*Cassia absus* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, रोमिल शाक; काण्ड, मृदु, चिपचिपा, ८"-१६" तक लम्बे, पत्रक दो जोड़ों में, लट्वाकार या तिर्यगायताकार-लट्वाकार, ६"-६"

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—२२

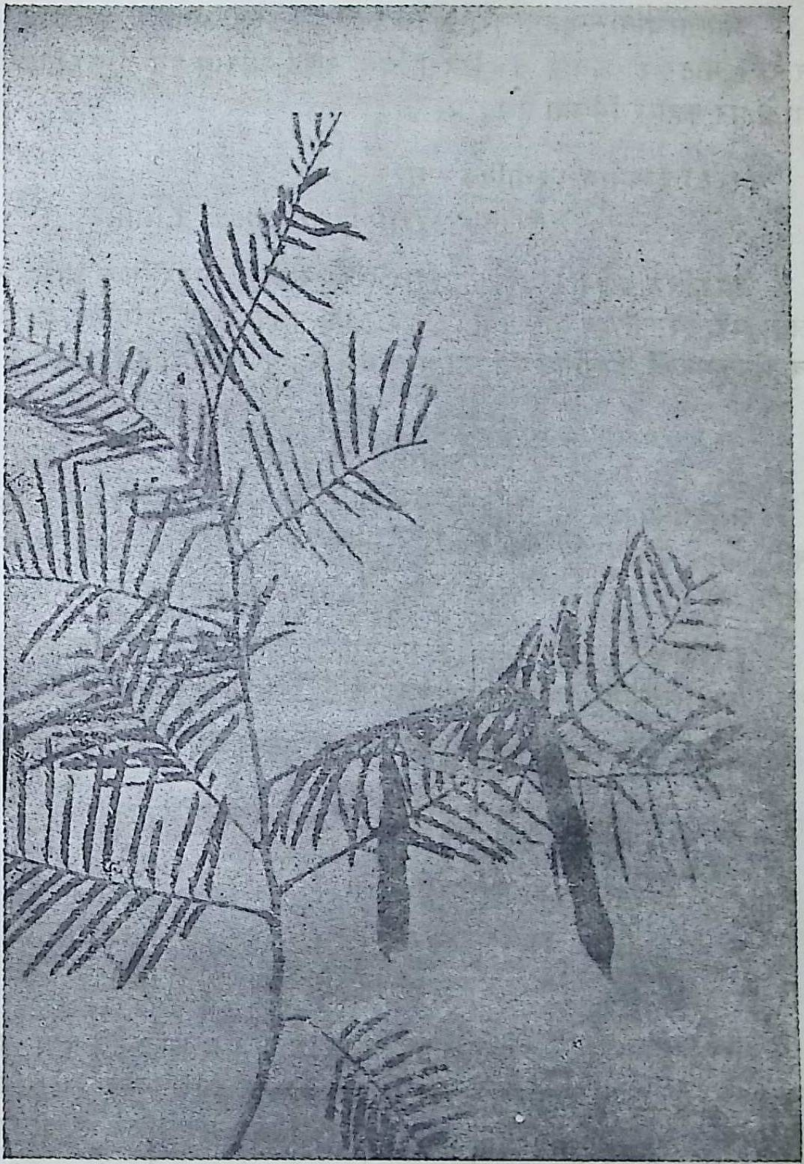

खदिर—*Acacia catechu* Willd.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लम्बे; पुष्प–सवृन्त, पीले, लाल रंग के; फली-चपटी, रोमिल, बीज–काले एवं चमकीले ।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग —बीज ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों के घास वाले ढालों पर ६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, धरासू एवं उत्तरकाशी आदि स्थानों पर कहीं-२ मिलता है ।

(१०६) द्रव्यनाम…स्थानिक…सटफल ।
लैटिन …*Trifolium repens* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, अरोमिल, कभी-२ मृदुरोमिल शाक; काण्ड बेलनाकार, विसर्पी एवं सन्धिपर्वों पर मूल युक्त; पत्रक दन्तुर, अधोमुख, अण्डाकार, अवृन्त, अनुपपर्णी, दीर्घायित एवं पत्र वृन्त से छोटे; पुष्प-सफेद, गुलाबी रंग के ।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई ।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक भागीरथी घाटी, मन्दाकिनी घाटी एवं मन्सूरी, काणांताल, देववन आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है ।

इसकी अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती है जिनमें माल्यों *Trifolium corniculata* Linn. मुख्य है ।

ग्रामीण लोग इसके पञ्चाङ्ग को विषैला मानते हैं ।

कुल—*MIMOSACEAE* (माइमोसेसी)

(११०) द्रव्यनाम…संस्कृत……खदिर ।
स्थानिक …खैर ।
लैटिन……*Acacia catechu* Willd.

आकृतिक वर्णनः—छोटे आकार का कांटेदार वृक्ष; कांटे टेढ़े तथा अनुपर्ण के रूपान्तर, पत्रक १०-२० जोड़े, (कभी २६-३५ जोड़े) अवृन्त और पक्ष्मल (ciliate); पुष्प-छोटे, श्वेताभ या हल्के पीले तथा मुदुरोमिल लम्बी स्पाइक मञ्जरियों में फली जोड़ों पर संकुचित ।

पुष्पकाल—— मई, जून ।
फलाकल——नवम्बर, जनवरी ।
प्रयोज्यअंग —काष्ठसार, निर्यास आदि ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, धरासू, देवप्रयाग, जौनसार आदि स्थानों पर सुलभ है।

(१११) द्रव्यनाम···संस्कृत······शिरीष (कृष्ण)।
स्थानिक ···सिरस।
लैटिन······*Albizzia lebbck* Benth.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा वृक्ष; पत्र ५"-६" लम्बे संयुक्त; उपपक्ष २-४ जोड़े पत्रक ७५-२२५, सवृन्त एवं दीर्घायत; पुष्प-पुष्पमुण्डक, पत्रकोणीय, सवृन्त, हरित, श्वेत वर्ण के, सुगन्धित; शिम्बी-चपटी ६-१० बीजों वाली।

पुष्पकाल ——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —छाल, बीज।

(११२) द्रव्यनाम···संस्कृत······किणिही।
स्थानिक ···सफेद सिरीस।
लैटिन ······*Albizzia procera* (Roxb.) Benth.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा वृक्ष; काण्ड मसृण, हरिताभ श्वेत रंग का, पत्रक १०-१५ जोड़ों में; अरोमिल, पुष्प-पीले, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —छाल, बीज।

प्राप्तिस्थानः—उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, धरासू, उत्तरकाशी, जौनसार, टौन्स घाटी आदि स्थानों में मिलता है।

इसकी अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं, जिनमें तथाकथित कालाशिरीष—*Albizzia odoratissima* Benth. मुख्य हैं।

(११३) द्रव्यनाम···संस्कृत······लज्जावन्ती।
हिन्दी······छुई मुई।
लैटिन······*Mimosa pudica* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, विसर्पी, क्षुप, काण्ड रोमिल रूक्ष; पत्र-संयुक्त, लम्बे, वृन्त वाले, त्रिपत्रक, संख्या में ४ हस्ताकार, पत्रक-रेखाकार एवं ½" लम्बे, पुष्प-पुष्पदण्ड के अग्रभाग पर गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——सितम्बर, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग, बीज।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में कहीं-२ ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, देहरादून, कालसी आदि स्थानों पर यत्र-तत्र है।

कुल—*ROSACEAE* (रोसेसी)

(११४) द्रव्यनाम···संस्कृत·····पद्मक।
स्थानिक ···पइयाँ।
लैटिन ·····*Prunus cerasoides* D. Don.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; काण्ड छाल, सफेदी किये हुई भूरी, मसृण; पर्ण ३-५″ दन्तुर, लट्वाकार-भालाकार, मसृण, तट एवं पत्राग्र तीक्ष्ण-पुष्प श्वेत गुलाबी रंग के, फल मांसल एवं रक्त वर्ण के।

पुष्पकाल ——दिसम्बर, जनवरी।
फलकाल ——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —छाल, काष्ठ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ९०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः गांवों के समीप टिहरी वन खण्ड; चम्बा, काणांताल, भागीरथी घाटी, अलकनन्दा घाटी आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

ग्रामीण लोग इसके काष्ठ का उपयोग ग्रहबाधा को दूर करने के लिए करते हैं।

(११५) द्रव्यनाम···संस्कृत·····एलवालुक।
हिन्दी ·····खुमानी (भेद)।
स्थानिक···चिलू।
लैटिन·····*Prunus cerasus* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; पत्र २-३″ लंम्बे १-५″ चौड़े, लट्वाकार, वृत्तकार, तट अरोमिल; पुष्प-गुलाबी, सफेद रग के; फल-गोल, मांसल, पीले रंग का।

पुष्पकाल——जनवरी, मार्च।
फलकाल ——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —काष्ठसार, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक ये वृक्ष प्रायः सभी घाटियों में गावों के समीप लगे हुये मिलते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—२१

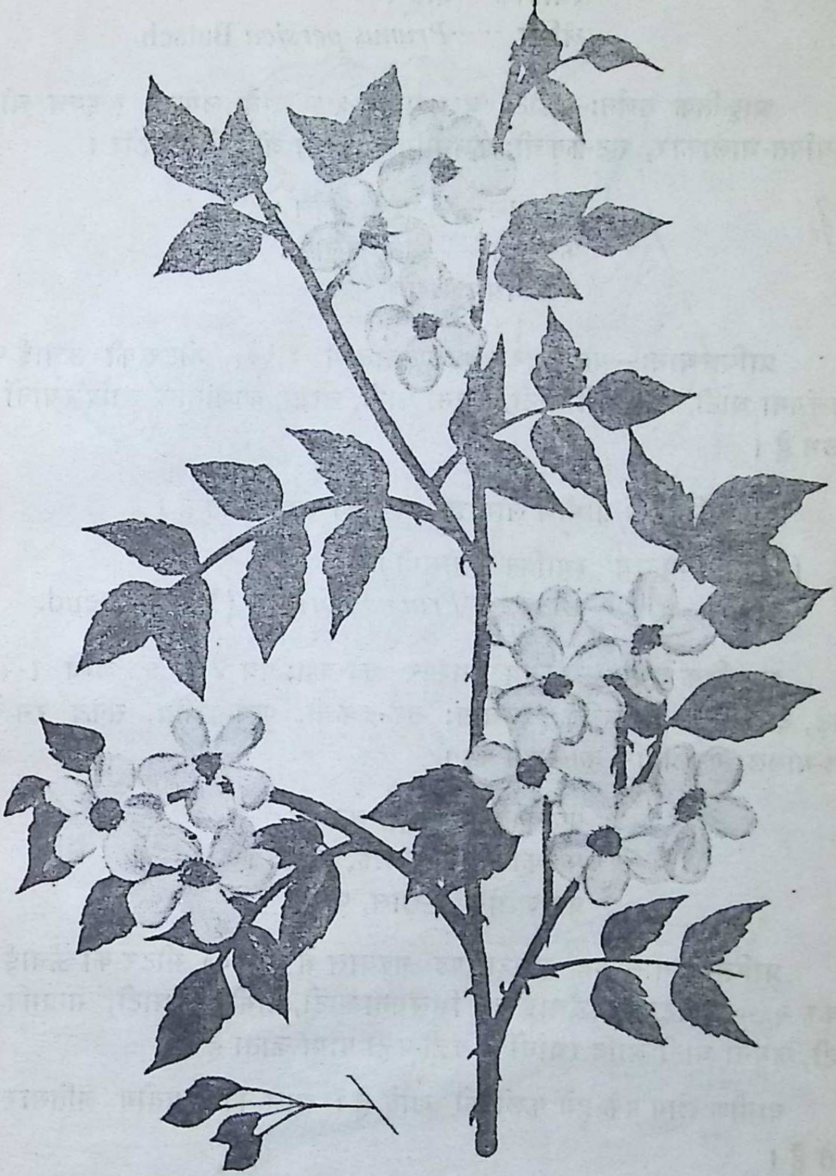

कुब्जक—*Rosa moschatta* Hernm.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फलों की मज्जा खाई जाती है। बीज तैल का उपयोग खाने के लिये किया जाता हैं। श्री ठा० बलवन्त सिंह जी ने शास्त्रीय एलवावुक इसे ही सिद्ध किया है।

(११६) द्रव्यनाम···संस्कृत ·····आरुक।
स्थानिक ···आड्।
लैटिन ·····*Prunus persica* Batsch.

आकृतिक वर्णनः—छोटा वृक्ष, पत्र-३-५'' लम्बे लगभग १ इञ्च चौड़े, दीर्घायत-भालाकार, तट-क्रकची; फल-मांसल, लम्बा और बीज कठोर।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
फलकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पत्र, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,६०० मीटर की ऊँचाई पर भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, चम्बा, काणाताल आदि स्थानों में सुलभ है।

इन घाटियों में ग्रामीण लोग इन वृक्षों की खेती करते हैं।

(११७) द्रव्यनाम···स्थानिक····जामगी।
लैटिन······*Prunus cornuta* (Wall) Steud.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; पत्र ४ से ६'' लम्बे, १-२.५ चौड़े, दीर्घायत, दीर्घवृत्तीय, लम्बाग्र; तट-क्रकची, पुष्प-कक्षीय, सफेद रंग के, फल-मांसल, गुठलीदार, काले रंग का।

पुष्पकाल——मई, जून।
फलकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —छाल, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,१०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, मन्दाकिनी घाटी, जमुना घाटी आदि स्थानों में कही-कहीं पाया ज़ाता हैं।

ग्रामीण लोग पके हुये फलों को खाते हैं। छाल का उपयोग अतिसार में करते हैं।

(११८) द्रव्यनाम···संस्कृत········कुब्जक।
स्थानिक······कूजा।
लैटिन ······*Rosa moschata* Herrm.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

चित्र—२४

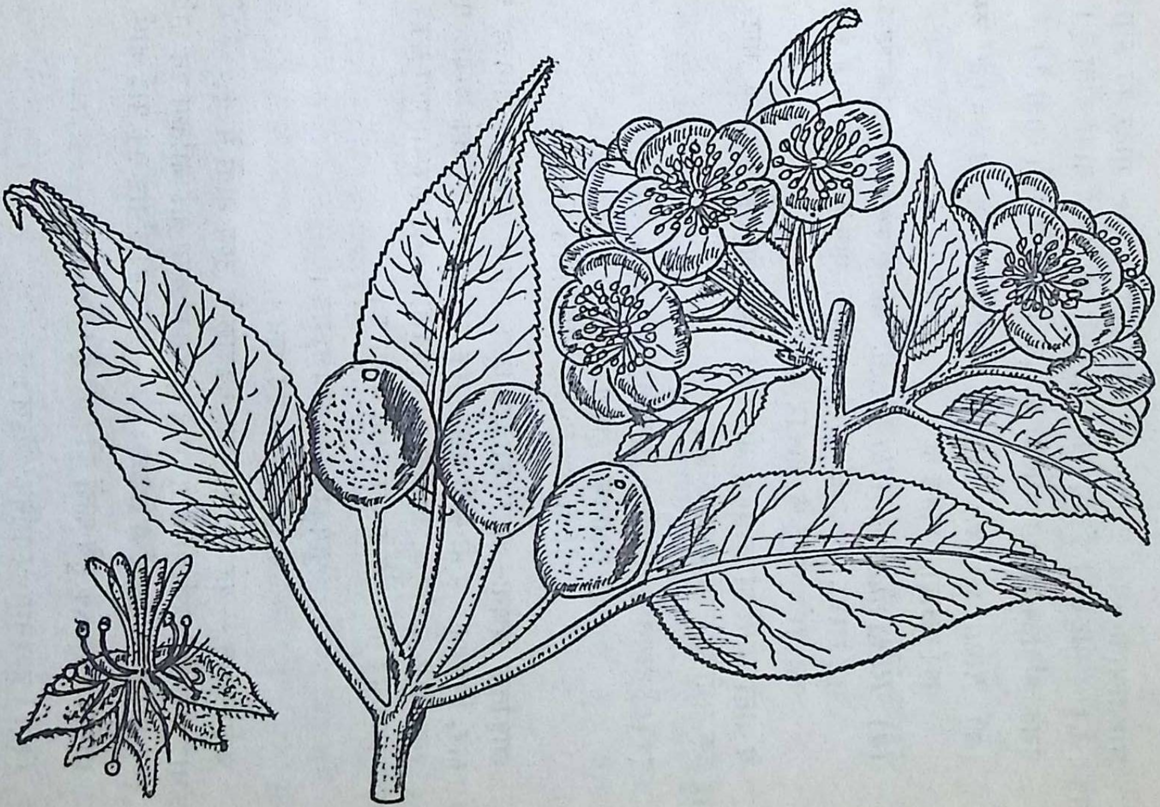

मेहल—*Pyrus pashia* Buch-Ham.

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust
Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्राकृतिक वर्णनः—बड़ा कांटेदार, आरोही क्षुप पत्र-२-६″ लम्बे, सवृन्त; पत्रक-लट्वाकार, भालाकार, तट दन्तुर एवं मृदुरोमिल; पुष्प-सफेद रंग के सुगन्धित; फल-रोमिल, कठोर, लाल रंग का।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —पुष्प।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

इसके अतिरिक्त निम्न जातियाँ भी इन घाटियों में पायी जाती हैं।

(अ) *Rosa sericea* Lindl. कण्टकित क्षुप, काण्ड ४-८ फुट लम्बा, पुष्प-गुलाबी-रक्तवर्ण के।

(ब) *Rosa macrophylla* Lindl. उर्ध्वसंस्थित; क्षुप; काण्ड-६-१० फुट लम्बा, पत्र ३-८″ लम्बे, सवृन्त; पुष्प-चमकीले लाल रंग के; फल-लम्बे, लट्टू के आकार के।

ये दोनों जातियां २,७०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,३०० मीटर की ऊँचाई तक सभी घाटियों में उपलब्ध हैं।

(११९) द्रव्यनाम···हिन्दी······हिंसालू।
स्थानिक····हींस।
लैटिन······*Rubus ellipticus* Sm.

ग्राकृतिक वर्णनः—बड़ा शाखीय क्षुप; शाखा-रक्ताभ, रोमिल; पत्र-पिच्छाकार, त्रिपर्णक, कभी-कभी एक पत्रक का वृन्त-१-३″ तक लम्बा; पत्रक २″-४″ तक लम्बे, अधोमुख, अण्डाकार, दीर्घवृत्तीय, तट-क्रकची; पुष्प-सफेद रंग के, फल-पकने पर पीले रंग के एवं स्वाद में मधुर।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फलकाल——मई, जून।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक सभी घाटियों में सुलभ है। इसकी अन्य कई जातियाँ इन घाटियों में २,१०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक पाई जाती है।

ग्रामीण लोग पके हुये फलों को खाते हैं।

(१२०) द्रव्यनाम···स्थानिक···मेहल।
लैटिन·····*Pyrus pashia* Buch-Ham.

ग्राकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का, पर्णपाती, वृक्ष पुराना काण्ड-प्रायः काले रंग का; पत्र-साधारण, २-४″ लम्बे, लट्वाकार-भालाकार, लम्बाग्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एवं सवृन्त, क्रकची; पुष्प-सफेद रंग के; फल—गोल, धूसर वर्ण के, पकने पर फल मधुर।

पुष्पकाल——जनवरी, मार्च।
फलकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —छाल, फल।

इसकी अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में विशेष ऊँचाई वालें स्थानों पर मिलती है जिसे पोथी *Pyrus lanata* Don. कहते हैं।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में मिलता है।

ग्रामीण लोग फल स्वरस का उपयोग मवेशियों के आँखों पर चोट लगने में करते हैं।

(१२१) द्रव्यनाम···हिन्दी······वज्रदन्ती।
लैटिन······*Potentilla fulgens* Wall.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, शाक; काण्ड उर्ध्वसंस्थित, ६-१८″ लम्बा, रोमिल; पत्र-पिच्छाकार, संयुक्त एवं कभी-कभी सम्मुख, पत्रक-जोड़ों में एकान्तर क्रम से बड़े एवं छोटे, लट्वाकार, रोमिल, रोम मृदुतूलसदृश; पुष्प-पीले या नारंगी, पीले रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग— मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, काणाताल, मसूरी, चकराता आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है। इसकी पीले, लाल, नीले पुष्पों की कई जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती हैं।

(१२२) द्रव्यनाम···स्थानिक···भेकल।
लैटिन ···*Prinsepia utilis* Royle.

आकृतिक वर्णनः—गहरा-हरा, कांटेदार क्षुप; पर्ण-एकान्तर, साधारण, १.५-५″ लम्बे एवं ५-१-२″ चौड़े, भालाकार, लम्बाग्र, अच्छिन्न एवं तीक्ष्ण क्रकची सवृन्त; पुष्प-सफेद रंग के, कक्षीय; फल-मसृण एवं पकने पर काले रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फलकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —बीज।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय-भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, अलकनन्दा घाटी, काणाताल, चम्बा, मसूरीं, चकराता आदि स्थानों पर पाया जाता है।

इसके तैल का प्रयोग ग्रामीण लोग खाने में करते हैं। कुछ स्थानों पर तैल की मालिस आमवात एवं सन्धिशोथ में उपपोगी मानी जाती है।

(१२३) द्रव्यनाम···स्थानिक···स्ट्रावेरी।
लैटिन ······*Fragaria vesca* Linn.

आकृतिक वर्णन:—एकवर्षी, शाक; पत्र-सवृन्तक, जोड़ें में; पत्रक-१-१½'' लम्बे, दन्तुर, मृदुरोमिल, रोम मखमली, पुष्प-सफेद रंग के एवं फल-गुलाबी, लाल रंग के एवं रसदार।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फलकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —फल, पत्र।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढवाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: सभी घाटियों में सुलभ है।

ग्रामीण लोग पके हुये फलों को खाते हैं, स्वाद में ये फल मधुर होते हैं।

(१२४) द्रव्यनाम···स्थानिक···रींस।
लैटिन······*Cotoneaster bacillaris* Wall.

आकृतिक वर्णन:—सदाहरित, अनियमित आकार का क्षुप; काण्ड-१०-१८ फुट लम्बा, अरोमिल; पत्र-१-३'' लम्बे, अण्डाकार, अण्डाकार-दीर्घायत, झिल्लीमय एवं सवृन्त; पुष्प-सफेद रंग के; फल-कठोर तथा लाल, काले रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
फलकाल——जुलाई, अगस्त।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊंचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: भिलंगना घाटी, दुफन्द, पौवागी, गङ्गी, जमुना घाटी, भागीरथी घाटी, कांणाताल, मन्सूरी, चकराता आदि स्थानों में मिलता है।

(१२५) द्रव्यनाम···स्थानिक···घिंगारु।
लैटिन ······*Crataegus crenulata* Roxb.

आकृतिक वर्णन:—सदाहरित, कण्टकी क्षुप; पत्र-एकान्तर, साधारण, १-२.५'' से २-५" बड़े सूच्याकार-दीर्घायत एवं अधोमुख, भालाकार, अरोमिल,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनुपर्णी, पर्णपाती; पुष्प-ऋक्षीय, सफेद रंग के; फल-मांसल एवं पकने पर गुलाबी लाल रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फलकाल——जुलाई, अगस्त।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ९०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः चम्बा, कांणाताल, घनशाली, भिलंगना-घाटी, जमुना घाटी एवं टौन्स आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग फल स्वरस का उपयोग वल्य द्रव्य के रूप में करते हैं।

(१२६) द्रव्यनाम···स्थानिक···वेलू।
लैटिन······*Agrimonia eupatorium* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, रोमिल, शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, २ से ३ फुट लम्बा; पत्र-पिच्छाकार, संयुक्त, नीचे के पत्र ४-७″ लम्बे; पत्रक-दन्तुर, अनियमित आकार के या अण्डाकार, पुष्प-पीले रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पत्र, मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक मसूरी, कांणाताल, चकराता, देववन आदि स्थानों पर पाया जाता है।

कुल—*SAXIFRAGACEAE* (सैक्सीफ्रेगेसी)

(१२७) द्रव्यनाम···संस्कृत·····पाषाणभेद।
स्थानिक····सिलपाड़ों।
लैटिन······*Bergenia ligulata* (Wall.) Engl.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, प्रकन्दिल शाक; पर्ण-मूलज, अण्डाकार या वर्तुलाकार, मांसल; तट, सरल प्रायः एवं रोमिल; पुष्प-सवृन्त, गुलाबी, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, चकराता, देववन आदि स्थानों पर पाया जाता है। इसके अतिरिक्त निम्न दो जातियाँ भी इन घाटियों में सुलभ है, जिनका कि औषधोपयोग होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

चित्र—२५

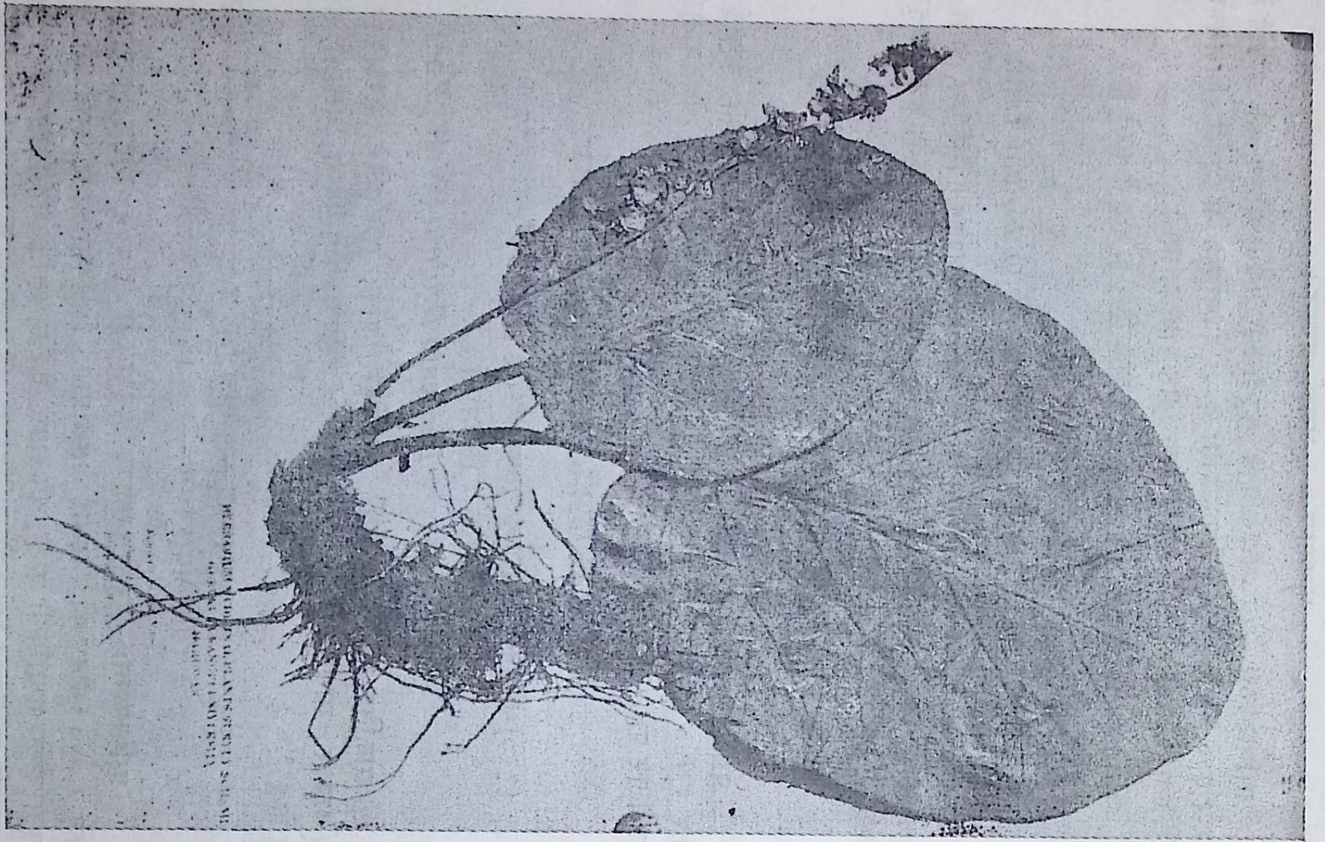

पाषाण भेद—*Bergenia ligulata* (Wall.) Engl.

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—२६

पाषाण भेद—*Berginia stryacheyi* H. K.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(अ) *Bergenia ciliata* Royle पत्र-रोमिल,

(ब) *Bergenia stryacheyi* H. K.

पत्र पृष्ट तथा तट अरोमिल एवं बर्फ़ीले ढालों में समूहों में ३,६०० मीटर की ऊँचाई पर पाया जाता है।

(१२८) द्रव्यनाम···स्थानिक···असकुटा।
लैटिन ······*Ribes nigrum* Linn.

आकृतिक वर्णनः—क्षुप; काण्ड-शाखीय, ६ से १० फुट तक लम्बा; पत्र-हृदयाकार, ३-५ खण्डों में, विभक्त क्रकची एवं झिल्लीमय तथा रोमिल; पुष्प-हरे, गुलाबी रंग के; फल-मांसल, रसदार पीले रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फलकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —फल, पत्र।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,७०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक जमुना घाटी, हरकीदून, टौन्स घाटी, भागीरथी घाटी आदि स्थानों पर कहीं २ मिलता है।

इसकी दूसरी औषधोपयोगी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती हैं जिसे *Ribes rubrum* Linn. कहते हैं। ग्रामीण लोग इसके पत्तों का प्रयोग मूत्रल रूप में करते हैं।

कुल—*CRASSULACEAE* (क्रेसुलेसी)

(१२९) द्रव्यनाम···यूनानी······जखमेहयात।
स्थानिक ···विषखपरो।
लैंटिन ···*Kalanchoe spathulata* DC.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, अरोमिल, शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, १ से ४ फुट लम्बा; पर्ण-मांसल, सम्मुख, कुण्ठदन्ति अथवा अच्छिन्न; पुष्प-पीले रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में यह ६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, उत्तरकाशी, धरासू, चम्बा आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलता है।

ग्रामीण लोग पत्तों का उपयोग व्रणरोपणार्थ करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र--२७

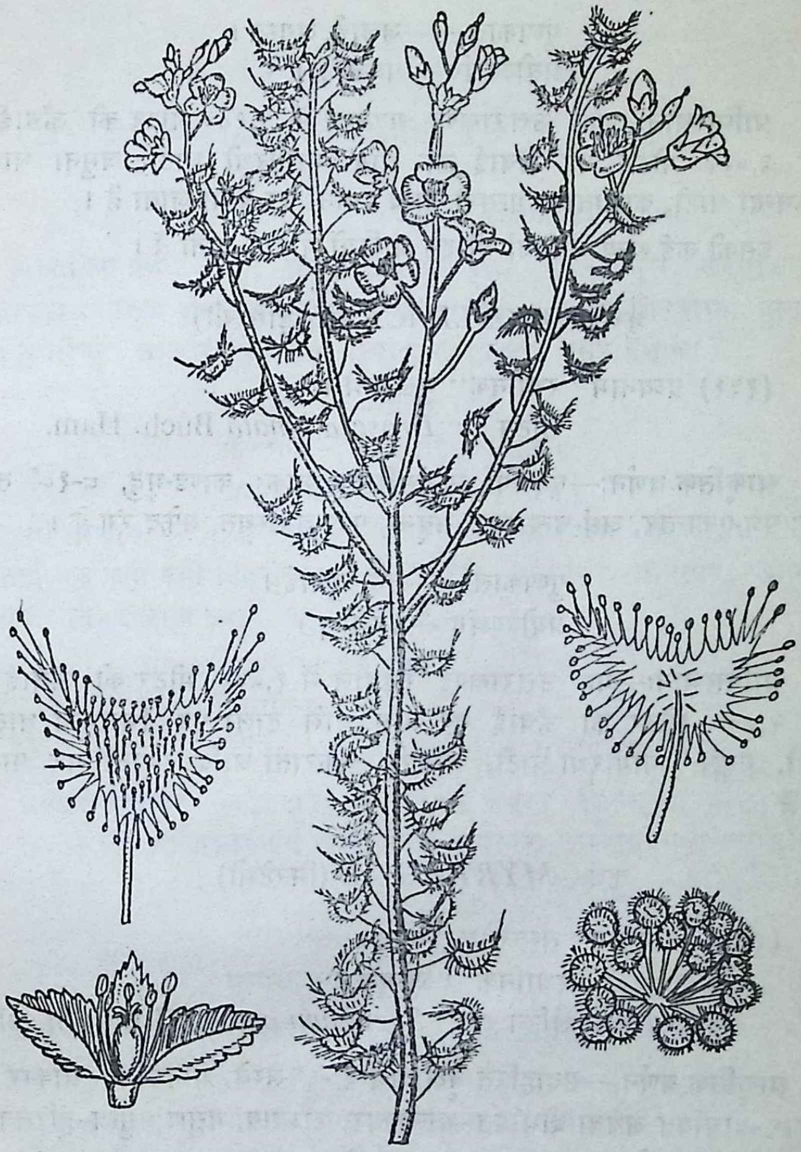

मुखजली—*Drosera lunata* Buch. Ham.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१३०) द्रव्यनाम···स्थानिक···मिरधा।
लैटिन·····*Sedum multicaule* Wall.

आकृतिक वर्णनः—अरोमिल, शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, ४″-८″ तक लम्बा; पत्र-मूलज, अवृन्त; पुष्प-पीले रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,१०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, अलकनन्दा घाटी, काणाताल, मन्सूरी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

इसकी कई अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं।

कुल—*DROSERACEAE* (ड्रासेरेसी)

(१३१) द्रव्यनाम···स्थानिक···मुखजली।
लैटिन ·····*Drosera lunata* Buch. Ham.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड-मृदु, ८-१०″ तक लम्बा; पत्र-एकान्तर, अर्ध-चन्द्राकार, सवृन्त; पुष्प-अग्रस्थित, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक घास वाले ढालों पर भिलंगना घाटी, पौवागी, गङ्गी, भागीरथी घाटी, मन्सूरी, चकराता आदि स्थानों पर पाया जाता है।

कुल—*MYRTACEAE* (मिरटेसी)

(१३२) द्रव्यनाम···संस्कृत······जम्बु।
स्थानिक ···जामुन।
लैटिन ······*Syzygium cumini* (Linn) Skeels.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित वृक्ष; पत्र ३″-६″ लम्बे, अनियमित आकार में अण्डाकार–दीर्घायत अथवा दीर्घायत–भालाकार, लम्वाग्र, मसृण; पुष्प–हरितवर्ण के, फल–मांसल, पकने पर रक्ताभ, कृष्ण वर्ण के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
फलकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —छाल, बीज, फल, मञ्जा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, पिपोला, देवप्रयाग, जौनसार, आदि स्थानों पर पाया जाता है। इसकी एक दूसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Syzygium-operculatum* Gamble—नदीजम्बू या क्षुद्रजम्बू कहते हैं।

कुल—*LYTHRACEAE* (लाइथेसी)

(१३३) द्रव्यनाम ···संस्कृत ······दाडिम।
स्थानिक······दाडिमू।
लैटिन ······*Punica granatum* Linn.

आकृतिक वर्णनः—क्षुप अथवा छोटा वृक्ष; पत्र–सम्मुख, लट्वाकार, दीर्घायत एवं अधोमुख भालाकार, कुण्ठित, सवृन्त, अच्छिन्न तट, झिल्लीमय; पुष्प–अवृन्त, अग्रस्थित, लाल रंग के; फल–गोलाकार, रक्ताभ, धूसर वर्ण का।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फलकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —फल, छाल, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक कहीं-कहीं टिहरी वन खण्ड, घोन्टी, घनशाली, जौनसार, जमुना घाटी एवं श्रीनगर आदि स्थानों पर मिलता है।

(१३४) द्रव्यनाम···संस्कृत······धातकी।
स्थानिक ···धौलू।
लैटिन······*Woodfordia fruticosa* Kurz.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा क्षुप; पर्ण–सम्मुख अथवा उपसम्मुख, वृन्त बहुत छोटा, २-४" लम्बे, भालाकार एवं अण्डाकार-भालाकार, लम्बाग्र; पुष्प–चमकीले, रक्त वर्ण के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —पुष्प।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः १,२०० मीटर की ऊँचाई तक मिलता है।

ग्रामीण लोग फूलों का प्रयोग वालातिसार में करते हैं।

कुल—*ONAGRACEAE* (औनेग्रेसी)

(१३५) द्रव्यनाम···स्थानिक ···मीलू।
लैटिन······*Epilobium hirsutum* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—क्षुप; काण्ड तूलरोमिल, उर्ध्वसंस्थित, १-३ फुट लम्बा; पत्र–भालाकार, दन्तुर, पुष्प-लाल, गुलाबी रंग के ।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त ।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई पर कहीं-कहीं पर भिलंगना घाटी, जमुना घाटी आदि स्थानों पर पाया जाता है ।

ग्रामीण लोग इसे विषैला मानते हैं ।

कुल—*SAMYDACEAE* (सेमीडेसी)

(१३६) द्रव्यनाम···संस्कृत·····चिन्हक ।
स्थानिक ···चीला ।
लैटिन ·····*Casearia graveolens* Dalz.

आकृतिक वर्णनः—छोटा, पर्णपाती वृक्ष; पत्र-४-८" लम्बे, लम्वाग्र एवं कुण्ठाग्र, क्रकची तट; पुष्प–हरितवर्ण के, फल–मांसल, दुर्गन्धयुक्त ।

पुष्पकाल——मार्च, मई ।
फलकाल——मई, जून ।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, उत्तरकाशी, धरासू, नरेन्द्रनगर, कुण्ड, गुप्तकाशी आदि स्थानों पर सुलभ है ।

इसकी अन्य जाति भी इन स्थानों पर पाई जाती है जिसे *Casearia tomentosa* Roxb. कहते हैं। छोटा पर्णपाती वृक्ष; पत्र ३-६" तक लम्बे, दीर्घायित, भालाकार; फल-पकने पर पीले रंग के एवं मसलने पर दुर्गन्धमय । वनस्पति विशेषज्ञ ठा० बलवन्त सिंह जी ने इनके फलों को हपुषाभरे माना है ।

कुल—*CUCURBITACEAE* (कुकरबिटेसी)

(१३७) द्रव्यनाम···संस्कृत····शिवलिङ्गी ।
स्थानिक ···पुतलगलो ।
लेटिन ·····*Bryonopsis laciniosa*(Linn.)Naud.

आकृतिक वर्णनः—आरोहो, एकवर्षी शाक, पत्र–५ गहरे-हस्ताकार खण्डों में विभक्त एवं बिन्दुकित, पुष्प-पीले रंग के; फल-गोल, पृष्ट पर चित्रित, मांसल एवं पकने पर लाल रंग के, बीज–आकार में शिवलिङ्ग सदृश, काले रंग के ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फलकाल——सितम्बर, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग —बीज।

प्राप्तिस्थानः--यह प्रायः ६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, उत्तरकाशी, धरासू, देवप्रयाग, श्रीनगर एवं जौनसार आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलता है।

(१३८) द्रव्यनाम···संस्कृत···विशाला।
हिन्दी ···लालइन्द्रायण।
स्थानिक···इलाड़ू।
लैटिन·····*Trichosanthes palmata* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—बड़ी आरोहीलता; काण्ड-प्रतान, त्रिशाखी, पत्र–२-६ व्यास में, लट्वाकार, उपवृत्ताकार, ३-७ खण्डों में, विभक्त प्रत्येक खण्ड-लट्वाकार, दीर्घायत एवं अच्छिन्न; पुष्प-सफेद रंग के, फल–मसृण एवं लाल रंग का।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फलकाल——सितम्बर, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग —फल, मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में ६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय; भिलंगना घाटी—घनशाली, इन्द्रोला, धुत्तू मन्दाकिनी घाटी, फाटा, कुण्ड, गुप्तकाशी, कालीमठ, उत्तरकाशी, जमुना घाटी, जौनसार एवं चकराता आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(१३९) द्रव्यनाम···संस्कृत·····वन्यपटोल।
स्थानिक ···जंगली, चचीण्डा।
लैटिन ·····*Trichosanthes cucumerina* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मृदुरोमिल, एकवर्षी लता; काण्ड-प्रतानन्तिशाली; पत्र २-४" व्यास में, प्रायः ५ खण्डों में विभक्त, रोमिल, सवृन्त; पुष्प-छोटे, हरित, पीत पर्ण के; फल-लम्बा, शंक्वाकार एवं लाल रंग का।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फलकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः ६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, घोन्टी, घनशाली, नरेन्द्रनगर, उत्तरकाशी, धरासू रुद्रप्रयाग, जमुना घाटी एवं देहरादून आदि स्थानों पर मिलता है। इसके पत्तों का उपयोग प्रायः परोलपत्र के स्थान में किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१४०) द्रव्यनाम···संस्कृत·······बिम्बी।
स्थानिक·····कन्दूरी।
लैटिन ·····*Coccinia indica* W. & A.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, विसर्पी लता; मूल–कन्दिल; पर्ण–२-४″ व्यास में सवृन्त, हृदयाकार, लट्वाकार, ४ से ५ खण्डों वाला; पुष्प-सफेद रंग के; फल-दीर्घायित, मांसल, पकने पर लाल।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फलकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः ६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, उत्तरकाशी, घनशाली, नरेन्द्रनगर आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(१४१) द्रव्यनाम···संस्कृत·····कारवेल्लक।
स्थानिक ···करैला।
लैटिन ·····*Momordica charantia* Linn.

आकृतिक वर्णनः—आरोहीलता, काण्ड-३-६ फुट लम्बा, मृदुरोमिल, पर्ण-वृक्काकार–वर्तुल, १-३″ व्यास में, गहरे, ५-६ खण्डों वाला सवन्त, पुष्प–पीले रंग के, फल–गोल, धारीदार, अग्रभाग तीक्ष्ण।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फलकाल——पुष्पकाल के बाद।
प्रयोज्यअंग —फल।

(१४२) द्रव्यनाम···संस्कृत···कर्कोटक (नरलिंगीपादप) तथा
वन्धाकर्कोटका (स्त्रीलिङ्गी पादप)।
हिन्दी·····ककोड़ा या खेखसा तथा वांझककोड़ा।
लैटिन·····*Momordcia diocia* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी आरोहीलता; पर्ण-हृदयाकार, अखण्ड या तीन खण्डों में, लट्वाकार एवं दन्तुर; नर और स्त्री पुष्पों की लतायें पृथक् २ होती हैं। नर-पुष्पों की लता को वन्ध्याकर्कोटकी कहते है एवं फल वाली तथा नारी पुष्पों की लतायें कर्कोटकी कही जाती हैं।

पुष्पकाल——जुलाई।
प्रयोज्यअंग —फल, मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण खागों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी व न खण्ड, घोन्टी, श्रीनगर आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—२८

बिभीतक—*Terminalia belerica* Roxb.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१४३) द्रव्यनाम···हिन्दी······बनकुन्दुरु।
लैटिन······*Melothria heterophylla* Cogn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; मूल–कन्दिल; काण्ड-प्रतान, लम्बे; पत्र–विभिन्न आकार प्रकार के; पुष्प–पीताभ, श्वेत रंग के; एकलिंगी तथा नर पुष्प एवं स्त्री पुष्प अलग २; फल-पकने पर लाल रंग का।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल, पत्र।

प्राप्तिस्थानः—गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक घोन्टी, घनशाली आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलता है।

कुल—*COMBRETACEAE* (काम्ब्रेटेसी)

(१४४) द्रव्यनाम···संस्कृत······बिभीतक।
स्थानिक ···बहेड़ा।
लैटिन ······*Terminalia belerica* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार, पर्णपाती वृक्ष; पत्र–एकान्तर, ३-८″ लम्बे, लट्वाकार-दीर्घवृत्तीय एवं सवृन्त; पुष्प–सफेद, पीले; फल–१″ लम्बा, कठोर एवं घूसर वर्ण का।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
फलकाल——दिसम्बर, फरवरी।
प्रयोज्यअंग —फल, फलमञ्जा, बीजतैल।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, घनशाली, धरासू आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलता है।

(१४५) द्रव्यनाम···संस्कृत······हरीतकी।
स्थानिक ···हरड़।
लैटिन ······*Terminalia chebula* Retz.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा, पर्णपाती वृक्ष; पर्ण–३-६″ लम्बे, २-४″ तक चौड़े, लट्वाकार, दीर्घवृत्तीय, सवृन्त; पुष्प-मञ्जरी, पीले रंग की; फल-१-३″ तक लम्बे एवं ५ या ६ रेखाओं वाले।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
फलकाल——जनवरी, मार्च।
प्रयोज्यअंग —फल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरी वन खण्ड, घनशाली, उत्तरकाशी, कुण्ड, जौनसार एवं श्रीनगर में यत्र-तत्र पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसकी अन्य एक जाति भी इन घाटियों के उष्ण भागों में मिलती है जिसे असैन *Terminalia tomentosa* W. & A. कहते हैं। इसे बीजक (विजयसार) या वास्तविक असन का प्रतिनिधि द्रव्य माना जा सकता है।

(१४६) द्रव्यनाम···संस्कृत·····धव।
स्थानिक ···वांकली।
लैटिन ·····*Anogeissus latifolia* Wall.

आकृतिक वर्णनः—वृक्ष; काण्ड-मसृण; पर्ण-२-४″ लम्बे दीर्घवृत्तीय; अरोमिल, पुष्प-कक्षीय, पीले रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —काष्ठसार, निर्यास।

प्राप्तिस्थानः—यह प्रायः उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, धरासू, नागनी, जौनसार एवं देहरादून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

कुल—*UMBELLIFERAE* (अम्बेलीफेरी)

(१४७) द्रव्यनाम···संस्कृत·····मण्डूकपर्णी।
स्थानिक ···ब्राह्मी।
लैटिन ·····*Centella asiatica* Linn. Urban.

आकृतिक वर्णनः—शयान शाक; काण्डग्रन्थियां मूल युक्त पत्र १″-२″ तक लम्बे; वृक्काकार अथवा वर्तुलाकार, दन्तुर, अरोमिल; पुष्प-पर्वो पर छत्राकार गुच्छों में निकलते हैं। पुष्प-सफेद, गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग, पत्र।

इसके अतिरिक्त अन्य दो जातियां पूर्व नामकरण के अनुसार भी इन घाटियों के जलिय स्थानों के समीप पाई जाती है।

(१) *Hydrocotyle javanica* Thunb. पर्ण १-३″ व्यास में, पत्र के दोनों पृष्ठ चमकदार, झिल्ली सदृश;

(२) *Hydrocotyle rotundifolia* Roxb. पत्र-१/४-१″ व्यास में, हृदयाकार; खण्डित तट एवं दोनों पृष्ठों पर रोमिल; पुष्प-छोटे-पीले रंग के।

प्राप्तिस्थानः—ये जातियां उत्तराखण्ड गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊंचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, घोन्टी, धुत्त, उत्तरकाशी, जोशीमठ, श्रीनगर, जौनसार एवं चम्बा आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—२९

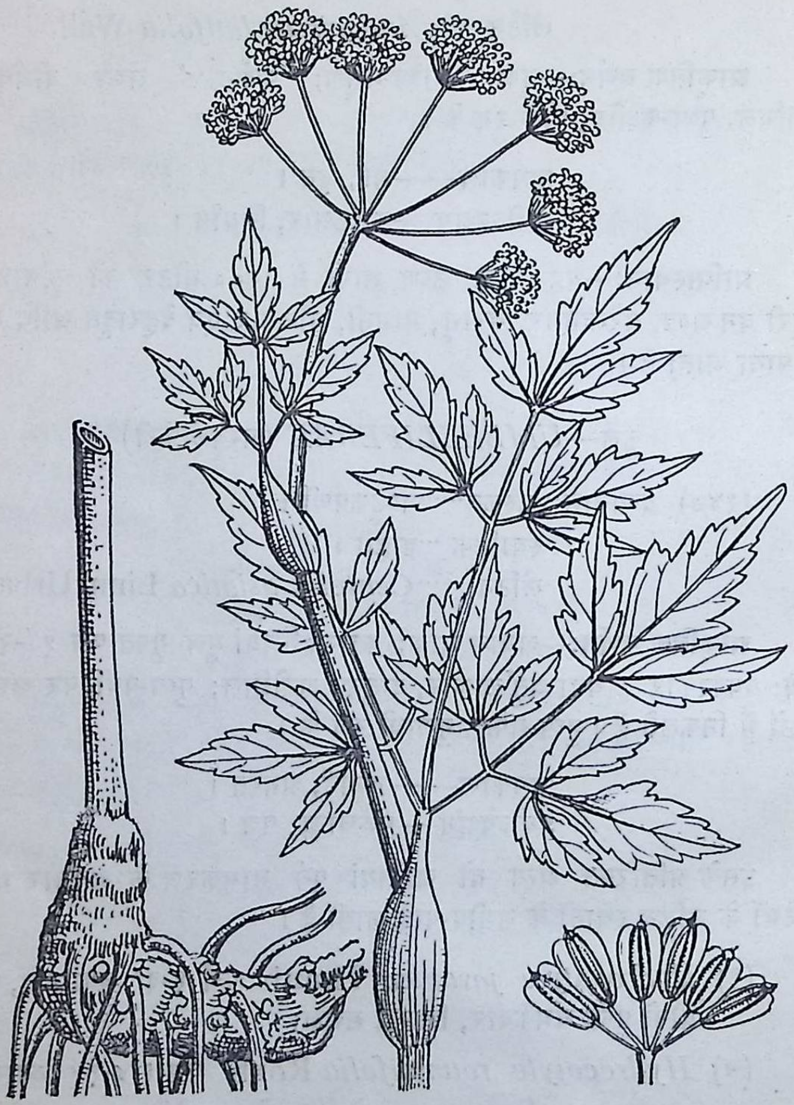

चोरक—*Angelica glauca* Edgew.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३०

गन्धायण—*Heracleum candicans* Wall.

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Public Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No. L7(1:351)
Lock No. 12N7
Acc. No. 001682

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१४८) द्रव्यनाम···संस्कृत·····चोरक।
स्थानिक ···चोरा।
लैटिन ·····*Angelica glauca* Edgew.

आकृतिक वर्णनः—मृदुरोमिल, शाक; काण्ड-उध्र्वसंस्थित, २-३ फुट तक लम्बा, मूल-सुगन्धित प्रकन्दी; पर्ण-बड़े त्रि-पिच्छाकार; पत्रक-अण्डाकार एवं भालाकार, पत्रक, तट-तीक्ष्ण, दन्तुर, पुष्पक्रम, छत्राकार, पुष्प-सफेद रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह हिमालय में ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, पंवाली, दुफन्द, ताली, सहस्त्रताल, भागीरथी घाटी, रैथल, दयारा, सुक्की एवं जमुना घाटी, हरकीदून, मन्दाकिनी घाटी, केदारनाथ आदि स्थानों पर पाया जाता है।

एक दूसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है; जिसे ग्रामीण लोग रिखचोरा कहते हैं। सम्भवतः यह शास्त्रीय चण्डा *Angelica archangelica* Linn. है। इसमें प्रकन्द मोटा तथा अधिक गाठों एवं मूलों वाला होता है।

(१४९) द्रव्यनाम···स्थानिक···गन्धायण।
लैटिन·····*Heraceum pinnatum* C. B. Clarke.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड २-४ फुट लम्बा, मूल, प्रकन्दी, सुगन्धित; पत्र–त्रि-पिच्छाकार; पत्रक-अण्डाकार, खण्डित; पुष्प-पुष्पछत्री, सफेद रंग के, बीज-चपटे एवं सुगन्धित तथा रोमिल।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

इसकी अन्य कई जातियाँ इन घाटियों में मिलती है; जिसमें *Heracleum candicans* Wall. छत्र्या मुख्य है। मूल-प्रकन्दी एवं उग्रसुगन्धितः यह शाक १,५०० मीटर की ऊँचाई पर पाया जाता हैं।

प्राप्तिस्थानः—यह हिमालय में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,३०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, अलकनन्दा घाटी, मन्दाकिनी घाटी, एवं हरकीदून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(१५०) द्रव्यनाम···संस्कृत·····मुरामांसी।
स्थानिक····मूर।
लैंटिन·····*Selinum tenuifolium* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, सुगन्धित शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, २-३ फुट लम्बा; मूल-प्रकन्दी, पर्ण-बड़े प्रायः ४-५ पिच्छाकार, संयुक्त, पत्रक-दीर्घतम पिच्छाकार, पुष्पक्रम, पुष्पछत्री, पुष्प सफेद रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

(१५१) द्रव्यनाम···स्थानिक·····भूतकेश।
लैटिन ······*Selinum vaginatum* C. B. Clarke.

आकृतिक वर्णनः—सुगन्धित, प्रकन्दी शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, २-४ फुट तक लम्बा, पर्ण १-२ पिच्छाकार, संयुक्त, पत्रक-भालाकार, दीर्घ-पिच्छाकार, दन्तुर, पुष्पक्रम, पुष्पछत्री, फल-दीर्घायत एवं लम्बा।

प्राप्तिस्थानः—सेलिनम की दोनों जातियां हिमालय के ऊँचाई वाले भागों में २,४०० मीटर से लेकर ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक, प्रायः भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, हरकीदून, मन्दाकिनी घाटी, अलकनन्दा घाटी, कांणाताल, मंसूरी, चकराता आदि स्थानों पर पाई जाती हैं।

व्यापारिक दृष्टि से इनके मूल का इन घाटियों से संग्रह किया जाता है। ग्रामीण लोग मूल का उपयोग ग्रहबाधा एवं भूतबाधा में धूपन के लिये करते हैं। सम्भवतः ये दोनों जातियाँ क्रमशः मुरामांसी एवं भूतकेशी हैं।

(१५२) द्रव्यनाम···स्थानिक···छत्र्या।
लैटिन ·····*Trachyspermum falconeri* C. B. Clarke.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, सुगन्धित शाक, काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, १-३ फुट लम्बा; पत्र-द्वि-पिच्छाकार, पत्रक-सूच्याकार एवं उग्रसुगन्धित; पुष्प-पुष्पछत्री सफेद रंग के, बीज-कृष्णजीरक, सदृश, काले रंग के एवं सुगन्धित।

पुष्पकाल——जन, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह घास वाले ढालों पर १,२०० मीटर की ऊँचाई तक घनशाली, घुत्तु, इन्द्रोला एवं टिहरी वन खण्ड में पाया जाता है।

ग्रामीण लोग बीजों का प्रयोग उदरशूल में करते हैं।

(१५३) द्रव्यनाम···स्थानिक···जंगली जीरा।
लैटिन······*Bupleurum falcatum* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, अरोमिल शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, १ से ४ फुट लम्बा, पर्ण-अवृन्त, सूच्याकार; सहपत्र सूच्याकार; भालाकार एवं तीक्ष्णाग्र, सहपत्रिका ४-५, पुष्प-पुष्पछत्री, पीताभ रंग के फल दीर्घायत।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —बीज, मूल।

इसकी दूसरी औषधोपयोग की जाति भी इन घाटियों में मिलती है जिसे *Buplcurum jucundum* Kurz. कहते हैं।

प्राप्तिस्थानः—ये जातियाँ इन घाटियों में १,६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र पाई जाती हैं।

(१५४) द्रव्यनाम···स्थानिक···तिरोई।
लैटिन······*Pimpinella diversifolia* DC.

आकृतिक वर्णनः—रोमिल, उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड-२-५ फुट लम्बा, मृदुरोमिल; पत्र-एक पिच्छाकार; संयुक्त पत्रक-३ से ५ भालाकार, भिन्न आकार का सहपत्र १ से २; पुष्प-सफेद रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह हिमालय में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,३०० मीटर की ऊँचाई पर भागीरथी घाटी, भिलंगना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, कांणाताल, मन्सूरी, चकराता, जमुना घाटी एवं हरकीदून में पाया जाता है।

(१५५) द्रव्यनाम···स्थानिक···लेसर।
लैटिन······*Pteorospermum candollii* Benth.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी उग्रसुगन्धित शाक; काण्ड ६-८″ तक लम्बा विसर्पी; मूल-प्रकन्दी, सफेदी लिए हुए, पुष्प-पुष्पछत्री, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह ३,६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,९०० मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसकी अन्य कई जातियां भी इन घाटियों में यत्र-तत्र मिलती हैं। विशेषकर यह किनकोलियाखाल, ताली आदि स्थानों पर मिलता है।

ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग का प्रयोग धूप के लिए करते हैं। इसकी दूसरी जाति भी इन स्थानों पर मिलती है, जिसे *P. ongelicoides.* Benth. कहते हैं।

कुल—*ARALIACEAE* (अरेलियेसी)

(१५६) द्रव्यनाम···स्थानिक···वान्दा।
लैटिन······*Hedera nepalensis* K. Koch.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३१

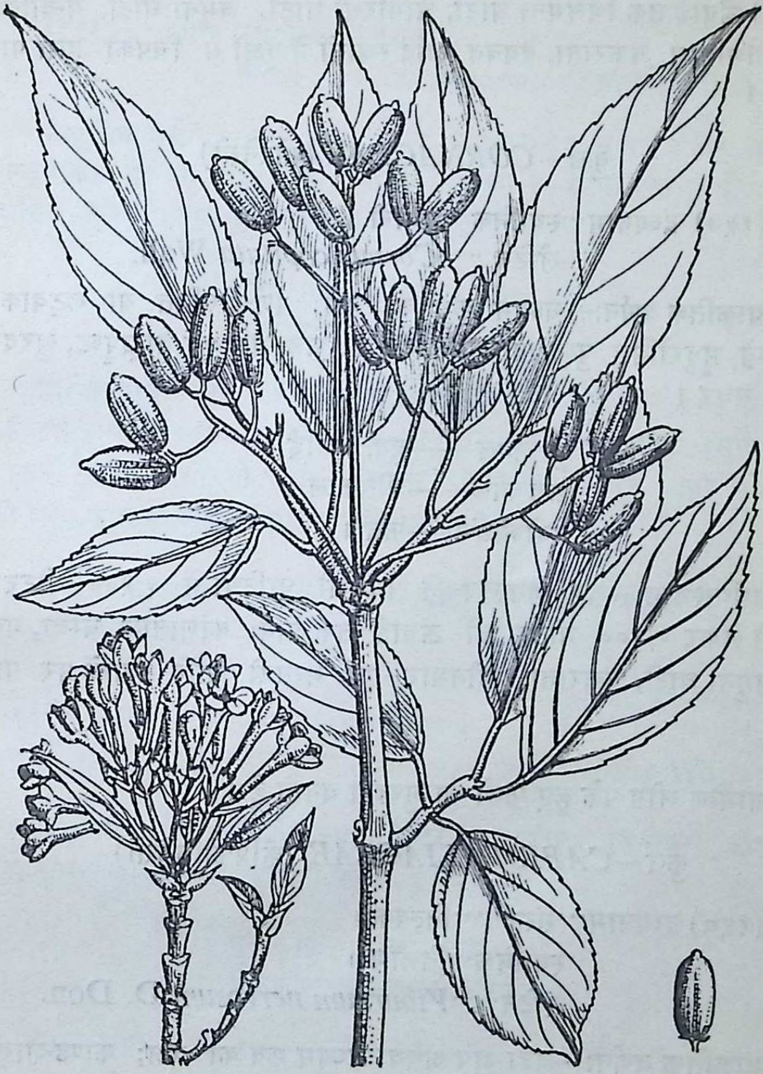

तिलवक—*Viburnum nervosum* D. Don.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित, आरोही क्षुप; पत्र-साधारण, चमकीले, लट्वाकार, ३ से ५ विषमाकार खण्डों में विभक्त; पुष्प-पुष्पछत्री पीले रंग के।

पुष्पकाल——दिसम्बर, मार्च।
प्रयोज्यअंग —पत्र, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, कांणाताल, चकराता, देववन आदि स्थानों में वृक्षों से चिपका हुआ पाया जाता है।

कुल—*CORNACEAE* (कोरनेसी)

(१५७) द्रव्यनाम···स्थानिक···भमोरी।
लैटिन ·····*Cornus capitata* Wall.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम कद का वृक्ष; पर्ण-दीर्घायत या लट्वाकार, २-३″ लम्बे, मृदुरोमिल, पुष्प-श्वेत, पीत वर्ण के; फल-गोल एवं वाह्यपृष्ठ, खुरदरा, स्वाद में मधुर।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फल काल——शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —फल।

प्राप्तिस्थानः—यह हिमालय की निचली घाटियों में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः कांणाताल, चम्बा, गजा, धुत्तू, जमुना घाटी, चकराता, जौनसार एवं मन्सूरी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पके हुए फलों का मुरब्बा बनाते हैं।

कुल—*CAPRIFOLIACEAE* (कैप्रिफोलियेसी)

(१५८) द्रव्यनाम···संस्कृत···तिल्वक।
स्थानिक···तिलींण।
लैटिन·····*Viburnum nervosum* D. Don.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा क्षुप अथवा मध्यम कद का वृक्ष; काण्ड-शाखीय, पत्र-२.५″ लम्बे, १-३″ चौड़े, दीर्घवृत्तीय-दीर्घायत, क्रकची, मृदुरोमिल; पुष्प-गुलाबी, सफेद रंग के, सुगन्धित।

पुष्पकाल——मई, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —छाल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—गढ़वाल में यह २,४०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भागीरथी घाटी, भिलंगना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, जमुना घाटी, हरकीदून, मन्सूरी, कांणाताल एवं चकराता आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ठा० बलवन्त सिंह ने इसी वृक्ष को शास्त्रीय तिल्वक स्वीकार किया है।

(१५९) द्रव्यनाम···स्थानिक···मट्याणूँ।
लैटिन······*Viburnum cotinifolium* D. Don.

आकृतिक वर्णनः—वड़ा क्षुप अथवा मध्यमाकार वृक्ष; काण्ड शाखीय, पर्ण-लट्वाकार या वर्तुलाकार, २-५″ लम्बे, पत्र का उर्ध्वपृष्ठ हरा एवं अधोपृष्ठ मृदुरोमिल, क्रकची; पुष्प-सफेद रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
प्रयोज्यअंग —छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः कांणाताल, चकराता, जौनसार, भिलंगना घाटी, जमुना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, भागीरथी घाटी, जोशीमठ आदि स्थानों पर पाया जाता है। इसकी अन्य जातियां भी इन घाटियों में मिलती है।

व्यापारिक रूप से इसके छाल का संग्रह विदेशी वाइवरनम के स्थान में किया जाता है।

(१६०) द्रव्यनाम···स्थानिक···वनचिलू।
लैटिन·······*Lonicera angustifolia* Wall.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, मृदुरोमिल क्षुप; पत्र-सवृन्त, दीर्घायत, कुण्ठाग्र, पुष्प-कक्षीय, सफेद, गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
फलकाल——जुलाई, अगस्त।

प्राप्तिस्थानः—यह १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,३०० मीटर की ऊँचाई तक भागीरथी घाटी, भिलंगना घाटी, जमुना घाटी, हरकीदून एवं चकराता आदि स्थानों पर पाया जाता है।

इसके अतिरिक्त दूसरी अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं। ग्रामीण लोग पत्रों का उपयोग जानवरों में पेट के अफारे में करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३२

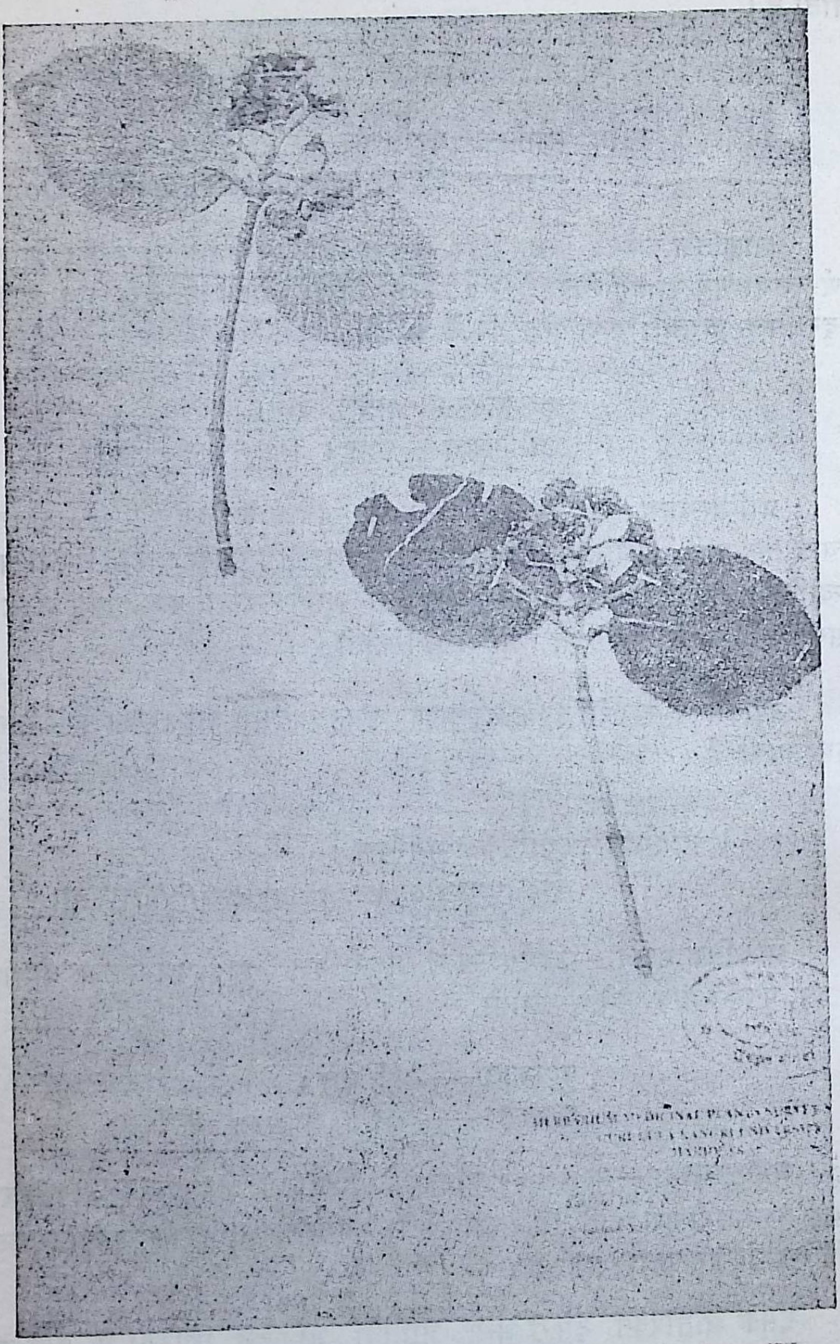

मट्याणू—*Viburnum continifolium* D. Don.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३३

मञ्जिष्ठा—*Rubia cordifolia* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल—*RUBIACEAE* (रुबियेसी)

(१६१) द्रव्यनाम···संस्कृत ······मञ्जिष्ठा।
स्थानिक······मंजीठ।
लैटिन ······*Rubia cordifolia* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, आरोही या विसर्पी क्षुप; शाखा खांचे एवं खरःस्पर्श; पत्र क्रम चाक्रिक, पत्र-सवृन्त, हृदयाकार-लट्वाकार; २-४" लम्बे; पुष्प-छोटे, लाल रंग के; मूल-रक्तवर्ण का;

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
फलकाल ——पुष्पकाल के बाद।
प्रयोज्यअंग —मूल, काण्ड।

प्राप्तिस्थानः—यह १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, हरकीदून, चकराता, कांणाताल एवं मसूरी आदि स्थानों पर कहीं-कहीं पाया जाता है।

ग्रामीण वैद्य मूलक्वाथ का प्रयोग रक्तप्रदर में करते हैं।

(१६२) द्रव्यनाम···संस्कृत······मदना।
स्थानिक ···मैणदू, (राडू)।
लैटिन······*Randia dumetorum* Lamk.

आकृतिक वर्णनः—कांटेदार क्षुप; पर्ण-सम्मुख, लट्वाकार या अधोमुख-भालाकार, अनुपर्ण-भालाकार एवं वृन्तिल; पुष्प-कक्षीय, श्वेत, पीले रंग के, सुगन्धित; फल-पकने पर पीले रंग का।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
फलकाल——शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —फल।

इसकी दूसरी जाति भी इन घाटियों के उष्ण भागों में पाई जाती है जिसे मेंढल *Randia tetsasperma* Roxb. कहते हैं।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के निचले भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, घोन्टी, घनशाली, जमुना घाटी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(१६३) द्रव्यनाम···संस्कृत······तिलक।
स्थानिक···उडारु।
लैटिन ······*Wendlandia exserta* DC.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—पर्णपाती, छोटा वृक्ष; पर्ण ४-९" तक लम्बे, अण्डाकार; अण्डाकार-भालाकार एवं लम्बाग्र; पुष्प-मञ्जरी में सफेद रंग के एवं सुगन्धित।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, घनशाली, देहरादून आदि स्थानों पर पाया जाता है। वनस्पति विशेषज्ञ ठा० बलवन्त सिंह ने इसे शास्त्रीय तिलक माना है।

(१६४) द्रव्यनाम···संस्कृत······हरिद्र।
स्थानिक ···हलदू।
लैटिन ······*Adina cordifolia* Hook.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा, पर्णपाती वृक्ष; काष्ठ पीले रंग का; पत्र-सम्मुख, ४-९" व्यास में; वर्तुलाकार, हृदयाकार, सवृन्त एवं लम्बाग्र; पुष्प-पीले रंग के, फल-गोल।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —छाल, पत्र।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, देहरादून, जौनसार आदि स्थानों में पाया जाता है।

(१६५) द्रव्यनाम···संस्कृत······महापिण्डी।
स्थानिक·······थनैला।
लैटिन ······*Gardenia turgida* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—छोटा, पर्णपाती वृक्ष; काण्ड छाल-हरित, पीताभ, अरोमिल, पर्ण-सम्मुख, विषमाकार १-४" लम्बे, दीर्घवृत्तीय, अधोमुख, अण्डाकार एवं लम्बाग्र, पुष्प-सुगन्धित, सफेद रंग के, फल-व्यास में १½-२" गोल, श्वेताभ और कठोर।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
फलकाल——शीतकाल में।
प्रयोज्यअंग —फल, छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में कहीं-कहीं मुनिकिरेती, देहरादून आदि स्थानों पर मिलता है।

हरिद्वार और देहरादून की फार्मेसियों में इसकी छाल का भारंगी के नाम से उपयोग होता है।

ठा० बलवन्त सिंह ने इसे करहाट अथवा महापिण्डी शास्त्रीय द्रव्य माना है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१६६) द्रव्यनाम···हिन्दी·····पापरी।
स्थानिक···अंगारी।
लैटिन·····*Pavetta indica* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा क्षुप; पर्ण-सम्मुख, ३-९" लम्बे, अधोमुख, अण्डाकार या अधोमुख, भालाकार एवं कुण्ठाग्र; पुष्प-सफेद रंग के; सुगन्धित, फल-गोल, नतोदर।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग—मूल, पत्र, फल।

प्राप्तिस्थानः—गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, कुण्ड, रुद्रप्रयाग एवं देहरादून के वनों में कहीं-कहीं पाया जाता है।

(१६७) द्रव्यनाम···संस्कृत······गन्धप्रसारिणी।
स्थानिक···पदाड़।
लैटिन·····*Paederia foetida* Linn.

आकृतिक वर्णनः—दुर्गन्धयुक्त, प्रसरणशील अथवा आरोही लता; मूल बहुवर्षी; पत्र-सम्मुख, अण्डाकार, लट्वाकार अथवा, लम्बी, लट्वाकार, लम्बाग्र; दोनों पत्रों के बीच में दो-दो संयुक्त अनुपर्णा; पुष्प-हरिताभ वर्ण के।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह शिवालिक वन खण्ड एवं देहरादून की घाटियों की यत्र-तत्र छाया में एवं नम स्थानों पर पाया जाता है।

(१६८) द्रव्यनाम···लैटिन······*Oldenlandia corymbosa* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी शाक; काण्ड ३ से १२ इञ्च तक लम्बा, विसर्पी, पत्र-रेखाकार, भालाकार; पुष्प-सफेद रंग के।

पुष्पकाल——जलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में टिहरी वन खण्ड, घौन्टी, घनशाली, उत्तरकाशी आदि स्थानों में खेतों के आसपास यत्र-तत्र पाया जाता है।

कुछ वैद्य इसके पञ्चाङ्ग का भी क्षेत्रपर्पट के नाम से उपयोग करते हैं।

(१६९) द्रव्यनाम···स्थानिक···छोटी कुरी।
लैटिन·····*Galium mollugo* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—विसर्पी शाक; काण्ड-त्रिभुजाकार, पत्र-अवृन्त, चक्करदार, ४ से ५ तक अरोमिल; पुष्प-छोटे-छोटे, पीले,गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में मिलता है।

कुल—*VALERIANACEAE* (वेलेरियेनेसी)

(१७०) द्रव्यनाम···संस्कृत······जटामांसी।
स्थानिक ···मांसी।
लैटिन······*Nardostachys jatamansi* DC.

आकृतिक वर्णनः—सुगन्धित, बहुवर्षी शाक; प्रकन्द, सघन, जटाकार, आवरण से युक्त एवं वायवीय काण्ड ६"-१५" तक लम्बा, उर्ध्वसंस्थित; पर्ण-मूलज, ५-६ जोड़ों में भालाकार एवं मृदुरोमिल; पुष्प-दीर्घ, सवृन्त, गुच्छे में गुलाबी, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —प्रकन्द।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड हिमालय में ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी के पंवालीकांटा, ताली, किनकोलियाखाल, सहस्त्रताल, खतलिङ्ग, भागीरथी घाटी के दयारा, गंगोत्तरी, जाड़गंगा घाटी, मन्दाकिनी घाटी केदारनाथ, चोरावाड़ीताल, हथनी, मदमहेश्वर, तुंगनाथ, रुद्रनाथ, अलकनन्दा घाटी के हेमकुण्ड, वसुधारा, नीतीपास, धोली घाटी, जमुना घाटी एवं हरकीदून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग हवन सामग्री में करते हैं। इन. स्थानों से इसका संग्रह किया जाता है।

(१७१) द्रव्यनाम···संस्कृत······तगर।
स्थानिक ···सुमयाँ।
लैटिन······*Valeriana jatamansi* Jones.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, रोमिल, शाक; मूल-स्तम्भ, प्रकन्दी, क्षैतिज, उग्रसुगन्धित; काण्ड-६-१८" तक लम्बा; पत्र-सरल, मूलज, सवृन्त, हृदयाकार-लट्वाकार, १-३" लम्बे एवं दन्तुर; पुष्प-क्रम-समशिख, अन्तस्थ एवं पुष्प-सफेद, गुलाबी रंग के।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३४

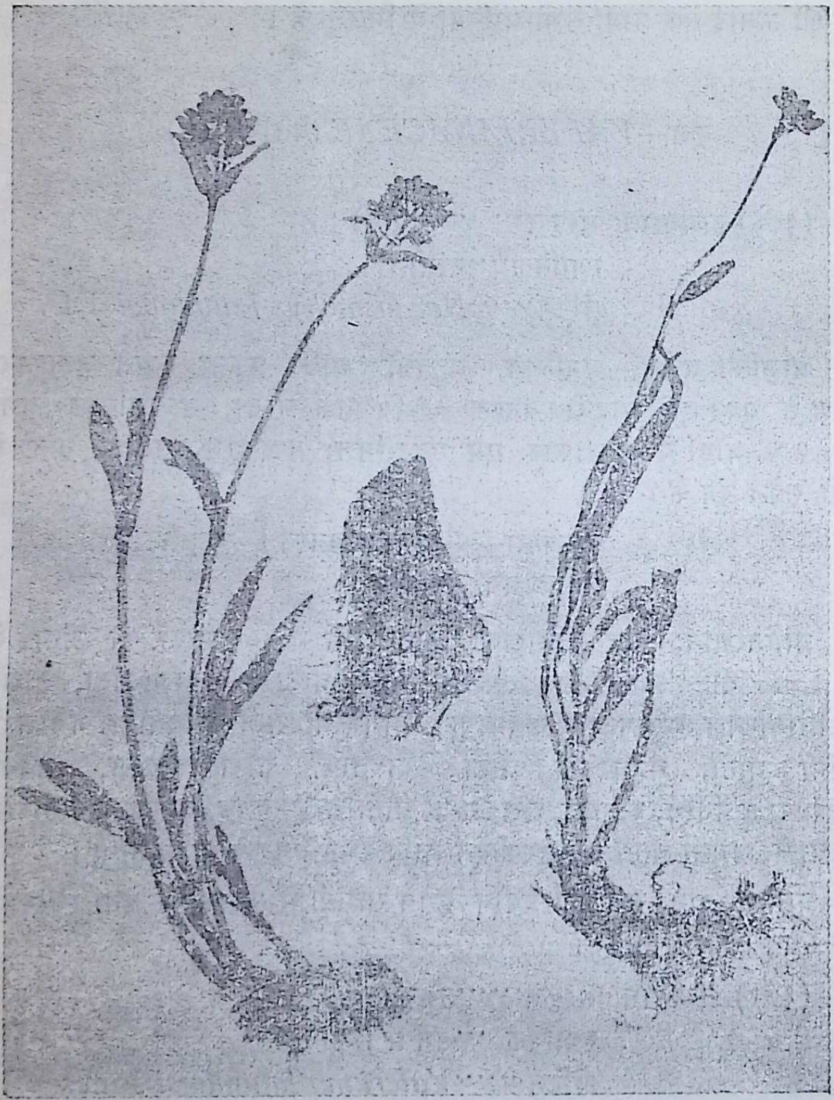

जटामांसी—*Nardostachys jatamansi* DC.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३५

तगर—*Valeriana jatamansi* DC.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

चित्र—३६

तगर—*Valerianamans jata* DC.

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३७

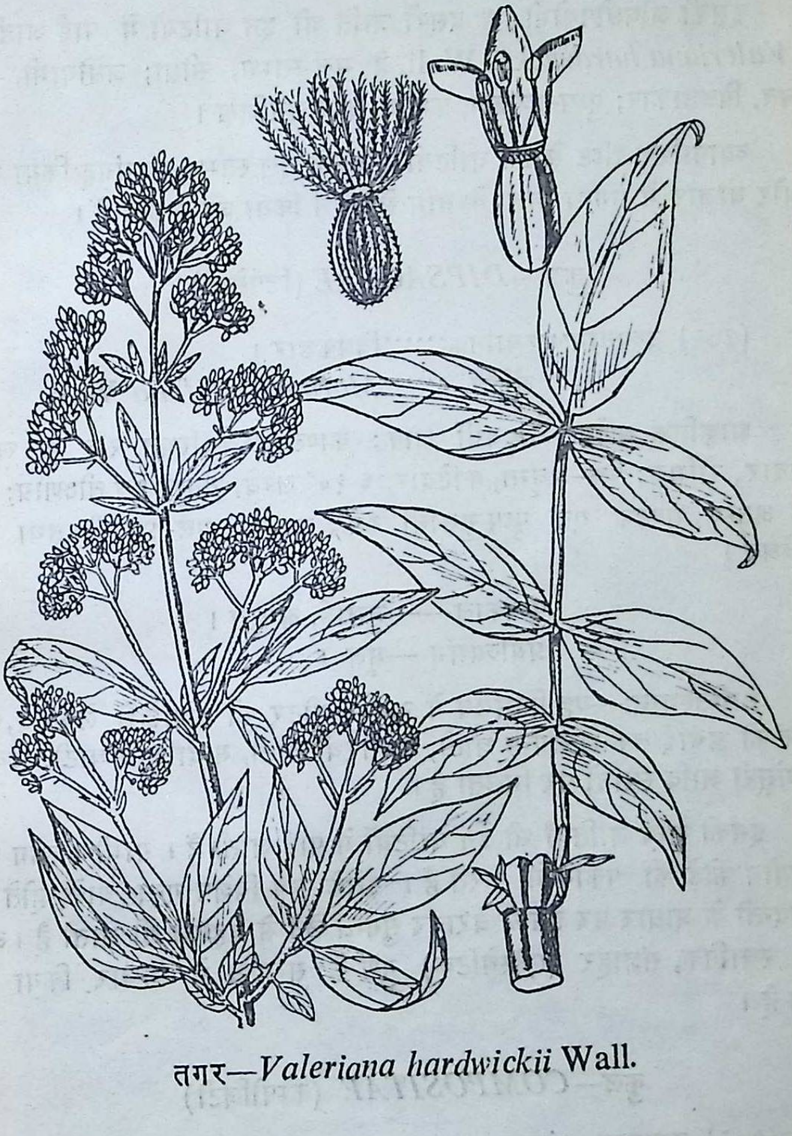

तगर—*Valeriana hardwickii* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —प्रकन्द, पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक चम्बा, कांणाताल, भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी मन्दाकिनी घाटी, अलकनन्दा घाटी, जमुना घाटी, चकराता, देववन एवं मसूरी आदि स्थानों पर कसरत से पाया जाता है।

इसकी औषधोपयोगी एक दसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है। जो *Valeriana hardwickii* Wall. है मूल-स्तम्भ, सीधा; अधोगामी, पत्र-संयुक्त, पिच्छाकार; पुष्प-पुष्पक्रम, कक्षीय तथा समशिख।

व्यापारिक दृष्टि से इन घाटियों से इसके मूल स्तम्भ का संग्रह किया जाता है और बाजार में सुगन्ध वाला के नाम से प्राप्त किया जा सकता है।

कुल—*DIPSACEAE* (डिपसेसी)

(१७२) द्रव्यनाम···स्थानिक······विषकडार।
लेटिन ······*Morina longifolia* Wall.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; काण्ड–उध्र्वसंस्थित, २-३ फुट लम्बा, कांटेदार, रोमिल; पत्र–अवृन्त, कांटेदार, ६-१०" लम्बे, दन्तुर एवं तीक्ष्णाग्र; पुष्प-क्रम अतस्थ, मुण्डक एवं पुष्प-गुलाबी, सफेद रंग के। मूल–प्रकन्दी तथा उग्र-सुगन्धित।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह हिमालय में २,४०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, मन्दाकिनी घाटी, देववन एवं मंसूरी आदि स्थानों पर मिलता है।

इसकी अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं। ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग फोड़े को पकाने में करते हैं। इसके पुष्प विशेष गन्ध वाले होते हैं। किम्वदन्ती के आधार पर इसकी बराबर सुगन्ध लेने से बेहोशी सी आती है। अतः इसके स्थानिक, संज्ञाहर (एनेस्थेटिक) गुण के सम्बन्ध में विचार किया जा सकता है।

कुल—*COMPOSITAE* (कम्पोजिटी)

(१७३) द्रव्यनाम···संस्कृत······कुष्ठ।
स्थानिक ···कूठ।
लैटिन ·····*Saussurea lappa* C.B. Clarke.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३८

विषकंडार—*Mrina longifolia* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; मूल–कन्दिल, उग्रसुगन्धित; काण्ड–उर्ध्वसंस्थित, २-४ फुट तक लम्बा; पत्र-६-१२" तक लम्बे, ५-६" चौड़े, दीर्घायत, भालाकार, मूलज एवं दन्तुर; पुष्प–नालरहित, मुण्डक, गहरे, बैंगनी रंग के।

पुष्पकाल ——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—गढ़वाल में इसकी खेती २,४०० मीटर की ऊँचाई पर गङ्गी, (भिलंगना घाटी) रैथल, (भागीरथी घाटी) आदि स्थानों पर की जाती है।

(१७४) द्रव्यनाम···संस्कृत······स्थलपद्म।
स्थानिक······कोंल, ब्रह्मकमल।
लैटिन ······*Saussurea obvallata* Wall.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, सुगन्धित शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, २-३ फुट लम्बा, मृदुरोमिल; पर्ण-दीर्घायत, भालाकार, अवृन्त, अरोमिल एवं तीक्ष्णाग्र; पुष्प-मुण्डक, बैंगनी रंग के।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड हिमालय में ३,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ४,००० मीटर की ऊँचाई तक सहस्त्रताल, रुपागली, खर्तलिंग, केदारनाथ, वासुकीताल, हँथनी, गंगोत्री, तुँगनाथ, वसुधारा, हेमकुण्ड आदि स्थानों पर कहीं-कहीं पाया जाता है।

ग्राग्रीण लोग पञ्चाङ्ग से साधित तैल का प्रयोग उन्माद एवं अपस्मार में करते हैं। यहाँ के ग्रामवासी इसके पुष्प को गंगोत्री, केदारनाथ, मदमहेश्वर, बद्रीनाथ मन्दिर में चढ़ाने का बहुत महत्त्व मानते हैं।

(१७५) द्रव्यनाम···संस्कृत······फेनकमल।
स्थानिक···भेड़गन्धा।
लैटिन······*Saussurea gossypiphora* D.Don.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, मूल-रोमिल; काण्ड ६-८" तक लम्बा, उर्ध्वसंस्थित; पत्र-अवृन्त, मृदुरोमिल, दन्तुर; पुष्प-मुण्डक, गुलाबी, बैंगनी रंग के।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड हिमालय में ३,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ४,००० मीटर की ऊँचाई तक सहस्त्रताल, खतलिङ्ग, महस्त्रताल, हेमकुण्ड,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—३६

ब्रह्मकमल—*Saussurea obvallata* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धौली घाटी, कल्लाग्लेसियर, गोमुख, हरकीदून आदि स्थानों में कहीं-कहीं पाया जाता है।

ग्रामीण लोग इसका प्रयोग भूतबाधाहर द्रव्य के रूप में करते हैं। यह दिव्यौषधियों में से कोई मुख्य द्रव्य हो सकता है।

(१७६) द्रव्यनाम···संस्कृत······दमुनक।
स्थानिक······कुंणजा।
लैटिन ······*Artemisia vulgaris* Linn.

आकृतिक वर्णनः—क्षुप; काण्ड-शाखीय, सुगन्धित; ३-६ फुट लम्बा; पर्ण-१-३ पिच्छाकार; संयुक्त, अच्छिन्नतट एवं कुण्डाग्र; पुष्प-सुगन्धित, हरित-पीताभ वर्ण के।

पुष्पकाल——अगस्त, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह हिमालय प्रदेश में २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में सुलभ है

ग्रामीण लोग पत्र का प्रयोग शोथ को दूर करने के लिए करते हैं।

(१७७) द्रव्यनाम···स्थानिक···शेषकी (छामस्या)।
लैटिन······*Artemisia maritima* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, सुगन्धित क्षुप; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, मृदुरोमिल, ½ से १" तक लम्बे, पर्ण-संयुक्त, पिच्छाकार; पुष्प-पीले रंग के, सुगन्धित।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पत्र, पुष्प।

(१७८) द्रव्यनाम···प्रचलित······अफसन्तीन।
स्थानिक ···डुमार।
लैटिन ······*Artemisia absinthium* Linn.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, क्षुप; काण्ड-३-४ फुट तक; पत्र-सुगन्धित, मृदुरोमिल, ½-१" लम्बे; पुष्प-पीताभ, श्वेत।

(१७९) द्रव्यनाम···स्थानिक···गङ्गातुलसी।
लैटिन······*Artemisia sacrorum* Ledeb.

काण्ड-२-३ फुट लम्बा, सुगन्धित, पत्र-संयुक्त, पिच्छाकार, रोमिल, पुष्प-हरित, पीत।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—इसकी सभी जातियाँ हिमालय में २,७०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक भागीरथी घाटी, अलकनन्दा घाटी, धौली घाटी, नीतीपास एवं मलारी आदि स्थानों पर पाई जाती हैं।

इसके अलावा अन्य जातियाँ भी इन घाटियों के अलग-अलग ऊँचाई वाले स्थानों में मिलती हैं जिनका कि उपयोग चिकित्सा में किया जाता है।

यथा—(अ) *Artemisia vestita* Wall. पत्र-दीर्णपिच्छाकार।
(ब) *Artemisia scoparia* Waldst. Kit. पत्र-सूत्राकार।
(स) *Artemisia parviflora* Wight. पत्र-दीर्णपिच्छाकार।

(१८०) द्रव्यनाम···संस्कृत······दुग्धफेनी।
स्थानिक···दूधी।
लैटिन·······*Taraxacum officinale* Wigg.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; मूल-कन्दिल, दूधवाला; पत्र-मूलज, अवृन्त, अरोमिल, विषम आकार के, २-८" लम्बे, दीर्घायत; पुष्प-चमकीले, पीले रंग के।

पुष्पकाल——जून, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह २,१०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, मंसूरी, कांणाताल, चकराता, देववन एवं हरकीदून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग मूल क्वाथ का प्रयोग यकृत, प्लीहा के विकारों में करते है।

(१८१) द्रव्यनाम···संस्कृत······भृंगराज।
स्थानिक···भांगरू।
लैटिन······*Eclipta alba* Hassk.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, रूक्ष, रोमिल, शाक; काण्ड १-२ फुट लम्बा; पत्र-विषम आकार में, सम्मुख, अवृन्त, भालाकार, दन्तुर; पुष्प-मुण्डक, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

(१८२) द्रव्यनाम···संस्कृत······सहदेवी।
लैटिन······*Vernonia cinerea* Less.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड १-३ फुट लम्बा; पर्ण-अवृन्त, भालाकार, लट्वाकार; पुष्प-हल्के, जामुनी रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उष्ण भागों में प्रायः १,२०० मीटर कीं ऊँचाई तक सभी स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

(१८३) द्रव्यनाम···संस्कृत··· ···सोमराजी।
स्थानिक ···घोड़ाजीरी।
लैटिन······*Vernonia anthelmintica* Willd.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, मृदुरोमिल शाक; काण्ड २-३ फुट लम्बा; पत्र-सवृन्त, ३-८" लम्बे; भालाकार या लट्वाकार-भालाकार, क्रकची; पुष्प-गुलाबी, सफेद रंग के। बीज-कृष्णाभ एवं स्वाद में तिक्त।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में गांवों के नजदीक कहीं-कहीं पाया जाता है।

वक्तव्यः—कुछ लोगों ने वाकुची का पर्याय सोमराजी माना है। परन्तु कुछ ग्रन्थकार सोमराजी को वाकुची से भिन्न द्रव्य मानते हैं।

(१८४) द्रव्यनाम···स्थानिक···जंगली, पुदीना।
लैटिन ···*Ageratum conyzoides* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी शाक, काण्ड-रोमिल, १-२ फुट लम्बा; पत्र-सम्मुख अथवा एकान्तर, सवृन्त, लट्वाकार एवं दन्तुर, रोमिल; पुष्प-श्वेत या जामुनी रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में सुलभ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घाव पर इसकी पत्ती को पीस कर बाँधने से रक्तस्त्राव बन्द होकर घाव अच्छा होता है। गुदभ्रन्श में भी पत्ती पीसकर लगाई जाती है।

(१८५) द्रव्यनाम···स्थानिक······अकलकोहड़ी।
लैटिन······*Tridax procumbens* Linn.

आकृतिक वर्णन:—शाक; काण्ड १ फुट तक लम्बा, रोमिल एवं ऊर्ध्व-संस्थित, विसर्पी; पत्र-सम्मुख, खण्डित, दन्तुर एवं सूक्ष्मवृन्त वाले; पुष्प-मुण्डक, लम्बे; पुष्पदण्ड पर तथा पीले रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थान:—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: सभी घाटियों में पाया जाता है।

ग्रामीण लोग रक्तस्राव को बन्द करने के लिए व्रण, घाव आदि में पत्तों का उपयोग करते हैं।

(१८६) द्रव्यनाम···संस्कृत······छिक्किका।
स्थानिक ···छिकनी।
लैटिन ······*Centipeda minima* (Linn.) A. Br.

आकृतिक वर्णन:—शाक; शाखायें मूल से निकल कर चारों तरफ फैली हुई पत्र ३-७५" लम्बे, अधोमुख, भालाकार, दीर्घायत; पुष्प-मुण्डक, छोटे, गोलाकार एवं कुछ-कुछ पीले रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग—पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थान:—यह गढ़वाल में खेतों के आस-पास १,२०० मीटर की ऊँचाई तक नम स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

ग्रामीण लोग शिर में भारीपन होने अथवा शिर:शूल में स्वरस एवं चूर्ण का नस्य रूप में उपयोग करते हैं।

(१८७) द्रव्यनाम···स्थानिक···कुरो।
लैटिन······*Xanthium strumarium* Linn.

आकृतिक वर्णन:—रुक्ष, कर्कश, शाक; काण्ड १-३ फुट लम्बा, पर्ण–सवृन्त, लट्वाकार, त्रिकोणाकार, खण्डित एवं दन्तुर; पुष्प-द्विलिङ्गि एवं मुण्डक, उभय लिङ्गी परन्तु पुष्प-एकलिङ्गी, हरित, पीताभ वर्ण के; फल–कठोर एवं मृदु कण्टकित।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त ।
प्रयोज्यअंग —फल, पत्र ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में सड़कों के आस पास १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है। यह विदेशों से यहां आकर जंगलों में पैदा हो गया है।

कुछ विद्वानों ने इसे शास्त्रीय-आर्तगल माना है जो ठीक प्रतीत नहीं होता।

(१८८) द्रव्यनाम···स्थानिक·····नीलकंठी ।
लैटिन ······*Senecio alatus* Wall.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, शाक; काण्ड १-४ फुट लम्बा, रोमिल, पत्र-मृदुरोमिल, ६-१०″ लम्बे, लट्वाकार, हृदयाकार, सवृन्त एवं दन्तुर, अधः पृष्ठ, नीलाभ वर्ण का; पुष्प-मुण्डक पीले रंग के।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग —मूल, पञ्चाङ्ग ।

(१८९) द्रव्यनाम···स्थानिक ····नीलकंठी भेद ।
लैटिन ······*Senecio jacquemontianus* Benth.

उर्ध्वसंस्थित, काण्ड; पत्र-अधःपृष्ठ नीलाभ, सवृन्त, मृदुरोमिल, लट्वाकार एवं दन्तुर; पुष्प-पीले रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून ।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग ।

प्राप्तिस्थानः—इसकी कई जातियां-इन घाटियों में पाई जाती हैं जो १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक मिलती है।

ग्रामीण लोग क्वाथ का प्रयोग ज्वरों में करते हैं।

(१९०) द्रव्यनाम···स्थानिक ····चोपाली ।
लैटिन······*Sonchus asper* Vill.

आकृतिक वर्णनः—मृदुरोमिल, दुग्धयुक्त शाक; काण्ड, शाखीय, ग्रन्थिमय, २-३ फुट लम्बा; पत्र-भालाकार या दीर्घ-पिच्छाकार, खण्डित ६-१०″ तक लम्बे, दन्तुर, अपसारी, शूलमय; पुष्प-पीले रग के।

पुष्पकाल——मार्च, मई ।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसकी अन्य कई जातियाँ इन घाटियों में मिलती हैं जिसमें दुधी *Sonchus oleraceus* Linn. आदि हैं।

प्राप्तिस्थान:—ये जातियाँ गढ़वाल के उष्ण भागों में खेतों के समीप नम स्थानों पर १,२०० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र पाई जाती हैं।

ग्रामीण पञ्चाङ्ग का प्रयोग रक्तशोधन के लिए करते हैं।

(१६१) द्रव्यनाम···स्थानिक··· गोगल, धूप।
लैटिन ······*Jurinea macrocephala* Benth.

आकृतिक वर्णन:—बहुवर्षी शाक; मूल-कन्दिल, सद्यश, पत्र-मूलज, ६-८" तक लम्बे, खण्डित, रुक्ष, दीर्घायत, पुष्प-काण्डमूल से मुण्डक में।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थान:—यह गढ़वाल हिमालय में ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः घास वाले ढालों पर भिलंगना घाटी, पंवालीकांटा, ताली, सहस्त्रताल, खतलिङ्ग, भागीरथी घाटी, मन्दाकिनी घाटी, जमुना घाटी, अलकनन्दा घाटी, हरकीदून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग धूपन एवं रक्षोघ्न के रूप में करते हैं। इन घाटियों से मूल का संग्रह किया जाता है।

वक्तव्य:—सुश्रुत संहिता में एक स्थल पर किसी टीकाकार ने जातु कद को उत्तरापथ का गुग्गुलु माना है जो सम्भवतः यही है। देखिये आधार ग्रन्थ संख्या ३०।

(१६२) द्रव्यनाम···स्थानिक ···कुरी।
लैटिन ······*Bidens pilosa* Linn.

आकृतिक वर्णन:—उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड-हरित, कृष्ण, २-३ फुट लम्बा; पर्ण-अवृन्त, अधोमुख, लट्वाकार, खण्डित; पुष्प-श्वेत वर्ण के, मुण्डकों में।

पुष्पकाल——जनवरी, मार्च।
प्रयोज्यअंग —पत्र।

प्राप्तिस्थान:—यह उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पत्र शाक का प्रयोग कुष्ठ में करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१९३) द्रव्यनाम···स्थानिक·····कड़वी बूटी।
लैटिन······*Ainsliaea aptera* DC.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; काण्ड २-३ फुट लम्बा, मृदुरोमिल, पत्र ४ से ४½" लम्बे, दन्तुर, सवृन्त, मूल-कन्दिल स्वाद में तिक्त; मुण्डक-सफेद, गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में २,१०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

ग्रामीण लोग मूल के क्वाथ का उपयोग तीव्र उदरशूल में वेदनाशामक के रूप में करते हैं।

(१९४) द्रव्यनाम···स्थानिक···बुरुन्स।
लैटिन·····*Cnicus wallichii* DC.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, कांटेदार शाक; काण्ड ३-६ फुट लम्बा, रोमिल; पर्ण-दीर्घायित, अवृन्त एवं पत्र तट, कांटेदार, खण्डित; पुष्प-मुण्डक, सफेद रंग का। मूल-कन्दिल, सुगन्धित तथा सफेदी लिये हुए धूसर रंग का।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है। इसकी अन्य कई जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं।

ग्रामीण लोग मूल का उपयोग कृमि एवं उदर विकार में करते हैं।

(१९५) द्रव्यनाम···संस्कृत···पुष्करमूल।
स्थानिक···मानू।
लैटिन ···*Inula racemosa* Hook. &

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित शाक; मूल-कन्दिल, सुगन्धित, काण्ड २-३ फुट लम्बा, रोमिल; पत्र-एकान्तर, मूलज एवं काण्डसंसवत, सवृन्त ६-८" लम्बे, दीर्घायित, मृदुरोमिल; मुण्डक-पीले रंग के तथा कक्षीय।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थान:—गढ़वाल में २,७०० मीटर की ऊँचाई पर रंथल, (भागीरथी घाटी) पिडार घाटी आदि स्थानों पर कहीं-कहीं इसकी खेती की जाती है।

(१६६) द्रव्यनाम···स्थानिक···कंटेला।
लैटिन······*Echinops niveus* Wall.

आकृतिक वर्णन:—उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड २-४ फुट लम्बा, कांटेदार; पत्र-३-८″ लम्बे, पिच्छाकार, विभक्त; पुष्प–मुण्डक, काँटेदार।

पुष्पकाल——फरवरी, मार्च।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थान:—उत्तराखण्ड गढ़वाल में यह ९०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः चम्बा, काणाताल, चकराता, मंसूरी आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

मूल का प्रयोग ग्रामीण लोग कृमिघ्न एवं मूत्रल के रूप में करते हैं।

कुल—*ERICACEAE* (इरिकेसी)

(१६७) द्रव्यनाम···हिन्दी······अनियार।
स्थानिक ···अंयार।
लैटिन······*Lyonia ovalifolia* (Wall) Drude.

आकृतिक वर्णन:—मध्यम आकार का वृक्ष; काण्ड-छाल, कार्कयुक्त, बादामी रंग की; पत्र ३-६″ लम्बे, लट्वाकार, दीर्घायत, सरलतट, तीक्ष्णाग्र; पुष्प-सफेद रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
फलकाल ——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पत्र।

प्राप्तिस्थान:—यह १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक कांणाताल, चम्बा, मन्सूरी, चकराता, देववन एवं गढ़वाल की सभी घाटियों में पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पत्तों को विषैला मानते हैं। पत्रस्वरस साधित तैल का उपयोग खुजली एवं त्वचा के रोगों में किया जाता है।

(१६८) द्रव्यनाम···संस्कृत·····सेरेयेकभेद।
स्थानिक···अतरासू।
लैटिन·····*Rhododendron anthopogon* D. Don.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णन:—क्षुप; काण्ड–शाखीय, ६-१२ फुट लम्बा; पत्र-१ से १½" लम्बे, लट्वाकार, अधःपृष्ठ, रक्तवर्ण का, अवृन्त; पुष्प-पीताभ, श्वेत एवं सुगन्धित।

द्रव्यनाम···स्थानिक···कोठ्या।
लैटिन······*Rhododendron lepidotum* Wall.

आकृतिक वर्णन:—सुगन्धित, उर्ध्वसंस्थित, क्षुप; काण्ड १-४ फुट लम्बा, पत्र-दीर्घायित या अधोमुख, लट्वाकार पत्र-पृष्ठ, रक्ताभ वर्ण का, पुष्प-सुगन्धित, गुलाबी, रक्तवर्ण का।

पुष्पकाल——मई, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पत्र, पुष्प।

प्राप्तिस्थान:—यह हिमालय में ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ४,००० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, मन्दाकिनी घाटी, जमुना घाटी, अलकनन्दा घाटी, हरकीदून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पत्तों का उपयोग कास एवं प्रतिश्याय में करते हैं। अधिक मात्रा में उपयोग करने से विषैला प्रभाव होता है।

सैरेयक तथा उसके भेदों को अभी तक *Barlaria* की जातियाँ माना जाता है। वनस्पति विशेषज्ञ डा० बलवन्त सिंह के अनुसार ये शास्त्रीय द्रव्य *Rhododendron* की जातियों में से ही हो सकते हैं ऐसा वृद्धत्रयी नामक ग्लौसरी में संकेत किया गया है।

(१६६) द्रव्यनाम···स्थानिक···सिमरू।
लैटिन······*Rhododendron campanlatum* D.Don.

आकृतिक वर्णन:—क्षुप या छोटा वृक्ष; काण्ड १० से १५ फुट तक लम्बा, पत्र ३-५" लम्बे, दीर्घवृत्तीय, दीर्घायित, अरोमिल; पुष्प-बड़े, सुन्दर, बैगनी, सफेद या मिश्रित रंग के तथा सुगन्धित।

पुष्पकाल——मई, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पत्र।

प्राप्तिस्थान:—यह हिमालय में २,७०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, पंवाली, ताली, पौथागी, कल्याणी, खतलिङ्ग, मन्दाकिनी घाटी, हथनी, रामवाड़ा, त्रिजुगीनारायण, मदमहेश्वर एवं

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भागीरथी घाटी, अलकनन्दा घाटी, जमुना घाटी, हरकीदून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पत्तों का प्रयोग नसवार के लिये करते हैं एवं पत्तों का उपयोग शिरःशूल, आमवात में करते हैं।

(२००) द्रव्यनाम…संस्कृत……कुरवक।
स्थानिक…बुरांश।
लैटिन……*Rhododendron arboreum* Sm.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित, मध्यम आकार का वृक्ष, काण्ड-छाल, कार्क-सदृश, धूसरवर्ण की; पर्ण ४"-६" तक लम्बे, भालाकार या दीर्घवृत्तीय, दीर्घायत, अरोमिल तथा ऊपरी पृष्ट श्वेतावरण से युक्त; पुष्प-बड़े, देखने में सुन्दर, लाल रंग के एवं गुच्छों में।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —पत्र, पुष्प।

प्राप्तिस्थानः--यह १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, मन्दाकिनी घाटी, चम्बा, कांणाताल, चकराता, देववन, जमुना घाटी एव मन्सूरी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

नवीन पत्र विषैले होते हैं। ग्रामीण लोग पत्र स्वरस से साधित तैल आमवात एवं गृध्रसीवात में करते हैं। पुष्पों की चटनी बनाकर खाते हैं। ग्रामीण वैद्य पुष्पों का उपयोग कासघ्न एवं ग्राही रूप में करते हैं।

वनस्पति विशेषज्ञ ठा० बलवन्त सिंह ने इसे शास्त्रीय कुरवक माना है।

कुल—*PLUMBAGINACEAE* (प्लम्बेजिनेसी)

(२०१) द्रव्यनाम…संस्कृत……चित्रक।
स्थानिक…चिपकुरो।
लैटिन……*Plumbago zeylanica* Linn.

आकृतिक वर्णनः—क्षुपक; शाखीय; काण्ड २-४ फुट तक लम्बा, पत्र-एकान्तर, २-३" लम्बे, वृन्तिल, अण्डाकार, अच्छिन्न तट एवं निशिताग्र; पुष्प-सफेद रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —मूल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, घोन्टी, देहरादून, उत्तरकाशी, धरासू आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

ग्रामीण दाइयाँ मूल का उपयोग गर्भस्राव कराने के लिए करती हैं।

कुल—*PRIMULACEAE* (प्रिमुलेसी)

(२०२) द्रव्यनाम··हिन्दी·····जोंकमारी।
लैटिन·····*Angallis arvensis* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी शाक; काण्ड-चतुष्कोणीय; पत्र-अवृन्त्त, सम्मुख, लट्वाकार, ½-१″ लम्बे, अच्छिन्न तट एवं तीक्ष्णाग्र; पुष्प-कक्षीय, एकाकी, नीले रंग। के

पुष्पकाल——फरवरी, मार्च।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उष्ण भागों में खेतों के आसपास १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है। पञ्चांङ्ग का प्रयोग शोथनाशक, एवं मूत्रल के रूप में किया जाता है। पीनस को दूर करने के लिये नस्य का प्रयोग करते हैं।

कुल—*SYMPLOCACEAE* (सिम्पलोकेशी)

(२०३) द्रव्यनाम···संस्कृत····· पट्टिका लोध्र।
स्थानिक ···लोध।
लैटिन ····· *Symplocos crataegoides* Ham.

आकृतिक वर्णनः—क्षुप या छोटा वृक्ष; काण्ड १५ से २० फुट लम्बा, शाखीय; काण्ड-छाल का भीतरी भाग सफेद एवं परतदार, पत्र २-४″ लम्बे, लट्वाकार, दन्तुर एवं अधःपृष्ठ–हल्के रंग का; पुष्प-सफेद रंग के एवं सुगन्धित।

पुष्पकाल——मई, जून।
फलकाल———शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —छाल, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह हिमालय में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊंचाई तक प्रायः वणचूरी, माणीकनाथ, धुत्तु, चकराता, देववन, मंसूरी एवं जमुना आदि घाटियों में पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४०

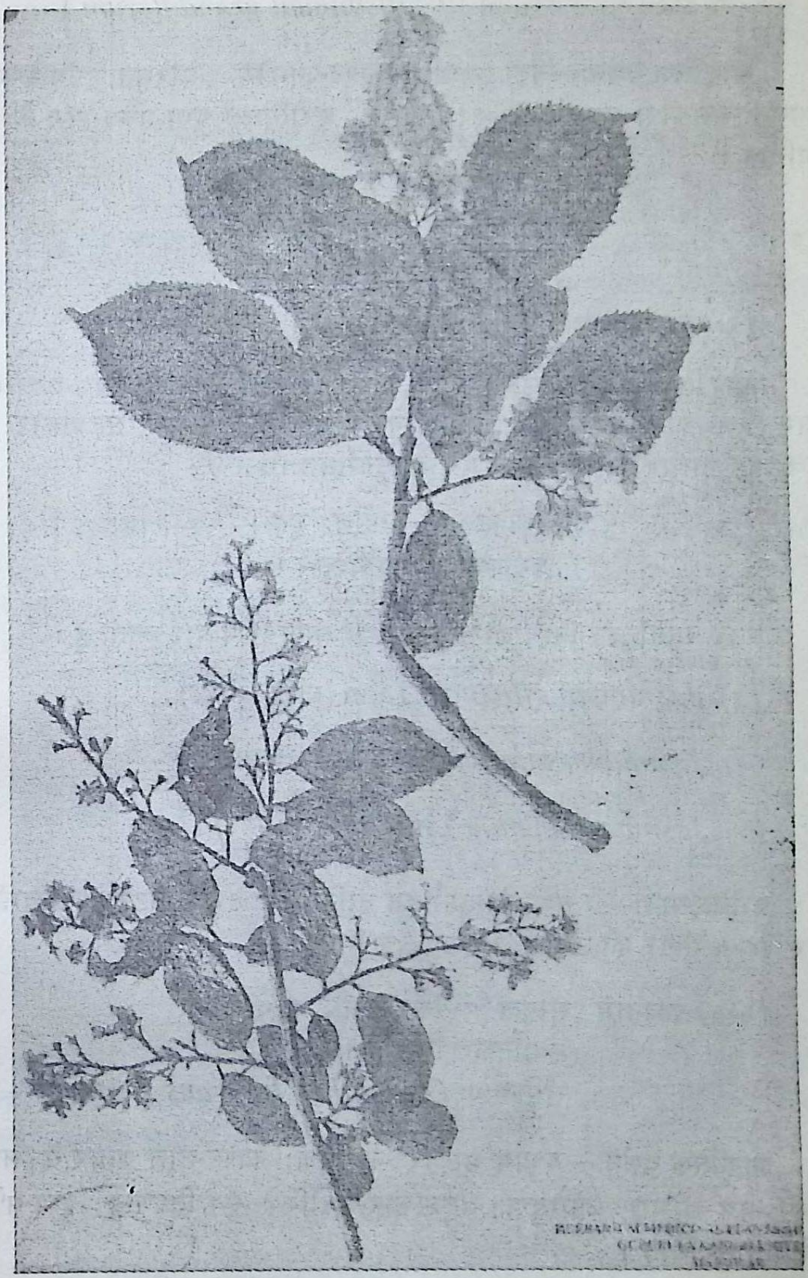

लोध्र—*Symplccos paniculata* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल—*OLEACEAE* (ओलियेसी)

(२०४) द्रव्यनाम···संस्कृत·····जाती।
लैटिन······*Jasminum grandiflorum* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा क्षुप; काण्ड-शाखीय, परिसृत; पत्र-सम्मुख, विषम पिच्छाकार, पत्रक ९ से ११ अवृन्त, अरोमिल; पुष्प-सफेद रंग के एवं सुगन्धित।

पुष्पकाल——मई, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पुष्प, पत्र।

(२०५) द्रव्यनाम···संस्कृत···स्वर्णयूथिका।

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, क्षुप; काण्ड-शाखीय; पत्र-एकान्तर, विषम पिच्छाकार, पत्रक १ से ५ जोड़ों में आकार में छोटे-बड़े, लट्वाकार एवं लट्वाकार-भालाकार; पुष्प–पीले रंग के, सुगन्धित।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
प्रयोज्यअंग —पत्र, पुष्प।

इसके अतिरिक्त निम्न जातियां भी इन घाटियों में पाई जाती हैं।

(१) *Jasminum officinale* Linn.(सफेद चमेली)।

(२) *Jasminum arborescens* Roxb. (चमेली)।

(३) *Jasminum humile* Linn. (हेम पुष्पिका)।

प्राप्तिस्थानः—ये सभी जातियाँ इन घाटियों में ६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २४०० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र मिलती है।

(२०६) द्रव्यनाम···संस्कृत·····शिवमल्ली, वकपुष्प।
स्थानिक···शिलंगी।
लैंटिन······*Osmanthus fragrans* Lour.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; काण्ड-छाल अन्दर से लाल रंग की; पत्र–सम्मुख, अधोमुख, लट्वाकार-अरोमिल एवं तिक्ष्णाग्र; पुष्प-सफेद रंग के एवं सुगन्धित।

पुष्पकाल——दिसम्बर, जनवरी।
प्रयोज्यअंग —छाल, पुष्प।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में गुप्तकाशी, व्यूंग, काशीमठ, जोशीमठ आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

ग्रामीण वैद्य छाल का उपयोग मुखरोग एवं दन्तविकारों में करते हैं। पुष्पों से विशेष सुगन्धित तैल बनाया जाता है एवं यहां के लोग इसे मांगलिक वृक्ष मानते हैं। ठा० बलवन्त सिंह ने शास्त्रीय वकपुष्प इसे स्वीकार किया है।

(२०७) द्रव्यनाम…स्थानिक……सफोरी।
लैटिन ……*Syringa emodi* Wall.

आकृतिक वर्णनः—पर्णपाती, बड़ा क्षुप, पर्ण ३-४'' लम्बे, दीर्घवृत्तीय, दीर्घायत, अच्छिन्न तट एवं लम्बाग्र; पुष्प-गुलाबी, तट-सफेद रंग के एवं सुगन्धित।

पुष्पकाल——मई, जुलाई।
फलकाल——सितम्बर, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग —बीज, पुष्प।

प्राप्तिस्थानः—यह १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २४०० मीटर की ऊँचाई तक चकराता, देववन, रामवाड़ा, गङ्गी, पौवागी एवं जमुना घाटी, अलकनन्दा घाटी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(२०८) द्रव्यनाम…संस्कृत……शेफालिका।
स्थानिक …कुरी।
लैटिन ……*Nyctanthes arbor-tristis* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष; पत्र-सम्मुख, ४-५" लम्बे, रुक्ष, अण्डाकार, रोमिल एवं तीक्ष्णाग्र; पुष्प-सफेद रंग के एवं सुगन्धित।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
फलकाल——शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —पत्र, पुष्प।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः घोन्टी, धनशाली, पिपोला, टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, रुद्रप्रयाग, कुण्ड, जौनसार आदि स्थानों पर यत्र तत्र पाया जाता है।

कुल—*SAPOTACEAE* (सैपोटेसी)

(२०९) द्रव्यनाम…संस्कृत……मधुक।
स्थानिक…महुआ।
लैटिन……*Madhuca indica* J. F. Gmel.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—बड़ा पर्णपाती वृक्ष; काण्ड-छाल, हरिताभ; पत्र-५-७″ लम्बे, दीर्घवृत्तीय या दीर्घायत-दीर्घवृत्तीय, लम्वाग्र एवं कुण्ठित; पुष्प-पीताभ, श्वेत एवं मादकगन्ध वाला।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
फलकाल——जून, जुलाई।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में सड़कों के किनारे कहीं-कही पाया जाता हैं। इसकी दूसरी जाति भी देहरादून के आसपास पाई जाती है जिसे *Madhuca butyracea* (Roxb). Macbride. कहते हैं।

कुल—*EBENACEAE* (इबेनेसी)

(२१०) द्रव्यनाम···संस्कृत······काकतिन्दुक।
स्थानिक···बिषतेन्दु।
लैटिन······*Diospyros cordifolia* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा क्षुप या मध्यम आकार का वृक्ष; काण्ड-शाखीय, तीक्ष्ण, कांटेदार; पर्ण २-४″ लम्बे, दीर्घायत, भिल्लीसघश, गहरे, हरे रोमिल; पुष्प-हरिताभ; फल-गोल, मांसल एवं पकने पर पीले रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, मई।
फलकाल——शीतकाल में।
प्रयोज्यअंग —पत्र, फल।

(२११) द्रव्यनाम···संस्कृत······तिन्दुक।
स्थानिक ···तेन्दु।
लैटिन ·······*Diospyros tomentosa* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा वृक्ष; पत्र-एकान्तर, ३-६″ लम्बे, लट्वाकार, रोमिल, सवृन्त; पुष्प-हरित, पीताभ; फल-पकने पर पीला, मसृण, सुगन्धित, मधुर।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —पत्र, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर एवं देहरादून आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

इसके अतिरिक्त अन्य जातियाँ भी इन स्थानों पर मिलती हैं जैसे—
Diospyros montana Roxb. (पीना) आदि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल—*APOCYNACEAE* (ऐपोसाईनेसी)

(२१२) द्रव्यनाम···संस्कृत·····कुटज ।
स्थानिक ···कूड़ा ।
लैटिन ······*Holarrhena antidysenterica* Wall.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का पर्णपाती, दुग्धयुक्त वृक्ष; काण्ड-मसृण, छाल-स्वाद में तिक्त; पत्र ४-६" लम्बे, दीर्घवृत्तीय, दीर्घायत, लम्बाग्र, चमकीले, हरे रंग के; पुष्प-सुगन्धित, सफेद रंग के; फलियां-पतली, लम्बी, दो-दो एक साथ परन्तु अलग-अलग ।

इन फलियों के बीज को इन्द्रयव कहते हैं जो कि स्वाद में तिक्त होते हैं ।

पुष्पकाल——मई, जून ।
फलकाल——शीतकाल में ।
प्रयोज्यअंग —छाल, बीज ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, मुनिकिरेती, नरेन्द्रनगर, देवप्रयाग एवं देहरादून आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है ।

(२१३) द्रव्यनाम···· हिन्दी······मीठा इन्द्रयव ।
लैटिन·····*Wrightia tomentosa* R. & S.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष; काण्ड-क्षीरयुक्त; पत्र-सम्मुख, पाती, ३-६" लम्बे, दीर्घवृत्तीय, लम्बाग्र, क्रकची तट; पुष्प-सफेद रंग के; फलियाँ ८-१२" लम्बी एवं उनका जोड़ा पूरी लम्बाई में संयुक्त बीज-इन्द्रयव सदृश एवं मीठा ।

पुष्पकाल——मई, जून ।
फलकाल——शीतकाल ।
प्रयोज्यअंग —छाल, बीज ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, व्यासी, लक्ष्मण झूला, देहरादून एवं जौनसार आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है ।

(२१४) द्रव्यनाम···संस्कृत·····सर्पगन्धा ।
लैटिन·····*Rauwolfia serpentina* Benth.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४१

कुटज—*Holarrhena antidysenterica* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४२

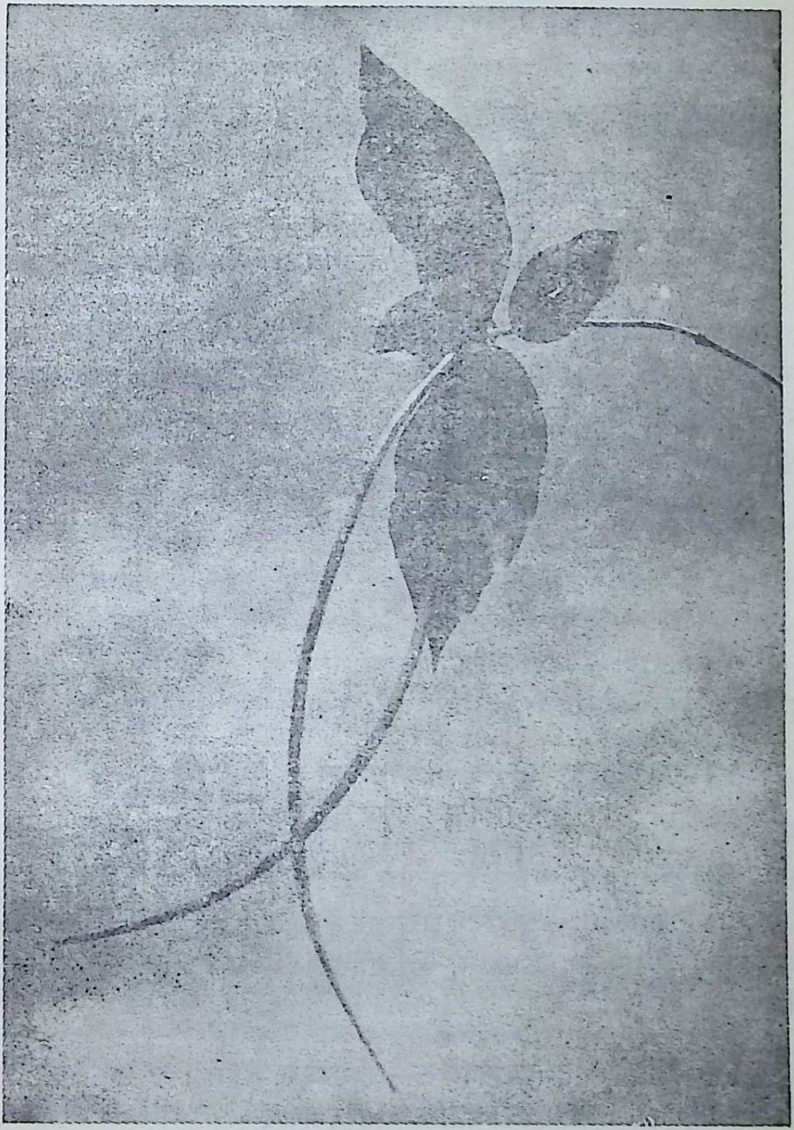

कुटज—*Holarrhena antidysenterica* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्राकृतिक वर्णनः—छोटा, मसृण, क्षुप; काण्ड १-२ फुट लम्बा; पत्र-भालाकार या दीर्घवृत्तीय, भालाकार, विपरीत अथवा चक्रिक; पत्र-वृत्त, छोटा; पुष्प-सफेद, गुलाबी रंग; फल-मांसल, बैंगनी, रक्त वर्ण का। मूल कुछ-कुछ गन्धमय।

पुष्पकाल——दिसम्बर, जनवरी।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के तराई वाले भागों में पाया जाता है, विशेष कर देहरादून, चौहड़पुर, ऋषिकेश आदि स्थानों पर कहीं-कहीं मिलता है।

(२१५) द्रव्यनाम···संस्कृत·····सर्पपर्ण।
हिन्दी ·····छितीवन।
लैटिन ···*Alstonia scholaris* Br.

श्राकृतिक वर्णनः—मध्यम प्रमाण का क्षीरी वृक्ष; काण्ड-शाखीय; पत्र-सख्या में ७ प्रायः एक ग्रन्थि से निकले हुये, ४″-७″ लम्बे, अधोमुख, लट्वाकर, दीर्घवृत्तीय, दीर्घायत, पत्र-वृत्त, छोटा; पुष्प-हरित, श्वेत वर्ण के; फलियां-लम्बी, दो-दो एक साथ।

पुष्पकाल——दिसम्बर, मार्च।
फलकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —पत्र, छाल, दूध।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, कालसी आदि स्थानों पर मिलता है।

(२१६) द्रव्यनाम···संस्कृत·····आस्फोसा।
स्थानिक ···सफेद बेल, दुधी बेल
लैटिन·····*Vallaris heynei* Spreng.

श्राकृतिक वर्णनः—आरोही, क्षीरयुक्त क्षुप; काण्ड-सफेद रंग का; पत्र-सम्मुख, २-४″ लम्बे, दीर्घवृत्तीय, दीर्घायत, लम्बाग्र एवं सवृन्त; पुष्प-सफेद रंग के एवं सुगन्धित।

पुष्पकाल——दिसम्बर, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —मूल, काण्ड।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, घोन्टी, घनशाली आदि सभी स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आजकल हरिद्वार और देहरादून की फार्मेसियों में इसके काण्ड का सफेद सारिवा के नाम से उपयोग होता है।

सम्भवतः यह श्वेतसारिवा से भिन्न द्रव्य आस्फोसा अस्फुर मल्लिका का है (देखिये ग्लोसरी आफ वेजिटेविल ड्रगस् ग्राफ बृहत्रयी ठा० बलवन्त सिंह)।

(२१७) द्रव्यनाम···स्थानिक····जंगली करौंदा।
लैटिन······*Carissa spinarum* A. DC.

ग्राकृतिक वर्णनः—सदाहरित, कांटेदार क्षुप; पत्र-सम्मुख, लट्वाकर, मृदुरोमिल, क्षीरयुक्त एवं गहरे-हरे रंग के। पुष्प-सफेद रंग के; फल-मांसल, गुलाबी, काले रंग का।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फलकाल——शीतकाल।
प्रयोज्यग्रंग —मूल, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, घोन्टी, घनशाली, देवप्रयाग, कुण्ड, श्रीनगर आदि सभी स्थानों पर सुलभ है।

ग्रामीण लोग मवेशियों में होने वाले खुरपका रोग में मूलक्वाथ का बाह्य प्रयोग करते हैं।

(२१८) द्रव्यनाम···संस्कृत·····करवीर।
स्थानिक···कनेर।
लैटिन······*Nerium indicum* Mill.

ग्राकृतिक वर्णनः—सदाहरित, क्षुप; काण्ड-शाखीय, मसृण; पत्र ४-६" लम्बे, रेखाकार, भालाकार एवं दीर्घायत, लम्बाग्र एवं मसृण; पुष्प-बड़े, सुगन्धित, रक्त वर्ण के; फलियाँ ६-७" तक लम्बी।

पुष्पकाल——अप्रैल, जून।
प्रयोज्यग्रंग —मूल, छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में नालों के ग्रास-पास प्रायः देहरादून, राजपुर, ऋषिकेश आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२१९) द्रव्यनाम···स्थानिक···काली दुधी।
लैटिन·······*Ichnocarpus frutescens* Br.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—चक्रारोही, क्षीरी क्षुप; काण्ड-काला, हरा; पत्र २-३ लम्बे, दीर्घवृत्तीय, दीर्घायत, लट्वाकार, भालाकार, लम्बाग्र एवं मृदुरोमिल; पुष्प-सफेद रंग के सुगन्धित।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —काण्ड।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, घोन्टी, देवप्रयाग, देहरादून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

कुल—*ASCLEPIADACEAE* (ऐसल्किपिडेसी)

(२२०) द्रव्यनाम···संस्कृत······कृष्णसारिवा (प्रचलित)।
स्थानिक ···काली दुधी।
लैटिन······*Cryptolepis buchanani* R. & S.

आकृतिक वर्णनः—बड़ा आरोही, क्षीरी क्षुप; काण्ड-काले रंग का, पत्र ३-६" लम्बे, मसृण, दीर्घायत, दीर्घवृत्तीय, लम्बाग्र एवं सवृन्त; पुष्प-पीताभ, श्वेत; फल-गोल, लम्बे एवं दो-दो, एक साथ।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल, काण्ड।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, घोन्टी, श्रीनगर एवं देहरादून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(२२१) द्रव्यनाम···लैटिन······*Periploca calophylla* Falc.

आकृतिक वर्णनः—अरोमिल क्षुप; शाखा-परिसृत; पत्र ३" लम्बे, संकीर्ण, भालाकार, लम्बे, तीक्ष्णाग्र, चमकीले; पुष्प-हरिताभ, पीतवर्ण का; फलियां ६" तक लम्बी, पतली, लमू-सुगन्धित।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —मूल, काण्ड।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक के नम स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह शास्त्रीय-कृष्णसारिवा हो सकता है। प्रचलित कृष्णसारिवा विचारणीय है। वनस्पति विशेषज्ञ डा० बलवन्त सिंह ने प्रचलित कृष्णसारिवा के विषय में सन्देह व्यक्त किया है।

(२२२) द्रव्यनाम···संस्कृत······मूर्वा।
लैटिन ······*Marsdenia tenacissima* W. & A.

आकृतिक वर्णनः—आरोही, दूध वाला क्षुप; काण्ड-छाल, कार्की; मूल-मांसल, कार्की, गहरा, सफेद रंग के; पत्र ४-६" लम्बे, लट्वाकार, हृदयाकार, सवृन्त एवं लम्बाग्र; पुष्प-हरिताभ, पीत वर्ण के; फल-शृङ्गावत्।

पुष्पकाल——अप्रैल, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह हिमालय के उष्ण भागों में प्रायः व्यासी, देवप्रयाग, देहरादून, रानीपोखरी आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२२३) द्रव्यनाम···संस्कृत······मूर्वा (भेद)।
स्थानिक ···खारचू।
लैटिन······*Marsdenia royle* Wight.

आकृतिक वर्णनः—आरोही, क्षुप, काण्ड, दूधवाला, मृदुरोमिल; पत्र ३-६" तक लम्बे, अण्डाकार, लम्बाग्र; पत्र-वृन्त वाला भाग गहरा, हृदयाकार; पुष्प-छोटे, नारंगी रंग के; फल-रुक्ष, दो-दो एक साथ।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —मूल, पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई पर प्रायः धुत्तू, गङ्गी, गुप्तकाशी, फाटा, जोशीमठ, मन्सूरी आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२२४) द्रव्यनाम···संस्कृत······काकतुण्डी।
स्थानिक ···ककवां।
लैटिन ······*Asclepias curassavica* Linn.

आकृतिक वर्णनः—क्षीरी क्षुप; काण्ड ३-५ फुट तक लम्बा, अरोमिल; पर्ण-सम्मुख, भालाकार, दीर्घायत, २-३'' तक लम्बे; पुष्प-नारंगी रंग के; फल-एकाकी।

पुष्पकाल——मार्च, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक नदियों के किनारे धुत्तू, उत्तरकाशी, जमुना घाटी आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२२५) द्रव्यनाम···संस्कृत······अर्क।
स्थानिक ···आंक।
लैटिन ······*Calotropis procera* Br.

आकृतिक वर्णनः—बहुशाखीय, दुग्धयुक्त, क्षुप; काण्ड-अरोमिल; पत्र-लम्बे, गोल, मांसल, ५-६" तक लम्बे, दीर्घायित; पुष्प-लाल, गुलाबी रंग के, फल-बीज, तेल युक्त।

पुष्पकाल——जनवरी, मई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग, दुग्ध।

इसकी दूसरी जाति भी देहरादून के आस पास पाई जाती है जिसे अलर्क या श्वेतार्क *Calotropis gigantea* Br. कहते है।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, टिहरी, धरासू, देहरादून आदि स्थानों में पाया जाता है।

(२२६) द्रव्यनाम···संस्कृत······उत्तमारणी।
लैटिन ······*Daemia extensa* R. Br.

आकृतिक वर्णनः—आरोही, रोमिल, क्षुप; काण्ड, मृदु, दुधिया; पत्र २-३" लम्बे, लट्वाकार एवं तीक्ष्ण, पत्राग्र; पुष्प-सवृन्त, हरे, पीले रंग के; फलियाँ-जोडों में, ३-४" तक लम्बी, सूक्ष्म, कंटकी एवं वृश्चिकाकार।

पुष्पकाल——सितम्बर, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, रानिपोखरी, देहरादून आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२२७) द्रव्यनाम···संस्कृत······अर्कपुष्प।
लैटिन ······*Holostemma integrifolia* Planch.

आकृतिक वर्णनः—आरोही क्षुप; काण्ड-मृदु, दुधिया; पत्र-सम्मुख, ३-५ लम्बे, लट्वाकार एवं हृदयाकार; पुष्प-सुगन्धित, गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई से सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४२ अर्क—*Calotropis procera* (Ait) R. Br.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः देहरादून, रानीपोखरी, डोईवाला के समीप कहीं-कहीं पाया जाता है।

अर्कपुष्पी नामक द्रव्य विचारणीय है, वनस्पति विशेषज्ञ ठा० बलवन्त सिंह ने *Tylophora asthmatica* Ham. ex Wight. की सम्भावना का संकेत किया है।

(२२८) द्रव्यनाम···स्थानिक·····टेरनी, अटेरनी।
लैटिन ······*Tylophora hirsuta* Wight.

आकृतिक वर्णनः—आरोही क्षुप; काण्ड-रोमिल, रुक्ष; पत्र-लट्वाकार, भालाकार, रोमिल एवं लम्बाग्र; पुष्प-गुलाबी रंग का, पुष्पच्छत्री। फालिकिल्स-लम्बे, भालाकार।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
फलकाल——जनवरी।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में टिहरी वन खण्ड, डोईवाला, देहरादून आदि स्थानों में यत्र-तत्र मिलता है। इसकी दूसरी जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती है।

ग्रामीण लोग मूल का उपयोग गर्भस्त्राव के लिये करते हैं एवं सर्पविष में तथा पागल कुत्ते के काटने में खिलाते है।

(२२९) द्रव्यनाम···संस्कृत······जीवन्ती।
लैटिन······*Leptadenia reticulata* W. & A.

आकृतिक वर्णनः—आरोही, पीताभ, क्षीरवाला क्षुप; काण्ड-कार्की, श्वेताभ; पत्र २-३ लम्बे, अण्डाकार, दीर्घायत, अरोमिल, दीर्घवृत्तीय एवं सरल तट; पुष्प-नारंगी, सफेद रंग के; फालिकिलस-अरोमिल, दो-दो के जोड़ों में।

पुष्पकाल——मई, जुलाई।
फलकाल——जनवरी, मार्च।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, डोईवाला, ऋषिकेश एवं देहरादून आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४४

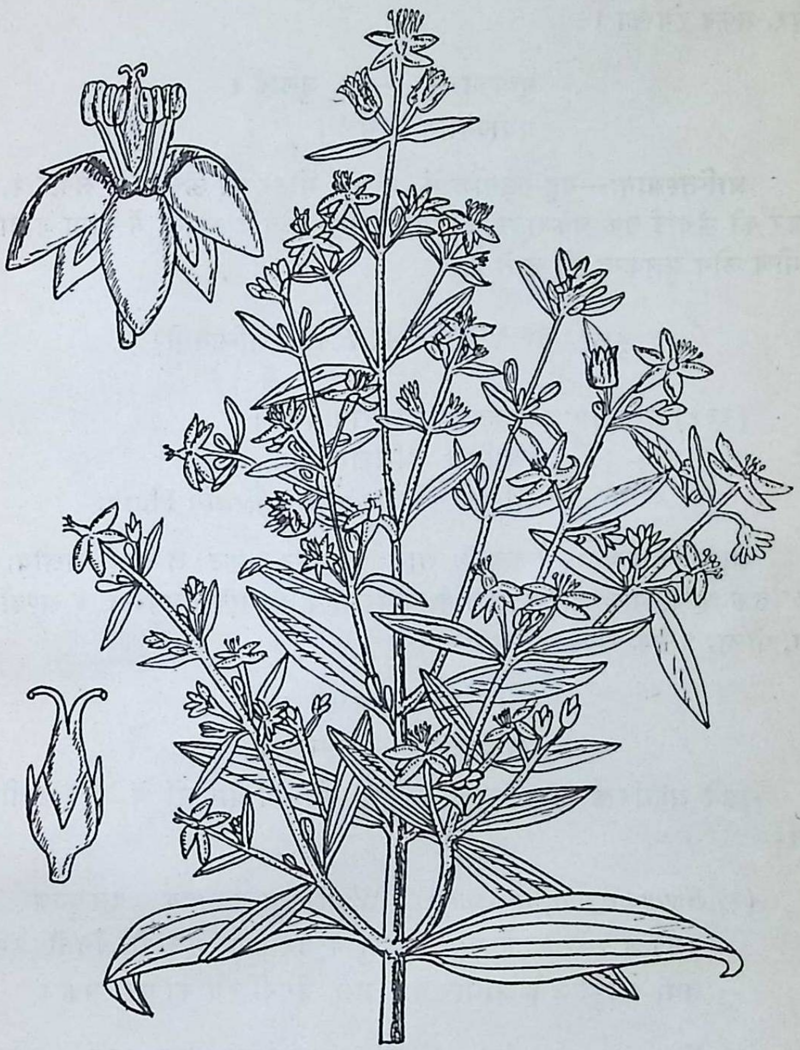

किराततिक्त—*Swertia purpurascens* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२३०) द्रव्यनाम···संस्कृत······भिलोड्य।
स्थानिक ···गिलोठी, गेलोट।
लैटिन ······*Ceropegia bulbosa* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—रोमिल शाक; काण्ड ६-१२ तक लम्बा, विसर्पी; पत्र-अण्डाकार, दीर्घायत; पुष्प-गुलाबी, लाल रंग; मूल-कन्दिल, गोलाकार, स्वाद में मधुर, सफेद रंग का।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,६०० मीटर की ऊँचाई तक चकराता, जौनसार, मंसूरी आदि स्थानों में पाया जाता है। ग्रामीण लोग मूलकन्द को खाते हैं।

कुल—*GENTIANACEAE* (जेन्सिनेसी)

(२३१) द्रव्यनाम···संस्कृत······किराततिक्त।
स्थानिक ···चिरायता।
लैटिन ······*Swertia chirata* Ham.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, शाक; काण्ड २-३ फुट लम्बा, शाखीय; पत्र २-३" तक लम्बे, भालाकार, तीक्ष्णाग्र; पुष्प-वाह्य दल एवं दलपुञ्ज, ४ खण्डों में, हरा, पीला, प्रत्येक खण्ड पर दो ग्रंथियाँ।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

इसके अतिरिक्त अन्य निम्न जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती है। यथा—

(१) *Swertia purpurascens* Wall—पुष्प-वाहय दल पुञ्ज एवं दलपुंज ५-खण्डित, प्रत्येक दलपुंज पर ग्रथि, गुलाबी, बैंगनी रंग की तथा दलपुञ्ज के आधार पर लाल, बैंगनी रंग का पूरा चक्र।

(२) *Swertia cordata* Wall.—पुष्प-वाहय दल एवं दलपुञ्ज ५. खण्डित-दलपुंज, पीला, सफेद रंग का. प्रत्येक खण्ड पर एक ग्रंथि।

(३) *Swertia angustifolia* Ham.—पुष्प-वाहय दल तथा दलपुंज ४ खण्डों में प्रत्येक दल पर एक ग्रंथि, दलपुंज, सफेद या गुलाबी, नीला रंग का।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

चित्र—४५

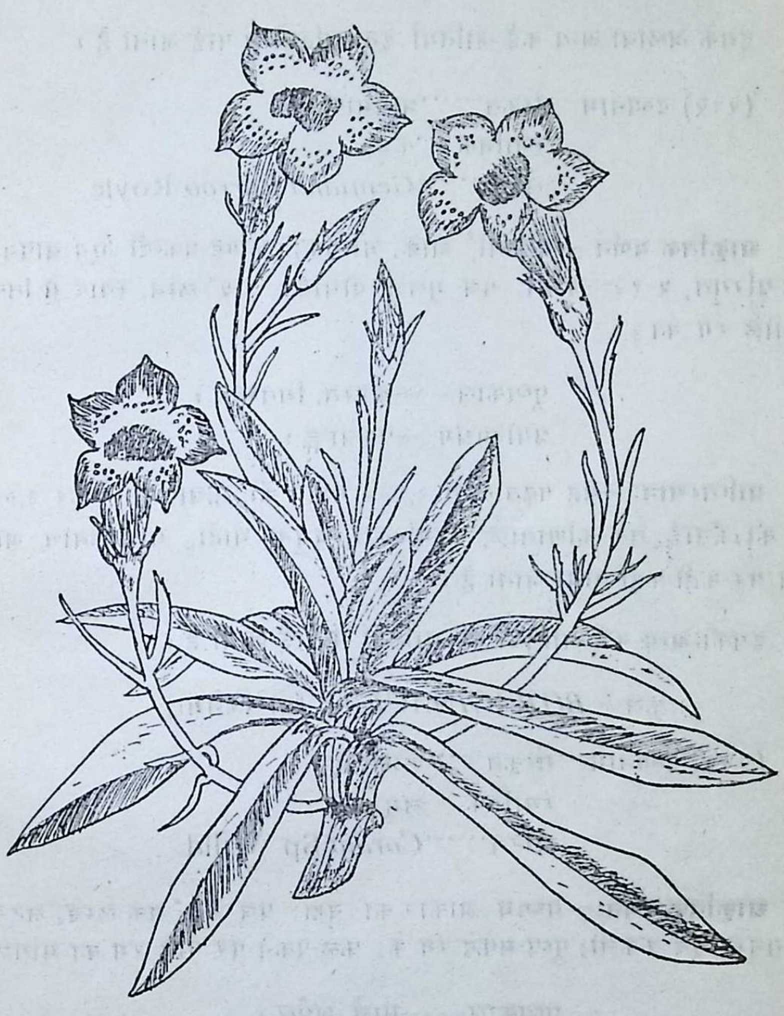

त्रायमाण—*Gentiana kurroo* Royle.

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust
Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(४) *Swertia alata* Royle—पुष्प-वाह्य दल एवं दलपुंज, हरा, पीला, प्रत्येक खण्ड पर एक ग्रथि।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय में १,५०० मीटर की ऊँचाई सेलेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, अलकनन्दा घाटी, हरकीदून, काणाताल, मन्सूरी, चकराता एवं जौनसार आदि स्थानों पर पाया जाता है।

इसके अलावा अन्य कई जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती है।

(२३२) द्रव्यनाम···संस्कृत······त्रायमाण।
स्थानिक ···कडू।
लैटिन······*Gentiana kurroo* Royle.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, शाक, भौमिक; काण्ड-प्रकन्दी एवं वापवीय; काण्ड-परिसृत, ५-१२" लम्बा; पत्र–मूलज, दीर्घायत, ३-५" लम्बे, स्वाद में तिक्त; पुष्प-नीले रंग का।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में २,६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक कांणाताल, नागटिव्वा, जमुना घाटी, माणीकनाथ आदि स्थानों पर कहीं-कहीं पाया जाता है।

इसकी अन्य कई जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती है।

कुल—*BORAGINACEAE* (बोरेजिनेसी)

(२३३) द्रव्यनाम···संस्कृत·····श्लेष्मातक।
स्थानिक ···लसूड़ा।
लैटिन······*Cordia* Sp. Willd.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; पत्र ३-६" तक लम्बे, लट्वाकार, सवृन्त एवं क्रकची; पुष्प-सफेद रंग के; फल-पकने पर पीले रंग का मांसल।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
फलकाल——अक्टूबर।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण में टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, जौनसार, जमुना घाटी आदि स्थानों पर ६०० मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४६

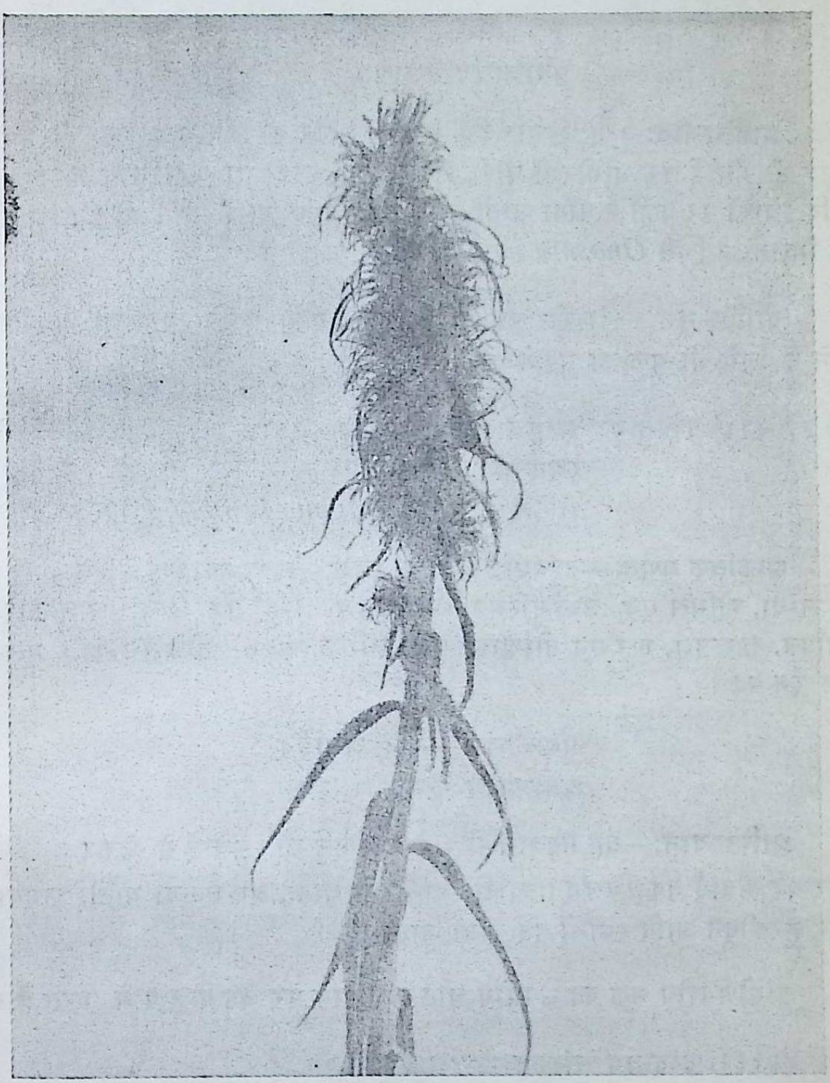

लालजड़ी—*Macrotomia benthami* DC.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२३४) द्रव्यनाम···स्थानिक·····रतनजोत।
लैटिन·····*Onosma echioides* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, प्रकन्दी शाक; काण्ड-विसर्पी, रोमिल; पत्र-मूलज, रोमिल, भालाकार, दीर्घायत, रुक्ष; पुष्प-गुलाबी, बैंगनी रंग के। मूल-लाल, ५ ६" तक लम्बा।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह हिमालय में ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक भागीरथी घाटी, भैरों घाटी; जाड़गङ्गा केदारनाथ, हरकीदून आदि स्थानों पर कहीं-२ पाया जाता है। इसकी एक दूसरी जाति भी इन स्थानों पर मिलती है जिसे *Onosma emodi* Wall. कहते हैं।

ग्रामीण मूल को शरीर पर घाव होने पर लेप करते हैं। तैलों को लाल करने के लिये भी मूल का उपयोग किया जाता है।

(२३५) द्रव्यनाम···संस्कृत·····गोजिह्वा।
स्थानिक ···लालजड़ी।
लैटिन ·····*Macrotomia benthami* DC.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, प्रकन्दी, शाक; काण्ड-पुष्पदण्ड सहित ८-१८" तक लम्बा, रोमिल एवं उर्ध्वसंस्थित; पत्र-मूलज, ६-८" तक लम्बे, भालाकार, दीर्घायत, खरस्पर्श, रुक्ष एवं तीक्ष्णाग्र; पुष्प-रोमिल, बैंगनी, नीले रंग का। मूल-लाल रंग का।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, अलकनन्दा घाटी, जमुना घाटी, हरकीदून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग मूल का उपयोग चोट लग जाने पर लेप के रूप में करते हैं।

(२३६) द्रव्यनाम···संस्कृत·····अधोपुष्पी।
लैटिन ·····*Trichodesma indicum* Br.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, शाक; काण्ड ६-१२" तक लम्बा, रुक्ष, रोमिल; पत्र-सम्मुख, १-४" लम्बे, अवृन्त, दीर्घायत या भालाकार, कुण्ठिताग्र एवं रोमिल; पुष्प-बैंगनी, नीले, अधोमुख।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——मार्च, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, घनशाली, धुत्तू, कुण्ड, श्रीनगर आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग मूल का उपयोग दन्तकृमि में दातुन के रूप में करते हैं।

(२३७) द्रव्यनाम…स्थानिक…अधाहुली।
लैटिन……*Cynoglossum wallichii* G. Don.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, क्षुप; पत्र-रुक्ष, अण्डाकार, भालाकार, दन्तुर; पुष्प-गहरे, नीले।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, जमुना घाटी, कांणाताल, मंसूरी, चकराता आदि स्थानों में पाया जाता है।

इसके अतिरिक्त निम्न जातियां भी इन घाटियों में पाई जाती है। यथा–

(i) *Cynoglossum micranthum* Desf.

(ii) *Cynoglossum zeylanicum* Thunb.

कुल—*CONVOLVULACEAE* (कनवालवुलेसी)

(२३८) द्रव्यनाम…संस्कृत……शंखपुष्पी भेद।
लैटिन ……*Evolvulus alsinoides* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी शाक; काण्ड-विसर्पी, मृदुरोमिल; पत्र-अवृन्त, ½″ तक लम्बे, भालाकार या लट्वाकार, मृदुरोमिल, अच्छिन्न तट एवं निशिताग्र; पुष्प–नीले रंग के।

पुष्पकाल——अप्रैल से जुलाई तक।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक सभी घाटियों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२२९) द्रव्यनाम…संस्कृत……कृष्णबीज पादप।
लैटिन… *Ipomaea hederacea* Jacq.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्राकृतिक वर्णनः—एकवर्षी; आरोही शाक; पर्ण २-५" तक लम्बे, पत्र-वृन्त, छोटा, अण्डाकार, हृदयाकार, गहरे, ३ खण्डों में विभक्त; पुष्प-नीला, बैंगनी रंग का; बीज-काले रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
फलकाल —शीतकाल।
प्रयोज्यअंग —बीज।

इसकी अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं, जिसमें निम्न है। यथा –

(१) *Ipomaea hispida* R. & S.

(२) *Ipomaea coccinea* Linn.

इन दोनों के बीज का भी प्रयोग ग्रामीण लोग विबन्ध में करते हैं।

प्राप्तिस्थानः—ये सभी जातियाँ गढ़वाल हिमालय में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में मिलती हैं।

कुल—*SOLANACEAE* (सोलेनेसी)

(२४०) द्रव्यनाम···संस्कृत······कण्टकारी।
स्थानिक ···कंटेली।
लैटिन ······*Solanum zanthocarpum* Schrad. Wendl.

ग्राकृतिक वर्णनः—विसर्पी, कांटेदार शाक; पत्र-आयताकार, ३-४" तक लम्बे;पत्र-तट, खण्डित, कांटेदार; पुष्प-नीले रंग के; फल-कांटेदार, पकने पर पीले।

पुष्पकाल——मार्च से ग्रगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२४१) द्रव्यनाम···संस्कृत······वृहती।
लैटिन ·····*Solanum indicum* Linn.

ग्राकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसस्थित क्षुप; काण्ड-काटेदार, ३-६ फुट तक लम्बा; पत्र ३-५" लम्बे, लट्वाकार, खण्डित, रोमिल एवं कांटेदार; पुष्प-नीले; फल-काकमाची, सदृश, पकने पर नारंगी रंग के।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४७

वनभट्टा—*Solanum khasianum* Clarke,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके अतिरिक्त निम्न जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती हैं जिनका कि उपयोग कण्टकारी (वृहती) के नाम से किया जाता है। यथा—

(1) *Solanum torvum* Swart.,
(2) *Solanum khasianum* Clarke.
(3) *Solanum melongena* Linn. तथा
(4) *Solanum verbascifolium* Linn. आदि जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती हैं।

प्राप्तिस्थान:—ये सभी जातियाँ गढ़वाल के शिवालिक वनखण्ड से लेकर १,५०० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र पाई जाती हैं।

(२४२) द्रव्यनाम···संस्कृत······अश्वागन्धा।
लैटिन······*Withania somnifera* Dunal.

आकृतिक वर्णन:—उर्ध्वसंस्थित, बहुवर्षी क्षुप; काण्ड ३ से ४ फुट तक लम्बा, शाखीय; पत्र-मृदुरोमिल, एकान्तर, लट्वाकार, कुण्ठिताग्र; पुष्प-छोटे, कक्षीय, हरिताभ; फल-रसदार, वाहय दल कोष में एवं नारंगी रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —मूल, पत्र, बीज।

प्राप्तिस्थान:—यह गढ़वाल में ६०० मीटर की ऊँचाई तक गांवों के समीप धरासू, उत्तरकाशी, टिहरी, चोन्टी आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२४३) द्रव्यनाम···संस्कृत·····पारसीक पवानी।
लैटिन ·····*Hyoscyamus niger* Linn.

आकृतिक वर्णन:—उर्ध्वसस्थित शाक; काण्ड-शाखीय, २ से ५ फुट तक लम्बा, मृदुरोमिल, सम्मुख, दीर्घायत, खण्डित तट, मृदुरोमिल; पुष्प-बैंगनी, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
फलकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पत्र, बीज।

प्राप्तिस्थान:—यह ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: बद्रीनाथ, वसुधारा, धौली घाटी एवं मलारी आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४८

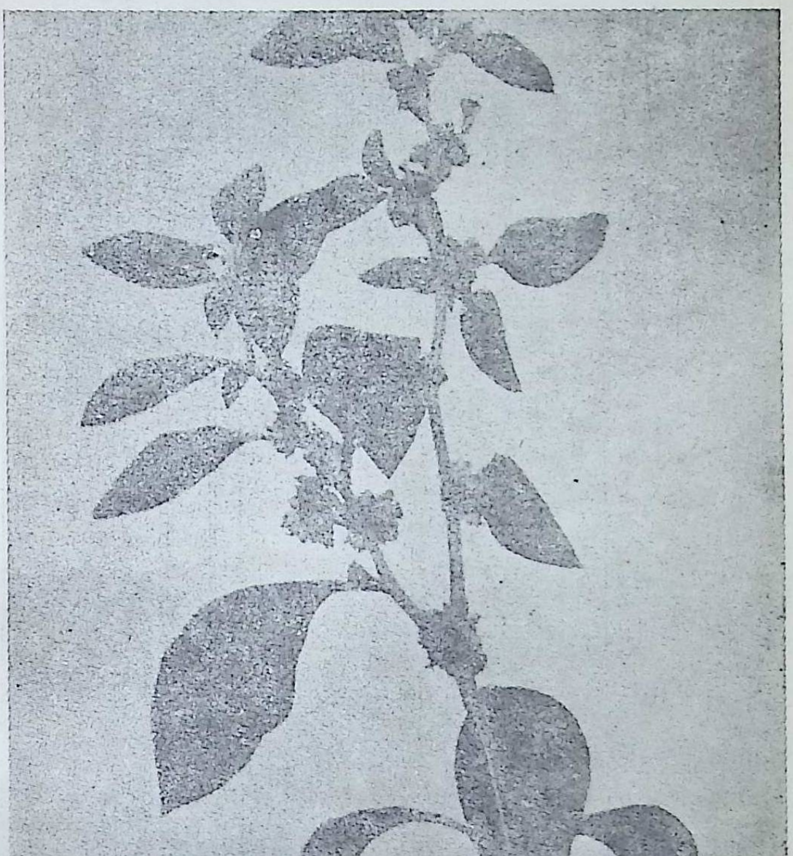

अश्वागन्धा—*Withania somnifera* Dunal.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—४९

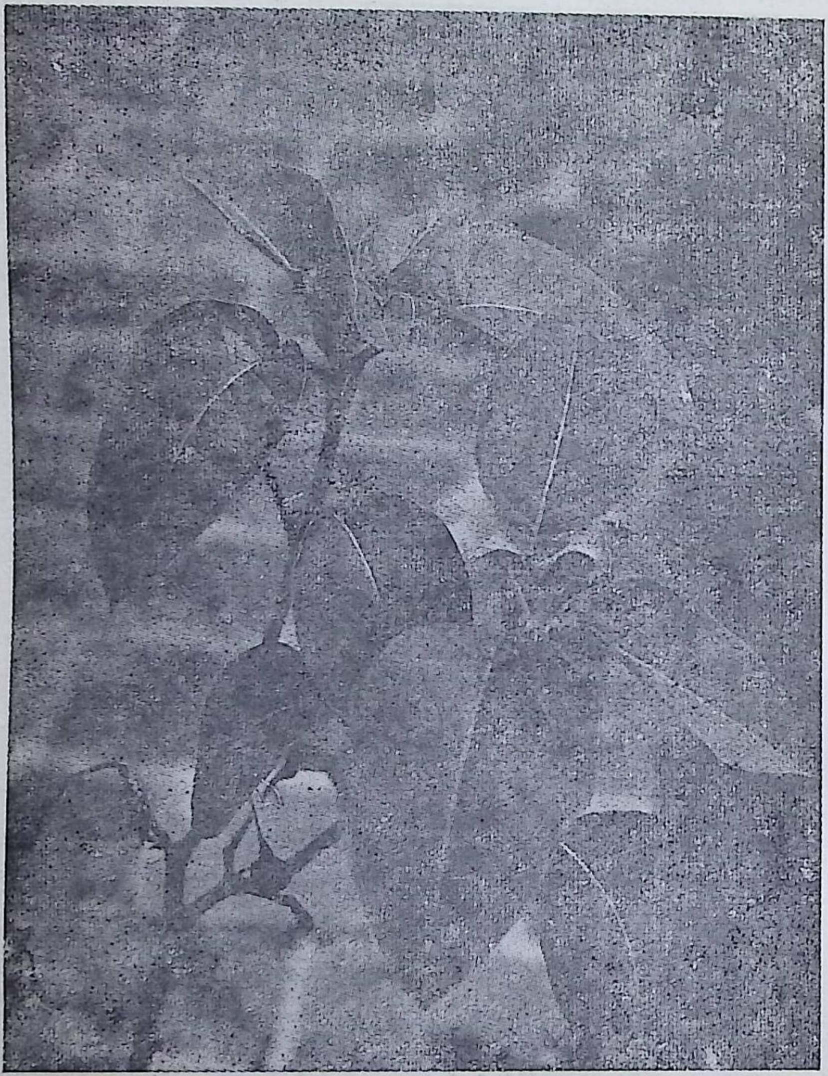

धत्तूरा—*Datura metel* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२४४) द्रव्यनाम···संस्कृत······कृष्ण धत्तूर।
स्थानिक······काला धत्तूरा।
लैटिन ······*Datura stramonium* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, २-४ फुट तक लम्बा; पत्र-सवृन्त, ४-६ तक लम्बे, लट्वाकार, खण्डित तट, दन्तुर; पुष्प-सफेद रंग के; फल-सम्पुट (कैंपसूल) एवं बीज़ काले।

पुष्पकाल——मई से अगस्त।
फलकाल——शीतकाल।

प्राप्तिस्थानः—यह १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

इसकी अन्य दूसरी जाति भी इन घाटियों के उष्ण भागों पर मिलती है जिसे श्वेत धत्तूर *Datura metel* Linn. कहते हैं।

(२४५) द्रव्यनाम···संस्कृत······काकमाची।
स्थानिक ···मकोय।
लैटिन·······*Solanum nigrum* Linn.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, अरोमिल शाक; काण्ड १-२ फुट लम्बा, शाखीय; पत्र-अण्डाकार या दीर्घायत एवं दन्तुर; पुष्प-सफेद रंग के; फल-गूदेदार, लाल, पीला या काला।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —फल, पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

(२४६) द्रव्यनाम···संस्कृत······ताम्रकूट।
स्थानिक ····तमाखू।
लैटिन······*Nicotiana tabacum* Linn.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड-मृदुरोमिल १-२ फुट लम्बा; पत्र-दीर्घायत, लट्वाकार, रोमिल; पुष्प-पीले रंग के।

पुष्पकाल——दिसम्बर, जनवरी।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—इसकी गढ़वाल के उष्ण भागों में खेती की जाती है, विशेष कर मलेथा, देवप्रयाग, श्रीनगर आदि में।

कुल—*SCROPHULARIACEAE* (स्क्रोफुलेरियेसी)

(२४७) द्रव्यनाम⋯संस्कृत⋯⋯कुटकी।

स्थानिक ⋯कड़ु, कौड़ाई।
लैटिन ⋯⋯*Picrorhfiza kurroo* Royle

प्राकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, विसर्पी शाक प्रकन्दी; काण्ड-ग्रन्थिओं से जड़े निकलती हैं। पत्र १-२″ तक लम्बे, एकान्तर, लट्वाकार, दन्तुर एवं पुष्प-सवृन्त, नीले एवं बैंगनी रंग के।

पुष्पकाल——मई, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —काण्ड, मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय में २,७०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, पंवाली, ताली, किनकोलिया-खाल, गंङ्गी एवं बालगङ्गा घाटी; भागीरथी घाटी, रैथल, दयारा, सुक्की, हर्षिल, गंगोत्तरी, गोमुख, मन्दाकिनी घाटी, केदारनाथ, चोरावाड़ीताल, हथनी, मद-महेश्वर, तुंगनाथ, रुद्रनाथ; अलकनन्दा घाटी, वद्रीनाथ, वसुधारा, नीतीपास एवं हेमकुण्ड, धौली घाटी, जमुना घाटी, हरकीदून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

इसके काण्ड एवं मूल का काफी मात्रा में संग्रह किया जाता है जिसका कि व्यापार देहरादून, हरिद्वार, दिल्ली, अमृतसर के बाजारों में होता है।

(२४८) द्रव्यनाम⋯हिन्दी ⋯⋯गीदड़, तमाखू।
स्थानिक⋯भमाकू।
लैटिन ⋯⋯*Verbascum thapsus* Linn.

प्राकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड २-३ फुट लम्बा; तूल-रोमिल; पर्ण-मूलज, १-२″ लम्बे, अच्छिन्न, दीर्घायत, भालाकार, अवृन्त; पुष्प-पीले रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

(२४९) द्रव्यनाम⋯संस्कृत⋯ब्राह्मी।
हिन्दी⋯⋯जलनीम।
लैटिन⋯⋯*Bacopa monnieri* (Linn.) Pennell.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—जलीय-मांसल, शाक; काण्ड-विसर्पी; पर्ण-अल्प वाला, अण्डाकार, दीर्घायित, दन्तुर; पुष्प-जामुनी, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई से सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में पानी वाले स्थानों के समीप प्रायः उत्तरकाशी, जमुना घाटी, देहरादून आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

कुल—*BIGNONIACEAE* (बिग्नोनियेसी)

(२५०) द्रव्यनाम···संस्कृत······श्योनाक।
स्थानिक ···टाटपलांगू।
लैटिन ······*Oroxylum indicum* Vent.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; काण्ड-छाल, हरिताभ; पत्र-सम्मुख, ३ पिच्छाकार, मध्य के कुछ पत्र २-पिच्छाकार लगभग ३-४ फुट लम्बा; पुष्प-बड़े, बैंगनी रंग के; फली-तलवार जैसी, चपटी, कठोर, १ से १½ फुट लम्बी।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, जौनसार, जमुना घाटी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(२५१) द्रव्यनाम···संस्कृत ······पाटला।
लैटिन ······*Stereospermum suaveolens* DC.

आकृतिक वर्णनः—वृक्ष, काण्ड-छाल, धूसरवर्ण की एवं खुरदरी, पपड़ीदार; पत्र-सम्मुख, असम पिच्छाकार; पत्रक ५-९, दीर्घवृत्तीय, लम्बाग्र, रुक्ष, क्रकची; पुष्प-गहरा, बैंगनी; फलियाँ ८-१२″ तक लम्बी।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —छाल, बीजयुक्तमज्जा।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, जौनसार, देहरादून आद्रि स्थानों पर पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल—*PEDALIACEAE* (पेडेलियेसी)

(२५२) द्रव्यनाम···स्थानिक ···विच्छुआ।
लैटिन ······*Martynia diandra* Glox.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, मृदुरोमिल शाक; काण्ड ३-५ फुट लम्बा; पत्र ३-६" लम्बे, सम्मुख, हृदयाकार, रोमिल एवं सूक्ष्म दन्तुर; पुष्प-गुलाबी या बैंगनी रंग के; फल-कठोर एवं अग्रभाग दो वडिशाकार कांटों के रूप में।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —फल, पत्र।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः कूड़े-करकट वाले स्थानों पर मिलता है।

आजकल इसके फलों का प्रयोग काकनासा के नाम से हो रहा हैं जो ठीक नहीं क्योंकि यह मूलतः भारतीय पादप नहीं है।

कुल—*ACANTHACEAE* (ऐकेन्थेसी)

(२५३) द्रव्यनाम···संस्कृत······आटरुषक।
स्थानिक ···वासिंगू।
लैटिन······*Adhatoda vasica* Nees.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित क्षुप; काण्ड ३-४ फुट लम्बा; पर्ण ४-८" तक लम्बे, भालाकार या दीर्घवृत्तीय, मृदुरोमिल एवं सवृन्त; पुष्प-सफेद रंग के, खिलने पर व्याघ्र, मुख सदृश खुला हुआ।

पुष्पकाल——दिसम्बर, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —छाल, पत्र, पुष्प।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक सभी स्थानों पर सुलभ है।

(२५४) द्रव्यनाम · संस्कृत······काकजङ्घा।
स्थानिक ···काकनड़ी।
लैंटिन ······*Peristrophe bicalyculata* Nees.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड ३-५ फुट लम्बा, षड्कोण-युक्त, रोमिल; पत्र २-३" लम्बे, अण्डाकार, लम्बाग्र, रोमिल, अवृन्त एवं काण्ड; पत्र-ऊपर के पत्रों के अपेक्षा नीचे के बड़ें; पुष्प-छोटे, गुलाबी या जामुनी रंग के।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५०

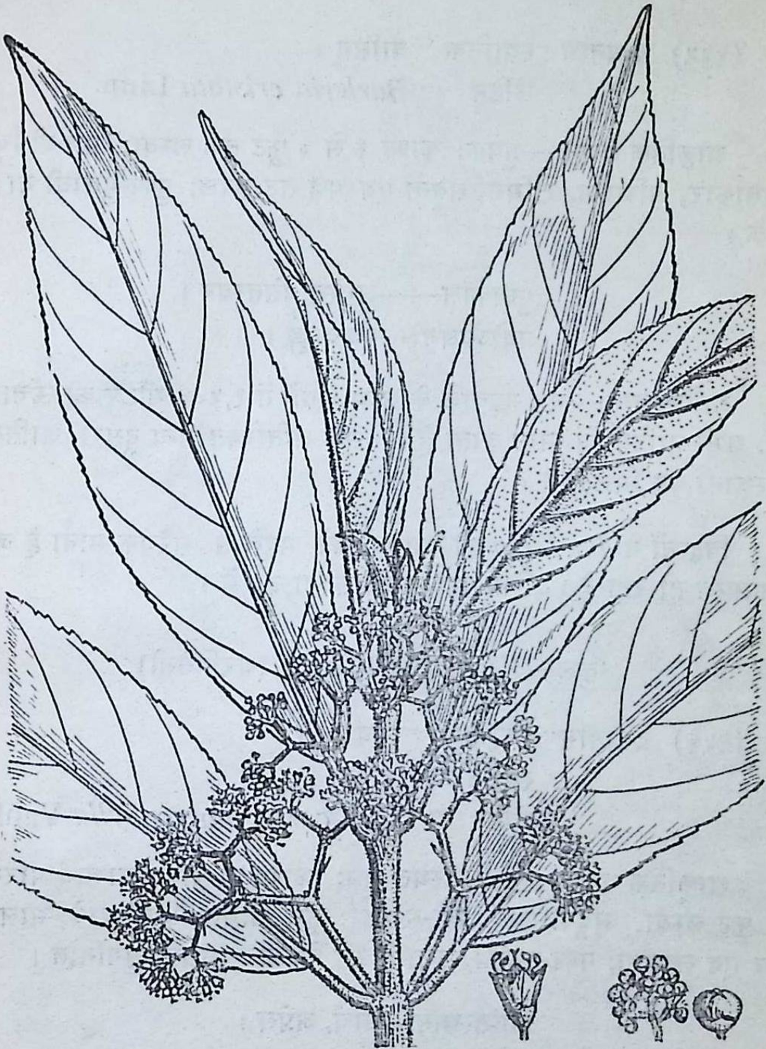

प्रियङ्गु—*Callicarpa macrophylla* Vahl.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी स्थानों पर सुलभ है।

(२५५) द्रव्यनाम···स्थानिक ···वासिंगू।
लैटिन ······*Barleria cristata* Linn.

आकृतिक वर्णनः—क्षुपक; काण्ड १ से ३ फुट तक लम्बा; पत्र-दीर्घवृत्तीय, आयताकार, अच्छिन्न, रोमिल, सवृन्त एवं पत्र तट सरल; पुष्प-गुलाबी या बैंगनी रंग के।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य दूसरी जातियाँ भी इन स्थानों पर मिलती हैं।

विद्वानों ने *Barlaria* की जातियों को पहले से सैरेयक माना है जो अब विवादग्रस्त हो रहा है। देखिये आधारग्रंथ संख्या ३० में।

कुल—*VERBENACEAE* (बरविनेसी)

(२५६) द्रव्यनाम···संस्कृत······प्रियंङ्गु।
स्थानिक······दहिया।
लैटिन ······*Callicarpa macrophylla* Vahl.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित क्षुप; काण्ड-शाखीय (शाखायें परिस्टन), ४-८ फुट लम्बा, मृदुरोमिल, पर्ण-सम्मुख; तूल-रोमिल, ६-९″ लम्बे, भालाकार, दन्तुर एवं लम्बाग्र; पुष्प-कक्षीय, गुलाबी रंग के; फल-मांसल, सुगन्धित।

प्राप्तिस्थान—मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —फल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में ९०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः घोन्टी, घनशाली, श्रीनगर, उत्तरकाशी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग फलों का उपयोग मुखपाक में करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५१

भारङ्गी—*Clerodendron serratum* Spreng.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२५७) द्रव्यनाम···संस्कृत ······भारङ्गी ।
लैटिन ······*Clerodendron serratum* Spreng.

आकृतिक वर्णनः—तलोत्थ क्षुप; काण्ड ३-४ फुट तक लम्बा, अरोमिल, नालीदार; पत्र ४-५″ तक लम्बे, भालाकार, दन्तुर एवं पत्राग्र-तीक्ष्ण; पुष्प-नीले, सफेद रंग के; फल-पकने पर काले रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —मूल, पत्र।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः घोन्टी, घनशाली, लम्बा, देहरादून आदि स्थानों पर पाया जाता है।

आजकल बाजार में प्रचलित भारङ्गी छाल *Clerodendron* नहीं है वास्तव में यह *Gardenia turgida* Roxb. का काण्ड त्वक् है जिसे देहरादून के व्यापारी भारंङ्गी के नाम संग्रह करते है।

(२५८) द्रव्यनाम···संस्कृत······ब्रह्मयष्टि।
स्थानिक ···चिंगारी, वकांरी।
लैटिन······*Clerodendron siphonanthus* R. Br.

आकृतिक वर्णनः—क्षुप या शाकीय पादप; काण्ड ४-८ फुट लम्बा, नालीदार; पत्र ३-५″ लम्बे, भालाकार, सवृन्त; पुष्प-सफेद, पीताभ रंग के। फल-पकने पर रक्त वर्ण का।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय में ६०० मीटर की ऊंचाई से लेकर १,६०० मीटर की ऊँचाई तक देहरादून, डोईवाला, सहस्त्रधारा, मन्सूरी आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२५९) द्रव्यनाम·· संस्कृत······अग्निमन्थ, अरिणी।
लैटिन ·····*Clerodendron phlomides* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; पत्र १½-२½″ तक लम्बे, लट्वाकार, कुण्ठिताग्र, दन्तुर या सरल तट; पुष्प-सफेद रंग के गुच्छों में।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।

प्राप्तिस्थानः—यह देवप्रयाग एवं टिहरी वन खण्ड आदि स्थानों में कहीं-२ पाया जाता है। इसके अतिरिक्त शिवालिक वनखण्ड में अन्य जाति भी पाई जाती है जिसे भांट-*Clerodendron infortunatum* Gaertn. कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२६०) द्रव्यनाम···संस्कृत······निर्गुण्डी।
स्थानिक ···सिवाली।
लैटिन ······*Vitex negundo* Linn.

आकृतिक वर्णनः—पर्णपाती क्षुप; काण्ड-शाखीय, १० से १५ फुट तक लम्बा, पत्र-संयुक्त, ३-५ पत्रक; पत्रक-भालाकार, अरोमिल एवं पत्राग्र,तीक्ष्ण; पुष्प-नीले, बैंगनी रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —छाल, पत्र, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः ९०० मीटर की ऊँचाई तक सभी स्थानों पर पाया जाता है।

(२६१) द्रव्यनाम···संस्कृत······अरणीभेद।
स्थानिक······वकार, वकारु।
लैटिन ······*Premna barbata* Wall.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष, पत्र ५-६" तक लम्बे, दीर्घायत एवं लट्वाकार, तीक्ष्णाग्र, दन्तुर; पुष्प-छोटे एवं पीताभ वर्ण के, सुगन्धित।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —पत्र, छाल।

इसके अतिरिक्त निम्न दो जातियां भी इन घाटियों में यत्र-तत्र पाई जाती हैं। यथा—

(१) *Premna latifolia* Roxb. (वकार)।

(२) *Premna herbacea* Roxb., क्षुप; प्रकन्दी,ग्रंथिल; काण्ड-सुगन्धित, पर्ण-अवृन्त; पुष्प-हरिताभ, श्वेत।

प्राप्तिस्थानः—ये जातियाँ गढ़वाल हिमालय के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाई जाती हैं।

कुल—*LABIATAE* (लिबियेटी)

(२६२) द्रव्यनास···यूनानी······उस्तखट्दूस।
लैटिन ······*Prunella vulgaris* Linn.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, रोमिल शाक; काण्ड ४-१२" लम्बा; पत्र-अण्डाकार, दीर्घायत, १-२" लम्बे, अच्छिन्न एवं कुण्ठिताग्र; पुष्प-बैंगनी, गुलाबी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —बीज, पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

(२६३) द्रव्यनाम···संस्कृत······वन्यपवानी।
लैटिन······*Thymus serpyllum* Linn.

आकृतिक वर्णनः—विसर्पी; सुगन्धित शाक; पर्ण १-१½" व्यास में, पत्र-सम्मुख, मृदुरोमिल, लट्वाकार एवं अच्छिन्न; पुष्प-छोटे, बैंगनी, लाल रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में २,१०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः अलकनन्दा घाटी भागीरथी घाटी एवं जमुना घाटी के घास वाले ढालों पर पाया जाता है।

(२६४) द्रव्यनाम···संस्कृत······द्रोणपुष्पी।
स्थानिक······गुमा।
लैटिन ······*Leucas cephalotes* Spreng.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड-चौपहल एवं मृदुरोमिल; पर्ण २-४" लम्बे, दन्तुर; पुष्प-गुच्छ, अग्रस्थित, सफेद रग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है।

(२६५) द्रव्यनाम···संस्कृत······पूतिहा।
स्थानिक ···पुदीना।
लैटिन ······*Mentha longifolia* Huds.

आकृतिक वर्णनः—सुगन्धित, बहुवर्षी शाक; पत्र-सम्मुख, भालाकार एवं सवृन्त, कुण्ठित; पुष्प-अग्रस्थित, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अक्टूबर।
प्रयोज्यअंग —पत्र।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५२

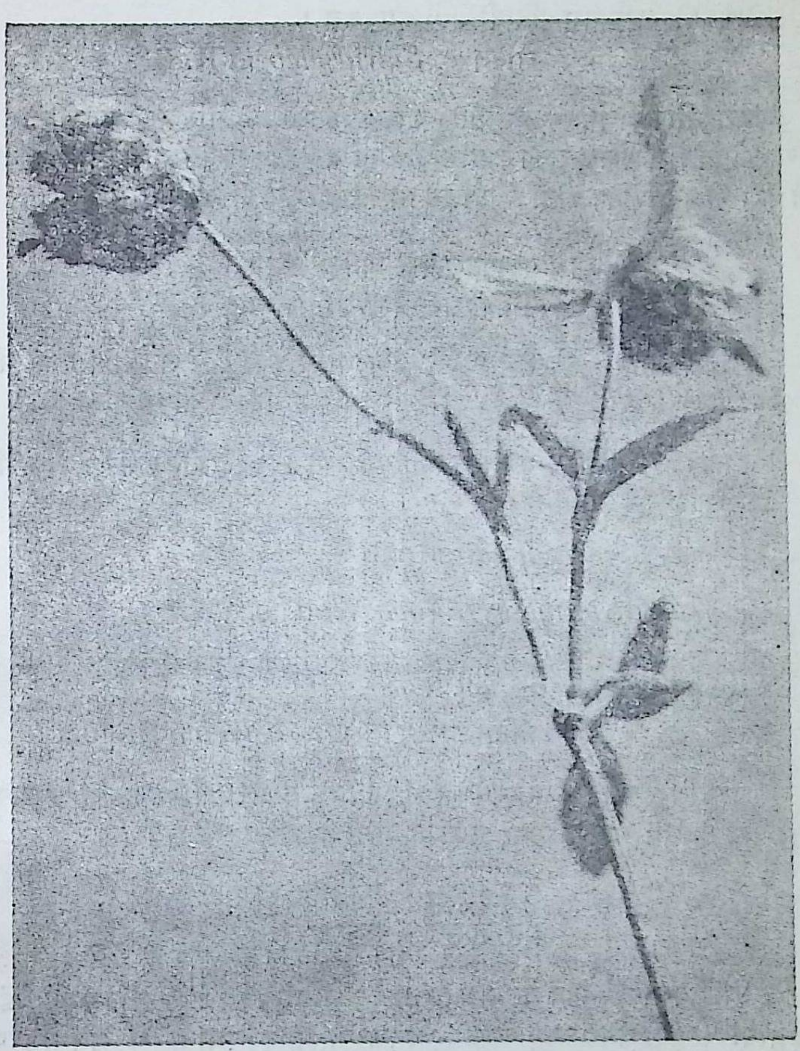

द्रोणपुष्पी—*Leucas cephalotes* Spreng.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में नदी-नालों के आसपास १,५०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है। इसके अतिरिक्त दूसरी एक जाति इन घाटियों में पाई जाती है, जिसे *Mentha arvensis* Linn. कहते हैं।

(२६६) द्रव्यनाम···हिन्दी ······कमरकस।
लैटिन······*Salvia plebeia* R. Br.

आकृतिक वर्णनः—सुगन्धित शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, मृदुरोमिल एवं काण्ड-चौपहल; पर्ण-लट्वाकार, दीर्घायित एवं दन्तुर; पुष्प-मञ्जरियों में श्वेताभ वर्ण के। बीज-बारीक, पानी में डालने पर लसदार जेली बनाने वाले।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —बीज, पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों के नम स्थानों पर ६०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, देहरादून आदि स्थानों में पाया जाता है।

इसके अतिरिक्त अन्य निम्न जातियाँ भी १,५०० मीटर से २,१०० मीटर कीं ऊँचाई तक पाई जाती हैं।

(१) दूठ—*Salvia lanata* Roxb.

(२) —*Salvia moorcrofiana* Wall.

(२६७) द्रव्यनाम···स्थानिक ······करु।
लैटिन ······*Roylea calycina* Btiguct.

आकृतिक वर्णनः—मृदुरोमिल क्षुपक; पत्र-सम्मुख, १-२″ लम्बे, अण्डाकार, दन्तुर एवं सवृन्त; पुष्प-कक्षीय, चक्रों में, गुलाबी, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——फरवरी, मार्च।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, घोन्टी, घनशाली आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पत्र क्वाथ का प्रयोग ज्वरों में करते हैं।

(२६८) द्रव्यनाम···संस्कृत······फणिञ्झक।
स्थानिक ···फांगलो।
लैटिन······*Pogostemon parviflorus* Benth.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—सुगन्धित क्षुप; काण्ड-चौपहल, मृदुरोमिल; पत्र-सम्मुख, लट्वाकार, ३-७′ लम्बे, अच्छिन्न एवं लम्वाग्र; पुष्प-बगनी रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चांङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,६०० मीटर को ऊँचाई तक टिहरो वन खण्ड, गुप्तकाशी, उत्तरकाशी, धरासू आदि स्थानों पर पाया जाता है। इसकी एक अन्य जाति इन घाटियों में मिलती है जिसे *Pogostemon plectranthoides* Desf. कहते है।

ग्रामीण लोग पंञ्चांङ्ग का उपयोग ज्वरों में करते हैं।

(२६९) द्रव्यनाम···संस्कृत······मरुवक।
लैटिन······*Origanum vulgare* Linn.

आकृतिक वर्णनः—उध्र्वसंस्थित शाक; काण्ड १-२ फुट लम्बा, मृदुरोमिल; पत्र-सुगन्धित, लट्वाकार, अच्छिन्न; पुष्प-छोटे, गुलाबी, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पञ्चांङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी आदि स्थानों में पाया जाता है।

(२७०) द्रव्यनाम···हिन्दी·····नीलकण्ठी।
लैटिन ·····*Ajuga bracteosa* Wall.

आकृतिक वर्णनः—रोमिल शाक; काण्ड-उध्र्वसंस्थित या विसर्पी; पत्र-लट्वाकार, १-४ लम्बे, दन्तुर या अच्छिन्न, अवृन्त तथा अधःपृष्ठ पर श्वेताभ; पुष्प-बैंगनी, नीले रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, मई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग चूर्ण का उपयोग रक्तविकार एवं ज्वरों में करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वक्तव्यः—इस कुल की अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में ९०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,८०० मीटर की ऊँचाई तक पाई जाती हैं जिनका कि उपयोग चिकित्सा में होता है।

(१) *Micromeria biflora* Benth.

(२) *Nepeta ciliaris* Benth.

(३) *Colebrookea oppositifolia* Sm.

कुल—*NYCTAGINACEAE* (निक्टेजिनेसी)

(२७१) द्रव्यनाम···संस्कृत······पुनर्नवा।
स्थानिक ···पुर्णो।
लैटिन······*Boerhaavia diffusa* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मृदुरोमिल, विसर्पी शाक; काण्ड १ से २ फुट लम्बा, शाखीय; पत्र-सम्मुख, लट्वाकार, अधःपृष्ठ, श्वेताभ एवं बाह्य पृष्ट, हरित वर्ण का; पुष्प-छोटे, गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, टिहरी, घोन्टी, उत्तरकाशी, धरासू, श्रीनगर आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता हैं।

(२७२) द्रव्यनाम···हिन्दी ······गुलावांस।
लैटिन······*Mirabilis jalapa* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, कन्दिल शाक; काण्ड २-४ फुट लम्बा एवं रक्ताभ; पत्र-लट्वाकार, सवृन्त, अरोमिल एवं अच्छिन्न; पुष्प-श्वेत, गुलाबी वर्ण के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल, पत्र।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः घोन्टी, घनशाली, धुत्तू एवं उत्तरकाशी में गाँवों के आस-पास पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पत्रों का उपयोग फोड़े-फुन्सियों पर लेप के रूप में करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५३

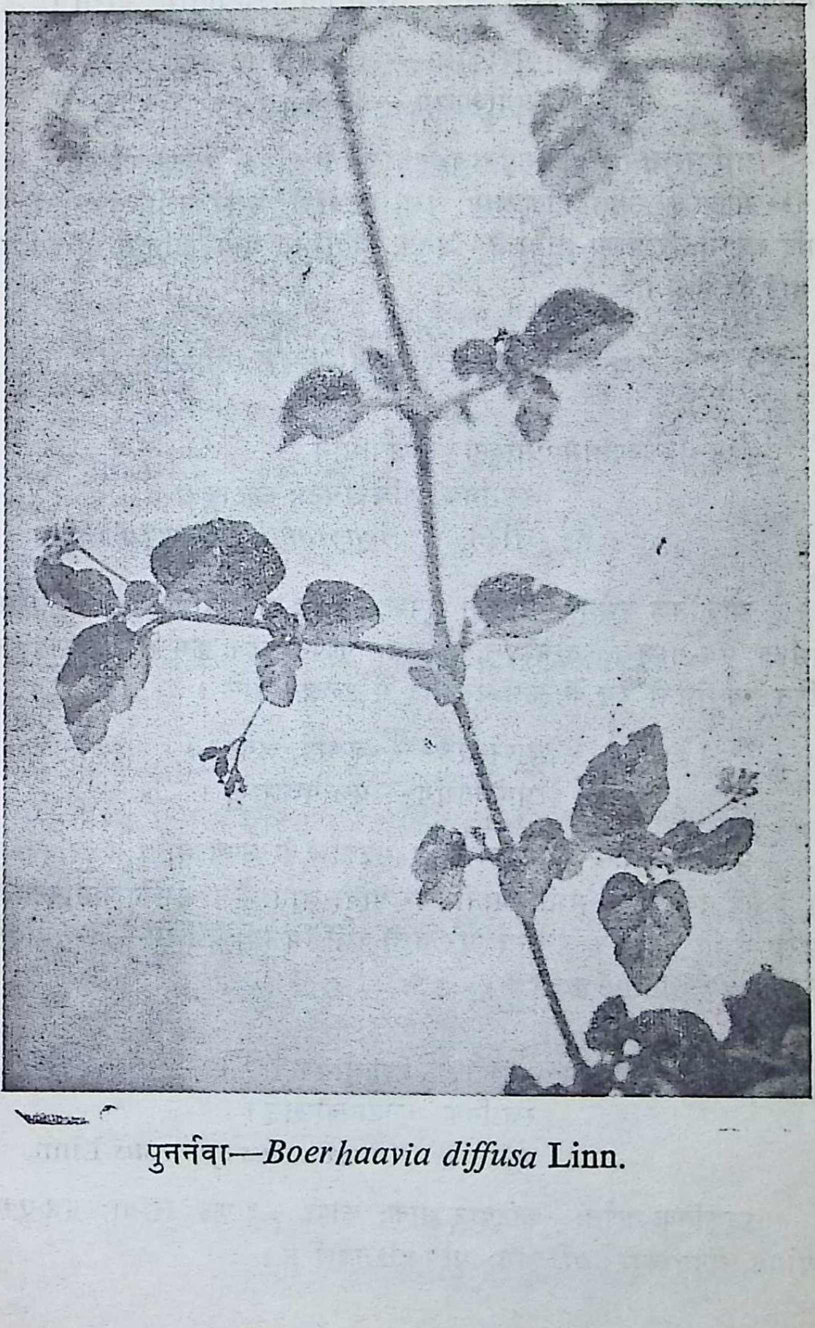

पुनर्नवा—*Boerhaavia diffusa* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल—*PLANTAGINACEAE* (प्लान्टेजिनेसी)

(२७३) द्रव्यनाम···हिन्दी ······जंगली-ईसबगोल ।
लैटिन ······*Plantago major* Linn.

आकृतिक वर्णन:—उर्ध्वसंस्थित शाक; पर्ण-चौड़े, लट्वाकार, मूलज या दीर्घायित-लट्वाकार; पुष्पदण्ड ६-१२″ लम्बा एवं पुष्प-पीताभ, हरित ।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग —पंञ्चांङ्ग ।

प्राप्तिस्थान:—यह गढ़वाल हिमालय में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः धुत्तू, भटवारी, उत्तरकाशी, चकराता, मन्सूरी आदि स्थानों पर पाया जाता हैं। इसके अतिरिक्त अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं।

कुल—*AMARANTHACEAE* (ऐमेरेन्थेसी)

(२७४) द्रव्यनाम···संस्कृत······अपामार्ग ।
स्थानिक ···चिरचिटा, उल्टोकुरो ।
लैटिन ······*Achyranthes aspera* Linn.

आकृतिक वर्णन:—रोमिल क्षुपक; काण्ड-प्रायः दो फैली हुई शाखाओं में विभक्त; पत्र-सम्मुख, दीर्घायित, सवृन्त; पुष्प-स्पाइक क्रम में, अधोमुख, कंटकी, हरित एवं बैगनी रंग के; फल-वस्त्रादि में उलझने वाले ।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त ।
प्रयोज्यअंग —मूल पञ्चाङ्ग ।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसकी दूसरी जाति भी इन स्थानों पर कहीं-कहीं मिलती है जिसे—*Achyranthes bidentata* Blume कहते हैं।

(२७५) द्रव्यनाम···संस्कृत······तण्डुलीयक ।
स्थानिक···कांटा चौलाई ।
लैटिन ······*Amaranthus spinosus* Linn.

आकृतिक वर्णन:—कांटेदार शाक; काण्ड २-३ फुट लम्बा; पत्र-एकान्तर, दीर्घायित, लट्वाकार, अच्छिन्न; पुष्प-हरितवर्ण के ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त ।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है।

(२७६) द्रव्यनाम···संस्कृत·····मारीष ।
स्थानिक···मारछा ।
लैटिन·····*Amaranthus paniculatus* Linn.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, एकवर्षी शाक; काण्ड ३-४ फुट तक लम्बा, अरोमिल; पर्ण-सम्मुख, लट्वाकार, भालाकार, अच्छिन्न; पुष्प-मञ्जरी, अग्रस्थित एवं लाल ।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग —बीज, पत्र ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में ९०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है।

प्रायः पार्वत्य प्रदेशों में इसकी खेती की जाती है और बीजों को रामदाना कहते है।

कुल—*CHENOPODIACEAE* (चिनोपोडियेसी)

(२७७) द्रव्यनाम···संस्कृत·····वास्तूक ।
हिन्दी ······वेथु, वथुआ ।
लैटिन ······*Chenopodium album* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, २-३ फुट तक लम्बा-मृदुरोमिल; पत्र-लट्वाकार, दीर्घायत, सवृन्त, अरोमिल; पुष्प-हरिताभ वर्ण के ।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर ।
प्रयोज्यअंग – पंञ्चाङ्ग, छाल ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः खेतों के आस-पास सर्वत्र पाया जाता है।

(२७८) द्रव्यनाम···संस्कृत·····सुगन्ध वास्तूक ।
लैटिन ······*Chenopodium ambrosioides* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—सुगन्धित, उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड-शाखीय, २-३ फुट तक लम्बा; पत्र-भालाकार, दीर्घायत, दन्तुर एवं लम्बाग्र; पुष्प-सुगन्धित, हरिताभ मञ्जरी में।

पुष्पकाल——अगस्त, सितम्बर।
प्रयोज्यअंग —पत्र, पञ्चांङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में ६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः घनशाली, धुत्तू, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, पीपलकोठी आदि स्थानों पर पाया जाता है। इसकी दूसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है, जिसे *Chenopodium botrys* Linn. कहते हैं।

कुल—*POLYGONACEAE* (पालीगोनेसी)

(२७९) द्रव्यनाम···यूनानी··· अञ्जुवार।
स्थानिक ···अमली।
लैटिन ···*Polygonum amplexicaule* D. Don.

आकृतिक वर्णनः—अरोमिल, उर्ध्वसंस्थित, शाक; काण्ड २-३ फुट तक लम्बा; पत्र-लट्वाकार, हृदयाकार एवं सवृन्त; पुष्प-मंजरी, श्वेत, रक्त वर्ण की; मूल-प्रकंदी, भीतर से लालिमा लिये हुये।

पुष्पकाल— —मई, जून।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः काणाँताल, मन्सूरी, चकराता, देववन, भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी आदि सभी स्थानों पर पाया जाता है।

(२८०) द्रव्यनाम···यूनानी ····रेवन्दचीनी।
स्थानिक ···आर्चा।
लैटिन·····*Rheum emodi* Wall.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, नालीदार, अरोमिल, २-३ फुट तक लम्बा; पत्र-सवृन्त, मूलज ८-१०" व्यास में, दीर्घायत, अच्छिन्न एवं स्वाद में अम्ल; पुष्प-सफेद, गुलाबी रंग के।

भौमिक, कापड़-प्रकन्दी एवं लम्बा, मोटा, भीतर से पीताभ पर्ण का।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५२

आर्चा—*Rheum emodi* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके अतिरिक्त निम्न दो अन्य जातियां भी यत्र-तत्र इन घाटियों में पाई जाती है।

(१) ढोलू--*Rheum moorcroftianum* Royle पुष्प-लाल रंग।

(२) ढोलू—*Rheum webbianum* Royle पुष्प-गुलाबी।

प्राप्तिस्थान:—ये जातियाँ २,७०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, ताली, पंवाली, किनकोलियाखाल, खर्तलिङ्ग, सहस्त्रताल; मन्दाकिनी घाटी, केदारनाथ, वासुकीताल, हथनी, मदमहेश्वर, तुंगनाथ एवं अलकनन्दा घाटी, जमुना घाटी, हरकीदून आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाई जाती है।

ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग चोट पर करते हैं। इनके लम्बे पत्र आदि कूटकर प्रचलित अम्लवेतस की गुच्छियाँ बनाई जाती हैं।

(२८१) द्रव्यनाम···हिन्दी······कोटू।
स्थानिक···ओगल, फाफरा।
लैटिन·····*Fagopyrum esculentum* Moench.

आकृतिक वर्णन:—उर्ध्वसंस्थित, एकवर्षी शाक; काण्ड २-३ फुट लम्बा, अरोमिल, रक्ताभ वर्ण का; पत्र-हृदयाकार या त्रिभुजाकार, सवृन्त एवं लम्बाग्र; पुष्प-सफेद, गुलाबी; फल-त्रिकोणाकार एवं काले रंग के।

पुष्पकाल ——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —फल, पञ्चांङ्ग।

प्राप्तिस्थान:—गढवाल के उष्ण भागों से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सीमान्त गांवों में इसकी खेती की जाती है।

ग्रामीण लोग पंचाङ्ग की सब्जी बनाकर खाते हैं एवं फलों से आटा तैयार किया जाता है।

(२८२) द्रव्यनाम···लैटिन·····*Polygonum recumbens* Royle.

आकृतिक वर्णन:—एकवर्षी, विसर्पी शाक; काण्ड-मृदु, शाखीय, १ से २ फुट लम्बा; पत्र-भालाकार ७½-९ लम्बे, अवृन्त; पुष्प-छोटे, सफेद, गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल ——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पंञ्चांङ्ग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थान:—यह गढवाल में १,६०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: कांणाताल, मन्सूरी, चकराता, भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, मन्दाकिनी घाटी एवं जमुना घाटी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग पञ्चांङ्ग का प्रयोग दूषित व्रणों में लेप के रूप में करते हैं। कुछ स्थानिक वैद्य पत्तियों को एनेस्थेटिक के रूप में उपोगी बतलाते है।

(२८३) द्रव्यनाम···स्थानिक···कांतलू।
लैटिन······*Polygonum rumicifolium* Royle

आकृतिक वर्णन:—बहुवर्षी शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, २-३ फुट लम्बा, अरोमिल; मूल-प्रकन्दी, रक्ताभ, श्वेत, गन्ध वाले; पत्र-सम्मुख, दीर्घायत, लट्वाकार एवं लम्बाग्र; पुष्प-गुलाबी, सफेद।

पुष्पकाल ——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड हिमालय में ३,००० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: मन्दाकिनी घाटी, केदारनाथ, हथनी, मदमहेश्वर, तुंगनाथ, रुद्रनाथ, बद्रीनाथ, हनुमानचट्टी आदि स्थानों पर कहीं-कहीं पाया जाता है।

ग्रामीण लोग मूल का उपयोग वत्सनाभ आदि विषों के प्रभाव को दूर करने के लिए करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रसूता स्त्रियों के वातप्रसूत, जन्य तृषा को कम करने के लिये चूर्ण का उपयोग किया जाता है। सम्भवत: यह शास्त्रकारों की निर्विषी हो सकती है।

कुल—*PIPERACEAE* (पाइपरेसी)

(२८४) द्रव्यनाम···संस्कृत······पिप्पली।
स्थानिक ···पीपल, पहाड़ी पान।
लैटिन······*Piper longum* Linn.

आकृतिक वर्णन:—बहुवर्षी, विसर्पी, शाक; काण्ड-शाखीय एवं काण्ड ग्रन्थि पर उपमूल; पत्र-लट्वाकार, हृदयाकार, अरोमिल एवं लम्बाग्र; पुष्प एवं पादप नर और स्त्री दो-२ प्रकार के।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५३

पिप्पली—*Piper longum* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त ।
प्रयोज्यअंग —पञ्चांङ्ग ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों के नमी वाले स्थानों पर घोन्टो, पिलखी, असगढ़ एवं गुप्तकाशी, चमोलो आदि स्थानों पर कहीं-कहीं पाया जाता हैं ।

इसके अतिरिक्त दूसरी जाति भी कहीं-२ इन स्थानों पर मिलती है जिसे—*Piper brachystachyum* Wall. कहते हैं ।

कुल--*LAURACEAE* (लोरेसी)

(२८५) द्रव्यनाम···संस्कृत··· · पत्र ।
स्थानिक···दालचीनी ।
लेटिन ···· *Cannamomum tamala* Nees. & Eberm.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; काण्ड त्वक्, हरिताभ, धूसरवर्ण की; पत्र-एकान्तर या सम्मुख, ४·६ लम्बे; अण्डाकार, दीर्घायत, ल बाग्र एव अरोमिल; पुष्प-हरित, पीताभ । छाल एव पत्ते सुगन्धित एवं मधुर ।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल ।
प्रयोज्यअंग —छाल, पत्र ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर १,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, घोन्टी, इन्द्रोला, वणचुरी, माणीकनाथ, मन्दाकिनी घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, चकराता, जौनसार आदि स्थानों पर पाया जाता है ।

इन स्थानों से छाल एवं पत्र का संग्रह काफी मात्रा में किया जाता है।

(२८६) द्रव्यनाम···स्थानिक···कोला ।
लेटिन······*Machilus odoratissima* Nees.

आकृतिक वर्णनः—मध्यम आकार का वृक्ष; पत्र-अरोमिल, ४-६″ लम्बे, लट्वाकार, भालाकार, अच्छिन्न एवं तीक्ष्ण, पत्राग्र; पुष्प-सुगन्धित एवं सफद रंग के ।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल ।
प्रयोज्यअग —पत्र, छाल ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५४

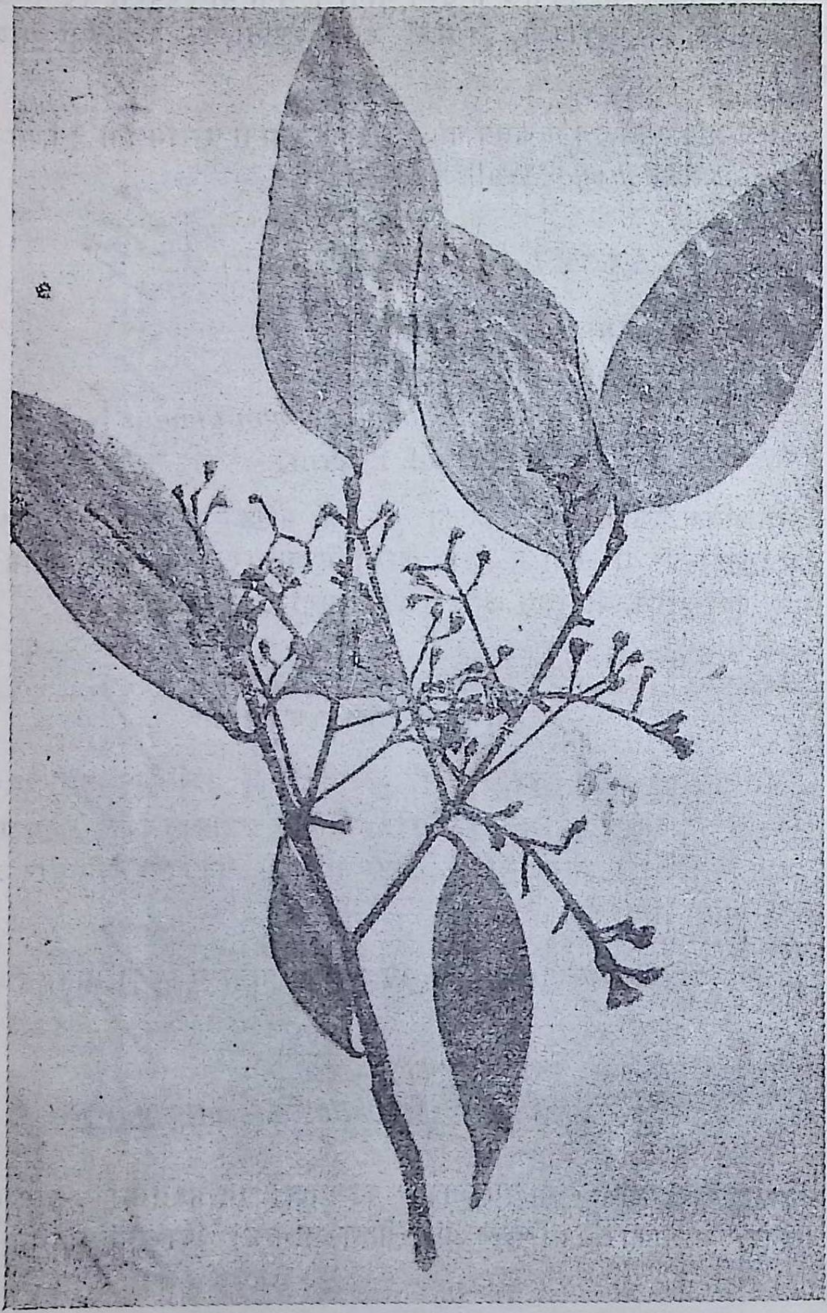

दालचीनी—*Cinnamonum tamala* Nees. & Eberm.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, जमुना, चकराता, देववन आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२८७) द्रव्यनाम···स्थानिक·····शसूर।
लैटिन ······*Litsaea umbrosa* Nees.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित, मध्यम वृक्ष; पर्ण-एकान्तर, ३-६ लम्बे, दीर्घायत, भालाकार, अरोमिल, सवृन्त; पुष्प-छोटे, छत्रक, सफेद रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, मई।
प्रयोज्यअंग —छाल, पत्र।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः मन्दाकिनी घाटी, भागीरथी घाटी, भिलंगना घाटी, चकराता, देववन, जौनसार आदि स्थानों पर पाया जाता है।

इसकी दूसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Litsaea lanuginosa* Nees. कहते हैं।

कुल—*LORANTHACEAE* (लोरेन्थेसी)

(२८८) द्रव्यनाम···स्थानिक···वान्दो।
लैटिन······*Viscum album* Linn.

आकृतिक वर्णनः—यह वांझ एवं खुमानी पर पैदा होने वाला अधिपादप; काण्ड-शाखीय; पत्र-मांसल, भालाकार एवं चपटे; पुष्प-एकलिङ्गी, हरिताभ।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —पंञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड गढवाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः मन्दाकिनी घाटी, गुप्तकाशी, फाटा, भागीरथी घाटी, गंगनानी, भटवारी, जमुना घाटी, चकराता, मन्सूरी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(२८९) द्रव्यनाम···संस्कृत ·····बन्दाक।
स्थानिक ···वान्दो।
लैटिन ······*Dendrophthoe falcata* (Linn. f.) Etting Shausen.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णन:—दूसरे वृक्षों पर पैदा होने वाला अधिपादप; पर्ण-मांसल; लट्वाकार, दन्तुर एवं अरोमिल; पुष्प-गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —पञ्चांङ्ग।

प्राप्तिस्थान: —यह गढवाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: सभी घाटियों में पाया जाता है।

कुल—*THYMALIACEAE* (थाइमेंलियेसी)

(२९०) द्रव्यनाम···स्थानिक ··सतपुड़ा।
लैटिन ···*Daphne papyracea* Wall.

आकृतिक वर्णन:—सदाहरित, क्षुप; काण्ड ३-४ फुट लम्बा, शाखीय; पर्ण-सम्मुख, भालाकार एव मसृण; पुष्प-सफेद रंग के; फल-पकने पर लाल।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।

प्राप्तिस्थान:—यह गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: चम्बा, कांणाताल, मन्सूरी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, भिलंगना घाटी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

कुल—*ELAEAGINACEAE* (इलेजिनेसी)

(२९१) द्रव्यनाम···स्थानिक·····आमील (आमींण)।
लैटिन ······*Hippophae rhamnoides* Serv.

आकृतिक वर्णन:—कांटेदार, सदाहरित, छोटा वृक्ष; काण्ड १५-२० फुट लम्बा, शाखीय; पर्ण-एकान्तर, लट्वाकार, दीर्घायत एवं अरोमिल; पुष्प-कक्षीय, हरित,पीताभ; फल-रसदार एवं स्वाद में अम्ल।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
फलकाल---जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —छाल, फल।

प्राप्तिस्थान:—यह उत्तराखण्ड गढ़वाल में २,४०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक प्राय: भागीरथी घाटी,सुक्की, हर्षिल, गंगोत्री एवं मन्दाकिनी घाटी, अलकनन्दा घाटी आदि स्थानों पर पाया जाता है। इसके फलों की चटनी इन स्थानों पर बनाई जाती है। इन स्थानों पर *Hippophae salicifolia* D. Don. वाली जाती भी कहीं-२ मिलती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल—*EUPHORBIACEAE* (इफोरबियेसी)

(२९२) द्रव्यनाम···संस्कृत······आमलकी।
स्थानिक ···आंवला।
लैटिन ······*Emblica officinales* Gaertn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; पत्र-वृन्तहीन एवं ½" तक लम्बे; पुष्प-श्वेत, पीताभ; फल-गोल, धारीदार, मांसल।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई।
फलकाल——जनवरी, मार्च।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्रनगर, घोन्टी, घनशाली, देवप्रयाग, कुण्ड, धरासू आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है।

(२९३) द्रव्यनाम···संस्कृत······कम्पिल्लक।
स्थानिक ···रीणों, कमील।
लैटिन ······*Mallotus philippinensis* Muell.-Arg.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; काण्ड-शाखीय; पत्र-एकान्तर, प्रायः अनिश्चित आकार के; ३-९" तक लम्बे, लट्वाकार या लट्वाकार-दीर्घायत, अच्छिन्न तट; पुष्प-लालिमा लिये हुये पीले रंग के; फल-तीन खण्डों में एवं फलरज लाल रंग का।

पुष्पकाल——सितम्बर, नवम्बर।
फलकाल——मार्च, मई।
प्रयोज्यअंग —फलरज, छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

(२९४) द्रव्यनाम···संस्कृत······एरण्ड।
स्थानिक ···अरण्ड।
लैटिन ······*Ricinus communis* Linn.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित क्षुप; काण्ड ५ से ८ फुट लम्बा, शाखीय; पर्ण-एकान्तर, हस्ताकार एवं खण्डित खण्ड-अच्छिन्न तट; पुष्प-एकलिङ्गी परन्तु नर और स्त्री दोनों प्रकार के।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —पत्र, छाल, बीज।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५५

आमलकी—*Emblica offlcianales* Gaertn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में सुलभ है।

(२९३) द्रव्यनाम···संस्कृत······दन्ती।
लैटिन········*Baliospermum montanum* Muell. Arg.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, गुल्म; काण्ड ३-६ फुट लम्बा, शाखीय; पत्र-एकान्तर, विभिन्न आकार के, लट्वाकार, खण्डित, अरोमिल एवं लम्बाग्र; पुष्प-हरित, पीले रंग के। फल ३-५" तक लम्बा एवं तीन संयुक्त खपड़ों का।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —मूल, पत्र, बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः ९०० मीटर की ऊँचाई तक इन्द्रोला, पिपोला, श्रीनगर, धरासू एवं देहरादून आदि स्थानों में पाया जाता है।

(२९) द्रव्यनाम···संस्कृत······भूम्यामलकी।
लैटिन ······*Phyllanthus urinaria* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी शाक; काण्ड-रक्ताभ, मृदु २-२½ फुट तक लम्बा; पर्ण-अवृन्त, १/४-१/२" लम्बे, दीर्घायत या रेखाकार, दीर्घायत; पुष्प-छोटे, रक्ताभ वर्ण के; फल १/८" व्यास में तथा गोल।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में १,२०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः नम स्थानों पर पाया जाता है।

इसकी एक अन्य जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है, जिसे *Phyllanthus niruri* Linn. कहते हैं।

(२९५) द्रव्यनाम···संस्कृत······सप्तला।
स्थानिक ···चोपालू।
लैटिन······*Euphorbia pilosa* Linn.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित शाक; काण्ड १ से २ फुट लम्बा; पत्र-एकान्तर, भालाकार, दीर्घायत, अरोमिल एवं अच्छिन्न तट; पुष्प-हरिताभ, पीत वर्ण के; एकवर्षी शाक के मूल कन्दसदृश, मृदु।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५६

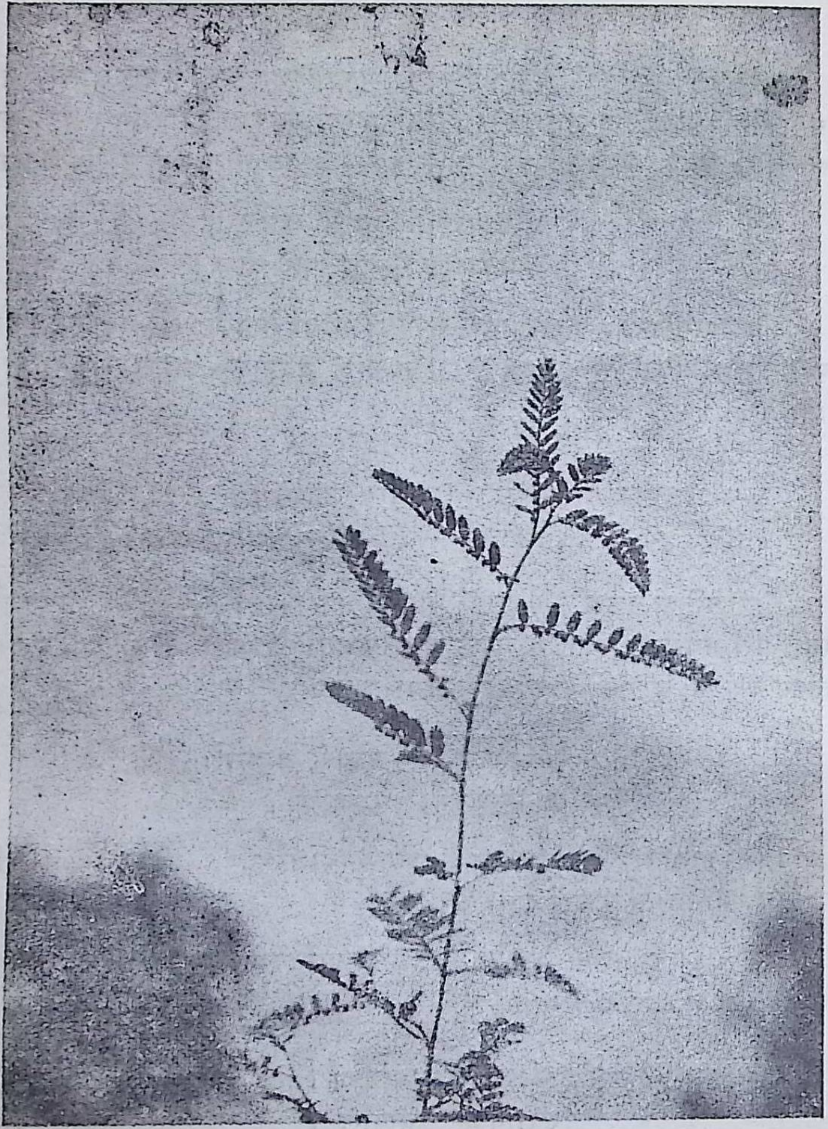

भूम्यामलकी—*Phyllanthus urinaria* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र —५७

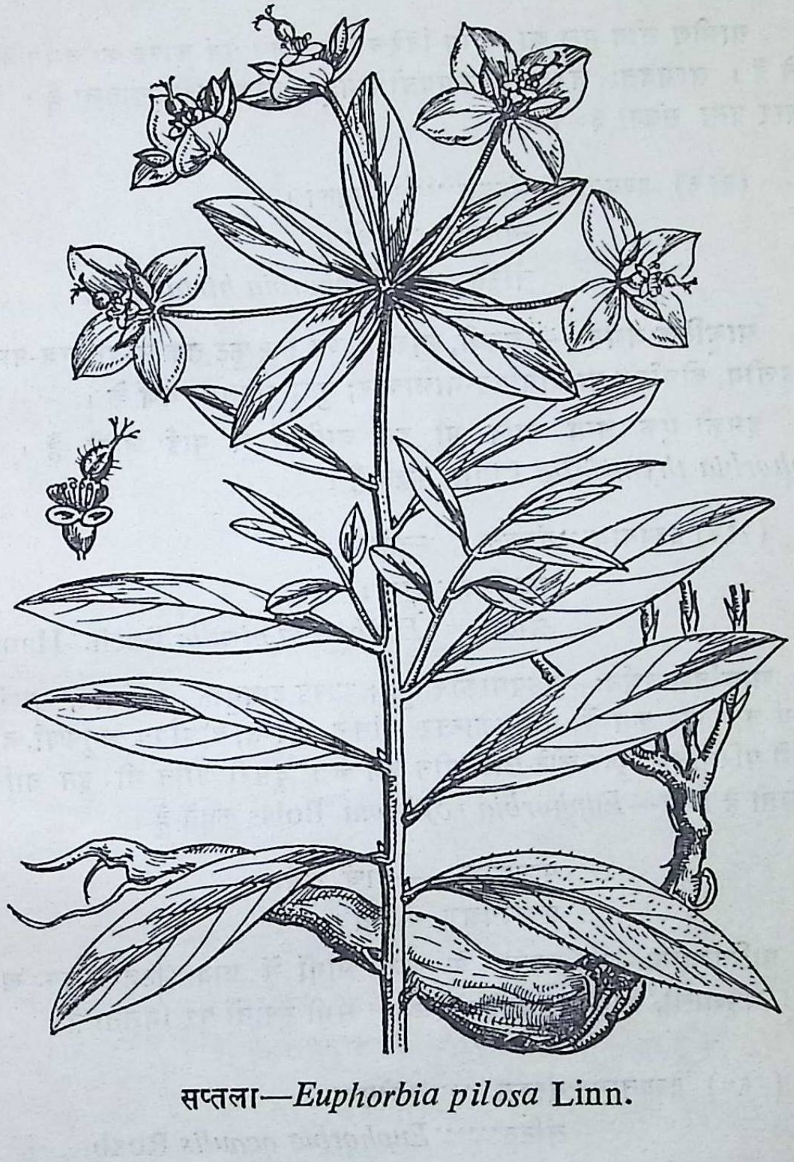

सप्तला—*Euphorbia pilosa* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक वर्णचूरी, धुत्तू, पोवाणी, कांणाताल, मन्सूरी, चकराता, देववन, भागीरथी घाटी, मन्दाकिनी घाटी एवं जोशीमठ आदि स्थानों पर पाया जाता है।

ग्रामीण लोग मूल का प्रयोग विरेचन के लिए एवं काण्ड का वमन के लिये करते हैं। सम्भवतः चरकोक्त उभयतोभागहर द्रव्य यही सातला है। देखिये आधार ग्रन्थ संख्या ३०।

(२९६) द्रव्यनाम···संस्कृत······दुग्धिका।
स्थानिक ···दुधी।
लैटिन ······*Euphorbia hirta* Linn.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी, शाक; काण्ड १-२ फुट तक लम्बा; पत्र-सम्मुख, दीर्घवृत्तीय, दीर्घायत या दीर्घायत-भालाकार; पुष्प-हरिताभ वर्ण के।

इसकी एक अन्य जाति भी इन घाटियों में पाई जाती हैं। जिसे *Euphorbia thymifolia* Linn. कहते हैं।

(२९७) द्रव्यनाम···संस्कृत······स्नुही।
स्थानिक···शुलू।
लैटिन······*Euphorbia nivulia* Buch.-Ham.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; काण्ड-दुग्धयुक्त, काँटेदार, शाखीय; शाखायें-चक्राकार क्रम में; पत्र-एकान्तर, मांसल, अवृन्त, दीर्घायत, अनुपर्णा, दो-दो कांटों में परिवर्तित; पुष्प-छोटे-छोटे, पीत वर्ण के। दूसरी जाति भी इन घाटियों में मिलती है जिसे—*Euphorbia royleana* Boiss कहते हैं।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —दुग्ध।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरी वन खण्ड, इन्द्रोला, घनशाली, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग आदि सभी स्थानों पर मिलता है।

(२९८) द्रव्यनाम···संस्कृत······अधोगुड़ा।
लैटिन······*Euphorbia acaulis* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, मूल; काण्ड-एकवर्षी; पर्ण-मूलोद्भव, मांसल, दुधिया, ३-४ पत्र; पुष्प-छोटे, पीले रंग के। मूल-मूलीसदृश, लम्बा, मोटा एवं दूध वाला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——दिसम्बर, जनवरी।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के शिवालिक वनखण्ड में कहीं-२ पाया जाता है। वनस्पति विशेषज्ञ ठा० बलवन्त सिंह ने शास्त्रीय अधोगुड़ा इसी द्रव्य के होने की सम्भावना व्यक्त की है। यह तीव्र विरेचक द्रव्य, वनमूली के नाम से अन्यत्र प्रसिद्ध है।

(२९९) द्रव्यनाम···संस्कृत······पुत्रजीव।
स्थानिक ···जियापोता।
लैटिन ······*Putranjiva roxburghii* Wall.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; काण्ड-शाखीय; पत्र-दीर्घायत, भालाकार, अरोमिल, लम्बाग्र; पुष्प-पीले रंग के; फल-मृदुरोमिल, कठोर।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —पत्र, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, देहरादून, जौनसार आदि स्थानों में पाया जाता है।

(३००) द्रव्यनाम···संस्कृत······व्याघ्रैरण्ड।
स्थानिक ···अरण्डी।
लैटिन······*Jatropha curcas* Linn.

आकृतिक वर्णनः—क्षुप या छोटा वृक्ष; काण्ड-अरोमिल, शाखीय; पत्र ४-६″ लम्बे, हृदयाकार, ३-५ खण्डों में; पुष्प-छोटे पीताभ; फल-गोल एवं २ या ३ बीजों वाले।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग बीज।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में ९०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः टिहरी वन खण्ड, देहरादून आदि स्थानों में पाया जाता है।

हरिद्वार, देहरादून की कुछ फार्मेसियाँ इसके काण्ड का दन्तमूल के नाम से व्यवहार करते हैं। जो सर्वथा अशुद्ध है।

(३०१) द्रव्यनाम···स्थानिक···एकदानियाँ।
लैटिन······*Bridelia retusa* Spring.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; पर्ण ३-६" लम्बे, अधोमुख, लट्वाकार, दीर्घवृतीय, दीर्घायत, अरोमिल एवं सवृन्त; पुष्प-छोटे, पीतवर्ण के।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः ऋषीकेश, राणीपोखरी, डोईवाला, नरेन्द्रनगर आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है।

इसके अतिरिक्त इस कुल की भिन्न-भिन्न वंशों की वनस्पतियां इन स्थानों पर मिलती हैं। यथा—

(१) द्रव्यनाम—पानी गम्हार *Trewia nudiflora* Linn. आजकल इस वृक्ष की छाल का उपयोग गम्भारी छाल के अभाव में किया जा रहा है।

(२) चामरी—*Glochidion velutinum* Wight.

(३) खिन्ना—*Sapium insigne* Trimen.

कुल—*BUXACEAE* (बक्सेसी)

(३०२) द्रव्यनाम···स्थानिक ···पापरी।
लैटिन······*Buxus wallichiana* Baill.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; काण्ड-शाखीय एवं सदाहरित; पर्ण-सम्मुख, अरोमिल, भालाकार, तीक्ष्णाग्र एवं पुष्प-पीले रंग के।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —पत्र, छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में मिलता है।

कुल—*URTICACEAE* (अर्टिकेसी)

(३०३) द्रव्यनाम···संस्कृत······उदुम्बर।
स्थानिक ···पिलखू।
लैटिन······*Ficus racemosa* Linn.

आकृतिक वर्णनः—वृक्ष; काण्ड-त्वक्, रक्ताभ-धूसर वर्ण की; पत्र ३-४" लम्बे, लट्वाकार, दीर्घायत, अच्छिन्न एवं तीक्ष्णाग्र; फल-पकने पर लाल रंग के।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फलकाल——अप्रैल, मई।
प्रयोज्यअंग —छाल, फल

प्राप्तिस्थान:—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में प्रायः टिहरी वन खण्ड, नरेन्द्र नगर आदि सभी स्थानों पर पाया जाता है।

इसके अतिरिक्त इसकी अन्य साधारण एवं प्रसिद्ध जातियाँ भी यत्र-तत्र इन घाटियों के उष्ण भागों में पाई जाती है। यथाः—

(१) काकोद्म्वरिका	*Ficus hispida* Linn.
(२) जंगली अंजीर	*Ficus cunia* Ham-ex-Roxb.
(३) वट	*Ficus bengalensis* Linn.
(४) प्लक्ष	*Ficus infectoria* Roxb.
(५) पीपल	*Ficus religiosa* Linn.
(६) तिमिला	*Ficus roxburghii* Wall.

(३०४) द्रव्यनाम···संस्कृत······वृश्चिकाली।
स्थानिक ···कंडाली।
लैटिन······*Girardinia zeylanica* Decne.

आकृतिक वर्णन:—उर्ध्वसंस्थित क्षुप; रोमिल, रोग लग जाने पर खुजली पैदा करने वाला; ३ से ५ फुट लम्बा; पत्र ३-५″ तक लम्बे, लट्वाकार, तीक्ष्ण, रोमिल, सवृन्त एवं लम्बाग्र; पुष्प-मंजरी, सफेद, रोयेदार।

पुष्पकाल——दिसम्बर, जनवरी।
प्रयोज्यअंग —पत्र, मूल।

प्राप्तिस्थान:—गढ़वाल के उष्ण भागों से लेकर १,८०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

ग्रामीण लोग नवीन पत्तों का उपयोग शाक के बनाने के लिये करते हैं। इसके अलावा काण्ड शाखाओं द्वारा पक्षाघात वाले अङ्ग का स्पर्श कराने से लाभ होता है।

(३०५) द्रव्यनाम···स्थानिक···हेमर, कीटमारा।
लैटिन·····*Ulmus wallichiana* Planch.

आकृतिक वर्णन:—पर्णपाती, मध्यमाकार वृक्ष; काण्ड-त्वक्, धूसर वर्ण की, पत्र ८-१२″ तक लम्बे, पत्रक २-३″ तक लम्बे, लट्वाकार, दीर्घायित एवं दन्तुर; पुष्प-गुलाबी रंग के।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——फरवरी, मार्च।
प्रयोज्यअंग —छाल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों से यत्र-तत्र पाया जाता है।

ग्रामीण लोग छाल का प्रयोग लेप के रूप में अस्थिभग्न में करते हैं।

(३०६) द्रव्यनाम···संस्कृत······तूद।
स्थानिक ···केमू।
लैटिन ······*Morus alba* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; पत्र २-३″ लम्बे, लट्वाकार, भाला-कार एवं लम्बाग्र; पुष्प-एकलिङ्गी, परन्तु दोनों प्रकार भिन्न-२ स्पाइक मञ्जरिओं में।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —छाल, फल।

इसकी अन्य जाति भी इन घाटियों के उष्ण भागों में पाई जाती है, जिसे *Morus serrata* Roxb. कहते हैं।

प्राप्तिस्थानः—ये जातियाँ गढ़वाल के उष्ण भागों में सड़कों के समीप यत्र-तत्र पाई जाती हैं।

कुल—*CINNABINACEAE* (केनाबिनेसी)

(३०७) द्रव्यनाम···संस्कृत······बिजया भंगा।
स्थानिक ···भांगलू।
लैटिन ······*Cannabis sativa* Linn.

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित क्षुप; काण्ड ३ से ५ फुट तक लम्बा, रोमिल। नरपादप तथा स्त्रीपादप अलग-अलग।

प्रयोज्यअंग —बीज, पत्र, भांग, चरस (रेजिन)
गांजा, स्त्री, पुष्प, गुच्छ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय के उष्ण भागों से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः घोन्टी, घनशाली, उत्तरकाशी, भटवारी, जमुना आदि स्थानों पर पाया जाता है।

नर प्रादप तथा स्त्री पादप भिन्न-२ होते हैं और प्रयोज्यअंगों का संग्रह अधिकांश स्त्री पादपो से ही किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल—*JUGLANDACEAE* (जगलेनडेसी)

(३०८) द्रव्यनाम···संस्कृत······अक्षोड़।
स्थानिक ···अखरोट।
लैटिन ······*Juglans regia* Linn.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; पत्र-विषम, पिच्छाकार, संयुक्त, ६-१५" लम्बा; पत्रक-अवृन्त, सम्मुख, दीर्घवृत्तीय दीर्घायत, अच्छिन्न तट; फल-गोल, रोमिल।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —छाल, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में मिलता है। जंगली किस्म के अखरोट का फल कठोर होता है।

कुल—*MYRICACEAE* (माइरिकेसी)

(३०९) द्रव्यनाम···संस्कृत·····कटःफल।
स्थानिक···काफल।
लैटिन ·····*Myrica nagi* Thunb.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; काण्ड-त्वक्, धूसर वर्ण की; पत्र ४-८" लम्बे, भालाकार, अधोमुख, भालाकार, कुण्ठिताग्र एवं अच्छिन्न तट, फल-अण्डाकार एवं रक्तवर्ण के।

पुष्पकाल——अक्टूबर, दिसम्बर।
प्रयोज्यअंग —छाल, फल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय में १,५०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक चम्बा, कांणाताल, गजा, उत्तरकाशी, धुत्त्, द्वारी, मंसूरी, चकराता आदि सभी स्थानों पर पाया जाता है।

इन घाटियों से इसकी छाल का संग्रह किया जाता है और ताजे फल खाये जाते हैं।

कुल—*BETULACEAE* (बिटुलेसी)

(३१०) द्रव्यनाम···संस्कृत······भूर्ज।
स्थानिक ···भोज।
लैटिन ·····*Betula utilis* D. Don.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५८

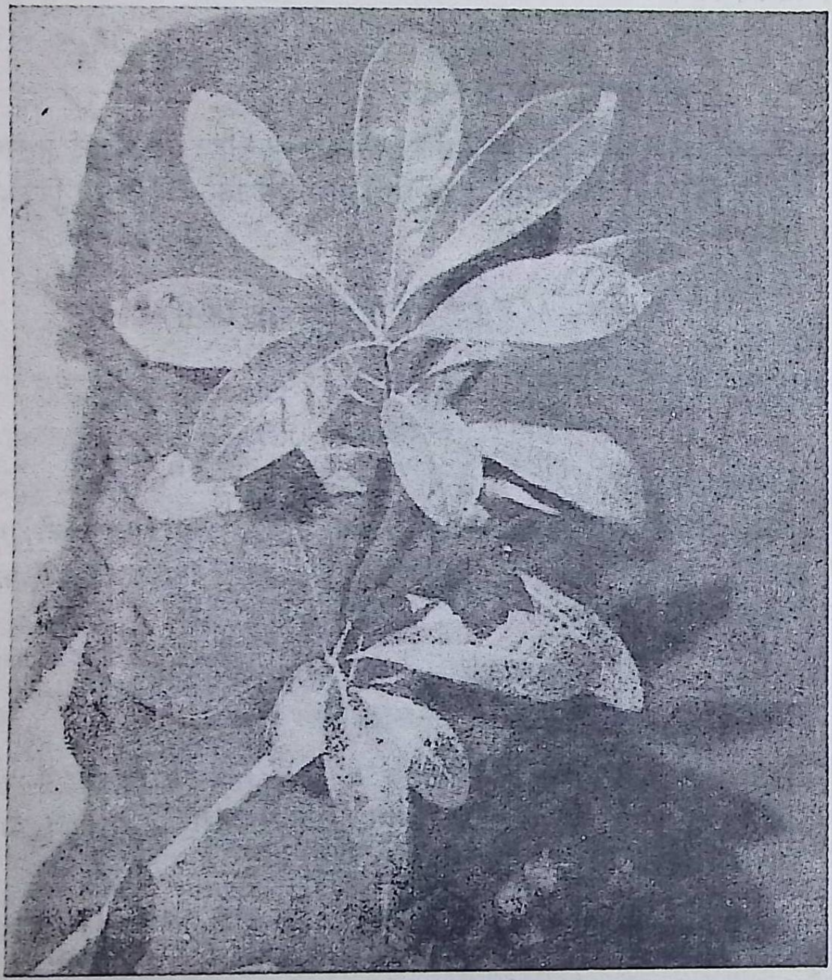

कट:फल—*Myricanagi* Thunb.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार वृक्ष; काण्ड-छाल, सफेद कार्की, बादामी रंग की एवं परतदार; पत्र २-३" लम्बे, लट्वाकार, लम्बाग्र, दन्तुर एवं गण्ड-बिन्दुओं से युक्त ।

एकलिंगी परन्तु नर एवं स्त्री पुष्पों की स्पाइक अलग-अलग ।

पुष्पकाल——अप्रैल, मई ।
प्रयोज्यअंग —छाल, भूर्जग्रन्थि ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय में २,४०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी, अलकनन्दा घाटी एवं हरकीदून, टौन्स आदि स्थानों पर सुलभ है ।

वक्तव्यः—इसके पुराने वृक्षों की शाखाओं पर फंगस के कारण वाह्य वृद्धियां हो जाती हैं जिसे आचार्यों ने भूर्जग्रन्थि लिखा है । ग्रामीण लोग भी इसे भुजगेड़ा कहते हैं । यहाँ कुछ लोग भुजगेड़ा को संततिनिरोध में उपयोगी बतलाते हैं ।

कुल—*FAGACEAE* (फैगेसी)

(३११) द्रव्यनाम···स्थानिक···बांझ ।
लैटिन······*Quercus incana* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—मध्यमाकार, सदाहरित वृक्ष; पत्र-दीर्घायत, लट्वाकार एवं दन्तुर; पुष्प-एकलिंगी, परन्तु दो प्रकार की मंजरिओं में; फल-बादामी रंग का ।

पुष्पकाल——जून, जुलाई ।
प्रयोज्यअंग —काष्ठसार, फल ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल हिमालय में १,२०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,००० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में सुलभ है ।

इसके अतिरिक्त अन्य जातियां भी इन घाटियों में पाई जाती है ।

(१) खरसू—*Quercus dilatats* Lindl.
(२) मौरु— *Quercus semecarpifolia* Sm.

कुल—*SALICACEAE* (सौलिकेसी)

(३१२) द्रव्यनाम···संस्कृत······जलवेतस ।
स्थानिक ···जलमाल्या ।
लैटिन ······*Salix tetrasperma* Roxb.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णन:—मध्यमाकार वृक्ष; शाखाय झुकी हुई; पत्र ३-६" लम्बे, अरोमिल, दीर्घायत, लट्वाकार, भालाकार एवं लम्बाग्र। इसके अतिरिक्त निम्न जातियाँ भी इन घाटियों के ऊँचाई वाले स्थानों पर पाई जाती हैं।

(१) *Salix elegans* Wall.

(२) *Salix daphnoides* Villars.

प्राप्तिस्थान:—जलवेतस गढ़वाल के उष्ण भागों में नदी एवं गाँवों के समीप प्रायः १,६०० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र पाया जाता है।

उपविभाग—*MONOCOTYLEDONS* (एक बीज पत्री)

कुल—*ORCHIDACEAE* (आरचिडेसी)

(३१३) द्रव्यनाम···संस्कृत······जीवक-ऋषभक।
लैटिन ······*Microstylis wallichii* Lindl.

आकृतिक वर्णन:— बहुवर्षी शाक; केवल भौमिक; काण्ड-बहुवर्षी, आभासी, शुल्ककन्द; काण्ड-पुष्प दण्ड सहित ६-१०" लम्बा; पत्र-लट्वाकार, भालाकार, अरोमिल एवं तीक्ष्णाग्र; पुष्प-छोटे एवं पीले रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —भौमिक काण्ड।

प्राप्तिस्थान:— यह गढ़वाल में १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः मंदाकिनी घाटी, जमुना घाटी, मन्सूरी, चकराता, देववन आदि स्थानों पर पाया जाता है।

वक्तव्य:— आजकल हरिद्वार, देहरादून की फार्मेसियां इन्हीं भूमिगत काण्डों का जीवक-ऋषभक के नाम से विक्रय करती हैं। इन स्थानों से काफी मात्रा में इस अष्टवर्गीय (तथा कथित) द्रव्य का संग्रह किया जाता है।

(३१४) द्रव्यनाम··संस्कृत······जीवक।
लैटिन ·····*Microstylis muscifera* Ridl.

आकृतिक वर्णन:—एकवर्षी शाक; मूल-कन्दिल, गोल, सफेद रंग का; पत्र-संख्या में २, दीर्घायत या लट्वाकार, कण्ठिताग्र; पुष्प-गुलाबी, पीले।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—५६

जीवक-ऋषभक—*Microstylis wallichii* Lindl.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके अतिरिक्त अन्य जातियां भी इन घाटियों में पाई जाती हैं जो निम्न-लिखित हैं :—

(१) *Microstylis cylindrostachya* Rchb.
(२) *Microstylis mackinnoni* Duthie.

प्राप्तिस्थान:—ये सभी जातियां गढ़वाल हिमालय में १,८०० मीटर की ऊँचाई से, २,४०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः कांणाताल, मन्सूरी, नागटिब्बा, चकराता, देववन, भागीरथी घाटी, जमुना घाटी एवं भिलंगना आदि घाटियों में पाई जाती हैं। इन जातियों में अष्ठवर्ग में वर्णित जीवक-ऋषभक नामक द्रव्यों की सम्भावना पर विचार किया जा सकता है।

(३१५) द्रव्यनाम···लैटिन······*Liparis rostrata* Rchb. f.

आकृतिक वर्णन:—एकवर्षी, स्थलीय आरकिड; काण्ड ६-८″ तक लम्बा; पुष्प-नारंगी, पीले।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।

प्राप्तिस्थान:—यह गढ़वाल, कांणाताल, मन्सूरी, चकराता, नागटिब्वा आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलता है। इसकी दूसरी जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे—*Liparis paradoxa* Rchb. कहते है।

(११६) द्रव्यनाम···संस्कृत ·····ऋद्धि-वृद्धि।
लैटिन·······*Habenaria intermedia* D. Don.

आकृतिक वर्णन:—स्थलीय, आरकिड; काण्ड-अरोमिल १०-२४″ तक लम्बा; पुष्प-सफेद।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूलकन्द।

प्राप्तिस्थान:—यह कांणाताल, मन्सूरी, चकराता, देववन, भिलंगना घाटी, घुत्तू, गंङ्गी, पौवागी; भागीरथी घाटी, हर्षिल, सुक्की, रैथल, भटवारी एवं मन्दाकिनी घाटी, अलकनन्दा घाटी आदि स्थानों पर १,८०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,७०० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र सुलभ है। इसकी अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में मिलती हैं यथा—

(१) *Habenaria acuminata* Thw.
(२) *Habenaria goodyeroides* D. Don.
(३) *Habenaria griffithii* Hk. आदि हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—६०

प्रचलित जीवन्ती—*Pholidota articulata* Lindl.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३१७) द्रव्यनाम···संस्कृत······प्रचलित जीवन्ती ।
लैटिन ······*Pholidota articulata* Lindl.

आकृतिक वर्णनः—बांझ आदि वृक्षों पर पैदा होने वाला अधिपादप; काण्ड-पीला, मांसल; पत्र-दीर्घायत; पुष्प-सफेद ।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त ।

इसके अतिरिक्त अन्य जाति भो इन वृक्षों पर मिलतो है जिसे *Pholidota imbricata* Lindl. कहते हैं।

प्राप्तिस्थानः—आगराखाल, कांणाताल, मन्सूरो, चकराता, देववन, घुत्तू, फाटा, गुप्तकाशी, उखीमठ ।

आजकल हरिद्वार-देहरादून की कुछ फार्मेसियों में इसके पञ्चाङ्ग का उपयोग जीवन्ती के नाम से होता है।

(३१८) द्रव्यनाम···संस्कृत······मुञ्जातक ।
स्थानिक···सालमपञ्जा, हत्थाजोड़ी ।
लैटिन ······*Orchis latifolia* Linn.

आकृतिक वर्णनः—स्थलीय आरकिड; मूल-कन्दिल, हस्ताकार, ५ खण्डों में विभक्त; पुष्प-गुलाबी, सफेद ।

पुष्पकाल——जून, जुलाई ।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में २,४०० मीटर की ऊंचाई से ३,३०० मीटर की ऊंचाई तक प्रायः भिलंगना घाटी, भागीरथी घाटी, मन्दाकिनी घाटी, जमुना घाटी, अलकनन्दा घाटी, देववन, टौन्स आदि स्थानों में यत्र-तत्र पाया जाता है। दूसरी जाति भी कहीं-२ इन स्थानों पर मिलती है।

इन घाटियों से इसके मूल का संग्रह किया जाता है।

(३१९) द्रव्यनाम···हिन्दी ······सालप ।
स्थानिक ···*Eulophia campestris* Wall.

आकृतिक वर्णनः—स्थलीय, आरकिड; मूल-कन्दिल, गोल, सफेद रंग के; पुष्प-गुलाबी, लाल रंग के ।

पुष्पकाल——जून, जुलाई ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—६३

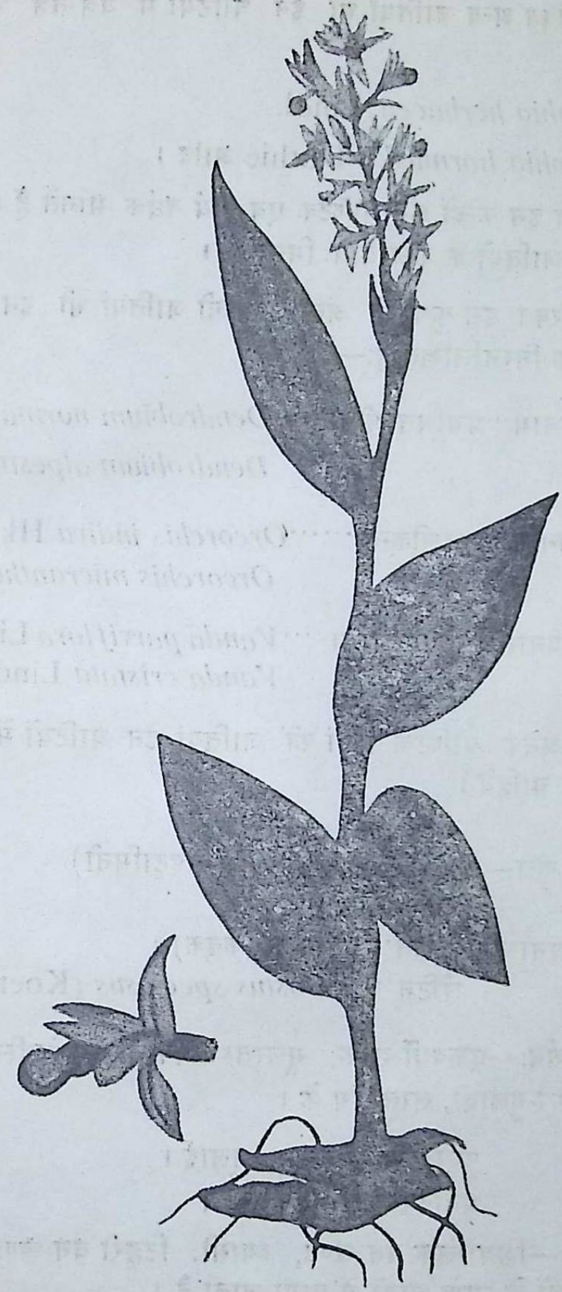

मुञ्जातक—*Orchis latifolia* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—पंवालीकांटा, दुफन्द, कल्याणी, हर्षिल, रंथल, दयारा एवं जमुना घाटी, नागटिब्बा।

इसके अतिरिक्त अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में यत्र-तत्र पाई जाती हैं यथा—

(१) *Eulophia herbacea* Lindl.

(२) *Eulophia hormuskii* Duthie आदि।

ग्रामीण लोग इन कन्दों को पोष्टिक एवं वीर्य वर्धक मानते हैं। बाजार में सालप नाम से इन जातियों के कन्द प्रायः मिलते हैं।

इसके अतिरिक्त इस कुल की अन्य उपयोगी जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती हैं जो कि निम्नलिखित हैं:—

(३२०) द्रव्यनाम···प्रचलित जीवन्ती···*Dendrobium normale* Falc.
,, ,, *Dendrobium alpestre* Royle.

(३२१) द्रव्यनाम···धरणीकन्द ······*Oreorchis indica* Hk. &.
Oreorchis micrantha Lindl.

(३२२) द्रव्यनाम·········रास्ना ···*Vanda parviflora* Lindl.
Vanda cristata Lindl.

इस कुल में अनेक पौष्टिक कन्दों की जातियां इन घाटियों में सुलभ है, जिनकी खोज होनी चाहिये।

कुल—*SCITAMINEAE* (साइटामिनी)

(३२३) द्रव्यनाम···संस्कृत······केमुक (केवुक)।
लैटिन······*Costus speciosus* (Koen) Sm.

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी शाक; मूलस्तम्भ-प्रकन्दी, उर्ध्वसस्थित; काण्ड ३-४″ तक लम्बा; पुष्प-गुलाबी, लाल रंग के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —राईजोम।

प्राप्तिस्थानः—शिवालिक वन खण्ड, व्यासी, टिहरी वन खण्ड, मन्सूरी, जौनसार आदि स्थानों के उष्ण भागों में पाया जाता है।

(३२४) द्रव्यनाम···संस्कृत······काकोली।
लैटिन ······*Roscoea procera* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—६४

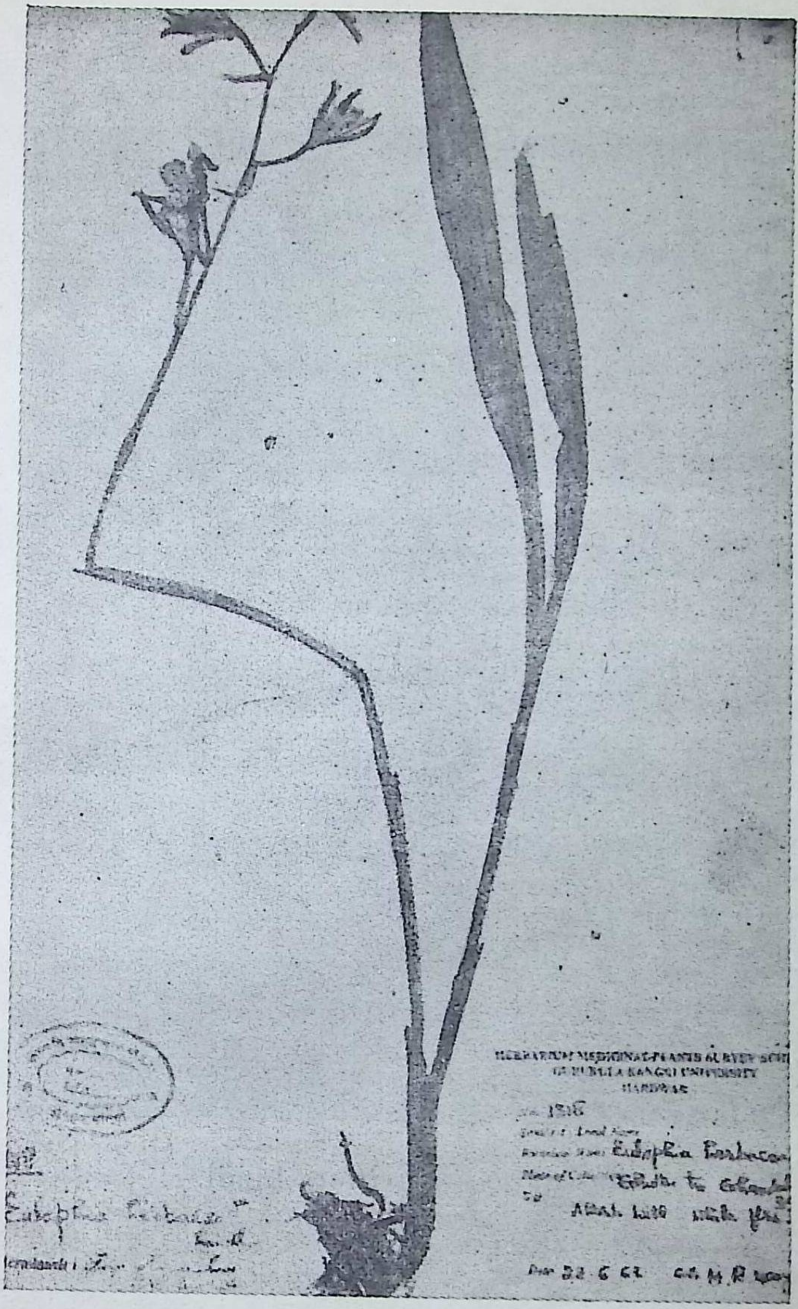

मानकन्द—*Eulophia herbacea* Lindl.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—६५

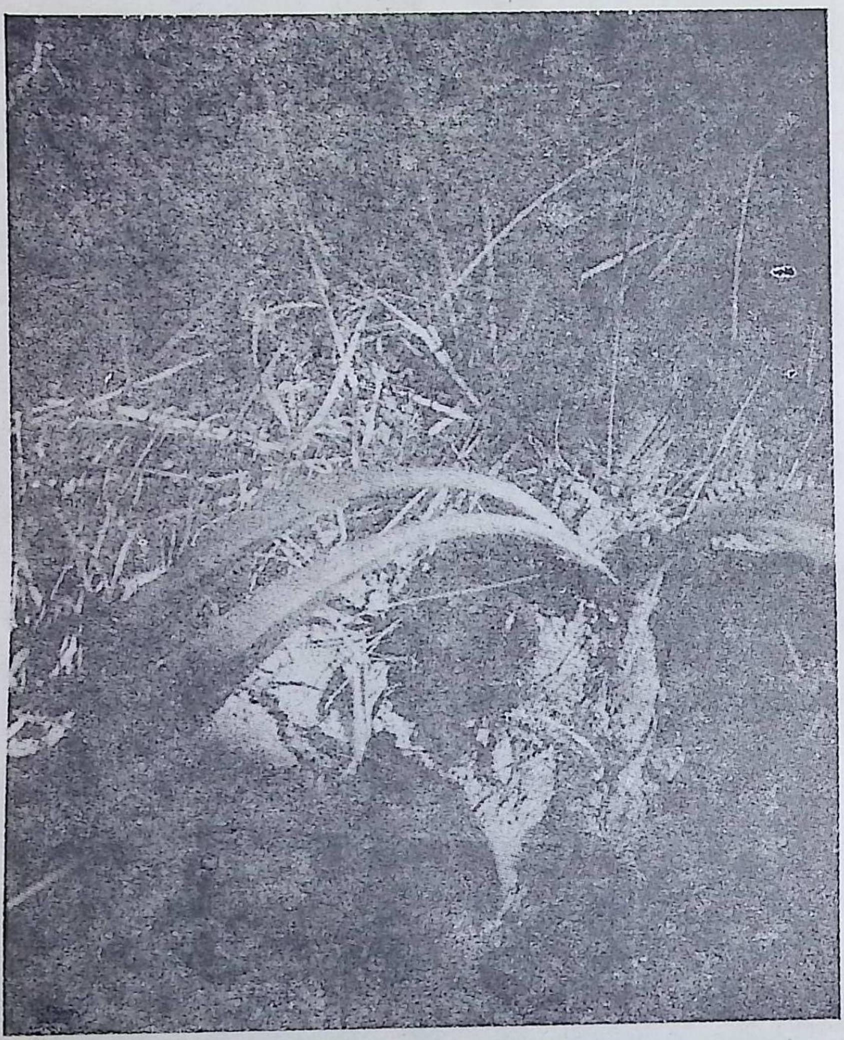

रास्ना—*Vanda parviflora* Lindl.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—६६

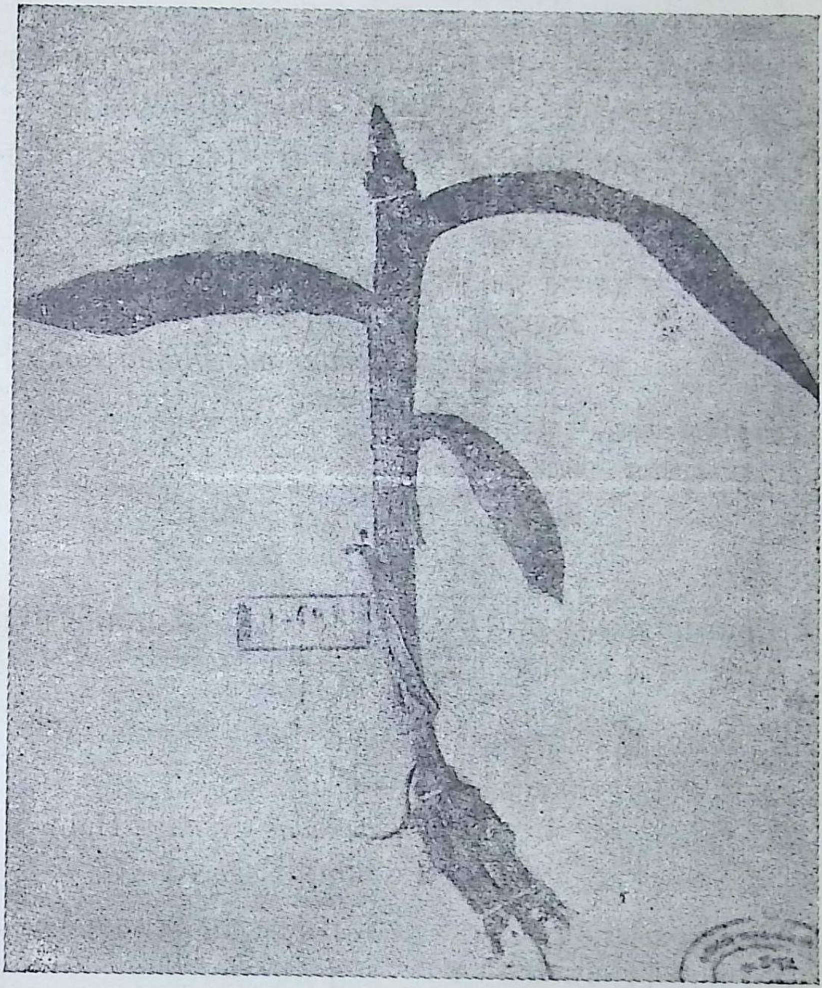

काकोली—*Roscoea procera* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—एकवर्षी शाक; मूल-कन्दिल, मूशली, सद्यश; पुष्प-सफेद, गुलाबी रंग के।

इसके अतिरिक्त अन्य जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे-*Roscoea alpina* Royle कहते हैं।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—मन्सूरी, धनौल्टी, कांणाताल, चम्बा, धुत्तू, पौवागी, गुप्त-काशी, उखीमठ, चकराता, देववन आदि सभी स्थानों पर पाया जाता है।

देहरादून के वनौषधि विक्रेता इसके मूल का काकोली के नाम से संग्रह करते हैं।

(३२५) द्रव्यनाम···संस्कृत······तवक्षीर।
स्थानिक ···वंणहलदो।
लैटिन ······*Curcuma angustifolia* Roxb.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; मूलस्तम्भ-प्रकन्दिल; पत्र-हल्दी के समान दीर्घायत; पुष्प-गुलाबी, सफेद।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में धुत्तू, घनशाली, पपांकोटी, कुठार, देहरादून आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलता है।

(३२६) द्रव्यनाम···संस्कृत········शठी।
स्थानिक ···शेल्डू।
लैटिन ······*Hedychium spicatum* Ham.-ex-Smith.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; मूलस्तम्भ-प्रकन्दी, सुगन्धित; काण्ड ३-५ फुट लम्बा; पुष्प-सफेद, गुलाबी रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में कांणाताल, चम्बा, धनोल्टी, मन्सूरी, चकराता, जौनसार, घोन्टी, उत्तरकाशी, भटवारी, रैथल एवं सभी घाटियों में २,१०० मीटर की ऊँचाई तक सुलभ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—६७

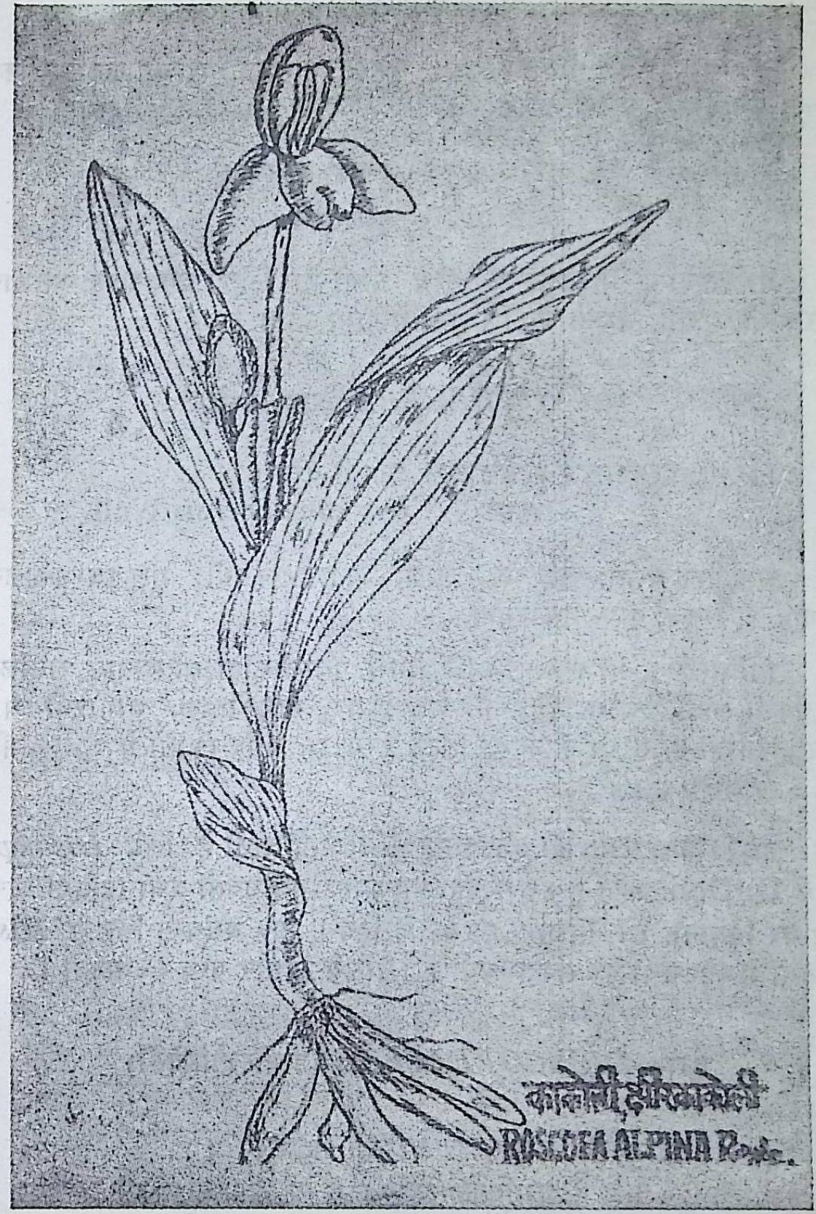

काकोली, क्षीरकाकोली—*Roscoea alpina* Royle.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल--*AMARYLLIDACEAE* (अमेरिलीडेसी)

(३२७) द्रव्यनाम···संस्कृत·····लालमूली, (काली मूशली)
लैटिन ·····*Curculigo orchioides* Gaertn.

आकृतिक वर्णन:—द्विवर्षी शाक; मूलस्तम्भ-सीधा, लम्बा, खड़ा एवं काले रंग का; पर्ण-मूलज; पुष्प-पीले रंग के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूलस्तम्भ।

प्राप्तिस्थान:—गढ़वाल के उष्ण भागों में, टिहरी वन खण्ड, घनशाली, उत्तरकाशी, धरासू, जमुना घाटी स्थानों में पाया जाता है।

कुल—*IRIDACEAE* (आइरिडेसी)

(३२८) द्रव्यनाम···संस्कृत······हैमवती वचा।
लैटिन ·····*Iris kumaonensis* Wall.

आकृतिक वर्णन:—बहुवर्षी, शाक; काण्ड-एकवर्षी; मूल स्तम्भ-प्रकन्दी, गांठदार; पत्र-मूल; पुष्प-नीले रंग के।

प्राप्तिस्थान:— भिलंगना घाटी, ताली, पंवालीकांटा, सहस्त्रताल, खतलिङ्ग; मन्दाकिनी घाटी, केदारनाथ, हथनी, मदमहेश्वर, वासुकीताल; भागीरथी घाटी, हर्षिल, गंगोत्री, गोमुख एवं जमुना घाटी, हरकीदून आदि स्थानों में ३,००० मीटर से ३,८०० मीटर तक।

इसकी अन्य जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Iris nepalensis* D. Don. कहते हैं। सम्भवतः यह शास्त्रीय हैमवती वचा (दुधिया) वच है जिस पर विद्वानों को विचार करना चाहिये। ठा० बलवन्त सिंह ने *Iris* की जातियों में श्वेतवचा का संकेत किया है। देखिये आधार ग्रन्थ ३० संख्या।

कुल—*DIOSCOREACEAE* (डायोस्कोरियेसी)

(३२९) द्रव्यनाम···संस्कृत····वाराही गृष्ठिका।
स्थानिक···गेंठी।
लैटिन ·····*Dioscorea bulbifera* Linn.

आकृतिक वर्णन.—आरोही, एकवर्षी शाक; मूलकन्द, वाराह, सदृश, रोमावृत; पत्र-एकान्तर, हृदयाकार; पुष्प-सफेद रंग का मंजरिओं में।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—६८

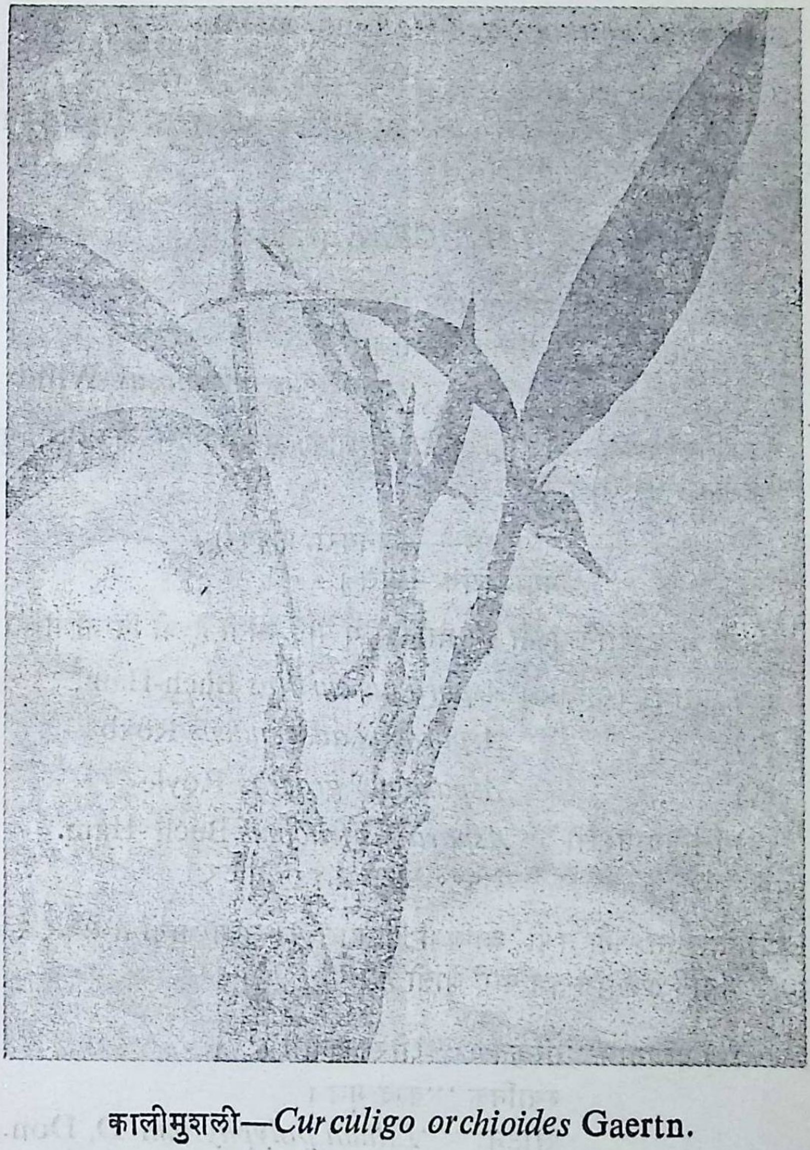

कालीमुशली—*Curculigo orchioides* Gaertn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके अतिरिक्त इन घाटियों में अन्य कई जातियां पाई जाती हैं जिनमें निम्न मुख्य हैं।

(१) किरीष *Dioscorea deltoidea* Wall.
मूलकन्द-भीतर पीले रंग के;

(२) *Dioscorea belophylla* Voight.

(३) *Dioscorea pentaphylla* Linn. आदि हैं।

प्राप्तिस्थान:—ये जातियाँ गढ़वाल के उष्ण भागों से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक टिहरी वन खण्ड, उत्तरकाशी, रैथल, भटवारी, धुत्तू, रामबाड़ा आदि स्थानों पर यत्र-तत्र मिलती हैं।

कुल—*LILIACEAE* (लीलियेसी)

(३३०) द्रव्यनाम...संस्कृत......शतावरी।
स्थानिक ...झींजणी।
लैटिन ......*Asparagus racemosus* Willd.

आकृतिक वर्णन:—आरोही, कांटेदार, शाक; मूल-कन्दिल, गुच्छों में; पुष्प-सफेद; फल-पकने पर लाल रंग के।

पुष्पकाल——जनवरी, फरवरी।
प्रयोज्यअंग —मूल।

इसकी अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती है जो निम्नलिखित है।

(१) शतावर (सहंसपा) *Asparagus curillus* Buch-Ham.
(२) ,, *Asparagus adscendens* Roxb.
(३) ,, *Asparagus gracilis* Royle
(४) चिड़ियामूशली *Asparagus filicinus* Buch.-Ham.
१,८०० मीटर २,४०० मीटर।

प्राप्तिस्थान:—ये सभी जातियाँ गढ़वाल के उष्ण भागों से लेकर २,४०० मीटर की ऊँचाई तक यत्र-तत्र पाई जाती हैं।

(३३१) द्रव्यनाम...संस्कृत.......क्षीरकाकोली।
स्थानिक ...कन्द मूल।
लैटिन......*Lilium polyphyllum* D. Don.

आकृतिक वर्णन:—एकवर्षी शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित १ से २ फुट लम्बा; मूल-शल्क, कन्दिल, स्वाद में मधुर; पुष्प-गलाबी, सफेद रंग के।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—६६

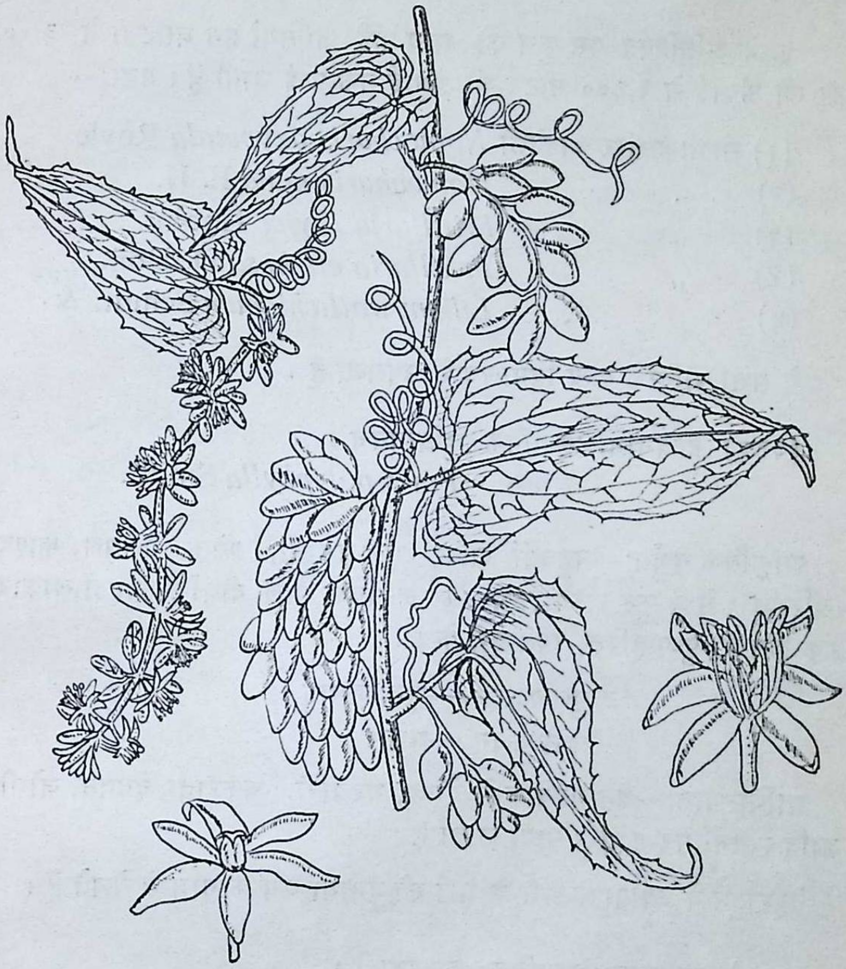

कुकरदाढ़ी—*Smilax aspera* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूलकन्द।

प्राप्तिस्थानः—यह पंवालीकांटा,ताली, अमरधार, रैथल, केदारनाथ, मदमहेश्वर आदि स्थानों में कहीं-कहीं पाया जाता है।

इसके कन्दों का उपयोग आजकल क्षीरकाकोली के नाम से कहीं-कही किया जाता है।

इसके अतिरिक्त इस कुल की अन्य कई जातियाँ इन घाटियों में ३,००० मीटर की ऊँचाई से ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक पाई जाती हैं। यथाः—

(१) सम्भाव्यक्षीर काकोली *Nomocharis oxypetala* Royle.
(२) ,, *Nomocharis nana* E. H.
(३) ,, ,, *Fritillaria roylei* Hook.
(४) ,, ,, *Fritillaria cirrhosa* D. Don.
(५) ,, ,, *Lilium wallichianum* Schult. &

ये सभी पौष्टिक कन्द हिमालय में उपलब्ध हैं।

(३३२) द्रव्यनाम···स्थानिक··दुधियावच।
लैटिन ···*Paris polyphylla* Smith.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; मूल-प्रकन्दी, श्वेत, ग्रन्थिल; काण्ड-उध्र्वसंस्थित १ से २ फुट लम्बा; पत्र ४-९" अल्पवृत्त वाले, दीर्घायत या भालाकार, चाक्रिक क्रम में; पुष्प-हरित, रक्त वर्ण के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल में रैथल, भटवारी, चकराता, देववन, जोशीमठ आदि स्थानों पर कहीं-२ पाया जाता है।

देहरादून के व्यापारी इसी के मूल को दुधिया वच के नाम से बेचते हैं।

(३३३) द्रव्यनाम···स्थानिक··कुकरदाढ़ी।
लैटिन·····*Smilax aspera* Linn.

आकृतिक वर्णनः—आरोही, कांटेदार क्षुप; पत्र २-५" लम्बे; पुष्प-सफेद; फल-मांसल, पकने पर लाल रंग का।

पुष्पकाल——सितम्बर, नवम्बर।
प्रयोज्यअंग —मूल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—चम्बा, कांणाताल, घनौल्टी, मन्सूरी, चकराता, देववन एवं अन्य सभी घाटियों में सुलभ है। इसके अतिरिक्त अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती है। यथाः—

(१) रामदातन—*Smilax macrophylla* Roxb.
शिवालिक वन खण्ड, देहरादून।
(२) ,, *Smilax parvifolia* Wall.

(३३४) द्रव्यनाम…संस्कृत……लाङ्गली।
लैटिन……*Gloriosa superba* Linn.

आकृतिक वर्णनः—लम्बा, लतासदृश फैला हुआ अरोमिल शाक; काण्ड ५-८ फुट तक लम्बा; शाखायें-विनम्र; पुष्प-लाल एवं पीताभ; मूल-कन्दिल, हलाकार, श्वेत वर्ण के।

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—टिहरी वन खण्ड, घोन्टी, उत्तरकाशी, श्रीनगर आदि उष्ण भागों में सुलभ।

(३३५) द्रव्यनाम…संस्कृत……कोलकन्द।
स्थानिक …जंगली प्याज।
लैटिन ……*Urginea indica* Kunth.

आकृतिक वर्णन—बहुवर्षी शाक; भौमिककाण्ड-शल्की, कन्द; पर्ण-मूलज; पत्र ५-६ संख्या में; पुष्प-पुष्पदण्ड पर सफेदी लिये हुये।

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —कन्द।

प्राप्तिस्थानः—यह गढ़वाल के उष्ण भागों में, टिहरी वन खण्ड, घोन्टी, घनशाली, उत्तरकाशी, धरासू, श्रीनगर आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(३३६) द्रव्यनाम…संस्कृत……मेदा-महामेदा।
स्थानिक …देवरिगांल, सालममिश्री।
लैटिन……*Polygonatum vertecillatum* Allaion.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, शाक; काण्ड-अरोमिल, २-४ फुट लम्बा; पर्ण-चक्रकों, प्रत्येक चक्र में ४-८, अवृन्त,रेखाकार; पुष्प-सफेद; फल-पकने पर लाल रंग के; मूल-कन्दिल, मांसल, सफेद रंग के, स्वाद में मधुर। इसकी दूसरी जाति भी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७०

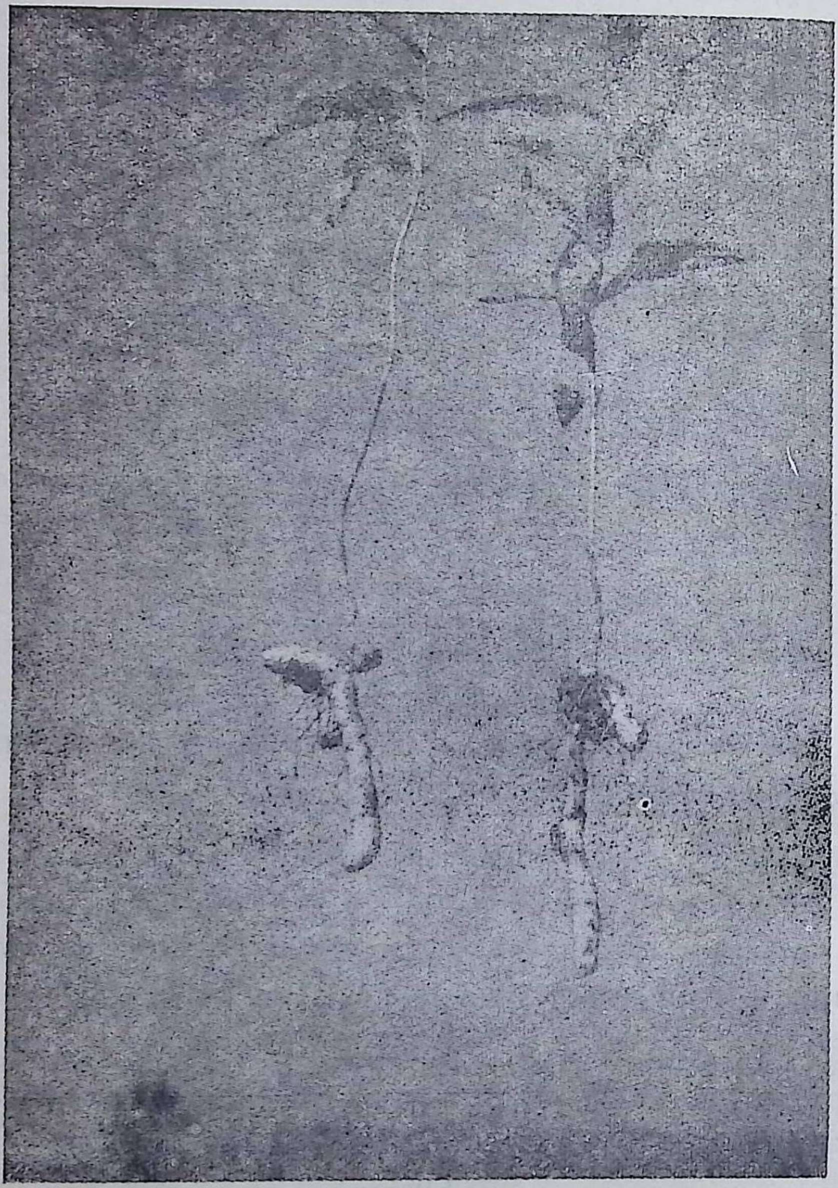

लाङ्गली—*Gloriosa superba* Linn.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७१

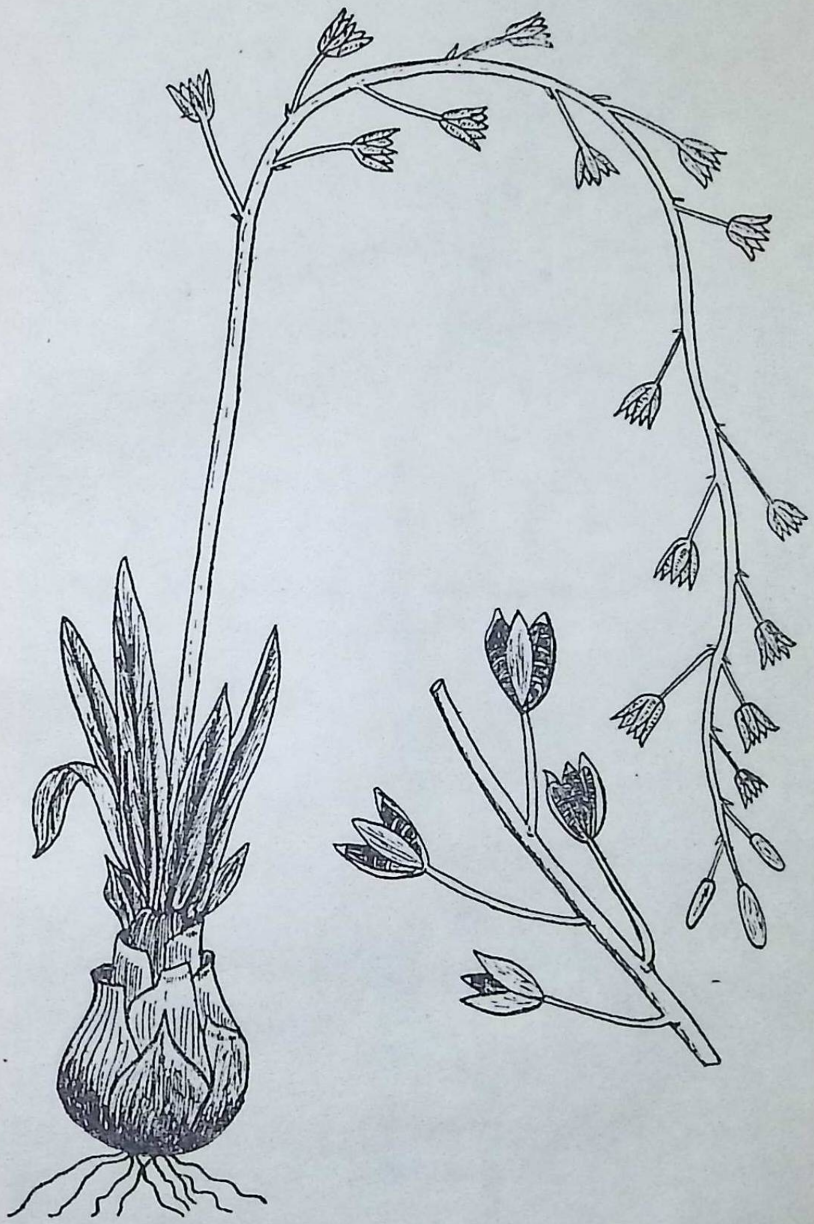

कोलकन्द—*Urginea indica* Kunth.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७२

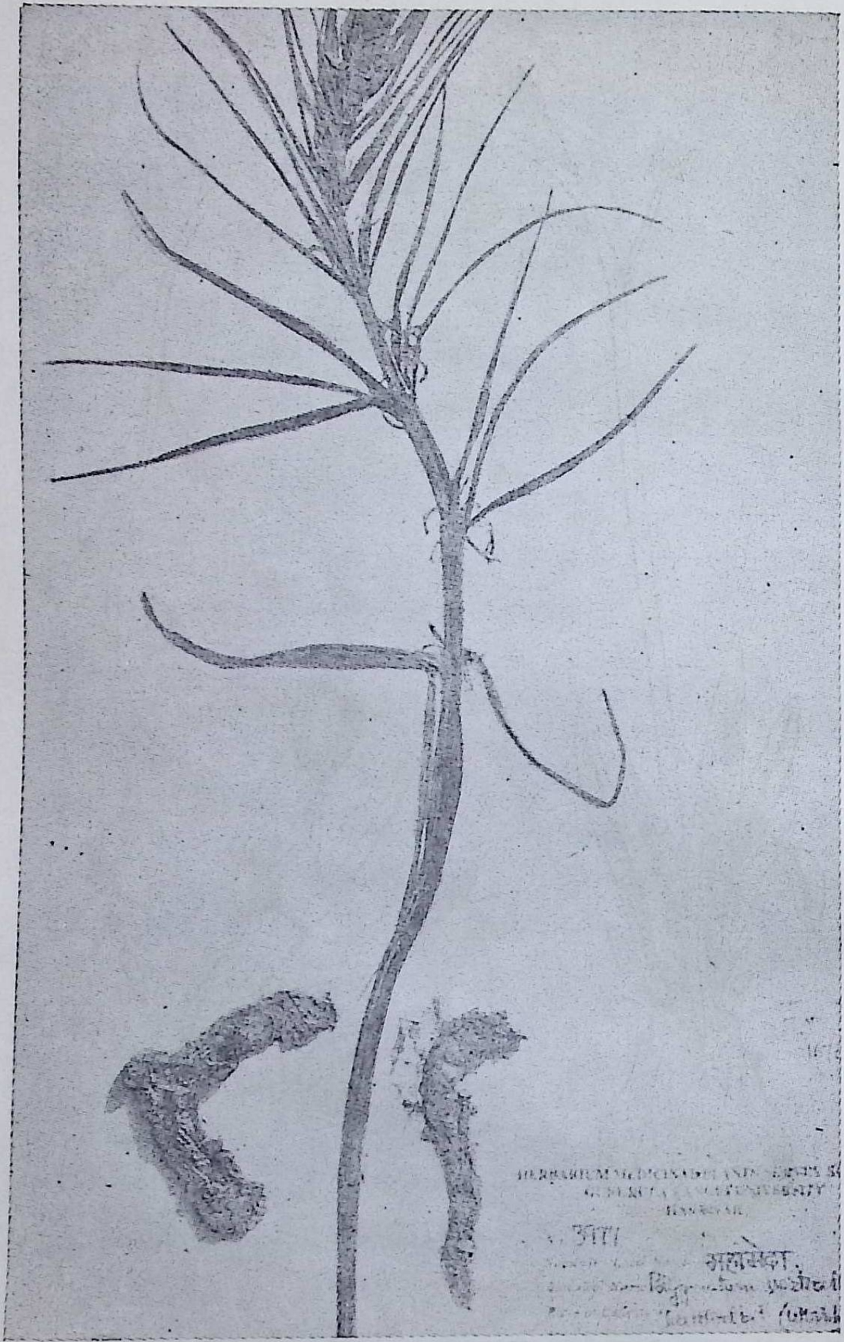

मेदा महामेदा—*Polygonatum verticillatun* Allaion.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन घाटियों में पाई जाती है जिसे *Polygonatum cirrhifolium* Royle कहते हैं।

पुष्पकाल——मई, जून।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—भागीरथी घाटी, रैथल, भटवारी, दयारा, हर्षिल एवं टकनौर रेञ्ज; भिलंगना घाटी, धुत्तू, पंवाली, गङ्गी, पौवागी, मन्दाकिनी घाटी, रामबाड़ा, गौरीकुण्ड, कालीमठ, चकराता, देववन, मन्सूरी आदि स्थानों में उपलब्ध है।

इन घाटियों से इसके मूल का संग्रह किया जाता है।

(३३७) द्रव्यनाम···संस्कृत······जम्बीरक।
स्थानिक ···जम्बू।
लैटिन ······*Allium stracheyi* Baker.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, सुगन्धित शाक; मूल-कन्दिल; पत्र-मूलज, रेखाकार, सुगन्धित; पुष्प-सफेद रंग के। इसका उपयोग संस्कारार्थ प्रयुक्त द्रव्यों की तरह होता है। पलाण्डु एवं रसोन के अतिरिक्त अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती है और शाकार्थ उपयोग में लाई जाती हैं। यथा—

(१) लादू —*Allium wallichii* Kunth.
(२) पांगड़ी—*Allium victorialis* Linn.
(३) ,, *Allium govanianum* Wall.

पुष्पकाल——जून, जुलाई।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

प्राप्तिस्थानः—भिलंगना घाटी, पवाली, ताली, किनकोलियाखाल, सहस्रताल; मन्दाकिनी घाटी, त्रिजुगीनारायण, केदारनाथ, हथनी, मदमहेश्वर; भागीरथी घाटी, हर्षिल, सुक्की, गंगोत्तरी एवं अलकनन्दा, जमुना आदि घाटियों में सुलभ है।

ग्रामीण लोग इनके पञ्चाङ्ग का शाक के रूप में प्रयोग करते हैं एवं भोटिया लोग जम्बू तृण के नीचे लाकर बेचते हैं।

कुल— *COMMELINACEAE* (कोमेलिनासी)

(३३८) द्रव्यनाम···स्थानिक···मुशली।
लैटिन······*Aneilema divergens* C.B. Clarke

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आकृतिक वर्णनः—उर्ध्वसंस्थित, एकवर्षी शाक; मूल-कन्दिल, गुच्छों में; पुष्प-गुलाबी, सफेद रंग के। इसके अतिरिक्त अन्य जातियाँ भी इन घाटियों में पाई जाती है। यथा—

(१) *Aneilema nudiflorum* R. Br.
(२) *Aneilema spiratum* R. Br.

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—मन्दाकिनी घाटी, कालीमठ, रामबाड़ा, भिलंगना घाटी, घुत्तू, पौवागी एवं चकराता, मन्सूरी, कांणाताल १,८०० मीटर से २,४०० मीटर की ऊँचाई तक।

ग्रामीण वैद्य मूल का उपयोग मुशली के नाम से करते हैं।

कुल—*ARACEAE* (अरेसी)

(३३९) द्रव्यनाम···संस्कृत······वचा।
स्थानिक ···वज।
लैटिन ·····*Acorus calamus* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; मूल-प्रकन्दी, गांठदार एवं सुगन्धित; पत्र-मूलज, गहरे-हरे।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —मूल।

प्राप्तिस्थानः—भिलंगना घाटी, घोन्टी, पिलखी, कोठार, घुत्तू; भागीरथी घाटी, उत्तरकाशी, वतूरी, भटवारी एवं मन्दाकिनी घाटी, जमुना घाटी, कांणाताल, चकारा, देववन आदि जलासन्न स्थानों पर।

इन घाटियों से इसके मूल का काफी मात्रा में संग्रह किया जाता है।

(३४०) द्रव्यनाम···संस्कृत······गजपिप्पली।
स्थानिक ···हथकौंल।
लैटिन······*Scindapsus officinalis* Sch.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, आरोहीलता; काण्ड-माँसल; फल-मांसल, ६" तक लम्बा, फलों का गजपिप्पली के नाम से सग्रह एवं प्रयोग होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र- -७३

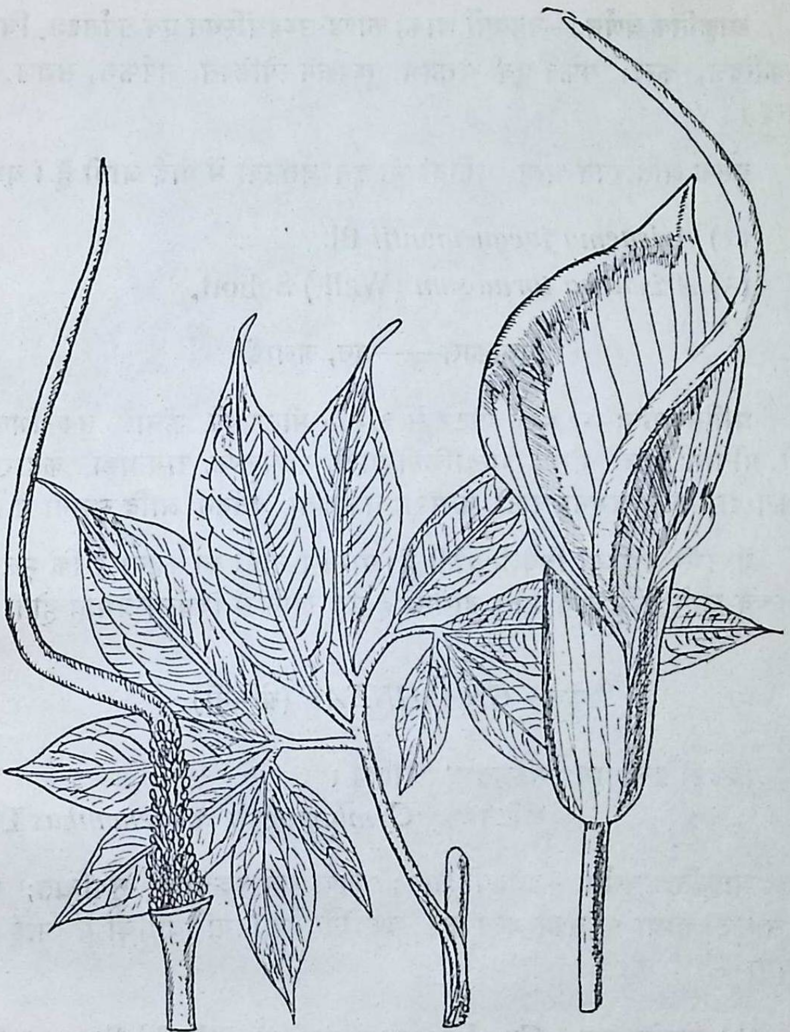

सर्पा—*Arisaema helleborifolium* Schott.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—यह ६०० मीटर की ऊँचाई तक व्यासी आदि स्थानों पर पाया जाता है।

(३४१) द्रव्यनाम···संस्कृत······सर्पा।
स्थानिक ···कोब्रामीन।
लैटिन ······*Arisaema concinnum* Schott.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित एवं सर्पसदृश, चित्रित; मूल-कन्दिल, कन्द, सफेद एवं रक्ताभ; पुष्पक्रम-स्पेडिक्स, सर्पफण, सदृश, स्पेथ में वन्द।

इसके अतिरिक्त अन्य जातियां भी इन घाटियों में पाई जाती हैं। यथा—

(१) *Arisaema jacquemontii* Bl.
(२) *Arisaema tortuosum* (Wall.) Schott.

पुष्पकाल——जून, जुलाई।

प्राप्तिस्थानः—१,८०० मीटर से ३,३०० मीटर की ऊँचाई तक भिलंगना घाटी, पौवागी, घुत्तू, गंगी; मन्दाकिनी घाटी, गौरीकुण्ड, रामबाड़ा, केदारनाथ, अलकनन्दा घाटी, जमुना घाटी, मन्सूरी, चकराता, देववन आदि स्थानों में।

ये सभी जातियाँ विषैली होती हैं। ग्रामीण लोगों का कहना है कि मूलकन्दों को कच्चे खाने से मुँह में छाले डालता है एवं खाने से विषैला प्रभाव होता है।

कुल—*GRAMINEAE* (ग्रेमिनी)

(३४२) द्रव्यनाम···संस्कृत······रोहिष।
लैटिन ······*Cymbopogon schoenanthus* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; काण्ड एवं पञ्चाङ्ग, सुगन्धित; काण्ड ४ से ८ फुट लम्बा। इसकी अन्य कई उपयोगी जातियां बगीचों में पाई जाती हैं। यथा—

(१) जम्बीर तृण—*Cymbopogon citratus* (DC.) Stap. & Syn.
देहरादून एवं राजपुर के बगीचों में।

(2) भूस्तृण—*Cymbopogon jwarancusa* Schult.

पुष्पकाल——मार्च, अप्रैल।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७४

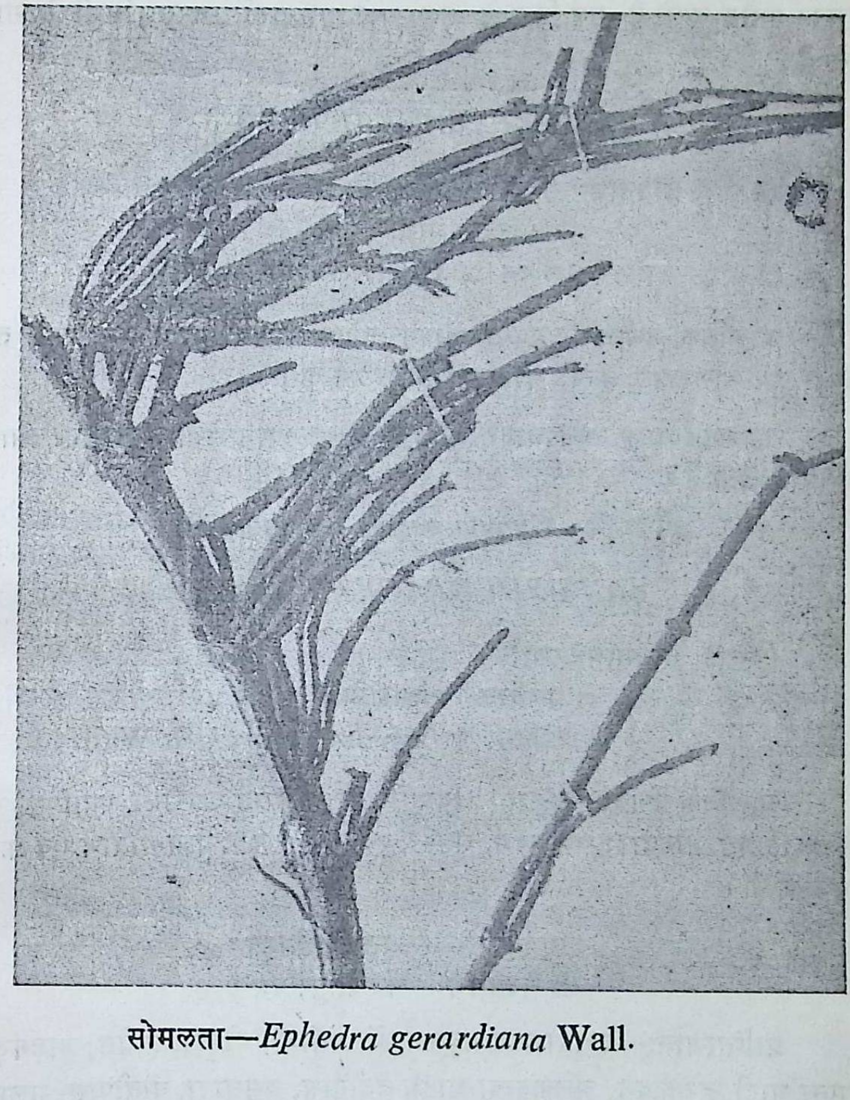

सोमलता—*Ephedra gerardiana* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—ये सभी जातियां बगीचों में देहरादून, चकराता आदि स्थानों पर मिलती हैं जिनकी खेती की जाती है।

(३४३) द्रव्यनाम····संस्कृत······दूर्वा।
स्थानिक ···पुवलो।
लैटिन ······*Cynodon dactylon* Linn. (Pers).

प्राप्तिस्थानः—यह सर्वत्र सुलभ घास है। ग्रामीण लोग पूजन कार्य के लिये इसका प्रयोग करते है एवं पित्त के बढ़ जाने पर दूर्वा स्वरस मिश्री के साथ देते है।

कुल—*CYPERACEAE* (साईपरेसी)

(३४४) द्रव्यनाम···संस्कृत·····मुस्ता।
स्थानिक···मोथा।
लैटिन ·····*Cyperus rotundus* Linn.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी शाक; काण्ड-उर्ध्वसंस्थित, २-३ फुट तक लम्बा, त्रि-कोणाकार, कन्द; अण्डाकार-काले रंग के।

यह गढ़वाल के उष्ण भागों में खेतों के आसपास सभी जलासन्न स्थानों में पाया जाता है।

विभाग—*Gymnosperms* (अनावृतबीजी)

कुल—*EPHEDRACEAE* (इफेड्रेसी)

(३४५) द्रव्यनाम···स्थानिक ···जोड़गंङ्गा।
प्रचलित ··सोमकल्प।
लैटिन ·····*Ephedra gerardiana* Wall.

आकृतिक वर्णनः—बहुवर्षी, विसर्पी क्षुप; शाखायें-पथरीली, पहाड़ियों पर फैली हुई एवं जोड़दार; पत्र-सूक्ष्म, शल्की; पर्व १-२″ लम्बे; पुष्प-पीताभ एवं फल-रक्तवर्ण के।

पुष्पकाल——जुलाई, अगस्त।
प्रयोज्यअंग —पञ्चाङ्ग, पत्र।

प्राप्तिस्थानः—उत्तराखण्ड गढ़वाल में, गंगोत्री, गोमुख, हर्षिल, जाड़गंङ्गा, जमुना घाटी, हरकीदून, अलकनन्दा घाटी, बद्रीनाथ, वसुधारा, नीतीपास, मलारी, धौली घाटी आदि स्थानों पर २,७०० मीटर की ऊँचाई से ३,८०० मीटर की ऊँचाई तक कहीं-कहीं पाया जाता है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल—*CUPRESSACEAE* (कुप्रेसेसी)

(३४६) द्रव्यनाम···स्थानिक ···ठेलू, धूपलकड़ी।
प्रचलित ···हाडवेर (हपुषाभेद)।
लैटिन ······*Juniperus communis* Linn.

आकृतिक वर्णन:—सदाहरित, विसर्पी क्षुप; काण्ड-शाखीय; पत्र १/४"-३/४" लम्बे, रेखाकार, तीक्ष्णाग्र, सुगन्धित; फल-मांसल, पकने पर बैंगनी, काले रंग के।

फलकाल——अगस्त, सितम्बर।

इसकी अन्य जातियाँ भी विशेष ऊँचाई वाले भागों में पाई जाती है।

(१) *Juniperus recurva* Ham.

(२) *Juniperus squamata* Ham.

प्रयोज्यअंग —फल, काष्ठसार।

प्राप्तिस्थान:—ये सभी जातियां हिमालय के बर्फीले भागों में ३,३०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ४,२०० मीटर की ऊँचाई तक पाई जाती हैं। भिलंगना घाटी, खतलिङ्ग, सहस्त्रताल, किनकोलियाखाल; भागीरथी घाटी, गंगोत्री; गोमुख, देववन, मन्दाकिनी घाटी में केदारनाथ, वासुकीताल, मदमहेश्वर एवं अलकनन्दा घाटी, जमुना घाटी, हरकीदून आदि स्थानों पर मिलता है।

ग्रामीण लोग पञ्चाङ्ग का उपयोग द्रव्य-धूप के रूप में करते हैं एवं विशेष ऊँचाई वाले स्थानों पर इसके ताजे हरे पञ्चांङ्ग ईंधन के रूप में प्रयोग करते हैं। इसके फलों का हाडवेर के नाम से संग्रह होता है।

कुल—*TAXACEAE* (टैक्सेसी)

(३४७) द्रव्यनाम···संस्कृत ······स्थौणेयक।
स्थानिक ···थुनेर।
लैटिन ······*Taxus baccata* Linn.

आकृतिक वर्णन:—सदाहरित वृक्ष; पत्र-दो कतारों में १½" लम्बे, रेखाकार, तीक्ष्णाग्र एवं सूखने पर सुगन्ध युक्त; बीज-पकने पर रक्तवर्ण का।

प्रयोज्यअंग —पत्र, छाल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्तिस्थानः—भागीरथी घाटी, रैथल, दयारा, डोडीताल एवं टकनौरेन्ज; भिलंगना घाटी, जमुना घाटी, मन्दाकिनी घाटी, चकराता, देववन, कांणाताल आदि सभी स्थानों पर पाया जाता है।

बाजार में इसके पत्र तालीपत्र के नाम से मिलते हैं। ग्रामीण लोग छाल का चाय बनाने में उपयोग करते हैं। इन घाटियों से पत्तों का काफी मात्रा में संग्रह किया जाता है।

(३४८) द्रव्यनाम···संस्कृत ·····तालीस।
स्थानिक ···रौंसली।
लैटिन ·····*Abies webbiana* Lindl.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित वृक्ष; शाखायें-प्रायः झुकी हुई; पत्र १″-२″ लम्बे, रेखाकार, पतली; काण्ड से सर्पिल क्रम से निकली हुई; ऊपरी पृष्ठ चमकीला एवं गहरे-हरे रंग का, अधः पृष्ठ के दोनों ओर दो-दो रेखायें एवं पत्र के अग्रभाग पर प्राय: दो तीक्ष्ण और कठोर नोक; फल-गोल, आयताकार।

इसकी अन्य जाति भी इन घाटियों में पाई जाती है जिसे—*Abies pindrow* Spach (रौंसली) कहते हैं। पूर्वी हिमालय में इसका भी संग्रह तालीस के नाम से होता है।

प्राप्तिस्थानः—यह जमुना घाटी, हनुमानचट्टी, देववन, मुनाली, भागीरथी घाटी, गंगोत्तरी, जाड़गङ्गा आदि स्थानों पर यत्र-तत्र पाया जाता है। इसके पत्रों का भी इन घाटियों से तालीस के नाम से संग्रह किया जाता है।

कुल—*PINACEAE* (पाइनेसी)

(३४९) द्रव्यनाम···संस्कृत·····देवदारु।
स्थानिक ···देवदार।
लेटिन····· *Cedrus deodara* Lour.

आकृतिक वर्णनः—सदाहरित वृक्ष; शाखायें-फैली हुई; पत्र-त्रिकोणयुक्त, सूच्याकार, १″-१½″ लम्बे एवं पेचदार क्रम से निकले हुये; फल-एकाकी, ४-५″ लम्बा।

प्राप्तिस्थानः—यह उत्तराखण्ड हिमालय में २,७०० मीटर की ऊँचाई से लेकर ३,६०० मीटर की ऊँचाई तक प्रायः सभी घाटियों में पाया जाता है।

ग्रामीण लोग काष्ठसार से तैयार किया हुआ तैल, आमवात एवं पक्षाघात में उपयोगी बताते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३५०) द्रव्यनाम···संस्कृत ·····सरल ।
स्थानिक ···चीड़, कुल्पें ।
लैटिन······*Pinus roxburghii* Sargent

आकृतिक वर्णनः—विशाल वृक्ष; पत्र ९-१२" लम्बे, त्रिकोणाकार, तीन-तीन के समूह में; फल ३-५" तक लम्बे, तीक्ष्ण, काले नोक वाले ।

प्रयोज्यअंग —बीज, रेजीन (विरोजा) ।

प्राप्तिस्थानः—यह ६,०० मीटर की ऊँचाई से लेकर २,१०० मीटर की ऊँचाई तक सर्वत्र पाया जाता है। इन स्थानों से काफी मात्रा में इनसे रेजीन निकाला जाता है।

इसके अतिरिक्त इस कुल की अन्य जातियां भी इन घाटियों के ऊँचाई वाले स्थानों पर पाई जाती है। यथा—

(१) कैल — *Pinus excelsa* Wall.
(२) राई-मुरण्डा — *Picea morinda* Link.

खण्ड—*Cryptogams* (क्रिप्टोगैम्स)

विभाग—ब्रायोफाइटा

कुल—*PARMELIACEAE* (पारमेलिएसी)

(३५१) द्रव्यनाम···संस्कृत·····शैलेय ।
स्थानिक ···छड़ीला ।
लैटिन ·····*Parmelia perlata* Ach.

यह वृक्षों एवं पत्थरों के ऊपर काला एवं अधः पृष्ठ श्वेत का Fungas हैं जो कि जमकर वृक्षों पर चिपका हुआ होता है। प्रचलित भाषा में इसे छड़ीला कहते हैं। इन स्थानों से काफी मात्रा में इसका संग्रह किया जाता है।

विभाग—*Pteriodophyta* (टेरिडोफाइटा)

कुल—*POLYPODIACEAE* (पालीपोडियेसी)

(३५२) द्रव्यनाम···संस्कृत······हंसपदी ।
लैटिन ·····*Adiantum lunulatum* Brum.

यह वर्षाकाल में पैदा होने वाला फर्न है जो कि नम एवं पानी वाले नालों में पाया जाता है। पत्र-गहरे, हरे एवं मूलज होते हैं।

इसकी कई जातियाँ इन घाटियों में पाई जाती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विभाग—थैलोफाइटा

उपविभाग—Fungi (फन्जाई)

कुल—*AGARICACEAE* (अगेरिकेसी)

(३५३) द्रव्यनाम···संस्कृत·····छत्रक ।
स्थानिक···गुच्छी ।
लैटिन ·····*Agaricus campestris* Linn.

यह हिमालय में मिलने वाला छत्राकार उद्भिज है जो कि वर्षाकाल में पदा होता है।

इसकी सविष एवं निर्विष भेद से दो प्रकार की जातियाँ होती हैं। निर्विष जाति को स्थानिक भाषा में गुच्छी कहते हैं।

ग्रामीण लोग इसका शाक बनाते हैं जो कि स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। इन घाटियों से इसका संग्रह किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की सामान्य तालिका

Acuminate लम्वाग्र
Acute निशिताग्र, तीक्ष्णाग्र
Aestivation पुष्पदल विन्यास
Adanate संलग्न
Alternate एकान्तर
Amplexicaule स्तम्भालिंगी
Anther परागकोश
Arragment विन्यास
Auriculate पालिरुप
Annulate वलयाकार
Angiospermum आवृतवीजी
Axillary कक्षीय
Apex अग्रक, पत्रांग्र
Androecium पुं-केशरी, पुमंग
Acicular सूच्याकार
Aquatic जलीय
Annuals एकवर्षी
Annual वार्षिक
Annular वलयाकार
Axil कक्ष
Angular कोणीय
Biennial द्विवर्षी
Bifid द्विशाखी
Bifoliate द्विपर्णी
Bisexual द्विलिंगी
Bract सहपत्र
Bract-scale सहपत्र-शल्क
Bracteole सहपत्रिका
Brittle भंगुर
Branching शाखन
Bulb शल्ककन्द
Bud कलिका
Bark छाल
Blade पटल
Caducous आशुपाती
Calyx वाह्यदलपुञ्ज
Capitate समुंड
Capitulum मुंडक/किपिटुलम
Capsular-fruit संपुटीफल
Capsule सम्पुट
Chlorophyll पर्णहरित
Circular वृत्ताकार
Climber आरोहीलता
Climbing plant आरोहीपादप
Creeper विसर्पी-लता
Crenate कुंठदन्ती
Conical शंक्वाकार
Cuneate फानाकार
Cyclic चक्रीय
Cylindrical वेलनाकार
Cordate हृदयाकार
Corolla दलपुञ्ज
Cymose सीमाक्षी
Corky काग/कार्कि
Compound leaf संयुक्त पत्र
Dentate श्वदंती
Deciduous पर्णपाती/पाती
Decumbent भूशायी
Diclinous एकलिंगी
Dicotyledon द्विबीजपत्री
Disk floret बिम्ब-पुष्पक
Divergent अपसारी
Decurent अधोवर्धी
Diameter व्यास
Erect उर्ध्वसंस्थित
Ellipse दीर्घवृत्त
Elliptic दीर्घवृत्तीय
Elliptical दीर्घवृत्ताकार/दीर्घवृत्तीय
Entire अच्छिन्न, सरलतट
Endogenous अन्तर्जात
Epicarp व्राह्यफलभित्ति
Epiderm बाह्यत्वचा
Epiphyte अधिपादप
Evergreen सदाहरित, सदापर्णी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Ex-Stipellate	अनुपपर्णी
Family	कुल, कुटुम्ब
Female	स्त्री, मादा
Fibrous	रेशेदार
Fistular	नलीदार
Flora	वनस्पति समूह
Floret	पुष्पक
Flower	पुष्प
Foliage leaf	सामान्य पत्र
Foliate	पर्णिल
Fruit	फल
Fugacious	आशुपाती
Fleshy	मांसल; गूदेदार
Gall	पिटिका
Green	हरित
Greenish	हरिताभ
Glabrous	अरोमिल
Genera	वंश, जीनस
Gland	ग्रन्थि
Glandular	ग्रंथिल, ग्रंथिमय
Globose	गोलाकार
Globular	गोलाकार
Gynaeceum	जायांग
Gymnosperm	अनावृतबीजी
Grey-Whitish	श्वेताभ
Habit	प्रकृति
Habitat	आवास
Hair	रोम
Hairy	रोमिल
Hastate	भालाकार
Heart shaped	हृदयाकार
Heart wood	अंत: काष्ठ
Herb	शाक, बूटी
Herbaceous	शाकीय
Hermaphrodite	उभयलिंगी
Hill	पहाड़ी
Hill Forest	पहाड़ीवन, पर्वतीवन
Hoary	श्वेतरोमिल
Horticulture	उद्यान कृषि
Hooked	अंकुशाकार
Hooded	फणाकार
Imparipinnate	विषम पक्षाकार
Inflorescens	पुष्पक्रम, मंजरी
Inter node	पर्व
Inter petiolar	अंतरावृत्तक
Involucre	सहपत्र चक्र
Juice	रस
Joint	सन्धि
Lanceolate	भालाकार
Lateral	पार्श्व-पार्श्विक
Latex	लेटेक्स, खड़क्षीर
Leaf	पर्ण, पत्र
Leaflet	पत्रक
Leaf stalk	पर्णवृन्त
Legume	फलीं, शिंब
Linear	रेखाकार
Local	स्थानीय, स्थानिक
Lobed	खण्डित
Lobe	पालि, खण्ड
Leaf margin	पत्र तट
Lateral side	पार्श्व पृष्ट
Male	नर/पुं
Margin	सीमा, तट
Marginal	सीमांत
Micropyle	बीजांडद्वार
Milky	क्षीरी, दुग्धयुक्त
Modification	रुपान्तर, परिवर्तन
Monandrous	एक-पुंकेसरी
Membranous	झिल्लीमय
Monoclinous	उभयलिंगी
Monocotyledon	एकबीजपत्री
Monoecious	उभय-लिंगाश्रयी
Morphological	आकृतिक
Multilocular	बहुकोष्ठी
Multicellurlar	बहुकोशिक
Nodose	गांठदार
Nodular	ग्रन्थिकी
Obcordate	अधोमुख हृदयाकार
Oblanceolate	अधोमुख भालाकार
Oblique	तिर्यक्, तिरछा
Oblong	दीर्घायत
Obovate	अधोमुख अण्डाकार
Obtuse	कुंठाग्र
Opposite	विपरीत, सम्मुख

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Orbicular	वर्तुल
Oval	अण्डाकार
Ovoid	अंडाभ
Ovate	लट्वाकार
Order	गण
Orang-Yellow	नारंग, पीत
Pair	युग्म, युगल
Palmate	हस्ताकार
Palmatifid	दीर्ण-हस्ताकार
Pappus	रोमगुच्छ
Parasite	परजीवी
Parasitic	परजीवी
Pedicel	वृंत्त, पुष्पवृन्त
Pedicle	वृंतक
Peduncle	पुष्पावलि-वृंत
Perianth	परिदल पुञ्ज
Pericarp	फलभित्ति
Petal	दल, पंखुड़ी
Petiole	वृंत, पर्णवृंत
Petiolate	सवृन्त
Pink	गुलावी
Pinnate	पिच्छाकार
Pari-pinnate	युग्म-पिच्छाकार
Pinnatifid	दीर्ण-पिच्छाकार
Pinnatipartite	दीर्णतर पिच्छाकार
Pinnatisect	दीर्णतम पिच्छाकार
Pollon	पराग
Prickly	तीक्ष्णवर्धी
Projecting	प्रक्षेपी
Pseudo bulb	आभासी शल्ककन्द
Pubescent	रोमिल
Purple	नील-लोहित
Procumbent	शयान
Perennial	वहुवर्षी
Polymorphous	वहुरूपी
Qundrangular	चतुर्भुजी
Ray-floret	अर-पुष्पक
Raceme	असीमाक्ष
Racemose	असीमाक्षी
Rachis	पिच्छाक्ष
Radical	मूलज
Rectangular	समकोणिक
Recumbent	शयान
Rose	गुलावी
Reddish brown	रक्ताभ भूरा
Regular	सम नियमित
Reniform	वृक्काकार
Reticulated	जालिका रूपी
Retuse	खांचाग्री
Rhizome	प्रकंद
Rhizomatus	प्रकंदी
Rhomboid	समान्तर
Root stock	प्रकन्द, मूलस्तंभ
Root tuber	मूलकन्द
Root hair	मूलरोम
Rough	रूक्ष
Scale leaf	शल्कपत्र
Sepal	वाह्यदल
Serrate	क्रकची
Sessile	अवृंत
Shoot	प्ररोह
Solitary	एकल
Shrub	क्षुप, झाड़ी
Simple	साधारण, सरल
Simple fruit	एकल फल
Simple leaf	सरलपर्ण
Species	जाती, स्पीशीज
Spike	स्पाइक
Spinose	शूलमय
Spiral	सर्पिल
Stalk	वृन्त
Stem	तना, काण्ड
Stipulate	अनुपर्णी
Stipule	अनुपर्ण
Succulent	गूदेदार, रसदार
Surface	पृष्ठ, सतह
Spurred	दलपुटयुक्त
Sharp	तीक्ष्ण
Temperate zone	शीतोष्ण कटिबंध प्रदेश
Tendril	प्रतान
Terminal	अंतस्थ, अन्तिम, अग्रस्थित
Terminal bud	अंतस्थ, कलिका
Terrestrial	स्थलीय, भौमिक
Thorn	कांटा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Toothed	दंतुर	*Unifoliate*	एकपर्णी
Triangular	त्रिभुजीय, त्रिकोणीय	*Unisexual*	एकलिंगी
Tree	वृक्ष	*Upper surface*	उर्ध्वपृष्ठ
Trifoliate	त्रिपर्णक	*Verticillate*	चक्रकी
Tropical region	उष्णकटिबंधी प्रदेश	*Violet*	बैंगनी
Trunk	काण्ड	*Velvety*	मखमली
Tuber	कंद	*Vasicant*	स्फोटकर
Tuberous	कन्दिल	*Variety*	किस्म/भेद
Tubular	नलिकाकार	*Whorl*	चक्कर
Twiner	वल्लरी	*Whorled*	चक्करदार
Twig	टहनी	*Wing*	पक्ष, पंख
Turbinate	लट्टूरूपी	*Wing scale*	पक्ष-शल्क
Trilocular	त्रि-कोष्ठकी, भि-कोष्ठी	*Wood*	दारु, काष्ठ
Tri-pinnate	त्रि-पिच्छाकार	*Woody*	काष्ठमय
Umbel	पुष्पछत्र	*Woolly*	लोमश, तूलरोमश
Umbellate	पुष्पछत्री	*Xygomorphic*	एकव्यास, सममित

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

INDEX OF BOTANICAL NAMES

Name	Page No.
Abies	
pindrow Spach.	232
webbiana Lindl.	232
Abrus	
precatorius Linn.	76
Abutilon	
graveolens W. & A.	51
indicum Sweet.	50
Acacia	
catechu Willd.	84
Achyranthes	
aspera Linn.	180
bidentata Blume.	180
Aconitum	
balfourii Stapf.	20
chasmanthum Stapf.	18
deinorrhium Stapf.	20
falconeri Stapf.	18
ferox Wall.	18
heterophyllum Wall.	15
violaceum Jacq.	20
Acorus	
calamus Linn.	226
Actaea	
spicata Linn.	24
Adhatoda	
vasica Nees.	168
Adiantum	
lunulatum Brum.	234
Adina	
cordifolia Hook.	117
Aegle	
marmelos Corr.	60
Aesculus	
indica Colebr.	69
Agaricus	
campestris Linn.	234
Ageratum	
conyzoides Linn.	130
Agrimonia	
eupatorium Linn.	93
Ainsliaea	
aptera DC.	134
Ajuga	
bracteosa Wall.	177
Albizzia	
lebbeck Benth.	85
odoratissima Benth.	85
procera (Roxb.) Benth.	85
Allium	
govanianum Wall.	225
stracheyi Baker.	225
victorialis Linn.	225
wallichii Kunth.	225
Alstonia	
scholaris Br.	146
Amaranthus	
paniculatus Linn.	180
spinosus Linn.	180
Aneilema	
divergens C. B. Clarke	225
nudiflorum R. Br.	226
spiratum R. Br.	226
Anemone	
obtusiloba D. Don.	21
Angallis	
arvensis Linn.	138
Angelica	
archangelica Linn.	108
glauca Edgew.	108
Anogeissus	
latifolia Wall.	105
Aquilegia	
vulgaris Linn.	22
Argemone	
mexicana Linn.	37
Arisaema	
concinnum Schott.	228

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

jaequemonti Bl. 229
tortuosum Wall. Schott. 229

Artemisia
absinthium Linn. 128
maritima Linn. 128
parviflora Wight. 129
sacrorum Ledeb. 128
scoparia Waldst Kit. 129
vestita Wall. 129
vulgaris Linn. 128

Asclepias
curassavica Linn. 149

Asparagus
adscendens Roxb. 218
curillus Buch-Ham. 218
filicinus Buch-Ham. 218
gracilis Royle. 218
racemosus Willd. 218

Astragalus
chlorostachys Lindl. 77
condolleanus Royle. 77
leucocephalus Grah. 77

Atylosia
scarabaeoides Benth. 81

Bacopa
monnieri (Linn.) Pennell. 166

Baliospermum
montanum Muell-Arg. 193

Barleria
cristata Linn. 170

Bauhinia
purpurea Linn. 75
retusa Roxb. 75
vahlii W. & A. 75
variegata Linn. 74

Berberis
aristata DC. 30
asiatica Roxb. 30
chitria Lindl. 30
lycium Royle. 30
petiolaris Wall. 30

Bergenia
ciliata Royle. 96
ligulata (Wall.) Engl. 93
stryacheyi H. K. 96

Betula
utilis D. Don. 201

Bidens
pilosa Linn. 133

Boerhaavia
diffusa Linn. 178

Bridelia
retusa Spreng. 197

Bryonopsis
laciniosa (Linn) Naud. 100

Buchanania
lanzan Spreng. 72
Sy. B latifolia Roxb.

Bupleurum
falcatum Linn. 109
jucundum Kurj. 110

Butea
monosperma (Lam.) Kuntze. 82

Buxus
wallichiana Baill. 198

Caesalpinia
crista Linn. 75
sepiaria Roxb. 75

Callicarpa
macrophylla Vahl. 170

Calotropis
gigantea Br. 150
procera Br. 150

Caltha
palustris Linn. 22

Cannabis
sativa Linn. 200

Cannamomum
tamala Nees. & Eberm. 187

Capsella
bursa-Fastoris Medic. 41

Capparis
horrida Linn. 40

Cardamine
impatiens Linn. 41

Cardiospermum
halicacabum Linn. 68

Carissa
spinarum A. DC. 147

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Casearia
graveolens Dalz. 100
tomentosa Roxb. 100
Cassia
absus Linn. 82
fistula Linn. 73
laevigata Willd. 74
occidentalis Linn. 73
tora Linn. 74
Cedrela
toona Roxb. 62
Cedrus
deodara Loud. 232
Celastrus
paniculatus Willd. 65
Centella
asiatica Linn. Urban 105
Centipeda
minima (Linn.) A. Br. 131
Ceropegia
bulbosa Roxb. 154
Chenopodium
album Linn. 181
ambrosioides Linn. 181
botrys Linn. 181
Cissampelos
pareira Linn. 27
Cleome
viscosa Linn. 38
Clematis
gouriana Roxb. 25
Clerodendron
infortunatum Gaertn.. 172
serratum Spreng. 172
siphonanthus R. Br. 172
phlomides Linn. 172
Cnicus
wallichii DC. 134
Coccinia
indica W. & A. 102
Cocculus
hirsutus Diels. 26
laurifolius DC. 26
Colebrookea
oppositifolia Sm. 178
Coptis
teeta Wall. 25
Corchorus
aestuans Linn. 54
capsularis Linn. 54
trilocularis Linn. 54
Cordia
Sp. Willd. 156
Coriaria
nepalensis Wall. 73
Cornus
capitata Wall. 112
Corydalis
cornuta Royle. 38
govaniana Wall. 38
ramosa Wall. 38
Costus
speciosus (Koen) Sm. 210
Cotoneaster
bacillaris Wall. 92
Crataeva
religiosa Forst. 40
Crataegus
crenulata Roxb. 92
Crotalaria
albida Heyne. 78
calycina Schr. 79
sericea Retz. 78
Cryptolepis
buchanani R. & S. 148
Curculigo
orchioides Gaertn. 216
Curcuma
angustifolia Roxb. 214
Cymbopogon
citratus (DC.) Stapf. Syn. 228
jwarancusa Schult. 228
schoenanthus Linn. 228
Cynodon
dactylon (Linn.) Pers. 230
Cynoglossum
micranthum Desv. 159
wallichii G. Don. 159
zeylanicum Thunb. 159
Cyperus
rotundus Linn. 230
Daemia
extensa R. Br. 150

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Daphne
papyracea Wall. 190
Datura
metel Linn. 165
stramonium Linn. 165
Delphinium
denudatum Wall. 20
vestitum Wall. 20
Dendrophthoe
falcata (Linn. f.) 189
Etting Shausen.
Dendrobium
alpestre Royle 211
normale Flace. 211
Desmodium
gangeticum DC. 76
latifolium DC. 76
latiflorum DC. 76
pulchellum Benth. 76
Descurainia
sophia (Linn.) Webb. 41
Dioscorea
belophylla Voight 218
bulbifera Linn. 216
deltoidea Wall. 218
pentaphylla Linn. 218
Diospyros
cordifolia Roxb. 142
montana Roxb. 142
tomentosa Roxb. 142
Dolichos
biflorus Linn. 78
Drosera
lunata Buch-Ham. 98
Echinops
niveus Wall. 135
Eclipta
alba Hassk. 129
Elaeodendron
glaucum Pers. 65
Emblica
officinalis Gaertn. 191
Ephedra
gerardiana Wall. 230
Epilobium
hirsutum Linn. 99
Erythrina
suberosa Roxb. 82
Eulophia
campestris Wall. 208
herbacea Lindl. 210
hormuskii Duth. 210
Euonymus
hamiltonianus Wall. 64
tingens Wall. 64
Euphorbia
acaulis Roxb. 196
hirta Linn. 196
nivulia Buch-Ham. 196
pilosa Linn. 193
royleana Boiss. 196
thymifolia Linn. 196
Evolvulus
alsinoides Linn. 159
Fagopyrum
esculentum Moench. 184
Ficus
bengalensis Linn. 199
cunia Ham-ex-Roxb. 199
hispida Linn. 199
infectoria Roxb. 199
racemosa Linn. 198
religiosa Linn. 199
roxburghii Wall. 199
Flacourtia
indica Merr.
Sy. F. ramontchi Roxb. 47
jangomas (Lour.) Raeusch 47
Flemingia
bracteata Wight. 78
Fragaria
vesca Linn. 92
Fritillaria
cirrhosa D. Don. 220
roylei Hook. 220
Fumaria
indica Pugsley. 37
parviflora Lam. 37
Galium
mollugo Linn. 118

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Gardenia
turgida Roxb. 117, 172
Gentiana
kurroo Royle. 156
Geranium
nepalensis Sweet. 57
wallichianum D. Don. 57
Girardinia
zeylanica Decne. 199
Glochidion
velutinum Wight. 198
Gloriosa
superba Linn. 221
Grewia
disperma Rottl. 56
elastica Royle 54
oppositifolia Roxb. 56
Gynandropsis
pentaphylla DC. 38
Habenaria
acuminata Thw. 206
goodyeroides D. Don. 206
griffithii Hk. 206
intermedia D. Don. 206
Hedera
nepalensis K. Koch. 110
Hedychium
spicatum Ham-ex-Smith. 214
Helicteres
isora Linn. 52
Heracleum
candicans Wall. 108
pinnatum C. B. Clarke. 108
Hibiscus
cancellatus Roxb. 51
Hiptage
benghalensis Kurz.
Sy. H. madablota Gaertn. 56
Hippophae
rhamnoides Serv. 190
salicifolia D. Don. 190
Holarrhena
antidysenterica Wall. 143
Holostemma
integrifolia Planch. 150
ydrocotyle
javanica Thunb. 105
rotundifolia Roxb. 105
Hyoscyamus
niger Linn. 162
Hypericum
patulum Thunb. 49
perforatum Linn. 49
Ichnocarpus
frutescens Br. 147
Impatiens
balsamina Linn. 57
Inula
racemosa Hook. f. 134
Ipomaea
coccinea Linn. 160
hederacea Jacq. 159
hispida R. & S. 160
Iris
kumaonensis Wall. 216
nepalensis D. Don. 216
Jasminum
arborescens Roxb. 140
grandiflorum Linn. 140
humile Linn. 140
officinale Linn. 140
Jatropha
curcas Linn. 197
Juglans
regia Linn. 201
Juniperus
communis Linn. 231
recurva Ham. 231
squamata Ham. 231
Jurinea
macrocephala Benth. 133
Kalanchoe
spathulata DC. 96
Lannea
grandis Engl 70
Liparis
paradoxa Rchb. 206
rostrata Rchb. 206

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Leea
aspera Edgew. 67
Leptadenia
reticulata W. & A. 152
Leucas
cephalotes Spreng. 174
Lilium
polyphyllum D. Don. 218
wallichianum Schult. f. 220
Liatsea
lanuginosa Nees. 189
umbrosa Nees. 189
Lonicera
angustifolia Wall. 113
Lyonia
ovalifolia (Wall.) Drude. 135
Machilus
odoratissima Nees. 187
Macrotomia
benthami DC. 158
Madhuca
butyracea (Roxb.) Macbride 142
indica J. F. Gmel. 141
Mahonia
nepalensis DC.
Sy-Berberis nepalensis Spring 31
Mallotus
philippinensis Muell. Arg. 191
Malva
rotundifolia Linn. 51
verticillata Linn. 51
Marsdenia
royle Wight. 149
tenacissima W. & A. 149
Martynia
diandra Glox. 168
Meconopsis
aculeata Royle. 36
nepalensis DC. 36
Megacarpea
polyandra Benth. 46
Melia
azedarach Linn. 64
Melothria
heterophylla Cogn. 104
Mentha
arvensis Linn. 176
longifolia Huds. 174
Michelia
champaca Linn. 25
Micromeria
biflora Benth. 178
Microstylis
cylindrostachya Rchb. 206
mackinnoni Duthie. 206
muscifera Ridl. 204
wallichii Lindl. 204
Mimosa
pudica Linn. 85
Mirabilis
jalapa Linn. 178
Momordica
charantia Linn. 102
diocia Roxb. 102
Morina
longifolia Wall. 124
Moringa
oliefera Lam. 72
Morus
alba Linn. 200
serrata Roxb. 200
Mucuna
imbricata DC. 80
prurita Hook. 80
Murraya
exotica Linn. 58
koenigi Spreng. 58
Myrica
nagi Thunb. 201
Nardostachys
jatamansi DC. 119
Nepeta
ciliaris Benth. 178
Nerium
indicum Mill. 147
Nicotiana
tabacum Linn. 165

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Nomocharis
nana E.H. 220
oxypetala Royle. 220
Nyctanthes
arbor-tris-tis Linn. 141
Oldenlandia
corymbosa Linn. 118
Onosma
echioides Linn. 158
emodi Wall. 158
Orchis
latifolia Linn. 208
Oreorchis
indica Hk. 210
micrantha Lindl. 210
Origanum
vulgare Linn. 177
Oroxylum
indicum Vent. 167
Osmanthus
fragrans Lour. 140
Ougeinia
dalbergioides Benth. 79
Oxalis
acetosella Linn. 57
corniculata Linn. 57
Paederia
foetida Linn. 118
Paeonia
emodi Wall. 22
officinalis Linn. 24
Papaver
somniferum Linn. 36
Paris
polyphylla Smith. 220
Parmelia
perlata Ach. 233
Pavetta
indica Linn. 118
Periploca
calophylla Falc. 148
Peristrophe
bicalyculata Nees. 168
Phaseolus
calcaratus Roxb. 81
trilobus Ait. 80
Pholidota
articulata Lindl. 208
imbricata Lindl. 208
Phyllanthus
niruri Linn. 193
urinaria Linn. 193
Picea
morinda Linn. 233
Picrasma
quassioides Benn. 62
Picrorhiza
kurroo Royle. 166
Pimpinella
diversifolia DC. 110
Pinus
excelsa Wall. 233
roxburghii Sargent. 233
Piper
brachystachyum Wall. 187
longum Linn. 185
Pistacia
integerrima Stew. 70
Plantago
major Linn. 180
Plumbago
zeylanica Linn. 137
Podophyllum
hexandrum Royle. 31
Pogostemon
parviflorus Benth. 176
plectran thoides Desf. 177
Polygala
chinensis Linn. 48
crotalarioides Ham. 48
Polygonatum
cirrhifolium Royle. 225
vertecillatum Allaion. 222
Polygonum
amplexicaule D. Don. 182
recumbens Royle. 184
rumicifolium Royle 185
Polycarpea
corymbosa Lam. 49

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Potentilla
fulgens Wall. 91
Premna
barbata Wall. 173
herbacea Roxb. 173
latifolia Roxb. 173
Prinsepia
utilis Royle. 91
Prunella
vulgaris Linn. 173
Prunus
cerasoides D. Don. 86
cerasus Linn. 86
cornuta (Wall.) Steud. 88
persica Batsch. 88
Pterospermum
acerifolium Willd. 52
candollii Benth. 110
ongelicoides Benth. 110
Pueraria
tuberosa DC. 79
Punica
granatum Linn. 99
Putranjiva
roxburghii Wall. 197
Pyrus
lanata Don. 91
pashia Buch-Ham. 90
Quercus
dilatats Lindl. 203
incana Roxb. 203
semecarpifolia Sm. 203
Randia
dumetorum Lamk. 116
tetrasperma Roxb. 116
Ranunculus
sceleratus Linn. 21
Rauwolfia
serpentina Benth. 143
Reinwardtia
indica Dum.
Syn-trigyna Planch. 56
Rhamnus
purpurea Edgew. 65
triquetra Wall. 66
virgata Roxb. 65
Rheum
emodi Wall. 182
moorcroftianum Royle. 184
webbianum Royle. 184
Rhododendron
arboreum Sm. 137
anthopogon D. Don. 135
campanlatum D. Don. 136
lepidotum Wall. 136
Rhus
parviflora Roxb. 71
punjabensis Stew. 71
wallichii Hook f. 71
Ribes
nigrum Linn. 96
rubrum Linn. 96
Ricinus
communis Linn. 191
Rosa
macrophylla Lindl. 90
moschata Herrm. 88
sericea Lindl. 90
Roscoea
alpina Royle 214
procera Wall. 210
Roylea
calycina Btiguct. 176
Rubia
cordifolia Linn. 116
Rubus
ellipticus Sm. 90
Salix
daphnoides Villars 204
elegans Wall. 204
tetrasperma Roxb. 203
Salmalia
malabarica Schott.
Sy-Bombax 52
malabaricum DC.
Salvia
lanata Roxb. 176
moorcrofiana Wall. 176
plebeia R. Br. 176

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Sapindus
mukorossi Gaertn. 67
Sapium
insigne Trimen. 198
Saussurea
gossypiphora D. Don. 126
lappa C. B. Clarke. 124
obvalata Wall. 126
Schleichera
trijuga Willd. 68
Scindapsus
officinalis Sch. 226
Sedum
multicaule Wall. 98
Selinum
tenuifolium Wall. 108
vaginatum C. B. Clarke. 109
Senecio
alatus Wall. 132
jacquemontianus Benth. 132
Shorea
robusta Gaertn. 48
Sida
acuta Burm. 50
cordifolia Linn. 50
rhombifolia Linn. 50
spinosa Linn. 50
veronicaefolia Lam. 50
Sisymbrium
irio Linn. 41
Skimmia
laureola Seib &
Zucc-ex-Walp. 60
Smilax
aspera Linn. 220
macrophylla Roxb. 220
parviflora Wall. 220
Solanum
indicum Linn. 160
khasianum Clarke. 162
melongena Linn. 162
nigrum Linn. 165
torvum Swart. 162
verbascifolium Linn. 162
xanthocarpum Schrad Wendl 160
Sonchus
asper Vill. 132
oleraceus Linn. 133
Spondias
mangifera Willd. 69
Staphylea
emodi Wall. 69
Stellaria
aquatica Scop. 49
media Linn. 49
Stephania
glabra Miers. 27
hernandi folia (Willd.) Walp. 27
Stereospermum
suaveolens DC. 167
Swertia
alata Royle. 156
angustifolia Ham. 154
chirata Ham. 154
cordata Wall. 154
purpurascens Wall. 154
Symplocos
crataegoides Ham. 138
Syringa
emodi Wall. 141
Syzygium
cumini (Linn.) Skeels. 98
operculātum Gamble. 99
Taraxacum
officinale Wigg. 129
Taxus
baccata Linn. 231
Tephrosia
purpurea (Linn.) Pers. 81
Teramnus
labialis Spreng. 80
Terminalia
belerica Roxb. 104
chebula Retz. 104
tomentosa W & A. 105
Thalictrum
foliosum DC. 24
Thymus
serpyllum Linn. 174

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Tinospora
cordifolia (Willd.) Miers. 26
malabarica Miers. 27
Toddalia
asiatica Lam. 60
Trachyspermum
falconeri C. B. Clarke 109
Trewia
nudiflora Linn. 198
Trichodesma
indicum Br. 158
Trichosanthes
cucumerina Linn. 101
palmata Roxb. 101
Tridex
procumbens Linn. 131
Trifolium
corniculata Linn. 84
repens Linn. 84
Triumfetta
bartramia Linn. 54
Tylophora
asthmatica Ham-ex-Wight 152
hirsuta Wight. 152
Ulmus
wallichiana Planch 199
Uraria
lagopoides DC. 77
picta Desv. 77
Urgenia
indica Kunth. 221
Valeriana
hardwickii Wall. 124
jatamansi Jones. 119
Vallaris
heynei Spreng. 146
Vanda
cristata Lindl. 2'0
parviflora Lindl. 210
Verbascum
thapsus Linn. 166
Vernonia
anthelmintica Willd. 130
cinerea Less. 130
Viburnum
cotinifolium D. Don 113
nervosum D. Don. 112
Viola
biflora Linn. 46
canescens Wall. 46
serpens Wall. 46
Viscum
album Linn. 189
Vitex
negundo Linn. 173
Vitis
latifolia Roxb. 66
Wendlandia
exserta DC. 116
Withania
sominifera Dunal. 162
Woodfordia
fruticosa Kurz. 99
Wrightia
tomentosā R. & S. 143
Xanthium
strumarium Linn. 131
Zanthoxylum
alatum Roxb. 58
Zizyphus
jujuba Lam. 66
nummularia W. & A. 66
xylopyus Willd. 66

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संस्कृत एवं स्थानीय नामों को अकारादिक्रम से द्रव्यों की तालिका

नाम	पृ० सं०
अकलकोहड़ी	131
अखोड़िया	71
अंञ्जुवार (अमली)	182
अगेली	21
अग्निमन्थ, अरिणी	172
अतिवला (कंघी)	50
अतिविषा (अतीस, पतीस)	15
अधाहुली	159
अधोगुड़ा	196
अधोपुष्पी	158
अनियार (अंयार)	135
अपामार्ग (चिरचिटा, उल्टोकुरो)	180
अफसन्तीन (डुमार)	128
अमृतस्रवा (छिवाड़ी)	66
अर्क (आंक)	150
अर्कपुष्प	150
अरणीभेद (वकार, वकारू)	173
अरिष्ठक (रीठा)	67
अलर्क (श्वेतार्क)	150
अश्वागंधा	162
असकुटा	96
अहिफेन, मादक (अफीम, शुष्क क्षीर)	36
असेन	105
अक्षोड़ (अखरोट)	201
आटरुषक (वासिंगू)	168
आम्रातक (अम्बाड़ा)	69
आमलकी (आवला)	191
आमील (आमींण)	190
आरग्वध (किरमाल)	73
आवर्तकी (भिमल्या)	52
आरूक (आड़ू)	88
आस्फोसा (सफेद बेल, दूधी बेल)	146
इन्द्रजटा (भूतकेश)	38
उत्तमारणी	150
उदसलीव (चन्द्रया, ममेक)	22
उदुम्बर (पिलखू)	198
उस्तखद्दूस	173
एकदानियाँ	197
एरण्ड (अरण्ड)	191
एलवालुक (चिलू)	86
ऋद्धि-वृद्धि	206
कटफल (काफल)	201
कंटेला	135
कड़वीबूटी	134
कढ़ीनीम (गन्धेलो)	58
कण्टकारी (कंटेली)	160
कठबेर (घुण्ट)	66
कंणदी	75
कपिकच्छु (कौंच)	80
कमरकस	176
कम्पिल्लक (रीणों, कमील)	191
कर्कटश्रृंङ्गी (काकड़ा)	70
कर्कोटक (नरलिंगीपादप) तथा बन्धाकर्कोटकी (स्त्रीलिंग पादप)	102
करवीर (कनेर)	147
करु	176
करुई, तिथाई	62
कलिहारु	36

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काकजङ्घा (काकजड़ी) 168
काकतिन्दुक (विषतेन्दु) 142
काकतुण्डी (ककवाँ) 149
काकमाची (मकोय) 165
काकोली 210
काकदनी (कर्णस्फोटा, कनफूटी) 68
काकोद्म्बरिका 199
कांचन (कंच) 60
कांञ्चनार (गुरियाल) 47
काण्डीर (अगलैंण, जलधनिया) 21
कांतलू 185
कामलया 51
कृष्णबीज पादप 159
कुरी 133
कृष्णधत्तूर (काला धतूरा) 165
कृष्णसारिवा (प्रचलित काली दूधी) 148
काँवों 67
कारवेल्लक (करैला) 102
कालाशिरीष 85
कासमर्द (कसौन्दी) 73
काली दुधी 147
किणही (सफेद सिरीष) 85
किंगरी 75
किराततिक्त (चिरायता) 154
किरीष 218
कुकरदाढ़ी 220
कुटकी (कड़ु, कौड़ाई) 166
कुटज (कूड़ा) 143
कुब्जक (कूजा) 88
कुरवक (वुरांश) 137
कुन्दुरु वन 104
कुरो 131
कुलत्थ (गथ) 78
कुष्ठ (कूठ) 124
केमुक (केवुक) 211
कैंल 233
कोट्ठू (ओगल फाफरा) 184
कोलकंद (जंगली प्याज) 221
कोबिदार 75
कोठ्या 136
कोंला 187
कोशाम्र (कुसुम) 68
खदिर (खैर) 84
खिन्ना 198
खुबा 51
खरसू 203
खूवकलाँ 41
गङ्गातुलसी 125
गजपिप्पली (हथकौंल) 226
गन्धायण 108
गन्धप्रसारिणी (पदाड़) 118
गीदड़ (तमाखू ममाकू) 166
गुडूची (गिलोय) 26
गुंजा (रत्ती) 75-76
गुलमेंहदी 57
गुलावांस 178
गोजिह्वा (लालजड़ी) 158
गोगल धूप 133
गौंता 66
घिगारु 92
चक्रमर्द (पनवाड़) 74
चञ्चु (चेंच) 54
चक्षुष्या (चाकंसू) 82
चम्पक (चम्पा) 25
चण्डा 108
चाङ्गेरी (खट्टीबूटी) 57
चामरी 198
चिड़ियामूशली 218
चिन्हक (चीला) 100
चमेली 140
चित्रक (चिपकुरो) 137
चोपाली 132
चोरक (चोरा) 108
छिर्लहिंट (जलजमनी) 26
छत्रक (गुच्छी) 234

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छन्या 109
छिक्किका (छिकनी) 131
छोटीकुरी 118
जखमेहयात (विषखपरो) 96
जटामांसी (मांसी) 119
जदवार (बुडींण) 20
जंगली अंजीर 199
जंगली करौन्दा 147
जंगली दाल 81
जंगली ईसबगोल 178
जंगली पुदीना 130
जंगली जीरा 109
जम्बीरक (जम्बु) 225
जम्बीर तृण 228
जम्बु (जामुन) 98
जलवेतस (जलमाल्या) 203
जाती 140
जामगी 88
जिङ्गीणी (झींगन) 70
जीवक ऋषभक 204
जीवक 204
जींवन्ती 152
जोरगंङ्गा (सोमकल्प) 230
जोंकमारी 138
ज्योतिष्मती (मालकौंणी) 64
झिझरीटा (चिकती) 54
ठेलू, धूपलकड़ी (हाडवेर, हपुषाभेद) 231
ढोलू 184
तगर (सुमया) 119
तण्डुलीयक (कांटा चौलाई) 180
तवक्षीर (वणहलदो) 214
तोतर 30
ताम्रकूट (तमाखू) 165
तालीस (रौंसली) 232
तिन्तिडीक (तुगला) 71
तिन्दुक (तेन्दु) 142
तिमिला 199
तिरोई 110
तिल्वक (तिलींण) 112
तिलक (उड़ारु) 116
तिलफारो 26
तूणी तुन 62
तूद (केमू) 200
थंथार (चठोला) 65
दन्ती 193
दमुनक (कुणंजा) 128
दाडिम (दाडिमू) 99
दारुहरिद्रा (किन्जोड़) 30
दुग्धफेनी (दुधी) 129
दुग्धिका (दुधी) 196
दुधियावच 220
दुधिया अतीस 20
द्रोणपुष्पी (गुमा) 174
दूर्वा (पुवलो) 230
देवदारु (देवदार) 232
धव (वाकली) 105
धन्वन (धामिन) 54
धरणीकन्द 210
धातकी (धौलू) 99
निगुण्डी (सिवाली) 173
नैर (केदारपाती) 60
नागवला 50
नागदौन (मरद्दोव) 69
नदी जम्बु (क्षुद्रजम्बु) 99
नीलकंठी 132
नीलकंठी भेद 132
टेरनी अटेरनी 152
प्रचलित जीवन्ती 208
पांगड़ी 225
पट्टिकालोध्र (लोध) 138
पद्मक (पइयाँ) 86
प्लक्ष 199
पलाश (ढाक) 82

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पर्पट (पित्तपापड़ा) 37
पत्र (दालचीनी) 187
पाटला 167
पाठा (पाड़ी) 27
पाठाभेद (गिन्दाडू) 27
पानी गम्हार 198
पाँगर (पाँगर, वंखौर) 69
पापरो (अंगारी) 118
पारसीक पवानी 162
प्राचीनामलक (पचनाला) 47
पारिभद्र (मन्दारो) 82
पाषाणभेद (सिलपाड़ो) 93
पौथी 91
पापरी 198
पिप्पली (पीपल, पहाड़ी पान) 185
पीपल 199
प्रियङ्गु (दहिया) 170
प्रियाल (प्याल) 72
पुनर्नवा (पूर्णी) 178
पुष्करमूल (मानू) 134
पूतिहा (पुदीना) 174
पूत्रजीव (जियापोता) 197
पृश्निपर्णी 76
फणिज्झक् (फागलो) 176
फेनकमल (भेंड़गंधा) 126
वदर (बेर) 66
वनकुन्दरू 104
बन्फ़शा (डुण्डीविराली) 46
बन्दाक (वान्दो) 189
बरमूला 46
ब्रह्मयष्टी (चिगारी वकारी) 172
वला (खरैंटी) 50
ब्राह्मी (जलनीम) 166
विच्छुआ 168
बिदारीकन्द (सराल) 79
बिभीतक (बहेड़ा) 104
बिम्बी (कन्दूरी) 102
बिल्व (बेल) 60
बुरुन्स 134
भृगरांज (भागरू) 129
भारङ्गी 172
भिल्लोडय (गिलोठी, गेलोट) 154
भूम्यामलकी 193
भूर्ज (भोज) 201
भूस्तृण 228
वत्सनाभ (प्रचलित)
(मीठाविष, मोहरू) 18
वज्रदन्ती 91
वट 199
वनचिलू 113
वचा (वच) 226
वन्यकर्कटी (काकड़या, वनककड़ी) 31
वन्यपटोल (जंगली, चंचीण्डा) 101
वन्यपवानी 174
व्याघ्ररैण्ड (अरण्डी) 197
व्याघ्रनखी (हिंस) 40
वरुण (वरना) 40
वृहती 160
वृश्चिकाली (कन्डाली) 199
वेलू 93
बांझ 203
वान्दा 110
वान्दो 189
वास्तूक (वेथु, (वथुआ) 181
वाराही ग्रष्ठिका, (गेंटी) 218
वासन्ती (फ्यूंली) 56
वासिंगू 170
विकंकत (कणु कंडाई) 47
विजया भंगा, (भागलू) 200
विशाला (इलाडू) 101
विषकंडार 124
वीरव्रट 78
मट्याणु 113

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मण्डूकपर्णी (ब्राह्मी) 105
मदना (मैणदू, राडू) 116
मधुक (महुआ) 141
मनीरु 22
मर्मारी 24
ममीरा-पीलीजड़ी 24
मराड़ 48
मरुवक 177
मंजिष्ठा (मंजीठ) 116
मालभ्रून 75
मसूरी, वरुल 73
महानिम्ब (डैकण) 64
महापिण्डी (थनैला) 171
माधवी (अनेता) 56
मारीष (मारछा) 2
माल्यो 84
मालकौणी 65
मीलू 99
माषपर्णी (जंगलीदाल) 80
मोरू 203
गुखजली 98
मुचुकन्द (मैंगू) 52
मृदगंपर्णी (मूंगी) 80
मुस्ता (मोथा) 230
मुञ्जातक (सालमपज्जा, हथ्थाजोड़ी) 208
मूर्वा 149
मूर्वा (भेदखारचू) 149
मुशली 225
मुरामांसी (मूर) 108
मिरधा 98
मीठा इन्द्रयव 143
मेदा-महामेदा (देवारिगाल सालममिश्री) 221
भिल्लोटक (भमेली, कुंकुम) 64
सालममिश्री (देवरिगाल) 225
मेंढल 116
मेंहल 90
मोदाक (कृष्ण) 65
मोक्षक (कृष्ण जटमांसी, पतियाल) 65
भैंकल 91
भूतकेश 109
भमारी 112
रतनजोत 158
राई-मुरण्डा 233
रामदातन 221
रास्वा 210
रीस 92
रुदन्ती 77
रुद्रवन्ती 77
रेवन्दचीनी (आर्चा) 182
रोहिष 228
लज्जावन्ती (छुई-मुई) 85
लताकरंज (कठकरंज) 75
लादू 225
लाङ्गली 221
लालजड़ी 57
लालमूल (काली मुशली) 216
लेसर 110
लूहास 65
शठी (शेल्डू) 214
शणपुष्पी (शण) 78
भ्रशतावरी (भींजणी) 218
शतावर (सहस्रपा) 218
श्यामसुन्दरी 74
श्योनाक (टाटपलांगू) 167
शसूर 189
शरपुंखा 81
शाल (साखू) 48
श्लेष्मातक (लसूड़ा) 156
श्वेतधतूर 165
शालपर्णी (सटिवन) 76
शाल्मली (सेमल) 51
शिरीष (कृष्ण सिरस) 85
शिवमल्ली (वकपुष्प शिलगी) 140
शिवलिङ्गी (पुतलगलो) 100

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शेफालिका (कुरी)	141	स्वर्णक्षीरी (कंटेला)	37
शेषकी (छामस्या)	128	सहदेवी	130
शैलेय (छड़ीला)	233	स्ट्रावेरी	92
शंखपुष्पी भेद	159	सालप	208
शोभान्जन (सैंजन)	72	सिमरू	136
सटःफल	84	सुगन्ध वास्तूक	181
सतपुड़ा	190	सूर्यभक्ता (अजगन्धा), (जंख्या, हुरहुर)	38
स्थलपदम (कौल, ब्रह्मकमल)	126	सैरेयक भेद (अतरासू)	135
स्थौणेयक (थुनेर)	231	सोमराजी (घोड़ा जीरी)	130
स्नुही (शुलू)	196	हरिद्र (हलदू)	117
सर्पपर्ण (छितीवन)	146	हरीतकी (हरड़)	104
सर्पगन्धा	143	हलदिया	31
सप्तला (चोपालू)	193	हिंसालू (हींस)	90
सर्पा (कोब्रामीन)	228	हेमपुष्पिका	140
सफेद चमेली	140	हेमर कीटमारा	199
सफोरी	141	हेमवती वचा	216
सम्भाव्यक्षीर, काकोली	220	हंसपदी	233
स्यन्दन, तिनीश (सांदन)	79	क्षीरकाकोली (कन्दमूल)	218
स्वर्णयुथिका	140	श्रृङ्गीविष (मोहरी)	18
सरल (चीड़, कुल्पैं)	233	त्रायमाण (कड़ू)	156
संटाई (वेलकुम)	25		

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधारभूत ग्रन्थ एवं लेख

(हिन्दी)

(१)	बाग्भट्ट विरचित	अष्ठाङ्गसंग्रह ।
(२)	चक्रपाणीटीका	चरक संहिता ।
(३)	डल्हणटीका	सुश्रुत संहिता ।
(४)	विनायक गणेश आपटे	राजनिघण्टु सहित धन्वन्तरि निघण्टु ।
(५)	श्री के० सी० चुनेकर (१९६)	भावप्रकाश निघण्टु ।
(६)	श्री वैद्य बापालाल जी शाह	निघण्टु आदर्श भाग-२ ।
(७)	श्री विश्वनाथ द्विवेदी	आयुर्वेद की औषधियाँ व वर्गीकरण ।
(८)	ठा० बलवन्त सिंह (१९४९)	प्रारम्भिक उद्भिज शास्त्र ।
(९)	ठा० बलवन्त सिंह (१९४७)	वनौषधि दर्शिका ।
(१०)	ठा० बलवन्त सिंह (१९५५)	बिहार की वनस्पतियां ।
(११)	आचार्य यादव जी त्रिविक्रम (लेख)	द्रव्यगुण विज्ञान भाग-२।
(१२)	वैद्य मायाराम उनियाल (सचित्र आयुर्वेद, १९६६)	भिलंगना घाटी से प्राप्त वनौषधियों का ग्रामीण प्रयोग ।
(१३)	वैद्य मायाराम उनियाल (सचित्र आयुर्वेद, १९६६)	उत्तराखण्ड हिमालय से उपलब्ध जीवनीय गण की औषधियां ।
(१४)	वैद्य मायाराम उनियाल (सचित्र आयुर्वेद)	प्रचलित अष्ठवर्ग का वानस्पतिक अध्ययन ।
(१५)	वैद्य मायाराम उनियाल (सचित्र आयुर्वेद, मई, १९६७)	मन्दाकिनी घाटी से प्राप्त वनौषधियों का स्थानिक प्रयोग ।
(१६)	वैद्य मायाराम उनियाल (खादी ग्रामोद्योग, बम्बई, १९६९)	गंगोत्री-गोमुख की वनौषधियां ।
(१७)	वैद्य मायाराम उनियाल (सचित्र आयुर्वेद, अप्रैल, १९७२)	हिमालय की घाटियों में उपलब्ध मांसीत्रय।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(English)

(18)	Chopara, R.N. (New Delhi, 1956)	Glossary of Indian Medicinal Plants. (C.S.I.R.)
(19)	Chopara, R.N. (1933)	Indigenous Drugs of India.
(20)	Collett (1921)	Flora Simlensis.
(21)	Dathie, J.F. (Vols. 1-2, 1960)	Flora of Upper Ganjetic Planes.
(22)	Kanjilal (1961)	Forest Flora of Dehradun.
(23)	Hooke, J.D. (1872-1897)	Flora of British India. Vols. 1-7
(24)	Nadkarni, K.M.	The Indian Materia Medica.
(25)	Rau, M.A. (Bull. Bot. Surv. India, 1961)	Flowering Plants and Ferns of North Garhwal, U.P.
(26)	Sharma, P.V. (Varanasi, 1972)	Indian Medicine in the Classical Age.
(27)	Sharma, P.V. (Jour. Res. Ind. Med., Vol. 3, No. 2, 1969)	Hrdyadipaka of Bopadeva.
(28)	Raizada, M.B. (Indian Forester, Nov. 1959)	Mussoorie and its Plants.
(29)	Gupta, Rajkumar (Jour. of Bombay Natural) .History, Dec. 1957, 59, 62.)	Botanical explorations in the Erstwhile, Tehri Garhwal State.
(30)	Thakur, Balwant Singh (Chowkhamba, 1972)	Glossary of Vegetable Drugs in Brihatrayi.
(31)	Uniyal, M.R. Issar, R.K., (Nagarjun, 1966)	Botanical studies of Astavarga.
(32)	Uniyal, M.R., Issar, R.K. (Jour. Indian Forest, 1967)	Commercially important Medicinal Plants of Kanatal.
(33)	Juyal, Uniyal (Nagarjun)	Medicinal Plants of Commercial and Traditional Important in Bhillanga Valley, U.P.
(34)	Uniyal, M.R. (Indian Forester, 1968)	Medicinal Plants of Bhagirathi Valley lying in the Uttarkashi.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(35)	Uniyal, Issar. (Jour. Res. Ind. Res. 1969)	Commercially and traditionally important Medicinal plants in Mandakani Valley.
(36)	Uniyal, M.R. (Nagarjun, 1968)	Medicinal Plants of Bhilanga Valley Teheri Garhwal, U.P. Part-I. II. III. IV.
(37)	Issar, R.K., Uniyal, M.R. (Indian Forester, Oct. 1967)	Orchides of Uttarakhand Himalayas.
(38)	Dey, A.C., Uniyal, M.R. (Jour. Bomb. Nat. Hist. Society, 1968)	Flora of the Bhillanga Valley.
(39)	Dey. Saxena, Uniyal (Indian Forester March, 1969)	Botanical exploration in the Bhagirathi Valley.
(40)	Central, Hindi Directorate (Ministry of Education, 1964)	Science Glossary. (विज्ञान शब्दावली)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७५

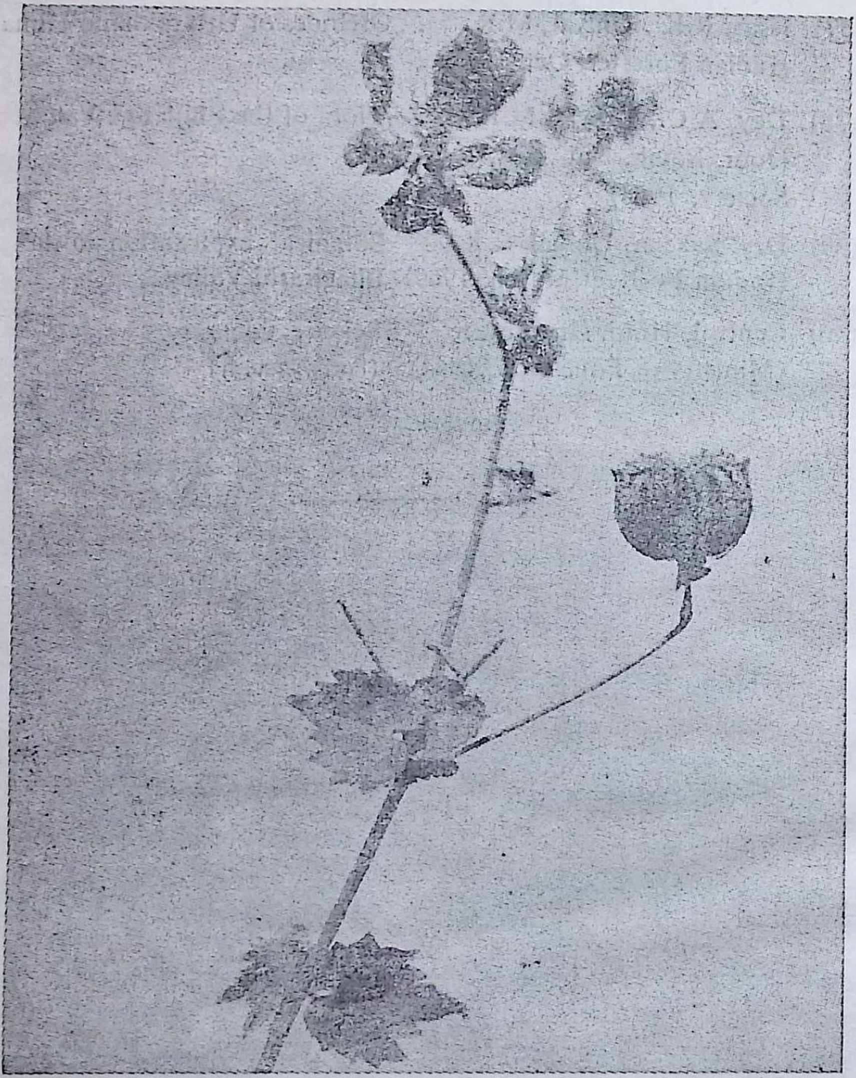

अतिवला– *Abutilcn indicum* G. Don.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७६

उदसलीब—*Paeonia emodi* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७७

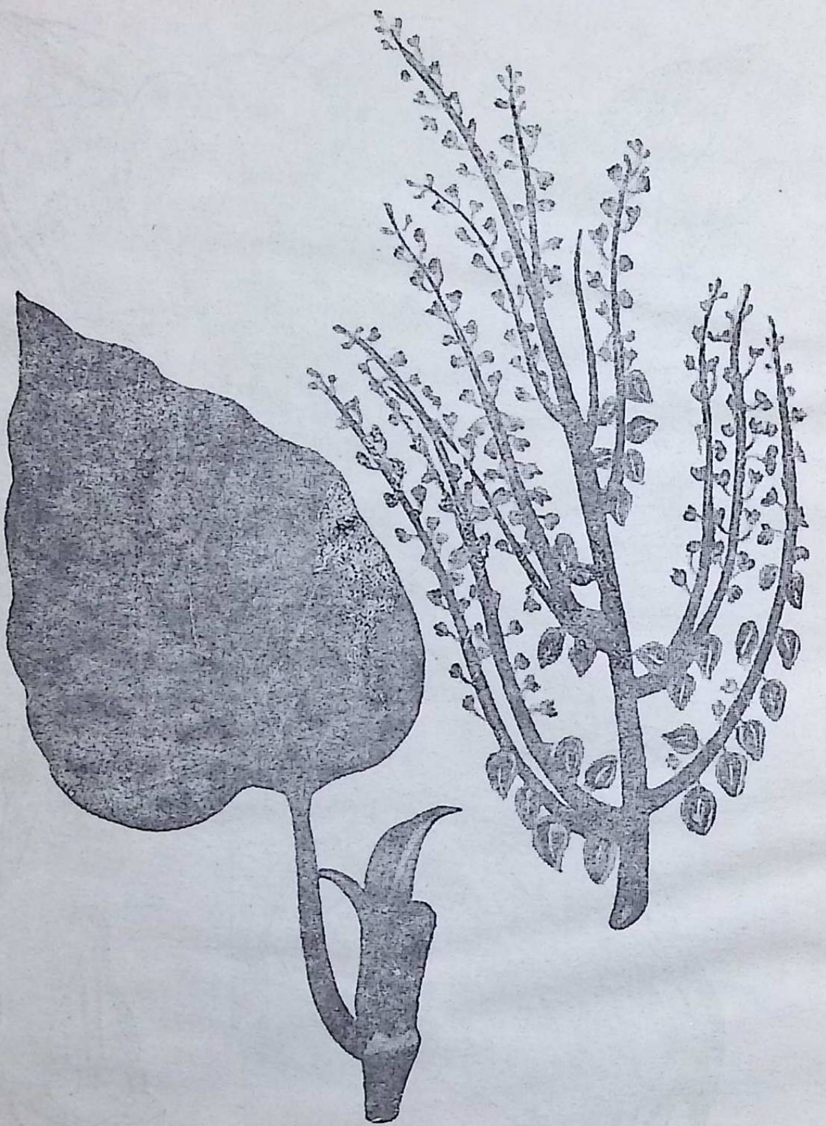

रेवन्दचीनी—*Rheum emodi* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७८

वनफशा—*Viola serpens* Wall.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—७६

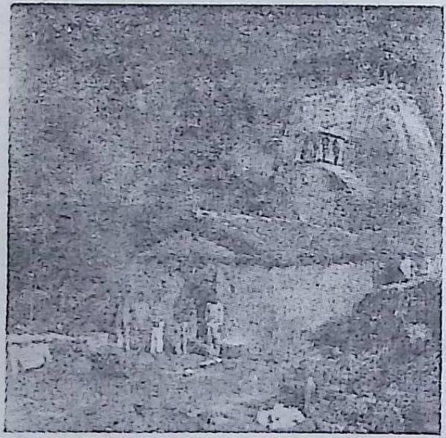

TEMPLE OF MADMAHESWAR
"Group photo of survey party members".
The visit of survey party of this area at the height of 11,500 ft.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्र—८०

Vd. M.R. Uniyal
&
Vd. Rameswar Prasad Tripathi
"Collecting of Jatamansi in natural condition."

Vaidyaraj ... Bhatji
National ... Library
Punjabi ... Delhi-26
Call No... LX(I.29)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

OUR OTHER PUBLICATIONS

1. Peruvoside and other cardiotonic glycosides of *Thevetia neriifolia* A. Juss.
2. Medicinal flora of certain districts of Uttar Pradesh. Part-I, II & III.
3. Check list of Sanskrit Medical Manuscripts of India.
4. Charucharya.
5. Provings of *Abroma augusta*.
6. Provings of Kalimur.
7. Hand book of common remedies in Siddha System of Medicine.
8. Theriyarkappiyan.
9. Pharmacognosy and Phytochemistry of *Ashwagandha*. (*Withania somnifera* Dunal)
10. Theriyartharu.
11. Pharmacodynamics of Musk.
12. Home Remedies Manual in Homoeopathy.
13. Pharmacopoeial Standards for Ayurvedic formulations.
14. Hand book of Domestic Medicines and common Ayurvedic Remedies.
15. A Hand book of common remedies in Unani System of Medicine. (Hindi & English)
16. Museum guide of exhibits on Indian medicine at the Indian Institute of History of Medicine, Hyderabad. Part-I & II.
17. Andaman and Nicobar Islands-record of the Medico-botanical survey team.
18. Medicinal plants of the districts of Andhra Pradesh along the course of Godavari.
19. Preliminary techno-economic survey of natural resources and herbal wealth of Laddakh.
20. Tribal pockets of Nilgiris-Record of the Field Study on medicinal flora and health practices.
21. Arunachal Pradesh-Record of the medico-botanical survey team.
22. Medicinal plants in the districts of Andhra Pradesh along the course of river Krishna.
23. Hand book of Medicinal Plants of India. Vol. I
24. Seminar on Yoga, Science and Man.
25. Syllabus for Yoga Education for Schools and Colleges. (Hindi and English)
26. Glimpses of Health & Medicine in Mauryan Empire.
27. Western Epitomes of Indian Medicine.
28. Union Catalogue of Arabic and Persian Medical Manuscripts in the Libraries of Hyderabad.
29. Library Catalogue—Author Catalogue. Part-I
30. Risala-e-Joodia (Urdu).
31. Ayurveda Oshadhi Nigandu (Sanskrit).

Central Council for Research in Indian Medicine & Homoeopathy

E-25, Defence Colony, NEW DELHI-110024

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection